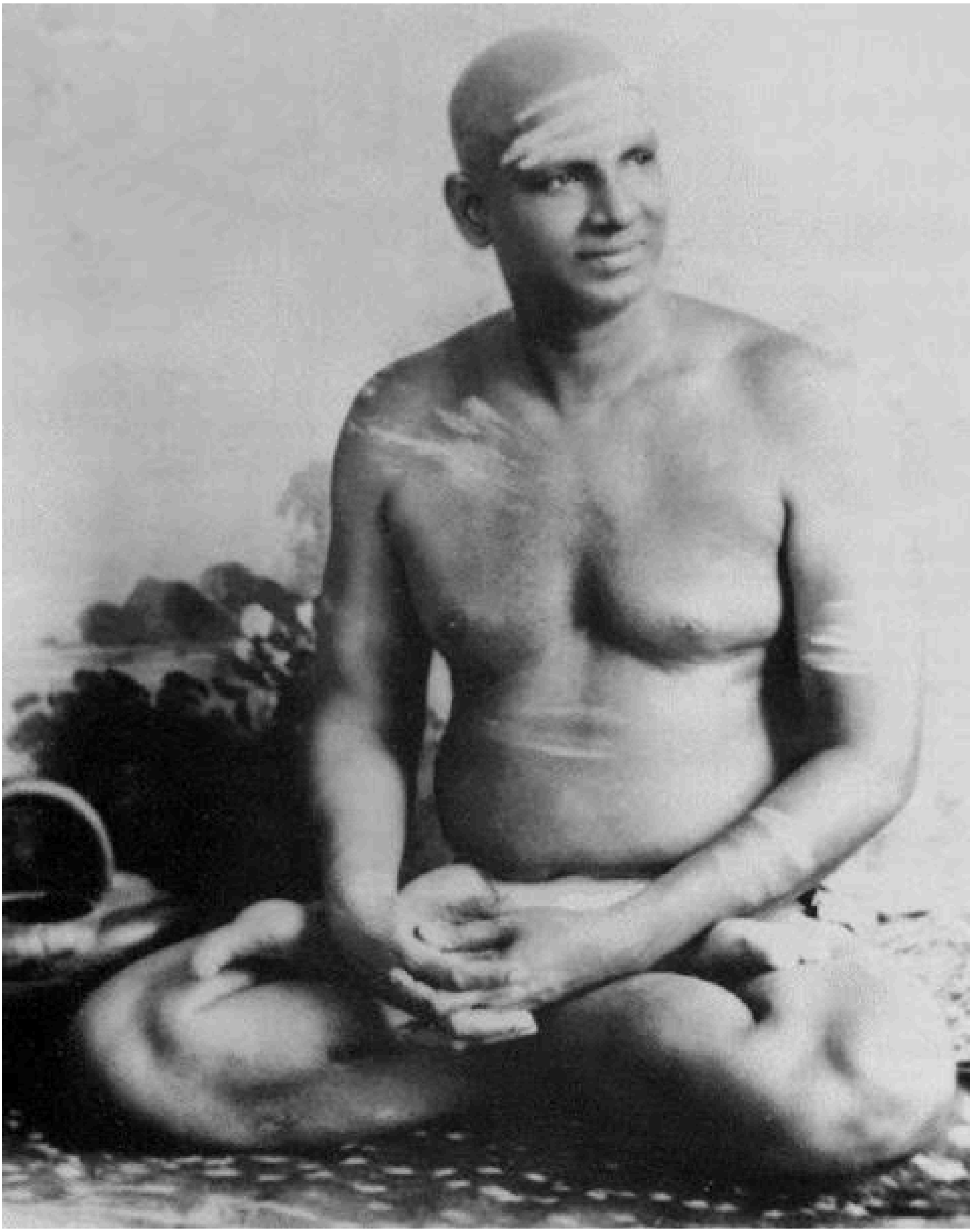
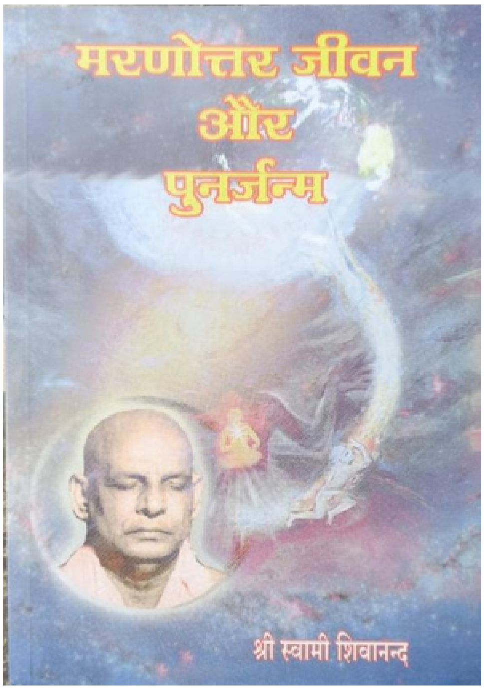



मरणोत्तर जीवन
और
पुनर्जन्म
श्री स्वामी शिवानन्द

मरणोत्तर जीवन

और

पुनजजन्म

WhatBecomesoftheSoulAfterDeath

का हिन्दीअनुवाद

लेखक
श्री स्वामी हिवानन्द सरस्वती

प्रहकाक
द हिवाइन लाइफ सोसायटी
पत्रालय: हिवानन्दनगर-२४९ १९२
हजला:हटिरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड (हिमालय), भारत
www.sivanandaonline.org, www.dishq.org

प्रथम हिन्दी संस्करण: १९६६

हितीय हिन्दी संस्करण : १९८०

तृतीय हिन्दी संस्करण : १९८५

चतुथज हिन्दी संस्करण : १९९६

पंचम हिन्दी संस्करण : २००७

षष्ठ हिन्दी संस्करण : २०१५

(१,००० प्रहतयााँ)

ISBN 81-7052-121-1 HS 99

PRICE: 135/-

'द हिवाइन लाइफ सोसायटी, हिवानन्दनगर' के हलए स्वामी पद्मनाभानन्द िारा
प्रकाहित तथा उन्ीं ंके िारा 'योग-वेदान्त फारेस्ट एकोमी पे्रस,
पो. हिवानन्दनगर-२४९ १९२, हजला हटिरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड' में मुहित ।
For online orders and Catalogue visit: disbooks.org

ॐ

समपजण

मरणोपरान्त जीवन के
समस्त रिस्ों ंको उद्घाहटत करने वाले
भगवान् यम, माकजण्डेय, नहचकेता, साहवत्री और
भगवान् हिव के िाश्वत पररचारी नन्दी को
समहपजत !

ॐ

५ हदसम्बर, १९५७

अमरता की सन्तानो !

एक जीवन्त, अपररवतजनील, िाश्वत चेतना िै जो सभी नाम और रूपों ंमें अन्तहनजहित िै। वि परमात्मा या ब्रह्म िै।

परमात्मा सभी हियाओं ंका अन्त िै। वि सभी साधनों ंएवं योगाभ्यासों ंका अन्त िै। उसे खोजो । उसे जानो। तभी तुम स्वतन्त्र एवं पूणज िो सकते िो। संसार को एक मरीहचका की तरि देखो । हनिःस्वाथज सेवा, वैराग्य, हनहवजषय, प्राथजना एवं हचन्तन-परायण जीवन व्यतीत करो। तुम िीघ्र िी ईश्वर-साक्षात्कार कर लोगे।

ईश्वर तुम्हें प्रसन्न रखे ! ॐ तत्सत्!

तुम्हारी अपनी िी आत्मा
स्वामी हिवानन्द

प्रकिाक का वक्तव्य

अनन्त काल से मृतुयु के बाद जीवन की समस्ा अत्यन्त िी मिोक रिी िै। मनुष्य सदा इस प्रश्न के चक्कर में पडा रिा िै हक मृतुयु के बाद आत्मा का क्या िोता िै। प्रसुतुत पुस्तक-जैसा हक इसका नाम िै, हवसूतृत रूप से इसी हवषय की हववेचना करती िै-प्राचीन काल से चले आ रिे इस प्रश्न का समाधान प्रसुतुत करती िै।

आधुहनक काल में इस समस्ा पर बहुत-सी अटकलबाहजयाँ लगायी गयी िैं। इसने बहुत से अनुसन्धान-कार्यों को भी आगे बढ़ाया िै। भौहतक मृतुयु के बाद भी चेतना के जारी रिने का तथ्य बहुत से आधुहनक हचन्तकों ं िारा भी स्वीकृत हकया जा रिा िै हजनमें अत्याधुहनक िाक्टर जे. बी. राइन िैं हजन्ोंनें इसके पक्ष में अपना हवश्वास व्यक्त हकया िै। इस हवषय पर बहुत-सी पुस्तकें हलखी जा चुकी िैं; लेहकन अब तक उनमें से अहधकांि सूक्ष्म या पे्रेतात्म-जगत् के बारे में हलखी गयी िैं। अब तक पे्रेतलोक की पररस्थथहतयों ंके बारे में िी ज्यादा अध्ययन हकया गया िै जो कब्र से बािर के अनेकों ंअपाहथजव लोकों ंमें हसफज एक िै। आत्मवाद, पे्रेतात्माओं ंको बुलाने वाली मण्डली एवं स्वीकृत माध्यमों ंका साक्षीपन िी इन पुस्तकों ंका मुख्यतिः हववेच्य हवषय रिा िै।

मि यि मिसूस करते िैं हक प्रसुतुत पुस्तक का अध्ययन लोगों ंमें यि हवश्वास पैदा करेगा हक मृतुयु जीवन का अन्त निीं ंिै, हक मनुष्य के कमज हनहित रूप से उसके ऊपर मृतूयूपरान्त प्रहतहिया करते एवं उसके हवचारों ं को प्रोत्साहित करते िैं। िमें कोई सन्ेदि निीं ंिै हक पाठकों ंको इस भौहतक िरीर से परे का ज्ञान िोने पर इस पृथ्वीलोक पर स्थथत इस भौहतक िरीर का वास्तहवक मूल्ांकन करने में सिायता हमलेगी।

-द डिवाइन लाइफ सोसायटी

प्रस्तावना

परलोक-हवद्या या मृतात्माओं ंके एवं उनके रिने वाले लोकों ंका हवज्ञान एक रोचक हवषय िै। यि एक रिस्ात्मक हवज्ञान िै जो बहुत िी रिस् या छुपे ंिोयो से भरा पडा िै। छान्दोग्योपहनषद् की पंचाहि-हवद्या से इसका घहनष्ठ सम्बन्ध िै।

बहुत-सी हवलक्षण वसुतुओं ंका आहवष्कार करने वाले वैज्ञाहनक, िस्क्तिाली सम्राट् हजन्ोंनें ंिोयजनक कायज हकये, धाहमजक कहव, अद्‌भुत कलाकार, असंख्य ब्राह्मण, ऋहष, योगी आये और चले गये। आप सभी यि जानने को अत्यन्त इचुछुक िैं हक वे किााँ चले गये ? क्या अभी भी उनका अस्स्तत्व िै? मृतुयु के उस पार क्या िै? क्या वे अस्स्तत्विीन िो गये या िून्य-वायु में हवलीन िो गये ? ऐसे प्रश्न हनबाजध रूप से सबके हृदय में उठते रिते िैं। यि प्रश्न आज भी वैसे िी उठता िै जैसा िजारों ंवषज पूवज उठा करता था। इसे कोई भी निीं ंरोक सकता; क्योंहक यि मिारी प्रकृहत से अहवभाज्य रूप से जुडा हुआ िै।

मृतुयु एक ऐसा हवषय िै जो सबकी गिन उतुसुकता से सम्बस्न्धत िै। आज या कल सभी मरेंगे। मृतुयु का भय सभी मानव-प्राहणयों ंपर छाया रिता िै। यि मृतक के सम्बस्न्धयों ंके ऊपर, जो मृतक आत्मा का िाल जानने के हलए उतुसुक रिते िैं, अत्यन्त अनावश्यक दुिःख, िोक और हचन्ता लाता िै।

इस प्रश्न ने पहिम में भी बहुत से वैज्ञाहनक क्ेषेत्रों ंमें बडे पररमाण में रुहच एवं ध्यान को आकहषजत हकया िै। बहुत से परीक्षण हकये गये िैं, लेहकन ये अनुसन्धान इसी प्रश्न तक सीहमत रिे िैं हक 'भौहतक िरीर के निा के

अनन्तर आत्मा रिती िै या निीं' ं या 'आत्मा का अस्स्तत्व िै या निीं' ं । हवज्ञान तथा मध्यथथता के िारा प्रेेतात्म- जगत् से सम्बन्ध थथाहपत कर आत्मा के अस्स्तत्व को साहबत कर हदया गया िै।

इसका हवज्ञान मृत्यु के सभी भयों ंका िरण कर लेगा एवं आपको इस योग्य बनायेगा हक आप इसे पयाजप्त प्रकिा में देख सकें और अपनी प्रगहत में इसका मित्व जान सकें। यि अवश्य िी आपको मृत्यु को जीतने का एवं अमरता प्राप्त करने का उहचत तरीका खोजने को प्रेेररत करेगा।

यि आपको जबदजस्ती प्रोत्साहित करेगा हक आप तत्परता से ब्रह्म-हवद्या का अध्ययन करें, सचेे गुरु या दीप्त ऋहष की खोज करें जो आपको सिी रासेते पर लाये और कैवल् एवं ब्रह्मज्ञान के रिसों ंको आपको बताये।

इस पुस्तक में मृत्यु के दूसरे पक्ष का सिी-सिी वणजन हकया गया िै। यि वैज्ञाहनक तरीकों ंसे परीक्षण हकया गया िै एवं वणजन हकया गया िै। यि पुस्तक इस हवषय पर पयाजप्त सूचना देती िै। यि इस हवषय पर आपको तथ्यों ंका भण्डार देगी। इसमें उपहनषद् की हिक्षाओं ंके तत्तों ंका सहन्नवेि िै।

आप इस अत्यन्त मित्त्पूणज हवषय की अज्ञानता एवं हमथ्या हवश्वासों ंके कारण बहुत कष्ट सि चुके िैं। अगर आप इस पुस्तक को पढ़ेंगे, तो अज्ञान का परदा िट जायेगा। आप मृत्यु के भय से स्वतन्त्र िो जायेंगे।

योग-साधना का एक लक्ष्य मृत्यु का प्रसन्नता और हनभजयता से सामना करना िै। एक योगी या ऋहष या एक सचेे साधक को मृत्यु का भय निीं ंरिता। मृत्यु उन लोगों ंसे काँपती िै जो जप, ध्यान एवं कीतजन करते िैं। मृत्यु एवं उसके दूत उस तक पहुँचने का सािस तक निीं ंकर सकते। भगवान् कृष्ण भगवद्गीता में किते िैं-"मेरी रिण में आने से ये मिात्मा हफर जन्म को प्राप्त निीं ंिोते, जो दुिःख एवं मृत्यु का लोक िै, वे परमानन्द में हमल जाते िैं।"

मृत्यु एक सांसाररक व्यस्क्त को दुिःखदायक िै। एक हनष्काम व्यस्क्त मरने के बाद कभी भी निीं ंरोता। एक पूणजज्ञान प्राप्त व्यस्क्त कभी निीं ंमरता। उसके प्राण कभी प्रथथान निीं ंकरते। मृत्यु के भय पर हवजय प्राप्त करो। मृत्यु की हवजय सभी आध्यास्त्मक साधनाओं ंकी उच्चतम उपयोहगता िै। भगवान् से प्राथजना करो हक वि प्रत्येेक जन्म में तुम्हें अपनी पूजा के योग्य बनाये। अगर तुम अनन्त आनन्द चािते िो तो इस जन्म-मृत्यु के चि का नाि करो, अनन्त आत्मा में वास करो और सदा के हलए आनन्दमय िो जाओ।

भीष्म की मृत्यु उनकी अपनी इच्छा पर हनभजर थी। साहवत्री अपने पहत सत्यवान् को अपनी सतीत्व–िस्क्त के बल पर वापस लायी। भगवान् हिव की प्राथजना से माकजणेडेय ने मृत्यु को जीत हलया। तुम भी ज्ञान, भस्क्त एवं ब्रह्मचयज के बल पर मृत्यु को जीत सकते िो।

मरणोन्मुख उपासक की प्राथजना

(ईिावास्योपहनषद्)

डिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्याडपडितं मुखम् ।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधमााय दृष्टये ।।

आहदत्यमण्डलथथ ब्रह्म का मुख ज्योहतमजय पात्र से ढका हुआ िै। ि पूषन्। मुझ सत्यधमाज को आत्मा की उपलस्किराने के हलए तू उसे उघाड दे।

पूषन्नेकषे यम सूया प्राजापत्य वूयिू रश्मीन्समिू ।
तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्याडम
योऽसावसौ पुरुषः सोऽमिस्मि ।।

ि जिगत्पोषक सूयज! ि एकाकी गमन करने वाले ! ि यम (संसार का हनयमन करने वाले)! ि सूयज(प्राण और रस का िोषण करने वाले) ! ि प्रजापहतनन्दन ! तू अपनी हकरणों को िटा ले (अपने तेज को समेट ले)! तेरा जो अहतिय कल्याणमय रूप िै, उसे मैं देखता हाँ। यि जो आहदत्यमण्डलथथ पुरुष िै, वि मैं हाँ।

वायुरडनलममृतमथेदं भिान्तं शरीरम्।
ॐ क्रतो िर कृतं िर क्रतो िर कृतं िर ।।

अब मेरा प्राण सवाजत्मक वायु-रूप सूत्रात्मा को प्राप्त िो और यि िरीर भस्मिेष िो जाये। ि मेरे संकल्पात्मक मन ! अब तू स्मरण कर, अपने हकये हुए को स्मरण कर, अब तू स्मरण कर, अपने हकये हुए को स्मरण कर।

अग्न्ने नय सुपथा राये अिोस्मिश्वाडन देव वयुनाडन डवद्वान् ।
युयोध्यिजुजुहुराणमेनो भूडयषां ते नमउस्मतं डवधेम ।।

ि अिे ! िमें कमज-फल-भोग के हलए सन्मागज से ले चल। ि देव! तू समस्त ज्ञान और कमों को जानने वाला ि। िमारे पाखण्डपूणज पापों को नष्ट कर। िम तेरे हलए अनेक नमस्कार करते िैं।

मृतुयु-संसुतुहत

ि मृतुयु, िे यम! तुझे िै अहभनन्दन
तू िै ईश्वरीय हनयमों ंका प्रणेता
सभी बनते िैं तेरे िी हिकार
बनते िैं तेरे िी ग्रास।

तू काल िै
तू िै धमजराज !
ि सिवजज्ञ काल!
तू िै हनयम का हवधायक ।

तू िै ज्ञाता
तीनों ंकालों ंका......-भूत, वतजमान और भहवष्य ।
तूने िी पुराकाल में दी थी दीक्षा
नहचकेता को, आत्म या ब्रह्म-हवद्या की।

मैंने काल या मृतुयु का हकया िै अहतिमण,
मैं हाँ सनातन तत्त् ।
किाँ िै काल उस सनातन तत्त् में?
काल तो िै मात्र मानस-सृजन ।

मैंने मन का हकया िै अहतिमण ।
मुझे भय िै निीं ंअब मृतुयु का िे मृतुयु!
मैं हाँ परे तेरी पहुाँच के
मैं करता हाँ, तुझे अस्दिा ।

मैं हाँ कृतज्ञ तेरे सारे सदय कायों के हलए
तुझे िै अनेकानेक नमस्कार ।
ि येम! मैं चािता हाँ हवदिे-मुस्क्त में प्रविे ।
मैं प्राप्त करूाँगा परमात्मा में अखण्ड हवलयन ।

वास्तहवक जीवन क्या िै

हनत्य आत्मा में जीवन
आत्म-सुख का सतत आस्वादन
सदा-सवजदा परमात्मा का पूजन
यिी िै वास्तहवक जीवन ।

सदा ईश्वर के नाम का जपन
सवजदा उसी की कीहतज का गायन
सदा उसी का स्मरण
यिी ि ै वास्तहवक जीवन ।

करो यम-हनयम का अभ्यास
करो बीमार और गरीबों ंकी सेवा
करो शुरुहतयों ंका श्रवण,
यिी ि ै वास्तहवक जीवन ।

हचन्तन तथा ध्यान
गुरु की सेवा
उनके उपदेिों ंका अनुगमन
यिी ि ै वास्तहवक जीवन ।

अपने आत्मा का साक्षात्कार
हनज-आत्मा का िी सवजत्र दिजन
और ब्रह्मज्ञान की प्रास्प्त
यिी ि ै वास्तहवक जीवन ।

मानवता के हलए अहपजत जीवन
करना आत्म-संयम का अभ्यास
करना मन और इस्न्ियों ंपर िासन
यिी ि ै वास्तहवक जीवन ।

करो प्राणायाम का अभ्यास
करो ब्रह्म-हवचार
करो संकल्प का पालन
यिी ि ै वास्तहवक जीवन ।

ॐ में िी हनवास
ॐ का िी सतत कीतजन
ॐ का िी अहवरल ध्यान
यिी ि ै वास्तहवक जीवन ।

नाम-रूपों ंकी कर उपेक्षा
करना अन्तहिजत वस्तु का दिजन
करना अमृत-सुधा का पान
यिी ि ै वास्तहवक जीवन ।

वास्तहवक मृतुयु क्या िै

हनत्यप्रहत गीता, उपहनषदों ंका निीं ंपठन
और न सदा ईश्वर का स्मरण
न साधु एवं गुरुओं ंका सेवन
यिी िै वास्तहवक मरण।

न रखना समदिजन
न मन का िी सनुतुलन
न आत्मदृहष्ट का िी अवलम्बन
यिी िै वास्तहवक मरण।

ब्रह्मज्ञान से वंहचत
हवसृ्तृत हृदय से भी िून्य
दानिील कायों से रहित
यिी िै वास्तहवक मरण।

दिे से िी तादात्म्य-प्राप्त
ईश्वरीय स्वरूप का हवस्मरण
हनरुदे्देश्य जीवन में भ्रमण
यिी िै वास्तहवक मरण।

खाना, पीना, मौज उडाना
समय का व्यथज गमन
हनज नाम और यि को खोना
यिी ि वास्तहवक मरण।

जुआ तथा ति के खेल
उपन्यास, महदरापान तथा धूम्रपान
गपिप, हनन्दा, मात्सयज में संलि
यिी ि वास्तहवक मरण।

हपुिनता, हनन्दा,
दूसरों ंके दोषदिजन
ठगी तथा हमथ्याचरण
यिी ि वास्तहवक मरण ।

अथज का अवैहधक उपाजजन
पर-स्यिों ंके प्रहत दुराचरण
दूसरों ंके प्रहत हिंसात्मक आचार
यिी ि वास्तहवक मरण ।

हवषयपरायण जीवन
वीयज का करना व्यथज नाि
कामदृहष्ट का अवलम्बन
यिी ि वास्तहवक मरण ।

जन्म तथा मृतुयु

जन्म तथा मृतुयु िैं दो भ्रामक दृश्य
इस जगत्-रूपी नाटक के।
वास्तव में न तो कोई जन्म लेता िै
और न मरता िी िै।

न कोई जाता िै और न आता िी िै।
यि िै माया का जादू
यि िै मन का िी खेल
ब्रह्म का िै एकमेव अस्स्तत्व ।

िरीर के हलए िी िै जन्म
पंचतत्त्ों ंसे िी िोता िै िरीर का गठन
आत्मा तो िै जन्म-रहित तथा मृतुयु-रहित
मृतुयु िै भौहतक िरीर का हवक्ेषेपण।

मृतुयु िै सुषुस्प्त के िी समान
जन्म िै सुषुस्प्त से जागरण
िरोम ! मृतुयु से भय न कर
जीवन तो िै अखण्ड और अबाध।

पुष्प मुरझाते िैं, पर सुरहभ फैलती रिती िै
िरीर हवनष्ट िोता िै
परनुतु आत्म-सुरहभ
अमर एवं िाश्वत िै।

हववेक करना सीखो
सत्य एवं असत्य के बीच
सदा असीम का करो हचन्तन
यिी िै जन्म-मृतुयु से रहित, सनातन ।

माया तथा मिो का करो अहतिमण
तीनों ंगुणों ंसे बनो अतीत

र्रीर के प्रहत आसस्क्त का करो त्याग
अमरात्मा में बनो हवलीन ।

पुनजजन्म

मन के िी कारण िै पुनजजन्म

मन के िी व्यविारों ंपर िै यि अवलस्म्बत।
तुम हवचारते िो, मन में बनते िैं संस्कार
संस्कार िी िै वृहत्त का बीज
ये संस्कार एक-दूसरे से बन कर आबद्ध
देते िैं वासना को जन्म।

जैसा तुम हवचारते िो
वैसा िी तुम बन जाते िो।
अपने हवचारों ंके अनुकूल िी
तुम जन्म धारण करते िो।

सत्त् तुम्हें ऊपर ले जाता िै।
रजस् मध्य में िी रखता िै
तमस् अधिःपतन हदलाता िै
दुगुजणों ंमें िी आच्छन्न रखता िै।

मन िी कारण िै
मनुष्य के बन्धन और मुस्क्त का।
महलन मन बाँधता िै
ुद्धि मन मुस्क्त प्रदान करता िै।

जब तुम सत्य का साक्षात्कार करते िो
तुम आत्मा को जानते िो।
भावी जन्मों ंके कारण का हवनाि िोता िै,
वृहत्तयाँ हवनष्ट िोती िैं, संस्कार भस्मीभूत िोते िैं।

तुम पुनजजन्म से मुक्त िो
तुम पूणजता प्राप्त करते िो
तुम परम िास्न्त पाते िो
तुम अमर बन जाते िो-यिी सत्य िै।

यहद एक िी जन्म िै
यहद बुरे कमज करने वाले नरकाहि में
जलते िैं सवजदा
तो, प्रगहत की कोई आिा निीं,ं
यि बुस्द्धग्राह्य निीं ंिै।
यि तकजसंगत निीं ंिै।

वेदान्त में हनकृष्ट पापी के हलए भी आिा िै
हकतना समुन्नत िै यि दिजन!
यि घोहषत करता िै
हमत्र! तू िुद्ध आत्मा िै

पाप तुझे छू निीं ंसकता।
अपने गत ईश्वरत्व को प्राप्त करो
पाप कुछ भी निीं ंिै।

पाप भूल मात्र िै
तुम पल मात्र में िी पाप को हवनष्ट कर सकते िो।
वीर बनो, प्रसन्न रिो
उठो, जागो, उहत्तष्ठत जाग्रत।

गीता किती िै-
"हनकृष्ट पापी भी
धमाजत्मा बन सकता िै,
वि ज्ञान-नौका िारा
पाप सन्तरण कर सकता िै।"

इससे क्या समझते िो, िे हमत्र!
प्रहतभाशाली लडका, शैशवपन में िी हपयानो बजाता िै
बचपन में िी भाषण देता िै
वि गूढ़ गहणत की समस्याओं ंको िल कर देता िै।

एक लडका अपने पूवज-जन्म का हववरण देता िै
दूसरा पूणज योगी के रूप में प्रकट िोता िै
इससे यि प्रमाहणत िै हक पुनजजन्म िै।
बुद्ध ने बहुत जन्मों ंमें िी अनुभव प्राप्त हकया था,
अस्न्तम जन्म में िी वे बुद्ध बने।

हजसे संगीत में रुहच िै
वि कई जन्मों ंमें अनुभव प्राप्त करता िै
तथा अन्ततः एक जन्म में पूणज कुशल बन जाता िै।
रि जन्म में वि संगीत के संस्कार का अजजन करता िै,
शनैः-शनैः वासनाएँ तथा रुहच बढ़ती जाती िै,
हकसी एक जन्म में वि कुशल संगीतज्ञ बन जाता िै।
यिी बात िै प्रत्येक कला के हवषय में।

बच्चा माँ का दूध पीता िै,
शैशव बत्तख तैरते िैं
पूवज-जन्म के संस्कारों ंसे िी
सारे सद्गुण एक जन्म में िी हवकहसत
निीं ंिो सकते।

हिमक प्रगहत िारा िी मनुष्य
सभी सद्गुणों ंका अजजन कर सकता िै।

साधु जन सभी सद्गुणों ंमें पारंगत िोते िैं
साधुओं ंऔर हसद्धों ंके अस्स्तत्व से
पुनजजन्म प्रमाहणत िोता िै।

हवषय-सूची

मरणोत्तर जीवन और पुनजजन्म

प्रथम प्रकरण

मृत्यु क्या िै?

१. पुनजजन्म तथा मानव का उहिकास

पुनजजन्म का, मरणोत्तर जीवन का प्रश्न युगों ंसे अब तक प्रिेहलका िी बना रिा िै। जीवन हजन समस्ओं ं का पूवाजभास देता िै, उन सबका उत्तर देने में मानव-ज्ञान मुस्लि से सक्षम िै। गौतम बुद्ध ने किा िै-"िमारी इस्यिों ंिारा िमारी भ्रास्न्त के अनुसार सृष्ट इस रूप तथा भ्रास्न्तमय जगत् में व्यस्क्त या तो िै या निीं ंिै, या तो जीता िै या मर जाता िै; हकन्तु सच्चे तथा रूपिीन जगत् में ऐसी बात निीं ंिै, क्योंहंक यिााँ सब बातें िमारे ज्ञान के
अनुसार दूसरे ढंग से िोती िैं। और यहद आप पूछें हक क्या मनुष्य मृत्यु से परे रिता िै, तो मैं उत्तर देता हाँ 'निीं'ं- उस मानव-मन के हकसी बोधगम्य अथज में निीं ंजो मृत्यु के समय स्वयं मर जाता िै। और यहद आप पूछते िैं हक क्या मृत्यु िोने पर मनुष्य पूणज रूप से मर जाता िै, तो मेरा उत्तर िै 'निीं'ं; क्योंहंक जो मरता िै, वि इस रूप तथा
भ्रास्न्तमय जगत् के हकसी" हनहित हनष्कषजीन रिस्मय उत्तर से अपने को उलझाने निीं ंदेता और ज्ञाहनयों ं ने एक बार जो कुछ किा था, उसमें अन्ध-हवश्वास का युग बहुत हदन हुए जाता रिा। आज िमसे अकेले हवलक्षण प्रहतभा-सम्पन्न व्यस्क्तयों ंकी िी निीं,ं अहपतु सामूहिक रूप से ठोस प्रमाण की सतत मााँग िै। यहद जीवात्मा के आवागमन जैसे गम्भीर रिस् के हवषय में ऐसा भाव िै, तो उसका स्पष्ट उत्तर यि िै हक 'अच्छा िोगा हक आप अपने मरने तक प्रतीक्षा करें, और तब आप हनणाजयक रूप से जान सकेंगे।' अतएव, इस पर िान्त, बुस्द्धसंगत, हनष्पक्ष तथा अवैयस्क्तक हवचार की आवश्यकता िै।

कायज-कारण-हसद्धान्त तथा तत्पररणामी पुनजजन्म की अपररियजता हिन्दू-दिजन का सचमुच मूल-हसद्धान्त िी िै। हकन्तु िम इस बात की उपेक्षा निीं ंकर सकते हक इस भूलोक की २०० करोड की जनसंख्या में से ८० करोड लोगों ंकी पुनजजन्म में हवश्वास की कोई धाहमजक परम्परा निीं ंिै, जब हक लगभग ४५ करोड लोग इसकी सम्भावनाओं ंके हवषय में हबलकुल अजे्ञेयवादी िैं।

तब यि स्वाभाहवक िै हक यहद हिन्दू यि सोचें हक वे िी मनुष्यों ंमें सवाजहधक बुस्द्धमान् िैं तथा िेष अज्ञानी लोगों ंका एक अहत-हविाल समूि िै हजनके हलए अज्ञानता िी परमानन्द िै, तो यि केवल िीगं मारना िी िोगा। तब यि प्रश्न उठेगा हक यहद कोई यि हवश्वास करे हक उसका वतजमान जन्म उसके पूवज-जन्म के कमााँ का पररणाम िै, तो पूवज-जन्म को उत्पन्न करने वाला कारण क्या था ? यिी सिी, एक और पुनजजन्म। हकन्तु, उस जन्म का कारण क्या था?

अब इसका उत्तर देने के हलए िमें उहिकास के हनयम का आश्रय लेना िोगा और किना पडेगा हक सुदूर अतीत में िम एक बार पिु थे और उस जीवन-संस्तर से िम मानव-प्राणी बने। हकनुतु हफर प्रश्न उठेगा हक कायज-कारण के हसद्धान्त को उहचत हसद्ध करने के हलए मानव-प्राणी के रूप में जन्म लेने के हलए भी कोई कारण रिा िोगा, और चूँहक पिुओं ंमें सदाचार तथा दुराचार के हनणजय करने की बुस्द्ध निीं ंिोती तो मानव-पररवार में अपने जन्म के हलए िम कैसे उत्तरदायी िो सकते िैं? कोई बात निीं।ं आइए, िम इस तकजिीन पररकल्पना को अथथायी रूप से ठीक मान लें और अपने को प्राहण-पररवार और उस्जि तथा खहनज जगत् की ओर वापस ले जायें और अन्त में इस हनष्कषज पर पहुँचें हक भगवान् िी उत्तरदायी आद्य कारण िै; हकनुतु कायज-कारण के हसद्धान्त में हवश्वास करते हुए, इतना अहधक तकज के िोने पर भगवान् कैसे इतना अन्यायी तथा उन सब कष्टों,ं संघषों और दुि:खों ंका आद्य कारण िो सकता िै हजनें् मानव-प्राणी के रूप में जन्म ले कर िमें भोगना िोता िै।

आद्य कारण का कोई उत्तर निीं ंिै। सवोत्तम मागज िै: भले बनें और भला करें, सहिवेक में आथथा रखें तथा व्यस्क्त की योग्यता और जीवन के नैहतक हसद्धान्तों ंका सम्मान करें तथा िेष भगवान् पर छोड दें। ऐसी अनेक चीजें िैं जो मानव-मस्स्तष्क के कायजक्ेषेत्र से बिार िैं और आत्मज्ञान- यि िब्द कैसा भी प्रभाविाली िो- उनका एकमात्र समाधान िै। तथाहप पुनजजन्म की धारणा की यों ंिी उपेक्षा निीं ंकी जा सकती िै; क्योंहंक कुछ ऐसे ठोस तकजसंगत अध्यिार िैं, जो हवश्वास को बनाये रखने में हववेक पर प्रभाव िालते िैं।

वैहदक साहित्य की प्रारम्भावथथा में, वास्तव में पुनजजन्म का कोई उले्लेख, पाप की कोई काहलमा, नरकाहि का कोई भय तथा मत्यज मानव के हलए कोई स्वहगजक प्रलोभन निीं ंथा; हकनुतु आरण्यक युग के प्रारम्भ में, जब वैहदक मानस सावयची ईश्वरत्व की बहुदेववादी धारणा से एक परम सत्ता के अिैतात्मक आदिज की हदिा में उन्नत हुआ, तो मानव-मन में भगवान् की हनष्कलंक सत्ता को सुरहक्षत करने के हलए तकजसंगत आवश्यकता के रूप में कायज-कारण तथा जीवात्मा के दिेन्तरगमन के हसद्धान्त का हवकास हकया गया।

अब यि सवजहवहदत िै हक हवश्व के तीन प्रमुख धमों ने हजनका उिव यद्यहप हिन्दू-धमज की अपेक्षा आधुहनक िै-नरक में िाश्वत िैतानी के हवकराल दृश्य को प्रसुतुत करना आवश्यक समझा, हजससे लोग एक-दूसरे के गले पर झपटने से दूर रिें तथा सामाहजक सुव्यवथथा, संसूकृहत के मूल् तथा िास्न्त की उपयोहगता को सम्मान दें। इसके साथ िी इस उद्देश्य की पूहतज को हनहदजष्ट कर स्वगज में आनन्दपूणज अमरत्व का सजीव प्रलोभन पिे हकया गया िै। हकनुतु इससे उहिकास के हसद्धान्त की प्रहतष्ठा तत्काल कम िो जाती िै और व्यस्क्त को उत्तर काल में उद्धार का एकमात्र अवसर प्रदान हकये हबना िी अकस्मात् नरक का दण्ड दे हदया जाता िै या अत्यहधक कृपापूवजक उसे व्यहष्टकृत सत्ता में अनन्त काल तक के हलए स्वगज में लटकाये रखा जाता िै। इसमें इस बात का भी कोई समाधान निीं ंिै हक एक व्यस्क्त दुष्ट िोने पर भी क्यों ंफले-फूले तथा सुखी रिे और अन्य पुण्यात्मा िोने पर अभाव तथा दुि:खों ंसे पूणज नीरस जीवन यापन करे।

इसके हवपरीत भारतीय ऋहषयों ंने इससे अच्छा समाधान प्रसुतुत हकया तथा व्यस्क्त के हवकास के हलए पुनजजन्म को उत्तरदायी बनाया। व्यस्क्त िी अपने भाग्य का स्वामी िै। इस संसार की सृहष्ट िी क्यों ंकी गयी, इस प्रश्न का उत्तर देने में अपनी असमथजता को उन्िोंनें हनि:संकोच रूप से स्वीकार हकया और उसके आधार पर उन्िोंनें हनियपूवजक किा हक भगवान् सद्-असद् का, सुख-दुि:ख का उत्तरदायी निीं ंिै। व्यस्क्त िी अपनी हनयहत के हलए उत्तरदायी िै। इसके साथ िी वि स्व-प्रयास से इसमें सुधार लाने में समथज िै। अतएव जीवन की सभी रिस्मयताओं ंतथा अन्यायों ंके हलए भगवान् पर दोषारोपण निीं ंहकया जा सकता िै तथा उन (भगवान) का थथान मानव की हवचारधारा में अक्षत बना रिा। अतएव मृतूयूपरान्त यादृच्छ अनुद्धार का औहचत्य हसद्ध करने वाले हकसी भी हवश्वास की अपेक्षा पुनजजन्म का हसद्धान्त किीं ंअहधक हवश्वासोत्पादक िै।

इसके अहतररक्त ि मारे पास ऐसे अनेक उदािरण िैं हजनसे बालक स्वल्प प्रहिक्षण से सिज िी हनपुण कलाकार अथवा प्रहतभािाली गायक बन जाता िै, जब हक कुछ अहभजातवगीय पररवारों ंमें िम देखते िैं हक अत्यहधक हिक्षा प्राप्त अध्यापकों ंके भारी प्रयास तथा स्वयं बालक की ओर से भी कठोर श्रम के बावजूद भी वि हिक्षा-प्रास्प्त में बहुत िी कम उन्नहत कर पाता िै। हवलक्षण प्रहतभा सम्पन्न बालकों ंके उदािरण भी िैं, हजनके प्रहिक्षण की कोई पृष्ठभूहम निीं ंिै। एक अन्य उदािरण लीहजए। दो बालक एक िी माता-हपता के यिााँ जन्म लेते िैं तथा एक िी वातावरण में उनका पालन-पोषण िोता िै। उनमें से एक हिष्टाचार-सम्पन्न प्रहतभािाली हविान् बनता िै तथा दूसरा हबना हकसी भी प्रत्यक्ष कारण के मन्द-बुस्द्ध हचथडा पिनने वाला दररि बनता िै। एकमात्र पुनजजन्म का हसद्धान्त इस भेद का उत्तर दे सकता िै।

सांसाररक दृहष्टकोण से भी पुनजजन्म जीवन की सम्पोषक िस्क्त िै। हकतने िी स्वप्न तथा हकतनी िी आकांक्षाएाँ अपररतुष्ट िी रि जाती िैं, यौवन क्षीण िो कर वृद्धावथथा तथा अिक्तता का रूप से लेता िै और दुगाजह्य आिा-रूपी तृणमहण अहधकाहधक धुाँधली तथा अिक्त बन जाती िै; हकन्तु इसकी अहन-हिखा का हटमहटमाना इस सुदूर की आिा से बना रिता िै हक कदाहचत् हकसी अन्य जीवन में वे आिाएाँ पूणज िो जायेंगी। अतएव इस दृहष्टकोण से भी पुनजजन्म जीवन के हलए एक सौम्य सान्त्वना तथा आश्वासन िै।

एक अन्य हवचारधारा िै जो यि हवश्वास करती िै हक िरीर तथा आत्मा के पंचतत्त्वों ंके चरम हवसूक्ष्महत में चले जाने से मृत्यु का घन जीवन का अस्न्तम रूप से अवसान कर देता िै। यि सुहवधाजनक हवश्वास कुछ बौस्द्धक हवतण्डावाहदयों ंके हलए िी आकषजक िै। हकन्तु यहद ऐसी बात िो तो प्रेतों ंतथा आत्मायनों ंमें प्राप्त िोने वाले अकाट्य अनुभवों ंके हलए क्या स्पष्टीकरण िै? अतः मरणोपरान्त जीवन को हनयम-हवरुद्ध निीं ंघोहषत हकया जा सकता िै। आइए, अब िम यि हवचार करें हक आध्यास्त्मक साधकों ंका क्या मनोभाव िोना चाहिए।

मनुष्य के अन्दर आियजनक सम्भाव्यताएाँ िैं। वि भाग्य का दास निीं ंिै। एक बार बुद्ध ने अपने अत्यहधक प्रहतभािाली हिष्यों ंमें साररपुत्र से बौद्ध धमज की थथापना के हलए संसार हजनका अत्यहधक ऋणी िै-प्रश्न हकया: "क्यों!ं हभक्षु! क्या जीवन तुम्हें बोहझल निीं ंलगता और क्या तुम मृत्यु िारा इससे मुक्त िोना निीं ंचािते ? या जीवन तुम्हें मोहित करता िै; क्योंहक एक मिान् जीवन-लक्ष्य को पूणज करना िै।" साररपुत्र ने उत्तर हदया- "श्रद्धेय गुरुदेव, मैं जीवन की आकांक्षा निीं ंरखता। मैं मृत्यु की आकांक्षा निीं ंरखता। जैसे सेवक अपनी भृहत्त की प्रतीक्षा करता िै, वैसे िी मैं अपनी आने वाली घडी की प्रतीक्षा कर रिा हाँ।"

साधक की भी ऐसी िी मनोवृहत्त िोनी चाहिए। उसे स्वयं कुछ पूणज करना निीं ंिै; क्योंहक उसका जीवन भगवद्-इच्छा की पूहतज िै। उसमें हकसी सुयोग्य आध्यास्त्मक जीवन-लक्ष्य को प्रोत्साहित करने के हलए पुनः जन्म लेने की कामना को भी कोई थथान निीं ंिोना चाहिए; क्योंहक क्या भगवान् िमारी अपेक्षा अहधक निीं ंजानता हक वि हकसको इस संसार में अपने सन्देिवािक के रूप में भेजे ? और, क्या परम सत्ता के मिान् ब्रह्माण्डीय ऐक्य में अपने िरीर तथा मन और अपनी वैयस्क्तकता के हवलय में और इस प्रकार सूक्ष्म िरीर में हवद्यमानता अथवा थथूल िरीर से काराबद्ध रूप में स्व-जीव-भाव को सदा के हलए समाप्त कर देने में आनस्न्दत िोना मानव का सवोत्कृष्ट आदिज निीं ंिै?

प्रत्येक साधक अपने हलए पुनजजन्म के स्वत्व-त्याग के अहधकार को बहुत िी हनयिपूवजक सुरहक्षत रखता िै; क्योंहक मोक्ष उसका जन्म-हसद्ध अहधकार िै और वि अपने भाग्य का स्वामी िै। कोई भी मनोग्रस्ह- चािे वि आध्यास्त्मक िो या ऐहिक-सदा के हलए अच्छी निीं ंिोती। मृत्यु के समय हकसी मनोग्रस्ह से उत्पीहडत िोने की अपेक्षा मन को हकसी भी अस्वथथ भय की मनोग्रस्ह से पररमाहजजत करना अच्छा िै। जीवन के भौहतक मूल्यों ंके क्षहणक स्वरूप से अवगत िो जाने पर व्यस्क्त को अपने इस रक्त-मांस-मय कारागृि में पुनः यन्त्रणा पाने की

सम्भावनाओं ंको अस्वीकार कर देना चाहिए और उसके पास जो भी इच्छा तथा हवचार–स्क्त िो, उनसे पूणज बल तथा तीव्रता के साथ अपने वैध पावने की माँग करनी चाहिए।।

हवचार कमज का हनिय करता िै और कमज भाग्य का हनिय करता िै। प्रत्येक व्यस्क्त में िस्क्त का एक हविाल भण्डार िै और व्यस्क्त हनिय िी मात्र अपनी इच्छा–स्क्त से तथा अवश्यम्भावी भगवत्कृपा के साथ भावी जीवन की हकसी भी सम्भावना को ध्वस्त कर सकता िै तथा अपने वतजमान जीवन को इस प्रकार आकार दे सकता िै हक उसमें ऐहिक कामनाओं ंका कोई हचह्न और क्षतहचहह्नत कायों की अहमट छाप का कोई संकेत तक रि न जाये। क्या अप्रहतम ज्ञानी तथा त्यागी दत्तात्रेय ऋहष ने निीं ंकिा - "दीहक्षत व्यस्क्त का पुनजजन्म निीं ंिोता िै।"

२. मृत्यु क्या िै?

इस थथूल िरीर से जीवात्मा का अलग िो जाना िी मृत्यु किलाती िै। मृत्यु के अनन्तर िी नवीन तथा उत्तम जीवन का प्रारम्भ िोता िै। मृत्यु आपके व्यस्क्तत्व और आत्म-चेतना को रोकती निीं।ं यि तो जीवन के उत्तम स्वरूप का िार उन्मुक्त करती िै। इस भाँहत मृत्यु पूणजतर जीवन का प्रवेि िार िै।

जन्म और मरण तो माया के जादू िैं। जो जन्म लेता िै, वि मरना आरम्भ करता िै। जीवन िी मरण िै और मरण िी जीवन िै। इस संसार-रूपी रंगभूहम में प्रवेि करने तथा बािर जाने के हलए जन्म और मरण-ये दो िार िैं। वास्तव में न तो कोई आता िै और न कोई जाता िी िै। ब्रह्म अथाजत् जो िाश्वत सत्ता िै, एकमात्र विी हवद्यमान िै।

हजस प्रकार आप एक घर से हनकल कर दूसरे घर में प्रवेि करते िैं, उसी प्रकार जीवात्मा भी अनुभव प्राप्त करने के हलए एक िरीर से हनकल कर दूसरे िरीर में जाता िै। हजस प्रकार एक मनुष्य पुराने फटे हुए विों ं को हनकाल फेंकता िै तथा नये वि धारण करता िै, उसी भाँहत इस िरीर का हनवासी (पुरुष) जीणज–िीणज िरीर को फेंक कर नये िरीर में प्रवेि करता िै।

मृत्यु जीवन का अन्त निीं ंिै। जीवन हनत्य हनरन्तर प्रवािीील प्रगहत िै, हजसका कभी भी अन्त निीं।ं यि तो गुजरने का मागज िै। प्रत्येक जीवात्मा को अपना अनुभव प्राप्त करने तथा नया हवकास साधने के हलए उसमें िो कर जाना पडता िै। इस भाँहत मृत्यु एक आवश्यक घटना िै।

इस िरीर से जीवात्मा का अलग िोना हनिा से अहधक कोई हविेष बात निीं ंिै। हजस प्रकार मनुष्य सो जाता िै और जाग उठता िै, उसी भाँहत जन्म और मृत्यु-ये दोनों ंिी िैं। मृत्यु हनिा की-सी दिा िै और जन्म जाग्रहत की-सी। मृत्यु श्रेष्ठतर नवीन जीवन का हवकास प्रारम्भ करती िै। हववेकी तथा ज्ञानी पुरुष मृत्यु से भयभीत निीं ं िोते; क्योंहंक वे जानते िैं हक मृत्यु तो जीवन का प्रवेि–िार िै। उन ज्ञानी जन के हलए मृत्यु उस म्यान के सदृश्य निीं ंिै हजसमें रिने वाली तलवार जीवन-सूत्र को काट िालती िै; परन्तु उनके हलए तो मृत्यु देवदूत बनी रिती िै हजसके पास स्वणज की वि कुंजी िै जो आत्मा को हविेष हवकहसत, पूणज और सुखमय स्थहत का अनुभव कराने के हलए जीवन का िार उन्मुक्त कर देती िै।

प्रत्येक जीवात्मा की स्थहत एक वृत्त के समान िै। इस वृत्त की पररहध हकसी भी थथान पर निीं ंिै; परन्तु इसका केि इस िरीर में िै। एक िरीर से दूसरे िरीर में इस केि का थथानान्तररत िोना िी मृत्यु किलाती िै। तो हफर तुम मृत्यु से क्यों ंभयभीत िोते िो?

जो यि सवोत्तम आत्मा परमात्मा िै, वि मृतुयु-रहित िै, हवनिा-रहित िै, काल-रहित िै, कारण-रहित िै और दिा-रहित िै। वि इस िरीर, मन तथा समस्त संसार का मूल-कारण अथवा अहधष्ठान िै। पाँच मिाभूतों ंसे बने इस िरीर की िी मृतुयु िोती िै। भला इस िाश्वत आत्मा की मृतुयु हकस प्रकार िो सकती िै; क्योंहंक आत्मा तो दिे, काल तथा कारण से परे िै।

यहद तुम जन्म-मृतुयु से छुटकारा पाना चािते िो, तो तुम्हें हबना िरीर का बनना पडेगा। कमज के परराणाम-स्वरूप िी यि िरीर रिता िै। तुम्हें ऐसा कमज निीं ंकरना चाहिए हजसमें फल की आिा िो। यहद तुम अपने-आपको रागर्िष आहद से बचा सकते िो, तो कमज से मुक्त रि सकोगे। यहद तुम केवल अपने अिंकार को मार िालो, तो तुम अपने-आपको रागर्िष से मुक्त रख सकोगे। उस अहवनािी आत्मा का ज्ञान प्राप्त कर यहद तुम अपने अज्ञान का हनवारण कर सको, तो तुम अपने अिंकार को दूर कर सकोगे। इस िरीर का मूल कारण एकमेव अज्ञान िी िै।

यि आत्मा सभी प्रकार के िब्द, रूप, रस, स्पिज आहद से परे िै। यि स्वयं हनराकार एवं हनगुजण िै। यि प्रकृहत से भी परे िै। यि तीन प्रकार के (थथूल, सूक्ष्म तथा कारण) िरीरों ंसे तथा िरीर के पाँच कोिों ंसे परे िै। यि अनन्त, अहवनािी तथा स्वयं-प्रकाि िै। जो पुरुष इस िाश्वत आत्मा का साक्षात्कार कर लेता िै, वि अपने-आपको काल के कराल गाल से बचा लेता िै।

३. मृतुयु जीवन का अन्त निीं ंिै

रीर में रिने वाली व्यस्क्तगत आत्मा िी 'जीवात्मा' किलाती िै। ये जीवात्माएँ अपनी हियाओं ंके सम्पादनाथज तथा इस जगत् से अनुभव प्राप्त करने के हलए हवहवध िरीरों ंका हनमाजण करती िैं। स्व-हनहमजत इन िरीरों ंमें वे जीव प्रवेि करते िैं और जब वे िरीर में रिने के अनुपयुक्त िो जाते िैं, तब उन्ें वे पररत्याग कर देते
िैं। वे जीव पुनिः नवीन िरीरों ंका हनमाजण करते िैं और पुनिः उसी प्रकार उन िरीरों ंका भी पररत्याग कर देते िैं। यि प्रवेि तथा हनगजमन िी जीवों ंका आहवभाजव तथा हतरोभाव किलाता िै। िरीर में जीवात्मा का प्रवेि िोना 'जन्म'
किलाता िै और िरीर से जीवात्मा का अलग िोना 'मरण' किलाता िै। यहद िरीर में जीवात्मा हवद्यमान न िो, तो उसे मृतक किते िैं।
स्त्री के िोहणत में पुरुष के हिंदु के सस्म्मश्रण की हिया को माता के उदर में बालक का गभज धारण करना किते िैं। पुरुष के हिंदु के अणु तथा स्त्री के िोहणत के अणु जीवाणु िैं। वे कोरी आँखों ंसे हदखायी निीं ंपडते; परन्तु सूक्ष्मदिजक यन्त्र से वे दृहष्टगोचर िोते िैं। सामान्य रूप से इस प्रकार के जीवाणुओं ंके सस्म्मश्रण को िी 'गभज' किते िैं तथा वैज्ञाहनक रीहत से इसे िोहणत के फलीभूत िोने की हिया किते िैं।

एक व्यस्क्त की मृतुयु के हवषय में जो घटनाएँ िोती िैं, उनके िम को जानने के हलए तथा इस हवषय में वतजमान अज्ञान के आवरण को हवदीणज करने के हलए हवचारिील मानव सदा िी प्रयत्निील रिा िै; परन्तु मृतुयु के परे जीवन के हवषय में जो अज्ञान का आवरण िै, उसे दूर करने में मनुष्य को पूणज सफलता हमल चुकी िै, यि निीं ंकिा जा सकता।

इस रिस्य के उद्घाटन के हलए आधुहनक हवज्ञान भी प्रयत्निील िै; परन्तु अद्यावहध कोई ऐसा तथ्य इसके िाथ निीं ंलगा िै, जो हकसी प्रकार की मान्यता की आधारभूहम बन सके। परन्तु इस हवषय में जो प्रयोग हकये जा रिे िैं, उनसे बहुत-सी रोचक बातों ंका पता चलता िै।

ऐसा किा जाता िै हक इस बात का अभी पता निीं ंलग सका हक एक कोि से बने हुए िरीर की स्वाभाहवक मृतुयु कब हुई? जब इस पृथ्वी पर एक कोि से बने हुए प्राहणयों ंके जीवन का प्रारम्भ हुआ, उस समय उनके हलए मृतुयु अज्ञात थी। जब एक कोि से बने हुए प्राहणयों ंसे अनेक कोि वाले प्राहणयों ंका इस जगत् में हवकास हुआ, तभी से यि मृतुयु का दृश्य देखने में आता िै।

हवज्ञान की प्रयोगिालाओं ंमें हकये गये प्रयोगों ंसे पता चला िै हक हबल्ली या मुगे के िरीर से अलग हकये हुए चूहलका-ग्रस्ि, िीबीज, अण्डकोष, प्लीिा, हृदय, गुरदा इत्याहद समूपूणज अंग जब जीहवत रखे जाते िैं, तो उनमें नये कोि तथा तनुतुओं ंका उभार िोने के कारण उनके आकार तथा पररमाण में वृस्द्ध िोती िै।

यि भी देखने में आया िै हक व्यस्क्त का व्यस्क्तत्व समाप्त िो जाने के अनन्तर भी िरीर के अंग अपनी हियाएँ करते रिते िैं। रुहधर के श्वेत कणों ंकी यहद साँभाल की जाये, तो वे हजस िरीर से हनकाले गये िैं, उसके नाि िो जाने पर भी मिीनों ंतक जीहवत रिते िैं। परनुतु यि बात सच िै हक उनमें जो जीवन िै, वि रक्त-कणों ंका जीवन िै, वि उस व्यस्क्त का जीवन निीं ंिै।

मृतुयु जीवन का अन्त निीं ंिै। यि तो केवल एक िी व्यस्क्तत्व के हवकास का अन्त िै। हवश्व में हवश्वमय बनने के हलए जीवन सतत प्रवििील िै तथा जब तक वि अनन्त में हवलीन निीं ंिो जाता, तब तक वि प्रगहतिील बना रिता िै।

४. मृतुयु का िम

श्री वहसष्ठ मुहन अपने योगवाहसष्ठ में किते िैं :

"िरीर में िोने वाली व्याहधयों ंके कारण इस िरीर की नाहडयों ंकी िस्क्त क्षीण पड जाती िै और उसके पररणाम स्वरूप नाहडयों ंके संकोच और हवकास की गहत अवरुद्ध िो जाती िै। नाहडयों ंके इस संकोच और हवकास के कारण िी अन्दर का श्वास बािर और बािर का श्वास अन्दर आता-जाता रिता िै। इस गहत के अवरुद्ध िोने से िरीर अपना सनुतुलन खो बैठता िै तथा पीडा का अनुभव करता िै। इसके कारण न तो अन्दर का श्वास भली-भााँहत बािर िोता िै और न बािर का श्वास िी भली-भााँहत िरीर में पुनिः प्रवेि करता िै। श्वासोच्छवास की हिया अवरुद्ध िो जाती िै। श्वासोच्छवास की हिया में अवरोध िोने से मनुष्य अचेत िो जाता िै और मृतुयु को प्राप्त िोता िै। व्यस्क्त की समूपूणज वासनाएँ तथा आसस्क्तयााँ जो उस समय उसके अन्दर वतजमान िोती िैं, वे सब-की-सब बािर हनकल आती िैं। जो व्यस्क्त अपनी समूपूणज वासनाओं ंतथा संस्कारों ंके साथ िरीर के अन्दर रिता िै, उसे िी जीव किते िैं। जब िरीर मृतुयु को प्राप्त िोता िै, तब व्यस्क्त के अन्दर रिने वाले प्राण जीव के साथ िरीर से बािर हनकल आते िैं और वायु में भटकते रिते िैं। वायु-मण्डल की वायु इस प्रकार के जीव के साथ रिने वाले अनेक प्राणों ंसे आपूणज रिती िै। वायु में रिने वाले ये जीव अपने पूवज-जीवन के अनुभवों ंके कारण उन प्राणों ंके अन्दर हटके रिते िैं। मैं उन्िें देख सकता हाँ। इस भााँहत जो जीवात्मा अपनी समूपूणज कामनाओं ंके साथ रिता िै, उसे उस समय प्रेत (परलोक में गया हुआ) किते िैं।

"जिााँ पर जब एक (िरीर) मृतुयु को प्राप्त िोता िै, तब मृतुयु की अचेतनावथथा दूर िो जाने पर वि (जीव) विीं ंपर दूसरे लोक का अनुभव करने लगता िै।"

५. मृतुयु के हचह्न

मृतुयु के वास्तहवक हचह्न को खोज हनकालना बहुत िी कहठन िै। हृदय के स्पन्दन का स्तस्म्भत िो जाना, नाडी की गहत रुक जाना अथवा श्वासोच्छवास का थथहगत िोना-ये मृतुयु के वास्तहवक हचह्न निीं ंिैं। हृदय का स्पन्दन तथा नाडी एवं श्वासोच्छवास इत्याहद हियाओं ंका बन्द िोना, अवयवों ंका कठोर पड जाना, िरीर में उष्णता का अभाव ये सभी मृतुयु के सामान्य कारण िैं। नेत्रों ंमें अपना प्रहतहबम्ब पडता िै हक निीं–ंइसका पता िाक्टर लगाते िैं

और उसके पाँव को झुकाने का भी प्रयास करते िैं; परनुतु ये हचह्न मृतुयु के ठीक-ठीक हचह्न निीं ंिैं। कारण यि िै हक ऐसे बहुत से उदिारण देखने में आये िैं हक श्वासोच्छवास तथा हृदय की धडकन बन्द िोने पर भी कुछ समय पिात् वे व्यस्क्त पुनिः जीहवत िो उठे।
ठियोहगयों ंको पेटी में बन्द कर उन्ें चालीस हदन तक पृथ्वी के अन्दर गाड देते िैं। उसके अनन्तर उन्ें बिार हनकाला जाता िै और वे जीहवत रिते िैं। श्वासोच्छवास दीघज काल तक रोका जा सकता िै। यहद कृहत्रम रूप से प्राणायाम के िारा श्वास को रोका जाये, तो भी दो हदवस तक श्वासोच्छवास बन्द रिता िै। इस हवषय के बहुत से उल्लेख पाये जाते िैं। लगातार घण्ों ंतक तथा कई हदनों ंतक भी हृदय की धडकन रोकी जाती िै और पुनिः चालू की जाती िै। इससे यि किना बहुत कहठन िै हक मृतुयु का ठीक तथा अस्न्तम हचह्न क्या िो सकता िै? िरीर का हबगड जाना तथा सड जाना िी मृतुयु का अस्न्तम हचह्न िो सकता िै।

मृतुयु के अनन्तर िरीर हबगडने लगे, इसके पिले िी हकसी को तुरन्त गाड निीं ंदेना चाहिए। कोई ऐसा सोच सकता िै हक अमुक व्यस्क्त मर गया िै; परनुतु िो सकता िै हक वि मनुष्य अधजसमाहध, अचेतनावथथा अथवा समाहध की दिा में रि रिा िो। ये समूपूणज अवथथाएँ मृतुयु से हमलती-जुलती िैं। बाह्य हचह्न समान िी िोते िैं।

हृदय की गहत रुक जाने के कारण हजन लोगों ंकी मृतुयु िोती िै, उनके िव को तुरन्त िी निीं ंगाड देना चाहिए; क्योंहक ऐसा सम्भव िै हक कुछ समय के अनन्तर उनका श्वासोच्छवास पुनिः चालू िो जाये। िरीर में हबगाड िोने के पिात् िी उनके िव को गाडने आहद की हिया करनी चाहिए।

एक योगी स्वेच्छा से अपने हृदय के स्पन्दन को रोक सकता िै। वि समाहध की दिा में घण्ों ंअथवा हदनों ंतक रि सकता िै। समाहध-अवथथा में हृदय की धडकन तथा श्वासोच्छवास की हियाएँ निीं ंिोतीं।ं यि हनिा-रहित हनिा अथवा समूपूणज चेतनावथथा िै। जब योगी थथूल चेतना की स्थथहत में आता िै, तब हृदय की धडकन तथा श्वासोच्छवास की हियाएँ पुनिः प्रारम्भ िो जाती िैं। हवज्ञान इस हवषय का कुछ स्पष्टीकरण निीं ंकर सकता। िाक्टर जब स्वयं अपनी आँखों ंसे इन अवथथाओं ंको देखते िैं, तो वे अवाक् िो जाते िैं।

६. मृतुयु के समय तत्त्ों ंका अलग िोना

यि थथूल िरीर पृथ्वी, जल, तेज, वायु तथा आकिा- इन पाँच मिाभूतों ंसे बना हुआ िै। देवताओं ंका िरीर तैजस अथवा हदव्य पदाथज का बना िोता िै। उनमें अहि-तत्त् की अहधकता रिती िै। इसी भाँहत जलचरों ंमें जल-तत्त् तथा पहक्षयों ंमें वायु-तत्त् की अहधकता रिती िै।

रीर के अन्दर जो कठोरता का अंि िै, वि पृथ्वी-तत्त् के कारण िै। रस-भाग जल के कारण िै। िरीर में तुम जो उष्णता का अनुभव करते िो, वि अहि-तत्त् के कारण िै। िरीर का हिलना-िुलना तथा दूसरी हियाएँ वायु के कारण िोती िैं। अवकिा आकिा के कारण िै। जीवात्मा इन पाँच तत्त्ों ंसे हभन्न िै।

पाँचों ंमिातत्त् प्रकृहत के अक्षय कोष से उत्पन्न हुए िैं। मृत्युु के पित् ये तत्त् अलग िो कर अपने मूलभूत तत्त्ों ंमें हवलीन िो जाते िैं। पाहथजव तत्त् अपने उस मूल कोष में जा कर हमल जाता िै जो हक पृथ्वी तत्त् से बना िोता िै। दूसरे तत्त् भी अपने-अपने मूल-तत्त् में जा हमलते िैं।

मृत िरीर को स्नान करा कर नया वि धारण कराते िैं और उसके अनन्तर उसे श्मिान भूहम में ले जाते िैं। विाँ उसे अहि की हचता पर रखते िैं। इस समय जो मन्त्र पढ़ते िैं, उसमें प्राण-तत्त् को बोहधत करते िैं। प्राण-तत्त् को इसहलए सम्बोहधत हकया जाता िै हक हजससे मुख्य प्राण थथूल िरीर से पंच-प्राणों ंको हवमुक्त कर दे और वे बिार की वायु में रिने वाले अपने-अपने तत्त्ों ंमें हमल जायें। उसके पित् िरीर को लक्ष्य करके मन्त्र पढ़ा जाता िै हजससे हक वि अपने पाँचों ंतत्त्ों–पृथ्वी, जल, तेज, वायु तथा आकाि के साथ अपने मूल स्रोत में हवलीन िो जाये। उसके अनन्तर िरीर में अहि लगा देते िैं। प्राण सहित जीवात्मा इस भौहतक िरीर से हवलग िो कर चेतना में प्रवेि करता िै और थथूल तत्त्ों ंसे अलग िोते िी अपनी आगे की यात्रा प्रारम्भ कर देता िै।

जो-जो इस्ियाँ अहधष्ठाता देवों ंके साथ रि रिी िोती िैं, उन (इस्ियों)ं की हियाएँ बन्द िो जाती िैं। दृहष्ट सूयज के अन्दर चली जाती िै, हजस सूयज से आँख को देखने की िस्क्त हमली थी। वाणी अहि में चली जाती िै। प्राण वायु में हमल जाते िैं। श्रोत्र हदिाओं ंमें हमल जाते िैं। िरीर पृथ्वी में हमल जाता िै। िरीर के लोम ऋतु-कालीन वनस्पहत में हमल जाते िैं। हिर के केि वृक्षों ंमें हमल जाते िैं तथा रक्त एवं वीयज जल में हमल जाते िैं।

७. उदान वायु के कायज

हजस वायु को पवन अथवा िवा किते िैं, विी वायु प्राण अथवा प्राणि–स्क्त िै। प्राण इस्ियों ंको गहतमान् करता िै। प्राण हवचार को उत्पन्न करता िै। प्राण िरीर को गहत प्रदान करता िै और गहतिील बनाता िै। प्राण अन्न को पचाता, रक्त-संवा करता तथा मल-मूत्र को बिार हनकालता िै। प्राण श्वासोच्छवास की हिया कराता िै। प्राणों ंके िारा िी तुम देखते, सुनते, स्पिज करते, स्वाद चखते तथा हवचार करते िो। समहष्ट-प्राण हिरण्यगभज अथवा ब्रह्मा िै। प्रकृहत का व्यक्त िोना प्राण िै। थथूल प्राण श्वास तथा सूक्ष्म प्राण जीवनि–स्क्त िै।

हजस प्रकार फुटबाल के अन्दर रबर की एक थैली िोती िै, उसी प्रकार इस थथूल िरीर के अन्दर सूक्ष्म िरीर िोता िै। मृत्युु के समय उदान वायु इस सूक्ष्म िरीर को थथूल िरीर से बिार खीचं लाता िै। जो स्वप्नावथथा में कायज करता िै, जो स्वगज को जाता िै, वि सूक्ष्म िरीर िै। उदान वायु सभी प्रकार के प्राणों ंको विन करने वाला वािन िै। यि उदान वायु भोजन को हनगलने में सिायक िोता िै। जब तुम प्रगाढ़ हनिा में िोते िो, तब यि तुम्हें ब्रह्म के पास पहुाँचाता िै। उदान वायु का हनवास थथान कण्ठ िै।

सारे प्राण, मन, बुस्द्ध, इस्िय तथा थथूल िरीर का आधार तथा मूल-कारण यि अजर-अमर आत्मा िै। यि तुम्हारे हृदय-प्रकोष्ठ में रिता िै। विाँ एक सौ एक (१०१) नाहडयाँ िैं। इन सभी नाहडयों ंकी बित्तर सिस्र (७२,०००) उपनाहडयाँ िैं। रक्त-संचार की हिया करने वाला व्यान इन नाहडयों ंमें गहतमान् रिता िै।

इन नाहडयों ंमें से एक मुख्य नाडी िारा उदान वायु बिार आता िै। वि उदान वायु तुम्हारे पुण्य-कमों के आधार पर तुम्हें उत्तम लोकों ंमें, तुम्हारे बुरे कमों के आधार पर तुम्हें अधम लोकों ंमें और तुम्हारे पुण्यापुण्य हमहश्रत कमों के आधार पर तुम्हें मानव-लोक में ले जाता िै।

जो योगी जीवनुमुक्त बन गये िोते िैं, उनको न तो जन्म से और न इन हभन्न-हभन्न प्रकार के लोकों ंसे िी कोई सम्बन्ध रिता िै। उन योहगयों ंके मन और प्राण ब्रह्म में हवलीन िो जाते िैं। उनका जीवात्मा परब्रह्म परमात्मा में हवलीन िो जाता िै।

इन जीवनुमुक्तों ंको आगे ले जाने के हलए उदान वायु की कोई आवश्यकता निीं ंरि जाती। हजन्िोंने अजर-अमर आत्मा का ज्ञान प्राप्त कर हलया िै तथा हजन्िोंने वैराग्य िारा अपने मन को िुद्ध एवं पहवत्र बना हलया िै, वे जीवनुमुक्त योगी मृतुयु के क समय समूपूणजतिः हवलीन िो जाते िैं; उन्िें इस लोक में पुनिः वापस निीं ंआना पडता ।

८. आत्मा क्या िै?

आत्मा के दो प्रकार िैं-एक तो व्यस्क्तगत आत्मा अथाजत् जीवात्मा और दूसरा सवोत्तम आत्मा अथाजत् परमात्मा । व्यस्क्तगत आत्मा सवोत्तम आत्मा का प्रहतहबम्ब या प्रहतमूहतज िै। हजस प्रकार एक सूयज जल के हभन्न-हभन्न भागों में प्रहतहबस्म्बत िोता िै, उसी प्रकार परमात्मा का प्रहतहबम्ब भी हभन्न-हभन्न व्यस्क्तयों ंके हभन्न-हभन्न अन्तिःकरण में पडता िै।

आत्मा चैतन्य िै। वि अभौहतक पदाथज िै। वि बुस्द्ध-रूप अथवा ज्ञान-रूप िै। वि स्वयं चैतन्य िै। जीवात्मा उस चैतन्य का प्रहतहबम्ब िै। यि वि जीवात्मा िै जो िरीर की मृतुयु के पिात् िरीर से अलग िो कर स्वगजलोक को जाता िै और उस जीवात्मा के साथ इस्यि, मन, प्राण, संस्कार, वासनाएँ तथा भावनाएँ रिती िैं। जब यि जीवात्मा स्वगज की ओर प्रयाण करता िै, तब उसे प्राणमय सूक्ष्म िरीर प्राप्त िोता िै।

जब सरोवर का जल सूख जाता िै, तब जल के अन्दर रिने वाला सूयज का प्रहतहबम्ब अपने हबम्ब सूयज में जा हमलता िै। इसी भााँहत जब ध्यान-धारणा के िारा मन हवलीन िो जाता िै, तब यि जीवात्मा स्वयं परमात्मा में हवलीन िो जाता िै और यिी जीवन का अस्न्तम लक्ष्य भी िै।

वासना, इच्छा, अिंकार, अहभमान, लोभ, काम तथा रागिेष के कारण जीवात्मा अिुद्ध बनता िै और उसके पररणाम स्वरूप यि जीवात्मा पररस्च्छन्न बनता िै, वि अल्पज्ञ एवं अल्पिस्क्तमान् बनता िै। जो सवोत्तम आत्मा परमात्मा िै, वि अनन्त, सवजज्ञ और सवजिस्क्तमान् िै। वि ज्ञान-स्वरूप तथा आनन्द-स्वरूप िै।

अज्ञान के कारण िी यि जीवात्मा बन्धन में पडता िै और उससे िी उसे मन, िरीर तथा इस्यियों ंकी मयाजदा में आना पडता िै। ये बन्धन और मयाजदा केवल देखने को िैं। ये माया-रूप िैं। जब यि आत्मा अनन्त तत्त् का ज्ञान प्राप्त कर लेता िै, तब वि अपने-आपको मयाजहदत पदाथों तथा बन्धनों ंसे मुक्त बना लेता िै। हजस प्रकार जल का एक बुदबुद सागर के साथ एक-रूप बन जाता िै, उसी भााँहत अज्ञान के नष्ट िो जाने पर यि जीवात्मा भी परमात्मा के साथ एक-रूप िो जाता िै।

जीवात्मा िी िरीर, मन तथा इस्यियों ंको जीवन प्रदान करता िै। यिी उन्िें हवकहसत करता तथा गहत एवं प्रेरणा प्रदान करता िै। जब यि जीवात्मा िरीर को छोड कर चला जाता िै, तब यि िरीर लकडी के एक कुन्दे के समान बन जाता िै। उस समय यि मृत िरीर न तो बोल सकता िै, न चल सकता िै और न देख िी सकता िै।

वि सवोत्तम परमात्मा स्वयं चैतन्य-स्वरूप िै, सवजतन्त्र स्वतन्त्र िै, स्वयं आनन्द-रूप िै, स्वयं ज्ञान-रूप िै तथा स्वयमूभू िै। वि स्वयं को जानता िै तथा दूसरों ंको भी जानता िै। वि स्वयं ज्योहत िै और सभी पदाथों को

प्रकाहित करता िै। अतिः वि चैतन्य िै। भौहतक पदाथज अपने-आपको निीं ंजानते िैं; अतएव वे जड-चेतना-रहित िैं।

वि परमात्मा हनराकार, हनगुजण, सवजव्यापक, अहवभाज्य, अहवनािी तथा दिे-काल से अपररस्च्छन्न िै। यद्यहप सूयज स्वयं हदवस एवं राहत्र का हनमाजण करता िै: परन्तु सूयज में काल अथवा हदवाराहत्र कुछ भी निीं ंिै। इसी भााँहत वि परमात्मा भी िै। वि अनन्त, िाश्वत तथा अमर िै।

एकमेव परमात्मा िी सत् िै। नाम-रूप-मय यि जगत् माया-रूप िै। हजस भााँहत रज्जु में सपज का आरोप हकया जाता िै, उसी भााँहत उस परमात्मा में इस जगत् का आरोप हकया गया िै। िाथ में दीपक लेते िी रज्जु में रिने वाला सपज नष्ट िो जाता िै। तुम धारणा ध्यान करो अथवा परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करो, उसके पररणाम स्वरूप इस जगत् का अध्यास पूणज रूप से जाता रिेगा।

प्रत्येक व्यस्क्त ऐसा अनुभव करता िै हक मैं हाँ- 'अिं अस्स्म' । कोई ऐसा निीं ंकिता हक 'मैं निीं ंहाँ' (मेरी सत्ता निीं ंिै)। इससे िी यि स्वतिः हसद्ध िै हक अजर-अमर परमात्मा का अस्स्तत्व (सत्ता) िै। प्रगाढ़ हनिा के समय तुम परमात्मा में हवश्राम करते िो। उस समय तुम्हारे हलए यि जगत् निीं ंरि जाता िै। तुम हविुद्ध आनन्द का अनुभव करते िो। इस बात से भी यि प्रमाहणत िोता िै हक परमात्मा की सत्ता िै और उसका स्वयमूभू-स्वरूप िुद्ध आनन्द िै।

अपने मन को िुद्ध बनाओ। उसको स्थथर करो। परमात्मा में अपने मन को लगा दो। अपने िाश्वत हदव्य स्वभाव के हवषय पर ध्यान करो और उसका दिजन करो। ऐसा करने से तुम जन्म-मरण के चि से छुटकारा पा जाओगे; तुम िाश्वत आनन्द तथा अमरत्व प्राप्त कर लोगे ।

९. िरीर-सम्बन्धी दािजहनक हवचार

चावाजक लोग नास्स्तक िैं। वे मृत्यु के पिात् आत्मा की सत्ता का हनषेध करते िैं। उसी भााँहत भौहतकवादी भी िरीर को आत्मा मान कर उसकी सेवा-पूजा करते िैं और आत्मा जो वास्तव में िरीर से हभन्न िै, तो भी वे िरीर से हभन्न रिने वाली आत्मा का हनषेध करते िैं। वे लोग भी नास्स्तक िी िैं। चावाजक, लोकायत तथा भौहतकवाहदयों ंकी ऐसी मान्यता िै हक 'यि िरीर िी आत्मा िै तथा आत्मा िरीर से अलग िो कर निीं ंरिता िै। वे लोग यि भी [illegible] चूने के सस्म्मश्रण से लाल रंग पैदा िोता िै अथवा कुछेक पदाथों के योग से मादक पेय तैयार िो जाता िै, उसी भााँहत पााँचों ंमिाभूतों ंके सस्म्मश्रण से जीवात्मा की रचना िोती िै। क्या िी सुन्दर दािजहनक हवचार िै! यि दािजहनक हवचार तो िरीर-सम्बन्धी िी िै। हवरोचन तथा उसके अनुयाहययों ंकी यि हवचारधारा िै।

जो आाँखों ंसे हदखायी निीं ंपडता िै, उसको वे लोग निीं ंमानते िैं। अपनी इस्न्ियों ंकी पहुाँच से परे वे हकसी भी वस्तु के अस्स्तत्व को स्वीकार निीं ंकरते िैं। वे लोग प्रत्येक वस्तु के हलए प्रत्यक्ष प्रमाण मााँगते िैं। यहद वे अपनी आाँखों ंसे जीवात्मा को देख लें, तभी वे उसकी सत्ता को मानने को तैयार िोंगे। वे निीं ंजानते िैं हक आत्मा का अनुभव तो समाहध में िी सम्भव िै। वि प्रत्यक्ष प्रमाण का हवषय निीं ंिै। उनका दिजन िै- "खाओ, पीओ तथा मौज उडाओ; इस्न्ियों ंके भोगों ंको पूरे पररमाण में भोग लो। भहवष्य के हवषय में कोई हवचार न करो। यहद तुम्हारे पास धन न िो, तो तुम भीख मााँग कर अथवा उधार ले कर खाओ, पीओ और पीते िी रिो; क्योंहक जब िरीर जल

कर भस्म िो जायेगा, तो तुम्हारे कमों का लेखा लेने वाला कोई निीं ंिोगा।" प्रत्येक दिे में इस प्रकार की हवचारधारा वाले लोग प्रचुर संख्या में पाये जाते िैं और हदन-प्रहत-हदन उनकी संख्या में वृस्द्ध िी िोती जा रिी ी। संसार में ऐसे बहुत से लोग िैं जो आत्मा की सत्ता में हवश्वास िी निीं ंकरते िैं।

जीवात्मा के पुनजजन्म अथवा आवागमन के हवषय में चावाजकमतावलम्बी तथा भौहतकवादी माथापच्ची निीं ं करते िैं। मैं कौन हाँ? मैं किााँ से, कब और हकस प्रकार आया? मृतूयूपरान्त क्या बचा रिता िै? जीवन क्या िै? मृतुयु क्या िै? मृतुयु के दूसरे तट पर क्या िै? जब िरीर मर जाता िै, तब व्यस्क्त हकन-हकन अवथथाओं ंको पार करता िै और हकस लोक में अपने-आपको पाता िै? इस प्रकार के दिाजहनक प्रश्नों ंपर वे हवचार निीं ंकरते। वे लोग तो ऐसा मानते िैं हक जो व्यस्क्त इस प्रकार के प्रश्नों ंकी खोज-बीन करने लगता िै, वि अज्ञानी िै। वे एकमात्र अपने-आपको िी चतुर तथा बुस्द्धमान् मानते िैं। उनके हवचारों ंको बदलने अथवा उन्िें समझाने में कोई भी युस्क्त अथवा तकज काम निीं ंदेते। आत्मा के अनस्स्तत्व के प्रहतपादन में उन लोगों ंने ग्रि-के-ग्रि भर िाले िैं। ये हवपरीत बुस्द्ध वाले क्या िी अद्‌भुत मनुष्य िैं!

भारत के आधुहनक कालेजों ंमें हिक्षा प्राप्त करने वाले अहधकांि हवद्याथी, जो हक भारत के प्राचीन ऋहष-मुहनयों ंकी िी सन्तानें िैं, कुहिक्षा एवं कुसंगहत के कारण उपयुजक्त दिजन के अनुयायी बन गये िैं। वे दम्भ एवं काम के पाि में आ गये िैं। वे प्राथजना, सन्ध्या, गायत्री-जप तथा गीता, उपहनषद्, रामायण एवं भागवत के स्वाध्याय को छोड बैठे िैं। वे तो िरीर के पुजारी बन गये िैं, वििभूषा का अन्धानुकरण कर रिे िैं। वे िोटल, रेस्तराँ, क्लब, हसनेमा आहद में हनयहमत रूप से जाते िैं। वे बडे उत्साि से ताि खेलते तथा उपन्यास पढ़ते िैं और प्रहत मास सैकडों ंरुपये व्यय कर िालते िैं। इसका तो उन्िें हवचार िी निीं ंआता हक िमारे माता-हपता हकतना आहथजक संकट झेल रिे िैं। जब वे स्नातक बन कर आते िैं, तो पचास रुपये भी उपाजजन निीं ंकर पाते। अज्ञानी माता-हपता इस प्रकार की मूखजतापूणज कल्पनाओं ंको प्रश्रय देते िैं हक उनका पुत्र बडा न्यायाधीि, इंजीहनयर, बैररस्टर तथा नागररक बन जायेगा। वे रुपये उधार ले कर तथा घर की भूहम-सम्पहत्त बेच कर भी अपने बालकों ंको पढ़ाते िैं। पररणाम स्वरूप ये माता-हपता अपने बालकों ंको बेरोजगारों ंकी श्रेणी में पाते िैं। प्रकृहत हनियम िी दुष्ट हवद्याहथजयों ं को दण्ड देती िै।

चावाजकमतावलम्बी तथा भौहतकवादी जनों ंका ऐसा मत िै हक िरीर अथवा भूतों ंका संघात िी हवचार, बुस्द्ध, चैतन्य, मन और जीव इत्याहद को उत्पन्न करता िै और जब तक िरीर रिता िै, तब तक चैतन्य इत्याहद भी रिते िैं। उनकी ऐसी मान्यता िै हक जैसे यकृत का हवकार हपत्त िै, वैसे िी भेजे की एक हिया का हवकार हवचार, बुस्द्ध अथवा चैतन्य िै। परमाणुओं ंका संघात बुस्द्ध अथवा चैतन्य को उत्पन्न निीं ंकर सकता। कोई भी गहत उत्तेजना, भाव तथा हवचार को कभी भी उत्पन्न निीं ंकर सकती। चैतन्य अथवा बुस्द्ध हकसी भी प्रकार गहत का कायज निीं ंबन सकती। जड पदाथज अथवा जड िस्क्त ने कभी भी चैतन्य या बुस्द्ध को उत्पन्न हकया िो - ऐसा कोई भी वैज्ञाहनक हसद्ध निीं ंकर सकता िै। ये चावाजक तथा भौहतकवादी अवास्तहवक तकों ंसे अपने को धोखे में िाल रिे िैं। इस्न्िय-जन्य भोगों ंके आकषजण के कारण वे लोग अपनी हववेक–िस्क्त खो बैठे िैं। प्रत्येक वसुतु को उसके ठीक प्रकाि में देखने की सूक्ष्म बुस्द्ध इनमें निीं ंिै। यि िरीर तो सतत पररवहतजत िोता रिता िै। पंचभूतों ंका संघात यि पाहथजव िरीर तो नािवान् िै; परनुतु जड पदाथज, िस्क्त, मन इत्याहद का आधार, अहधष्ठान तथा मूल कारण जो यि अहवनािी आत्मा िै, यि हनत्य िै। इस िरीर का नाि िो जाने पर भी इस प्रकार का ज्ञान बना रिेगा हक 'मैं हाँ।' तुम अपने हवषय में कभी ऐसा सोच िी निीं ंसकते और न कल्पना िी कर सकते िो हक इस िरीर का नाि िो जाने पर मैं निीं ंरहाँगा। तुम्हारे अन्दर एक ऐसी स्वाभाहवक भावना िै हक 'इस िरीर का नाि िो जाने के पिात् भी मैं अवश्य रहाँगा।' यिी यि प्रकट करता िै हक िरीर से स्वतन्त्र एक अजर-अमर आत्मा िै। आत्मा का प्रदिजन तो कभी भी निीं ंहकया जा सकता; परनुतु ऐसे हकतने िी अनुभूत तथ्य िैं, हजनके आधार पर इसके अस्स्तत्व का अनुमान हकया जा सकता िै।

मृतूयूपरान्त क्या अविेष रिता िै? िरीर की मृतुयु के पित् आत्मा का क्या िोता िै? वि आत्मा काािँ चली जाती िै? क्या वि मृतूयूपरान्त भी रिती िै? इस प्रकार का स्वाभाहवक प्रश्न एक-साथ िी सबके मन में उठता रिता िै। यि वि मित्त्पूणज प्रश्न िै जो सबके हृदय-तल को स्पिज करता िै। वि प्रश्न आज भी प्रत्येक दिे के प्रत्येक
मानव-मस्स्तष्क में वैसा िी बना हुआ िै जैसा हक आज से सिस्रों ंवषज पूवज था। इसे कोई रोक निीं ंसकता िै। इस
प्रश्न की आज भी चचाज िो रिी िै और भहवष्य में भी इसकी चचाज िोती रिेगी। पुरातन युग से िी तत्त्ज्ञानी, ऋहष, मुहन, योगी, हवचारक, स्वामी, अध्यात्मज्ञानी तथा पैगम्बर इत्याहद इस मिान् तथा जहटल प्रश्न को सुलझाने का यथािक्य प्रयास करते आये िैं।
जब तुम भोग-हवलास-मय जीवन में हनमि रिते िो, जब तुम लक्ष्मी के िोड में िोते िो, तब तुम इस
हवषय को भूल जाते िो; परन्तु हजस समय तुम देखते िो हक मृतुयु के िूर िाथों ंने तुम्हारे एक हप्रय कुटुम्बी को तुमसे छीन हलया िै, उस समय तुम आिंयजचहकत िो जाते िो और सोचने लगते िो हक 'वि हप्रय कुटुम्बी काािँ गया ? क्या वि अब भी किीं ंपर िै? क्या िरीर से अलग भी कोई आत्मा िै? उसका पूणज रूप से नाि िो गया-ऐसा सम्भव निीं।ं यि तो िो निीं ंसकता हक उसके हवचार एवं कमों के संस्कार पूणजतिः नष्ट िो जायें।'

अपने अन्तमुजखी ध्यान से प्राप्त अनुभव के आधार पर उपहनषद् िष्टा ऋहषयों ंने यि अहधकारपूणज घोषणा
की िै हक 'एक सवजव्यापक अहवनािी आत्मा की सत्ता िै। वि आत्मा स्वयं-प्रकाि, पूणज, आनन्दधन, अज,
अहवनािी, अमर तथा दिे-काल एवं हवचार-रहित िै। जब िरीर तथा मन आहद के सीहमत बन्धन नष्ट िो जाते िैं,
जब अहवनािी आत्मा के ज्ञान की प्रास्प्त से अज्ञान का आवरण दूर िो जाता िै, तब जीवात्मा परमात्मा के साथ
तिूप बन जाता िै। वि आत्मा अन्तयाजमी और मन, प्राण तथा इस्ियों ंका प्रेरक िै। मन आत्मा से िी प्रकाि प्राप्त करता िै।

जीवात्मा भौहतक हवज्ञान की मयाजदा से परे िै। वि जड हवज्ञान की पहुाँच से भी परे िै। मनुष्य वि जीवात्मा
िै, हजसने इस थथूल िरीर को धारण कर रखा िै। जीवात्मा अत्यन्त सूक्ष्म िै। वि आकाि, मन तथा िस्क्त से भी
हविेष सूक्ष्म िै। चैतन्य तथा ज्ञान आत्मा के स्वभाव िैं, िरीर के निीं।ं चैतन्य िी आत्मा के अस्स्तत्व का प्रमाण िै।
मनुष्य का व्यस्क्तत्व तो अजर, अमर, सवजव्यापक, अहवभाज्य अथवा ब्रह्म का आंहिक प्रकट स्वरूप िै। मनुष्य के
अन्दर रिने वाला अमर अंि आत्मा िै।

िे अज्ञानी मानव! अमर आत्मा का हनषेध करने वाले ग्रन्थों ंका आधार ले कर तुम पथ-भ्रष्ट िो गये िो ।
अब इस मोि-हनिा से जग जाओ। अपने नेत्र खोलो । तुमने तो अपने हलए नरक में थथान सुरहक्षत कर हलया िै और
उस अन्धतम प्रदिे में जाने के हलए सीधा पारपत्र प्राप्त कर हलया िै। स्वगज का िार बन्द करने वाले हनकृष्ट ग्रन्थों ं
को पढ़ने से ऐसा हुआ िै। इन्िें अहि को भेंट कर दो तथा गीता एवं उपहनषदों ंको पढ़ो। हनयहमत जप, कीतजन तथा
ध्यान करो और इस भााँहत अपने बुरे संस्कारों ंको आमूल नष्ट कर िालो। तभी तुम हवनाि से सुरहक्षत रि सकोगे।

इस िरीर के साथ तादात्म्य-सम्बन्ध थथाहपत न करो। तुम यि नािवान् िरीर निीं ंिो। तुम तो अहवनािी
आत्मा िो। तुम आत्मा से तादात्म्य-सम्बन्ध थथाहपत करो। 'तत्त्महस' - 'वि आत्मा तुम िो।' इसका अनुभव करो।
इसका साक्षात्कार करो तथा मुक्त बनो।

१०. मूच्छाज्हनिा तथा मृतुयु

मूर्चजछा में पडे हुए व्यस्क्त के हवषय में ऐसा निीं ंकिा जा सकता िै हक वि जाग रिा िै; क्योंहक वि अपनी इस्ियों ंके िारा बाह्य हवषयों ंको देख निीं ंसकता िै। मूच्छाज दूर िोने पर जब वि व्यस्क्त पुनिः चेतना प्राप्त करता

ैं, तब वि किता ि◌ै हक 'मैं गिन अन्धकार में पड गया था। मुझे हकसी भी वसुतु का भान न था।' जाग्रत मनुष्य अपने ि◌रीर को सीधा खडा रखता ि◌ै; परनुतु मूस्च्छजत ि◌ोने वाले व्यस्क्त का ि◌रीर नीचे लुढ़क जाता ि◌ै।

मूस्च्छजत व्यस्क्त स्वप्न की अवथथा में ि◌ै-ऐसा निीं ◌ंकिा जा सकता ि◌ै; क्योंहंक वि पूणज रूप से ि◌िबेी ि◌ो जाता ि◌ै। 'वि मनुष्य मर गया ि◌ै' ऐसा भी निीं ◌ंकिा जा सकता ि◌ै; क्योंहंक उसमें प्राण–स्क्त ि◌ोती ि◌ै और उसका रीर गरम ि◌ोता ि◌ै। उसके श्वासोच्छवास भी चलते रिते ि◌ैं।

जब मनुष्य अचेत ि◌ोता ि◌ै और जब लोगों ◌ंको यि ि◌ंका ि◌ोती ि◌ै हक वि मनुष्य जीहवत ि◌ै अथवा मर गया ैं, तब लोग उस मनुष्य के ि◌रीर में गरमी ि◌ै या निीं–इस बात का पता करने के हलए उसकी छाती पर ि◌ाथ रखते ैं और उसकी नाक के पास भी ि◌ाथ रखते ि◌ैं हक हजससे यि मालूम ि◌ो सके हक उसका श्वासोच्छवास चल रि ि◌ै अथवा निीं।◌ं यहद लोगों ◌ंको ऐसा मालूम ि◌ो जाये हक मनुष्य के ि◌रीर में गरमी निीं ◌ंि◌ै और वि श्वास निीं ◌ंले रि ि◌ै, तब वे लोग यि हनष्कषज हनकालते ि◌ैं हक मनुष्य मर गया ि◌ै। इसके हवपरीत यहद लोगों ◌ंको गरमी और श्वास का पता चलता ि◌ै, तो उनें हवश्वास ि◌ोता ि◌ै हक मनुष्य मरा निीं ◌ंि◌ै। उसके मुख पर ठण्ढा जल हछडकते ि◌ैं। इससे वि मनुष्य ि◌ि में आ जाता ि◌ै। इस भााँहत मूस्च्छजत व्यस्क्त मरा हुआ मनुष्य निीं ◌ंि◌ै; क्योंहंक वि हफर चेतना प्राप्त कर जीहवत ि◌िता ि◌ै।

हकतनी ि◌ी बार ऐसा ि◌ोता ि◌ै हक मूस्च्छजत ि◌ोने पर मनुष्य बडी देर तक श्वास निीं ◌ंलेता। उसका ि◌रीर थर-थर कााँपता रिता ि◌ै। उसका चेिरा भयंकर प्रतीत ि◌ोता ि◌ै। उसकी आाँखों ◌ंकी टकटकी बंध जाती ि◌ै। परनुतु हनहित मनुष्य ि◌ान्त और सुखी हदखायी पडता ि◌ै। वि हनयहमत रूप से श्वासोच्छवास लेता ि◌ै। उसके नेत्र मूाँदे ि◌ोते ि◌ैं। उसके ि◌रीर में प्रकम्पन निीं ◌ंि◌ोता ि◌ै। हनहित व्यस्क्त को एक उाँगली के स्पिज मात्र से ि◌ी जगाया जा सकता ि◌ै; परनुतु मूच्छाज में पडे हुए व्यस्क्त को लाठी के आघात से भी निीं ◌ंउठा सकते। मूच्छाज बाह्य कारणों ◌ंसे भी आती ि◌ै। हिर पर लाठी का प्रिार अथवा इसी प्रकार के अन्य आघातों ◌ंके कारण ि◌ी मूच्छाज उत्पन्न ि◌ोती ि◌ै; परनुतु हनिा थकावट के कारण आती ि◌ै। मूच्छाज को 'अधज-सुषुस्प्त' किते ि◌ैं। इसका तात्पयज यि निीं ◌ंहक हनिा की भााँहत वि ब्रह्म-सुख का आधा अनुभव करता ि◌ै। इसका अथज इतना ि◌ी ि◌ै हक मूच्छाज की दिा हनिा की दिा से आधे अंि में हमलती-जुलती ि◌ै अथाजत् मनुष्य जब मूच्छाजवथथा में ि◌ोता ि◌ै, तब वि एक ओर तो प्रगाढ़ हनिा की दिा में ि◌ोता ि◌ै और दूसरी ओर वि मृतुयु की दिा में पडा ि◌ोता ि◌ै-ऐसा किा जा सकता ि◌ै। वास्तव में मूच्छाज मृतुयु का ि◌ार ि◌ी ि◌ै। यहद उसका कोई प्रारि कमज ि◌ेष रि गया ि◌ोता ि◌ै, तब तो वि ि◌ि◌ो में आता ि◌ै अन्यथा मृतुयु को प्राप्त ि◌ोता ि◌ै।

इस मूच्छाजवथथा की आयुवेद के वैद्यों ◌ंतथा ऐलोपैथी के ि◌ाक्टरों ◌ंने भली-भााँहत ि◌ोध की ि◌ै। सामान्य अनुभव से भी इसका ज्ञान ि◌ो जाता ि◌ै।

जाग्रत दिा, स्वप्न दिा, प्रगाढ़ सुषुस्प्त की दिा तथा मूच्छाज की दिा-इन समूपूणज दिाओं ◌ंका मूक साक्षी ब्रह्म ि◌ै। वि तुम्हारा अन्तरात्मा ि◌ै। वि अमर एवं अहवनािी ि◌ै। उस ब्रह्म के साथ तादात्म्य-सम्बन्ध थथाहपत करो। रीर की सभी दिाओं ◌ंका अहतिमण कर सदा-सवजदा के हलए सुखी तथा आनन्दमय बन जाओ।

हितीय प्रकरण

मृतुयु के पित् जीवात्मा की यात्रा

१. मृतुयु के पित् जीवात्मा की यात्रा (क)

जीवात्मा प्राण, मन तथा इस्यिों ंके साथ अपने पूवजि–रीर को त्याग देता िै और एक नवीन िरीर धारण करता िै। अहवद्या, िुभ-अिुभ कमज तथा पूवज-जन्मों ंके संस्कारों ंको भी वि अपने साथ िी ले जाता िै।

हजस प्रकार कीडा दूसरी घास पर अपने पााँवों ंको हटका कर िी पिले की घास की पकड को छोडता िै, वैसे िी इस वतजमान िरीर को छोडने के पिले जीवात्मा को आने वाले िरीर का भान रिता िै। सांख्य मत के अनुसार 'जीव तथा इस्यिााँ-दोनों ंिी व्यापक िैं और जब नया िरीर धारण करना िोता िै, तब कमज के अनुरूप िी नये िरीर का कायज प्रारम्भ िो जाता िै।' बौद्ध मत के अनुसार 'नये िरीर में आत्मा इस्यिों ंके हबना अकेले िी कायज प्रारम्भ करता िै तथा नये िरीर की भााँहत नयी इस्यिों ंकी रचना िोती िै। वैिेहषकों ंके मतानुसार 'अकेले मन िी िरीर में प्रवेि करता िै।' हदगम्बर जैन मत के अनुसार 'हजस प्रकार एक तोता एक वृक्ष को छोड कर दूसरे वृक्ष पर उड जाता िै, उसी प्रकार अकेला जीवात्मा पुराने िरीर को छोड कर नये िरीर में चला जाता िै।' ये समूपूणज मत समीचीन निीं ंिैं और ये वेद-हवरुद्ध भी िैं। 'जीवात्मा मन, प्राण, इस्यि तथा सूक्ष्म भूत अथवा तन्मात्राओं ंके साथ िी पुराने िरीर से चला जाता िै' - यि हवचार िी ठीक िै। जीवात्मा नये िरीर के हलए बीज-रूप सूक्ष्म भूतों ंया तन्मात्राओं ंको अपने साथ ले जाता िै। ये सभी तन्मात्राएाँ जीवात्मा के साथ िी जाती िैं।

जब जीवात्मा िरीर का त्याग करता िै, तब सबसे पिले मुख्य प्राण िरीर छोड देता िै और तब उसका अनुसरण करते हुए दूसरे सभी प्राण भी चले जाते िैं। ये सब प्राण तन्मात्राओं ंकी भूहमका अथवा मूल-आधार के हबना हटक निीं ंसकते िैं। तन्मात्राएाँ िी प्राण के संचरण के हलए भूहमका तैयार करती िैं।

जब प्राण दूसरे िरीर में जाता िै, तब विााँ केवल आनन्द िी रिता िै। हवषयों ंकी तन्मात्राएँ प्राणों ंका विान बनती िैं। जिााँ तन्मात्राएँ िोती िैं, विीं ंइस्यि तथा प्राण भी िोते िैं। वे कभी भी हवलग निीं ंिोते िैं। प्राण के
हबना जीवात्मा नये िरीर में प्रवि निीं ंकर सकता िै।

जब मरण-काल आ उपस्थथत िोता िै, तब प्रयाण करते हुए जीवात्मा के साथ जाने के हलए प्राण और इस्यिााँ हबलकुल हनस्ष्क्रय बन जाती िैं।

यज्ञ में आहुहत-रूप से अहपजत हकये जाने वाले दूध, घी इत्याहद पदाथज एक सूक्ष्म आकार ग्रिण करते िैं, हजन्ें अपूवज किते िैं। वे अपूवज यज्ञ करने वाले के साथ सम्बद्ध रिते िैं। मरण के पित् जीव जल के साथ संयुक्त ी किर प्रयाण करता िै। यज्ञ में आहुहत-रूप से हदये हुए जल इत्याहद पदाथज िी उस सूक्ष्म अपूवज के रूप में िोते िैं।

भेंट, तपजण के रूप में प्रदान हकया हुआ जल अपूवज के रूप में सूक्ष्म आकार धारण करता िै। यि अपूवज जीवात्मा से सम्बद्ध िोता िै और जीव को उसके पुण्य-फल प्राप्त कराने के हलए स्वगजलोक में ले जाता िै।

जो लोग यज्ञ-याग आहद करते िैं, वे स्वगज में देवताओं ंको आनन्द प्रदान करते िैं और उनके साथ स्वयं भी आनन्द भोगते िैं। वे पुण्यिाली व्यस्क्त देवताओं ंके साथ उनके सेवाभावी साथी के रूप में रिते िैं। वे लोग देवताओं ंके साथ रि कर देवों ंके आनन्द का उपभोग करते िैं और उस लोक में उनकी सेवा करते रिते िैं। वे लोग चिलोक में आनन्द भोगते िैं और जब उनका पुण्य समाप्त िो जाता िै, तब पृथ्वी पर पुनिः वापस आ जाते ैं।

जो जीव स्वगज से लौटते िैं, उनका संहचत कमज कुछ अविेष रिता िै और वि कमज िी उनके जीवन का कारण बनता िै। जीव के कमों का एक संहचत भाग िोता िै, हजससे उसने अभी भोगा निीं ंिै। उस संहचत कमज की स्क्त से जीवात्मा इस भूलोक में वापस आता िै। कमज-राहि में जो पुण्य-कमज िोते िैं, वे पुण्य फल के भोग के हलए जीव को चिलोक में ले जाते िैं, तब चिलोक में भोगों ंके हलए प्राप्त जल-रूप िरीर हपघल जाता िै। हजस भााँहत सूयज-रस्श्मयों ंसे हिम-उपल हपघल जाता िै, हजस भााँहत अहि के ताप से घी हपघल जाता िै, उसी भााँहत अब स्वगज के भोगों ंका अन्त आने वाला िै-इस हवचार से उत्पन्न क्लेि के कारण जल-रूप िरीर भी गल जाता िै। इसके अनन्तर अविेष कमों के आधार पर जीव नीचे आ जाता िै।

छान्दोग्य उपहनषद् (५-१०-७) में िम देखते िैं हक 'जो जीव अपने पूवज-जन्मों ंमें अच्छे आचरण वाले िोते ैं, वे िीघ्र िी उत्तम योहन को प्राप्त िोते िैं। वे ब्राह्मण योहन, क्षहत्रय योहन अथवा वैश्य योहन प्राप्त करते िैं तथा जो अिुभ आचरण वाले िोते िैं, वे तत्काल अिुभ योहनयों ंको प्राप्त िोते िैं। वे कुत्ते की योहन अथवा िूकर की योहन प्राप्त करते िैं।'

सूमृहत बतलाती िै हक हभन्न-हभन्न वणाजश्रम के लोग अपने-अपने धमज का अनुष्ठान करते िैं। वे लोग अपने पुण्य-कमों का फल भोगने के हलए इस जगत् से परलोक को चले जाते िैं। अपने िेष रि हुए संहचत कमज-फल भोगने के हलए जब वे पुनिः जन्म लेते िैं, तब वे हविेष वणज, उत्तम कुल, अहधक सौन्दयज, दीघज आयु, ज्ञान, चररत्र, समृस्द्ध, सुख-सुहवधा तथा कुिलता आहद गुण प्राप्त करते िैं अथाजत् जीव अपने संहचत कमज के अनुसार िी जन्म लेते िैं।

ब्रह्म–त्या आहद हकतने िी ऐसे जघन्य पाप िैं, हजनके कारण कई जन्म लेने पडते िैं। जीव हजस मागज से ऊपर गया िोता िै, कुछ दूर तक तो वि उसी मागज से नीचे आता िै और हफर उसका मागज बदल जाता िै।

पापी चिलोक में निीं ंजाते िैं। वे लोग यमलोक को जाते िैं और विााँ अपने बुरे कमों का फल भोग कर पुनिः भूलोक में वापस आ जाते िैं।

जो पाप करते िैं, उनके हलए नरक भयजनक लगता िै। रौरव, मिारौरव, वह्न, वैतरणी तथा कुम्भीपाक नरक अथथायी िैं। ताहमस्र तथा अन्ध ताहमस्र-ये दोनों ंनरक थथायी माने जाते िैं। हचत्रगुप्त तथा दूसरे यमदूत सातों ं नरकों ंकी देख-भाल रखते िैं। उन सातों ंनरकों ंके भी मुख्य हनयामक यमराज िी माने जाते िैं। हचत्रगुप्त तथा दूसरे यमदूत तो यमराज िारा हनयुक्त हकये हुए अधीक्षक तथा सिकारी िैं। वे सब यम के िासन तथा प्रभुत्व के अधीन कायज करते िैं। हचत्रगुप्त तथा अन्यान्य यमदूत यमराज से हनदेि प्राप्त करते िैं।

२. तृतीय थथान

श्रुहत किती िै हक जो ज्ञान के साधन िारा देवयान मागज िारा ब्रह्मलोक में निीं ंजाते, न कमज के साधन िारा हपतृयान मागज िारा चिलोक को िी जाते िैं, अथाजत् जो इन दोनों ंमागों तथा साधनों ंसे वंहचत रि जाते िैं, वे
हनम्न योहन में बारम्बार जन्मते तथा मरते रिते िैं। इस भााँहत पाप करने वाले तृतीय थथान को जाते िैं। श्रुहत का
वचन िै हक जो इन दोनों ंमें से हकसी मागज िारा निीं ंजाते, वे बारम्बार जन्मने-मरने वाले कीट-पतंग आहद क्षुद्र जीव-जन्तुओं ंमें जन्म लेते िैं। इनके हवषय में िी ऐसा किा जाता िै-"उत्पन्न िोओ और मरो।" यिी उनका तृतीय थथान िै। पापी लोग जीव-जन्तु की भााँहत क्षुद्र प्राणी माने जाते िैं; क्योंहक वे कीट-पतंगों ंके िरीर धारण करते िैं जीवात्माएँ हफर इसी मागज से हजस प्रकार वे गये थे, उसी प्रकार लौटते िैं। वे पिले आकाि को प्राप्त िोते [illegible] वे अभ्र िो कर मेघ िोते िैं, मेघ िो कर बरसते िैं। वे पुण्यिाली जीव आकाि, वायु इत्याहद पदाथज-रूप निीं ंबन जाते; अहपतु वे तो उन पदाथों के सदृश्य िी बनते िैं। वे आकाि के सदृि सूक्ष्म रूप धारण करते िैं और इससे वे वायु की सत्ता अथवा प्रभाव में आ जाते िैं और विााँ से आगे चल कर वे धूम्र के सम्पकज में आ कर उससे हमल जाते िैं और इस प्रकार जीवात्मा इनसे िो कर िीघ्र िी हनकल जाता िै।

"मेघ िो कर वि बरसता िै। तब वि जीव धान, जौ, औषहध, वनस्पहत, हतल, उडद आहद िो कर उत्पन्न िोता िै। इस प्रकार यि हनष्क्रमण हनिय िी कष्टप्रद िै। उस अन्न को जो-जो भक्षण करता िै, जो-जो वीयज-सेचन करता िै, तद्रूप िी वि जीव िो जाता िै" (छान्दोग्य उपहनषद्: ५-१०-५)।

आकाि, वायु, धूम्र, अभ्र, मेघ आहद रूपों ंमें जब जीवात्मा को यात्रा करनी िोती िै, तब उसे अल्प समय िी लगता िै; परन्तु बाद में उसे जब जौ, वीयज, गभजात हििु के रूप में हनष्क्रमण करना िोता िै, तब उसे इसमें पूवाजपेक्षा बहुत अहधक समय लगता िै और साथ िी कष्ट भी बहुत अहधक िोता िै।

नारदीय पुराण किता िै- "जो पुण्यिाली जीव ऊपर से नीचे आना आरम्भ करता िै, उसे माता के उदर में प्रवेि करने में एक वषज लग जाता िै; क्योंहक इसके पूवज उसे अनेक थथानों ंमें भटकना पडता िै।" धान्य तथा औषहधयों ंमें उनका अपना जीवात्मा रिता िै। ये पुण्यिाली जीव उन जीवात्माओं ंके सम्पकज में आते िैं; परन्तु वे उनके सुख-दुःख के भागी निीं ंबनते। वे पुण्यिाली जीवात्माएँ तो धान्य के पौधों ंके केवल सम्पकज में िी आते िैं।

धान्य तथा औषहधयों ंको तो ये जीवात्माएँ अपने हवराम-थथल के रूप में िी उपयोग करते िैं। वे उनके साथ तद्रूप निीं ंबनते। वे अपनी हवशेषता खो निीं ंदेते।

छान्दोग्य उपहनषद् की यि घोषणा ि-ै "उस अन्न को जो-जो भक्षण करता िै और जो-जो वीयज-सेचन करता िै, तिूप िी वि जीव िो जाता िै" (५-१०-६)।

जो पुरुष वीयज-सेचन करता िै, उसके साथ जीव सम्पकज में आता िै। ऊपर से उतरने वाला जीवात्मा उसका आिार बन कर उसका वीयज बनता िै। जीवात्मा पुरुष के अन्दर तब तक िी रिता िै, जब तक हक पुरुष का वीयज िी के उदर में सेचन निीं िकया जाता िै। हजस धान्य में जीवात्मा आया िोता िै, विी धान्य जब पुरुष के भोजन में आता िै, तब उस धान्य से जो वीयज-रूप रस बनता िै, उसके साथ वि जीवात्मा सम्बन्ध में आता िै और उसके पररणाम स्वरूप वि अन्त में माता के उदर में िरीर धारण करता िै।

माता के उदर में वि जीवात्मा एक ऐसे समूपूणज हवकहसत िरीर को धारण करता िै, जो पूवज-संहचत कमों के फल भोगने के हलए उपयोगी िो। हजस पररवार में जीवात्मा को जन्म लेना िोता िै, उस पररवार के लोग भी उसके संहचत कमों से स्वभावतिः िी सम्बस्न्धत िोते िैं। इस हवषय में छान्दोग्य उपहनषद् किती ि-ै"उन जीवों ंमें जो अचे्छे आचरण वाले िोते िैं, वे िीघ्र िी उत्तम योहन को प्राप्त िोते िैं। वे ब्राह्मण योहन, क्षहत्रय योहन अथवा वैश्य योहन प्राप्त करते िैं; परनतु जो अिुभ आचरण वाले िोते िैं, वे कुते्ते की योहन, िूकर की योहन अथवा चाण्डाल की योहन प्राप्त करते िैं" (५-१०-७)।

पुनजजन्म की इस समूपूणज योजना को बतलाने का अहभप्राय यि िै हक जो सवोत्तम सुख एवं आनन्द-रूप िै, वि एकमेव आत्मा िी िै। केवल विी तुम्हारी खोज का हवषय िोना चाहिए। िोक-सन्ताप-मय इस संसार में तुम्हें ग्लाहन उत्पन्न िो और इस भााँहत तुम आत्मा के िाश्वत सुख को प्राप्त करने के हलए िीघ्र िी तत्पर बनो।

अरे अज्ञानी जन, रे मूखज मानव, ओ दुिःखी जीव, िे मोिापन्न आत्मा, अज्ञान की दीघज हनिा से तुम जग जाओ। अपनी आाँखें खोलो। मोक्ष प्राप्त करने के हलए साधन-चतुष्टय का हवकास करो और मानव जीवन के चरम तथा परम लक्ष्य को इस जीवन में िी प्राप्त कर लो। िरीर-हपंजर से बािर हनकल आओ । न मालूम हकस अनाहद काल से तुम इस हपंजर में आ कर फाँस गये िो। तुम बारम्बार माता के उदर में हनवास करते रिते िो। अहवद्या की इस ग्रस्ि का उचे्छेदन कर िालो और िाश्वत सुख के साम्राज्य में हवचरण करो।

३. कमज तथा पुनजजन्म (क)

इस थथूल िरीर से आत्मा का हवलग िो जाना िी मृतुयु किलाती िै। इस िरीर के िी कारण मनुष्य को सब िोक-सन्ताप प्राप्त िोते िैं। योगी को मृतुयु से भय निीं ंलगता; क्योंहंक वि तो अपने-आपको इस अजर-अमर सवजव्यापक आत्मा से एक-रूप बना लेता िै।

कमज और पुनजजन्म-ये दोनों ंहिन्दू ििा के िी निीं,ं बौद्ध ििा के भी मिान् स्तम्भ िैं। जो मनुष्य इन दोनों ंमिान् सत्यों ंमें हवश्वास निीं ंकरता, वि इन दोनों ंधमो के तथ्य को हृदयंगम निीं ंकर सकता िै।

यहद तुम िोक, दुिःख, कष्ट तथा मृतुयु के रिस् को जान जाओ, तो तुम दुिःख और िोक का अहतिमण कर सकोगे। मृतुयु एक ऐसी घटना िै जो मानव-मन को गम्भीर हचन्तन में प्रवृत्त करती िै। मृतुयु का अध्ययन िी वास्तव में दिजन का हवषय िै। सभी दािजहनक हवचारधाराएाँ मृतुयु की घटना से उत्पन्न हुई िैं। भारत के सवोत्तम जीवन-दिजन का प्रारम्भ भी मृतुयु के हवषय से िी िोता िै। तुम भगवद्गीता, कठोपहनषद् तथा छान्दोग्य उपहनषद्

का परर्रीलन करो। उनमें इस हवषय का वणजन िै। मृतुयु तो सत्य के ध्ेयेय-रूप िाश्वत ब्रह्म की खोज तथा उसके साक्षात्कार के हलए आह्वान िै।

मृतुयु तो िरीर का पररवतजन मात्र िै। जीवात्मा इस िरीर को व्यवहृत वि की भााँहत उतार फेंकता िै। परमानन्द सुख की प्रास्प्त के हलए मनुष्य हनत्य पररिुद्ध तथा पूणज बनता रिता िै। इस हिया में इसे करोडों ंवषज लग जाते िैं

हिन्दू-धमज के अनुसार जीवन तो हनत्य-हनरन्तर प्रवाविील प्रगहत िै, हजसका कभी भी अन्त निीं।ं जो कुछ भी पररवतजन िो रिा िै, वि तो आवरणों ंतथा बाह्य िरीर का िी पररवतजन िै। आत्मा तो अमर िै। यि जीव अपने कमाजनुसार एक के अनन्तर दूसरा रूप धारण करता रिता िै। हिन्दू धमज दो मौहलक हसद्धान्तों ंके आधार पर हटक रिा िै : एक तो कमज का हनयम तथा दूसरा पुनजजन्म का हसद्धान्त। मृतुयु तो हवकास के हलए एक आवश्यक प्रहिया िै। हजस प्रकार तुम एक घर से हनकल कर दूसरे घर में प्रवेि करते िो, उसी प्रकार जीवात्मा भी अनुभव प्राप्त करने के हलए एक िरीर से हनकल कर दूसरे िरीर में प्रवेि करता िै।

मृतुयु के उपरान्त, जो जीव िरीर से उत्क्रमण करता िै, उसको प्ेरेत की संज्ञा दी जाती िै। वि परलोक की यात्रा करता िै। थथूल िरीर से हवलग हुआ जीव दि हदन तक अपने हप्रय एवं पररहचत थथानों ंमें चक्कर लगाता रिता िै। इन दि हदनों ंतक उसे भूत का आकार हमलता िै। इस अवहध में उसके सूक्ष्म अथवा हलंग–िरीर को प्रहतहदन आकार हमलता रिता िै तथा उसके मस्तक, आाँख तथा दूसरे अवयवों ंका गठन िोता रिता िै। हपतरों ं को तीथज-थथानों ंमें श्राद्ध तथा तपजण के रूप में जो-कुछ हतल, जल इत्याहद हदया जाता िै, उससे इस हलंग–िरीर का पररपोषण िोता िै।

ग्यारिवें हदन जीव को पूरा आकार प्राप्त िो जाता िै। अब वि जीव मृतुयुदेव यमराज की सभा में जाने के हलए प्रयास आरम्भ करता िै। यमराज के यिााँ पहुाँचने में जीव को मरने के पिात् एक वषज लग जाता िै। यि मागज हवघ्न-बाधा तथा कष्टों ंसे आकीणज िै। जो मनुष्य बहुत िी कुत्स्सत कमज हकये िोता िै, उसे बहुत कष्ट भोगने पडते िैं; परनुतु यहद मृत व्यस्क्त के पुत्र इत्याहद स्व-जन उस वषज में उसके िेतु हपण्डदान तथा श्राद्ध-तपजण की हिया करते िैं और पहवत्र हविान् ब्राह्मणों ंको भोजन इत्याहद अहपजत करते िैं, तो उस जीवात्मा के कष्ट कुछ कम िो जाते िैं और उसकी मृतुयु-यात्रा सरल िो जाती िै। मृत व्यस्क्त का पुत्र हबना रुदन के िी हपण्डदान दे। जो जन्मा िै, वि मरेगा अवश्य और जो मर गया िै, उसका जन्म िोना भी अवश्यम्भावी िै। यि अपररिायज िै। इसका कोई उपाय निीं।ं अतिः तुम्हें उसके हलए िोक निीं ंकरना चाहिए। िदि-हिया को बन्द निीं ंरखना चाहिए। बारिवें हदन पुत्र को सहपण्ड श्राद्ध कमज अवश्य करना चाहिए और सोलि मास तक अन्वाायज-श्राद्ध (माहसक श्राद्ध) करना चाहिए। पुत्र जो कुछ श्राद्ध-तपजण आहद की हिया करता िै, उससे मृत आत्मा को न्याय-सभा में जाने के हलए मागज में पोषण हमलता िै।

मागज में उग्र गरमी पडती िै, उस जीव को बहुत िी ताप लगता िै; परनुतु उसका पुत्र ग्यारिवें हदन जो छाते का दान करता िै, इससे उसके हिर पर मधुर छाया िोती िै। वि मागज कण्काकीणज िै, परनुतु जूते के दान के प्रहतफल से वि अश्वारोिी बन आगे बढ़ता िै। विााँ पर िीत, उष्णता तथा वात का भयावि क्ेलेि िोता िै; परनुतु वि-दान की सियता से वि मृत आत्मा सुखपूवजक अपने मागज पर चलता रिता िै। विााँ भीषण गरमी पडती िै और जल भी अप्राप्य िै; परनुतु मृत व्यस्क्त के पुत्र ने जो जल-पात्र दान हकया था, तृहषत िोने पर वि जीव उस दान की सियता से जल-पान करता िै। पुत्र को इसी भााँहत गो-दान भी करना चाहिए।"

यमलोक के प्रधान लेखपाल हचत्रगुप्त िैं। वे भाग्य का लेखा-जोखा रखते िैं। जब एक वषज पूरा िो जाता िै, तब मृत आत्मा इस पृथ्वी लोक में जो-जो भले-बुरे कमज हकये िोता िै, उसे हचत्रगुप्त बतलाते िैं। उस हदन वि मृत आत्मा अपने प्रेेतत्व का पररत्याग कर देता िै। उस हदन वि हपतृ की उच्च स्थथहत को प्राप्त िोता िै।

हपतृ-पूजन हिन्दू-धमज के मूलभूत हसद्धान्तों ंमें से एक िै। हपतरों ंकी तीन स्थथहतयााँ हगनी जाती िैं : हपता, हपतामि तथा प्रहपतामि और माता, मातामिी तथा प्रमातामिी। इस लोक में जो जीहवत िै, उसके ये तीनों ंिी हपतृ माने जाते िैं। जो आत्मा अपने इिलौहकक जीवन में िुभ कमज करता िै, वि मृत्यु के अनन्तर हपतृलोक में अपने पूवजों ंसे सम्बन्ध प्राप्त करता िै और उनके साथ आनन्दपूवजक रिता िै।

हजन लोगों ंने कुसंग, अज्ञान अथवा अिंकार के कारण श्राद्ध, तपजण तथा दूसरे धाहमजक कायज करना छोड हदया िै, उन्ोंनें वास्तव में अपने पूवजों ंकी तथा अपनी भी बहुत बडी क्षहत पहुाँचायी िै। उन्ें अब जग जाना चाहिए। अभी से िी उन्ें इन धाहमजक कृत्यों ंको प्रारम्भ कर देना चाहिए। अभी भी अहधक हवलम्ब निीं ंहुआ िै।

संवत्सरी, श्राद्ध, तपजण तथा हपतृ-पूजन आहद धाहमजक कृत्यों ंके अनुष्ठान िारा तुम अपने पूवजों ंके िुभ आहिष प्राप्त करो।

४. मृतूयूपरान्त जीवात्मा कैसे िरीर छोडता िै

जब मृत्यु का समय आ पहुाँचता िै, तब श्वास-हिया में कहठनाई मालूम िोती िै और िरीर स्थथत जीवात्मा िब्द करता-करता बािर हनकल जाता िै। हजस प्रकार अहधक भार से लदी हुई गाडी िब्द करती िै, उसी प्रकार जब प्राण छूटते िैं, तब जीवात्मा िब्द करता िै।

जीवात्मा की उपाहध सूक्ष्म िरीर िै। हजस प्रकार इस िरीर में रिते हुए जीवात्मा जाग्रत तथा स्वप्न की अवथथाओं ंमें हवचरण करता रिता िै, उसी भााँहत मृत आत्मा इस लोक और परलोक में भी हवचरण करता िै। यि जन्म से मृत्यु पयजन्त गहत करता रिता िै। जब तक इिलौहकक जीवन में रिता िै, तब तक वि थथूल िरीर तथा इस्ियों ंसे सम्बन्ध रखता िै; परन्तु जब मरता िै, तो वि थथूल िरीर से पृथक् िो जाता िै। इस िरीर से हजस समय प्राण हवलग िोते िैं, उसी समय जीवात्मा भी तुरन्त हवलग िो जाता िै। सवोत्तम स्वयं-प्रकाि परमात्मा िी जीवात्मा का हनयमन करता िै। आत्मा के प्रकाि के आधार पर िी मनुष्य बैठता िै, उठता िै तथा कायज करता िै।

सूक्ष्म िरीर का मुख्य आधार-रूप यि प्राण िै। स्वयं-प्रकाि आत्मा से िी प्राण–स्क्त को प्रेेरणा हमलती ै। ऐसा हवहदत िोता िै हक जब सूक्ष्म िरीर हनष्क्रमण के हलए उद्यत िोता िै, तब आत्मा भी उसके साथ िो लेती ै; अन्यथा सूक्ष्म िरीर से संयुक्त जीवात्मा भार से लदी हुई गाडी की भााँहत आवाज हकस प्रकार कर सकता िै? वि इसहलए आवाज करता िै हक प्राण–स्क्त के अलग िोने से जो असह्य पीडा िोती िै, उसके कारण जीवात्मा की सूमृहत हवलुप्त िो जाती िै। इस समय जो पीडाएाँ सिन करनी पडती िैं, उनके कारण यि जीवात्मा मन की असिायावथथा में आ पडता िै। अतः जब मरण-काल आता िै, तब वि जीवात्मा अपने कल्याण के हलए कोई भी साधन अपना निीं ंसकता िै। अन्त-काल में आचरण करने योग्य साधनों ंका अभ्यास करने के हलए उसे पिले से ी सावधान रिना चाहिए; क्योंहक उस समय वि ईश्वर का हचन्तन निीं ंकर सकता।

ज्वर तथा अन्यान्य व्याहधयों ंसे आिान्त िो कर यि िरीर वृद्धावथथा में कृि एवं दुबजल िो जाता िै। ज्वर तथा अन्य कारणों ंसे जब यि िरीर अत्यन्त कृि िो जाता िै, तब भार-बोहझल गाडी की भााँहत जीवात्मा िब्द करता-करता उत्क्रमण करता िै।

मृतुयु के कारण अनेक एवं हवहवध िैं। मनुष्य सवजदा काल के मुख में िै। जब वि जरा भी तैयार निीं ंरिता, तभी मृतुयु अकस्मात् उसे संसार से उठा लेती िै। मनुष्य सदा ऐसा सोचता रिता िै हक वि मृतुयु से बच जायेगा अथवा यहद वि यि मानता भी िै हक मृतुयु अवश्यमेव आनी िै, तो भी वि ऐसा हवश्वास करता िै हक वि बहुत हदनों ं के पिात् िी आयेगी। जैसे आम, अंजीर अथवा पीपल के वृक्ष का फल अपनी िाखा से अलग िो जाता िै, उसी भााँहत अनन्त-रूप जीवात्मा उस िरीर के अंगों ंसे समूपूणजतया अलग िो जाता िै। तब वि जीवात्मा अपनी प्राण-स्क्त को हवकहसत करने के हलए, हजस मागज से हविेष िरीर में आया था, उसी मागज से पीछे आता िै। वि थथूल रीर के नेत्र आहद अंगों ंसे पूणजतया अलग िो जाता िै। इस िरीर से अलग िोते समय वि जीवात्मा अपनी प्राण-स्क्त की सियता से इस थथूल िरीर का रक्षण निीं ंकर सकता। हजस भााँहत जीवात्मा थथूल िरीर तथा इस्ियों ं को छोड प्रगाढ़ हनिा में प्रवेि करता िै, उसी भााँहत मरण-काल में भी वि इस थथूल िरीर का संग छोड देता िै और दूसरे िरीर से सम्बन्ध जोडता िै। हजस प्रकार एक व्यस्क्त स्वप्न से जागरण में, जागरण से स्वप्न में और उसमें से हफर प्रगाढ़ हनिा में बारम्बार अवथथा-पररवतजन करता रिता िै, उसी भााँहत यि जीवात्मा भी बारम्बार एक िरीर से दूसरे िरीर में चला जाता िै। यि जीवात्मा भूतकाल में ऐसे अनेक िरीरों ंमें से िो कर आया िै और भहवष्य में भी इसी भााँहत इसका अनेक िरीरों ंमें प्रवेि करना चालू रिेगा। यि जीवात्मा अपने भूतकालीन कमज, ज्ञान आहद के आधार पर िी भहवष्य में जन्म लेता िै । अपनी प्राण–स्क्त को प्रकट करने के हलए िी यि जीवात्मा एक िरीर से दूसरे िरीर में जाता िै। अपनी प्राण–स्क्त के आधार पर िी यि जीवात्मा अपने कमों की फल-भोग आहद इच्छाओं ंको पूरा करता िै। अपने कमों के फल भोगने में यि प्राण–स्क्त केवल हनहमत्त कारण िै और इसीहलए यि हविेषता बतलायी िै हक 'अपनी प्राण–स्क्त को प्रकट करने के हलए।'

अपने कमों के फल के साक्षात्कार के हलए इस जीवात्मा ने अस्खल हवश्व को साधन-रूप में ग्रिण हकया िै और अपने इस ध्येय को हसद्ध करने के हलए वि एक िरीर से दूसरे िरीर में पहुाँच जाता िै। ितपथ ब्राह्मण बतलाता िै हक 'मनुष्य उस िरीर में जन्म लेता, जो उसके हलए हनमाजण हकया गया िै' (६-२-२-२७) । हजस भााँहत मनुष्य स्वप्न की दिा से जाग्रत दिा में आता िै, यि पररस्थथहत उसके सदृि िी िै, हजसमें हक एक िरीर से दूसरे रीर में आना िोता िै।

५. िरीर-त्याग करते समय जीवात्मा राजा के तुल् िै

जब हकसी देि का राजा अपनी राजधानी से अपने राज्य के हकसी थथान को देखने के हलए हनकलता िै, तब ग्राम के नेता लोग अन्न, जल तथा हनवास तैयार कर राजा के आगमन की प्रतीक्षा करते रिते िैं। वे किते िैं- "ये आये, ये आये।" उसी प्रकार जब जीवात्मा हनष्क्रमण के हलए उद्यत िोता िै, तब समूपूणज अहधदेव तथा अहधभूत, उसके हकये हुए कमों के फल के साधनों ंके साथ उस जीवात्मा की प्रतीक्षा करते िैं। वे देव जीवात्मा के योग्य सूक्ष्म रीर तैयार करते िैं और जीवात्मा उस िरीर से कमज का फल भोगता िै।

जब राजा एक प्रदेि से जाने वाला िोता िै, तब 'राजा यिााँ से जाने वाले िैं' - इतनी साधारण-सी बात जान कर िी अहधकारी लोग उस राजा से हमलने आते िैं। उसी प्रकार जब मरण-काल आ पहुाँचता िै और कमज-फल का भोक्ता जीवात्मा जाने वाला िोता िै, तब इस िरीर की इस्ियााँ ऐसा जान कर उससे हमलने जाती िैं। श्वासोच्छ्वास की हिया जब कष्टसाध्य िो जाती िै, उससे जीवात्मा चला जाना चािता िै, ऐसा जान कर इस्ियााँ उसके पास जा पहुाँचती िैं। वे इस्ियााँ िरीर का पररत्याग करने वाले अपने हनयामक जीवात्मा की आज्ञा से निीं,ं वरन् उसकी इच्छा जान कर िी उससे हमलने जाती िैं।

६. हनष्क्रमण की प्रहिया

यि पिले िी बतलाया जा चुका िै हक जब मरण-काल आ पहुँचता िै, तब यि जीवात्मा िरीर तथा इस्यिों ंको पूणजतया छोड देता िै। जब जीवात्मा हनबजल िो जाता िै और अपनी चेतना खो बैठता िै, तब इस्यिााँ उसके पास आ पहुँचती िैं। वास्तव में जीवात्मा हनबजल निीं ंपडता, अहपतु िरीर हनबजल पड जाता िै। 'जीवात्मा हनबजल पडता िै'- यि आलंकाररक अथवा लाक्षहणक वणजन िै, क्योंहंक जीवात्मा तो हनराकार िै, अतिः वि हनबजल निीं ंपडता। इसी भााँहत अचेतावथथा में भी समझना चाहिए। जब मरण-काल आ पहुँचता िै, तब जीवात्मा असिाय-सा मालूम िोता िै। ऐसा इस्यिों ंके बिार चले जाने के कारण िी िोता िै। इस असिायता का आरोप लोग जीवात्मा पर लगाते िैं। इसीहलए लोग किते िैं हक 'अरे, यि मनुष्य तो अचेत िो गया।'

जब मनुष्य मरणासन्न िोता िै, तब उसकी हभन्न-हभन्न इस्यिााँ अपने मूल कारण में लीन िो जाती िैं, इससे वे इस्यिााँ अपना कायज निीं ंकर सकतीं।ं मरण के साथ िी समूपूणज इस्यिााँ हृदय में लीन िो जाती िैं। इस हृदय को हृदय-कमल अथवा हृदयाकाि किा जाता िै। जब मनुष्य सुषुस्प्त में िोता िै, तब उसकी इस्यिााँ समूपूणज रूप से हृदय में हवलीन निीं ंिोतीं।ं सुषुस्प्त तथा मृतुयु में इतना िी भेद िै।

नेत्रेस्यि के हवषय में यि बात समझनी िै हक नेत्रेस्यि का अहधष्ठाता देव सूयज का एक अंि िै और जब तक मनुष्य जीहवत रिता िै, तब तक वि देव देखने की हिया चलाता िै। जब मनुष्य मर जाता िै, तब वि देव नेत्र की सिायता करना बन्द कर देता िै और अपने आत्मा सूयज में लीन िो जाता िै। इसी भााँहत अन्य सभी इस्यिां भी अपने-अपने देवों ंमें हवलीन िो जाती िैं-जैसे हक वाणी अहि में, प्राण वायु में इत्याहद। जब मनुष्य अन्य नवीन िरीर धारण करता िै, तब वे इस्यिााँ अपने अहधष्ठातृ देवों ंके साथ उस िरीर में अपना-अपना यथोहचत थथान ग्रिण करती िैं। इसी भााँहत इस्यिों ंके हवलीन िोने तथा उनके पुनिः प्रकट िोने की हिया त्तो प्रहतहदन की प्रगाढ़ हनिावथथा में िोती रिती िै। जब नेत्र का अहधष्ठाता देव समूपूणज रीहत से लीन िोने को तैयार िोता िै, तब मृतप्राय व्यस्क्त रूप-रंग निीं ंपिचान सकता। इस दिा में जीवात्मा प्रगाढ़ हनिावथथा की भााँहत प्रकाि से समूपूणज अंिििंका अिरण कर लेता िै।

मरणोनुमुख व्यस्क्त की िर एक इस्यि सूक्ष्म िरीर के साथ सम्बद्ध िो जाती िै। इसीहलए उसे देख कर आस-पास के लोग किते िैं हक 'अब वि देखता निीं ंिै।। इसी प्रकार इस्यिों ंके अहधष्ठाता सभी देव, एक के अनन्तर एक, अपने-अपने अंि को समित कर मूल-कारण में हवलीन िो जाते िैं। तब वि इस्यिााँ अपनी हिया बन्द कर देती िैं। इसके अनन्तर मरने वाला व्यस्क्त सुनता निीं,ं सूाँघता निीं,ं देखता निीं ंऔर न बोलता िी िै। वि अचेत िो जाता िै और तदनन्तर सदा के हलए अपनी चेतना खो बैठता िै। 'वि अमुक व्यस्क्त िै तथा वि अमुक जाहत-वणज का िै' यि उसे कभी स्मरण निीं ंिोता। इस भााँहत वि अपनी ज्ञान–स्क्त, सूमृहत तथा जागरण की चेतना खो देता िै। बाह्य जगत् उसको िून्य-सा उिहसत िोता िै। उसके अनन्तर इस्यिााँ हृदय में एकहत्रत िो जाती िैं।

सूक्ष्म िरीर में आत्मा की स्वयं-प्रकाि ज्ञान-ज्योहत हनत्य-हनरन्तर अपने हवहिष्ट रूप में हवभाहसत िोती रिती िै। यि सूक्ष्म िरीर उस आत्मा का एक सीहमत साधन िै, हजसका आधार ले कर आत्मा सापेक्ष सत्ता में अहभव्यक्त िोता िै और इस भााँहत वि आत्मा जन्म-मरण तथा आवागमन के पररवतजन का हवषय बनता िै।

७. जीवात्मा कैसे उत्क्रमण करता िै

जीवात्मा इस िरीर में रिते हुए जैसे कमज हकये रिता िै तथा जैसे अनुभव प्राप्त हकये रिता िै, उसके अनुरूप िीरीर से उसके हनष्क्रमण का मागज हभन्न-हभन्न िोता िै। यहद उसके िुभ कमों का संचय अहधक िै और उसी के अनुसार उसने ज्ञान भी प्राप्त हकया िै, तो उससे जीवात्मा को सूयज की ओर ले जाया जाता िै और वि जीवात्मा नेत्र के िारा िरीर त्यागता िै। यहद जीवात्मा हिरण्यगभज के लोक को जाने का अहधकारी िै, तो वि हिर िारा िरीर को छोडता िै। इसी प्रकार अपने भूतकाल के कमों तथा अनुभवों ंके अनुसार यि जीवात्मा िरीर के हभन्न-हभन्न मागों से उत्क्रमण करता िै।

परलोक को प्रयाण करने के हलए जब जीवात्मा दिे त्याग करता िै, तब प्राण भी उस िरीर को पररत्याग कर देता िै और प्राण िारा िरीर के पररत्याग करने के साथ िी दूसरी इस्ियााँ भी िरीर को छोड देती िैं। हजस प्रकार स्वप्नावथथा में जीवात्मा में स्वतन्त्र चेतना निीं ंिोती, उसी भााँहत मरण की दिा में भी जीवात्मा को भूतकाल के कायों की स्वतन्त्र सूमृहत निीं ंरि जाती; परन्तु कुछ हविेष सूमृहतयााँ बनी रिती िैं। यहद प्रत्येक जीवात्मा की चेतना स्वतन्त्र िो, तो वि अपने जीवन का अस्न्तम लक्ष्य प्राप्त कर ले। 'िमारे जीवन का लक्ष्य क्या िै' - इस हवचार में जो मनुष्य सतत संलि रिता िै, वि मरण-काल में जैसी भावना करता िै, वैसी अवथथा प्राप्त कर लेता िै। मृतुयु के समय एक भावना िोती िै, हजसमें उसके हचत्त की हविेष वृहत्त के रूप में उसके संस्कार िी िोते िैं। इस भावना के आधार पर िी जीवात्मा हविेष प्रकार का नवीन िरीर धारण करता िै। अतिः मृतुयु-काल में कमज-वासना से मुक्त रिने के हलए मोक्षकामी साधकों ंको अपने जीवन काल में योगाभ्यास, ज्ञान, हवज्ञान तथा सद्गुणों ंके अजजन में बहुत िी सावधान रिना चाहिए।

हजस जीवात्मा को परलोक की यात्रा करनी िोती िै, उसे सभी प्रकार के अनुभवों ंका ज्ञान िोता िै। हजन कमों को भुगतना तथा हजन कमों का त्याग करना िै, इस प्रकार के दोनों ंकमों का पूरा ज्ञान उसे िोता िै। उस जीवात्मा ने भूतकाल में जो-जो जन्म हलये थे और उन जन्मों ंमें जो-जो कमज हकये थे, उन सबका संस्कार उस जीवात्मा को िोता िै। नये जन्म में जीवात्मा के चररत्र-गठन में भूतकाल के ये संस्कार सहिय कायज करते िैं। भूतकाल के जीवन में हकये हुए कमों के जो संस्कार पडे िोते िैं, उनके आधार पर िी भहवष्य में प्राप्त िोने वाले नये जीवन के कायों का हनमाजण िोता िै। इस जीवन में हबना हविेष हिक्षा के िी इस्ियााँ कुछेक कायों में हनपुणता प्राप्त कर लेती िैं। सामान्यतिः ऐसा देखा जाता िै हक कुछ व्यस्क्त हचत्रकला में हविेष प्रवीण िोते िैं। वे हकसी प्रकार की हिक्षा प्राप्त हकये हबना भी सवजश्रेष्ठ हचत्रकार को भी मात दे देते िैं। इसके हवपरीत कुछ व्यस्क्त ऐसे िोते िैं जो हक एक काम की प्रचुर हिक्षा प्राप्त करने पर भी उसे निीं ंकर सकते िैं। यि सब पुरातन संस्कारों ंके प्रकट िोने अथवा अप्रकट िोने पर हनभजर करता िै।

जीवात्मा भहवष्य में कौन-सा जन्म लेगा, इसका आधार ज्ञान, कमज तथा पूवज-प्रज्ञा-इन तीनों ंपर रिता िै। अतिः प्रत्येक व्यस्क्त को चाहिए हक वि सद्गुणों ंका हवकास करे तथा सत्कमज करे, हजससे हक वि अहभलहषत भोगों ंके उपभोग के हलए इच्छानुकूल उपयुक्त िरीर धारण कर सके।

यद्यहप इस्ियााँ सवजव्यापक िैं और सब-कुछ ग्रिण करती िैं; परन्तु वे िरीर तथा तन्मात्राओं ंकी मयाजदा में रिती िैं, यि बात व्यस्क्त के कमज, ज्ञान तथा पूवज-प्रज्ञा के कारण िै। अतिः यद्यहप इस्ियााँ स्वाभाहवक रूप से सवजव्यापक तथा असीम िैं, तो भी जो नवीन िरीर बनता िै, उसका आधार मनुष्य के कमज तथा पूवज-प्रज्ञा के ऊपर रिता िै और इस भााँहत इस्ियों ंकी प्रहतहियाएँ भी इसका अनुसरण कर संकोच एवं हवकास को प्राप्त िोती िैं।

हजस प्रकार जोंक एक तृण के अस्न्तम छोर पर पहुाँच कर दूसरे तृण-रूप आश्रय को पकड कर अपने को हसकोड लेती िै, उसी प्रकार जीवात्मा भी एक िरीर को अलग फेंक कर अचेतावथथा को प्राप्त करके दूसरे िरीर का आश्रय ले अपना उपसंिार कर लेता िै।

हजस प्रकार सुनार स्वणज का थोडा-सा भाग ले कर उससे दूसरे नवीन और अहधक सुन्दर रूप की रचना करता िै, उसी प्रकार जीवातमचा इस िरीर को फेंक कर-अचेतावथथा को प्राप्त करके हपतर, गन्धवज, देव अथवा हिरण्यगभज के लोकों ंके सुखोपभोग के उपयुक्त दूसरे नवीन और सुन्दर रूप की रचना करता िै।

पुनजजन्म का मूल-कारण वासना िी िै। जीवात्मा का हलंग–रीर अथवा मन हजसमें अत्यन्त आसक्त िोता ी, उसी फल को यि साहभलाष प्राप्त करता िै। इस लोक में यि जो-कुछ कमज करता िै, उसका फल भोगने के हलए पुन: इस लोक में आ जाता िै। पुनजजन्म की कामना करने वाला पुरुष िी ऐसा करता िै; परनुतु जो पुरुष कामना निीं ंकरता, वि कदाहप पुनजजन्म को प्राप्त निीं ंिोता। जो अकाम, हनष्काम, आप्तकाम और आत्मकाम ीता िै, उसके प्राणों ंका उत्क्रमण निीं ंिोता, ब्रह्म िी िोने से वि ब्रह्म को प्राप्त िोता िै। जो ब्रह्मवेत्ता िै और हजसने अपनी समूपूणज वासनाओं ंको हनमूजल बना हदया िै, उसके हलए कोई भी कमज फल-जनक निीं ंिोता; क्योंहंक शुरुहत कििी िै-"जो पूणज आप्तकाम िो चुके िैं तथा हजन्ोंनें आत्म-साक्षात्कार प्राप्त कर हलया िै, उनकी समस्त कामनाएँ इस िरीर में िी हवलीन िो जाती िैं" (मुण्डक उपहनषद्) ।

८. मृतुयु के पित् जीवात्मा की यात्रा (ख)

यि जीवात्मा मुख्य प्राण, ज्ञानेस्यि तथा मन के सिाचयज में अपने पूवज–रीर को छोड देता िै और नवीन रीर धारण करता िै। वि अहवद्या, िुभ-अिुभ कमज तथा पूवजकालीन जन्मों ंमें प्राप्त संस्कारों ंको भी अपने साथ ी ले जाता िै।

जब जीवात्मा एक िरीर से दूसरे िरीर में जाता िै, तब वि सूक्ष्म िरीर की तन्मात्राओं ंसे पररवेहष्टत िोता ी। यि सूक्ष्म िरीर िी नये िरीर का बीज िोता िै।

यि जीवात्मा धून आहद आहतवाहिक पदाथों के िारा ऊध्वाजरिोण कर चिलोक में जाता िै। विाँ अपने ुभ कमों का फल भोग कर िेष संहचत कमों का फल भोगने के हलए, हजस मागज से गया िोता िै, उसी मागज से अथवा अन्य मागज से भी वापस आता िै।

स्वगज में देव बन कर रिने के हलए जो िुभ कमज हकया था, वि पुण्य-कमज जब पूरा िो जाता िै, तब िेष बचा हुआ िुभ अथवा अिुभ कमज उस जीवात्मा को हफर इस लोक में वापस लाता िै। इस भाँहत के आवागमन के हसद्धान्त को स्वीकार हकये हबना नव-जात हििु के सुख-दुिःख का स्पष्टीकरण कर सकना सम्भव निीं ंिोगा।

एक िी जन्म में गत जीवन के सभी कमों की पूहतज िो जाये, यि सम्भव निीं;ंक्योंहंक मनुष्य िुभ तथा अिुभ-दोनों ंिी प्रकार के कमज हकये रिता िै, हजसके पररणाम-स्वरूप वि मनुष्य-योहन, देव-योहन अथवा पिु-पक्षी की योहन में जन्म लेता िै। इससे यि सम्भव निीं ंहक िुभ-अिुभ-दोनों ंप्रकार के कमों के फल की पूहतज एक ी जिन्म में िो जाये। अतएव यद्यहप स्वगज में पुण्य-कमों का फल पूरा-पूरा भोगा जा चुका िोता िै, तथाहप दूसरे कमज संहचत रिते िैं, हजनके कारण मनुष्य भले अथवा बुरे वातावरण में जन्म लेता िै।

जीवात्मा जो नया िरीर धारण करता िै, उसका भान उसे पिले से िी रिता िै। हजस प्रकार जोंकं अथवा कीडा दूसरी घास पर अपने पाँवों ंको हटका कर िी पिली घास की पकड को छोडता िै, वैसे िी इस वतजमान रीर को छोडने से पिले जीवात्मा को अपने भावी िरीर का भान रिता िै।

एक मत यि िै हक मृतुयु िोने के पिात् जो कमज फल-जनक िोते िैं, वे समापचत िो जाते िैं और इससे जो लोग चिलोक में जा कर हफर वापस आते िैं, उनके पास हकसी प्रकार का कमज अविेष निीं ंरिता। परन्तु यि मत यथाथज निीं ंिै। कल्पना कीहजए हक कुछ हविेष कमज एक िी प्रकार के जन्म में पूणज रूप से भोगे जाते िैं तथा कुछ हविेष कमज दूसरे प्रकार के जन्म में भोगे जाते िैं, तो हफर वे कमज एक िी जन्म में हकस प्रकार पुंजीभूत िो सकते िैं? िम ऐसा तो कि निीं ंसकते हक अमुक कमज फल देना बन्द कर देते िैं; क्योंहक प्रायहित के अहतररक्त
इस भााँहत कमों का फल बन्द निीं ंिोता। यहद समूपूणज कमज एक-साथ िी फल धारण करते िों,ं तो स्वगज अथवा
नरक में जीवन व्यतीत करने अथवा पिु-पक्षी योहन में जीवन समाप्त करने के पिात् दूसरा जन्म ग्रिण करने का कोई कारण िी निीं ंरिता; क्योंहक इनमें पुण्य अथवा पाप करने का कोई साधन निीं ंिै। इसके अहतररक्त ब्रह्मित्या इत्याहद हकतने ऐसे मिापाप िैं। हजन्हें भोगने के हलए कई जन्म लेने पडते िैं। श्री मध्वाचायज जी ब्रह्मसूत्र
पर अपने भाष्य में हलखते िैं हक 'चौदि वषज की आयु से ले कर जीवात्मा अमुक आवश्यक कमज करता िै, हजसका
एक-एक कमज भी कम-से-कम दि जन्मों ंका कारण बनता िै। हफर सभी कमों का फल एक िी जन्म में भोग सकना कैसे सम्भव िो सकता िै?

९. दो मागज-देवयान तथा हपतृयान

(अ) अहचज मागज (देवयान)

उत्तरायण मागज अथवा देवयान वि मागज िै, हजससे योगी ब्रह्म के पास जाते िैं। यि मोक्ष को प्राप्त कराता िै। यि मागज ब्रह्म के उपासकों ंको ब्रह्मलोक में ले जाता िै। वि ब्रह्म का उपासक देवयान मागज पर पहुाँच कर अहिलोक में आता िै, तदनन्तर वायुलोक में और विााँ से िमिः सूयजलोक, वरुणलोक, इिलोक तथा प्रजापहत के लोक में िोता हुआ ब्रह्मलोक में पहुाँच जाता िै।

वे लोग अहचज (ज्योहत) को प्राप्त िोते िैं। वे अहचज से हदन को, हदन से िुक्ल पक्ष को, िुक्ल पक्ष से उत्तरायण के छि मासों ंको, इन छि मासों ंसे संवत्सर को और संवत्सर से आहदत्य को प्राप्त िोते िैं।

जब यि जीवात्मा इस लोक से प्रयाण करता िै, तब वि वायु को प्राप्त िोता िै। वायु उसके हलए रथ-चि के हछि की भााँहत मागज दे देता िै। वि उस मागज से ऊपर चढ़ता िै और आहदत्य को प्राप्त िोता िै।

जब वि चिमा से हवद्युत् लोक की ओर जाता िै, तब विााँ एक अमानव पुरुष िोता िै जो उसे ब्रह्म के समीप पहुाँचा देता िै।

अहचज िी ब्रह्महवद्या के उपासकों ंका देवयान मागज िै। केवल ब्रह्म के उपासकों ंके हलए िी यि मागज उनुमुक्त रिता िै।

(आ) धूम्र मागज (हपतृयान)

हपतृयान मागज या धूम्र मागज पुनजजन्म को प्राप्त कराने वाला िै। जो लोग फल की कामना से यज्ञाहद हियाएाँ तथा दानाहद कमज करते िैं, वे लोग इस मागज से चिलोक को जाते िैं और विााँ पर जब उन जीवों ंका पुण्य-कमज समाप्त िो जाता िै, तब वे जीव पुनिः इस लोक में वापस आ जाते िैं।

इस समूपूणज मागज में धूम्र तथा कृष्ण वणज के पदाथज िोते िैं। जब जीव इस मागज से चलता िै, तब विााँ हकसी प्रकार का प्रकिा निीं ंिोता। यि अहवद्या के िारा प्राप्त िोता िै। अतिः यि धून मागज या ताहमस्र मागज किलाता िै। यि मागज हपतरों ंका िै। जो लोग फल-प्रास्प्त की अहभलाषा से यज्ञ तथा दान आहद कमज करते िैं, उनके हलए यि
हपतृयान िै।

ये दोनों ंमागज सभी लोगों ंके हलए उनुमुक्त निीं ंिोते। उपासकों ंके हलए देवयान मागज उपयुक्त िै और कमजठ लोगों ंके हलए धूम्रयान मागज उनुमुक्त िै। जैसे संसार-प्रविा हनत्य िै, वैसे िी ये दोनों ंमागज भी हनत्य िैं।

आत्मवेत्ता जीवनुमुक्त मिापुरुषों ंके प्राण उत्क्रमण निीं ंकरते। वे ब्रह्म में हवलीन िो जाते िैं। हजन जीवनुमुक्तों ंको कैवल् मोक्ष प्राप्त िो गया िै, उनके जाने अथवा वापस आने के हलए कोई लोक निीं ंिोता। वे सवजव्यापक ब्रह्म के साथ एक बन जाते िैं।

इन दोनों ंमागों के लक्षणों ंतथा उनके पररणामों ंसे अवगत िो कर योगी अपनी हववेक-बुस्द्ध को निीं ं खोता। जो योगी यि जानता िै हक देवयान मागज मोक्ष की ओर तथा हपतृयान मागज जन्म-मृतुयु-मय संसार की ओर ले जाता िै, वि योगी मोि को निीं ंप्राप्त िोता िै। इन दोनों ंमागों का ज्ञान योगी को जीवन के ध्ेयेय की प्रास्प्त के हलए प्रत्ेयेक क्षण मागज-दिजक बना रिता िै।

तृतीय प्रकरण

मृतुयु से पुनरुत्थान तथा न्याय

१. मृतुयु से पुनरुत्थान

कहब्रस्तान से मुरदों ंके पुनिः उठने का नाम कयामत िै। इसलाम, ईसाई तथा पारसी-धमज के तीन मुख्य हसद्धान्त िैं: मृतुयु से पुनरुत्थान, ईश्वर से न्याय प्राप्त करना और पुरस्कार अथवा दण्ड भुगतना।

यहदी लोगों ंने इस हसद्धान्त को पारसी-धमज से ग्रिण हकया था। उन्िोंनें िी इसे ईसाई तथा इसलाम-धमज को प्रदान हकया।

हकतने िी लेखकों ंकी ऐसी मान्यता िै हक इस प्रकार का पुनरुत्थान केवल आत्मा का िी िै; परनुतु इस हवषय में सामान्य लोगों ंका हवचार यि िै हक कहब्रस्तान से आत्मा और िरीर-दोनों ंिी उठ बैठते िैं। यिााँ पर यि प्रश्न उठता िै हक यहद िरीर अलग-हवलग िो गया िो, तो वि िरीर कैसे उठ सकता िै? परनुतु मुिम्मद सािब ने रीर के एक अंग के रक्षण में बडी सावधानी रखी िै। यि अंग भहवष्य में ढााँचे के आधार का अथवा उसमें उपयुक्त िोने वाले हपण्ड का काम देता िै। उनका ऐसा उपदेि िै हक पृथ्वी के कारण मानव िरीर नष्ट िो जाता िैं; परनुतु उसकी एक अस्स्थ, हजसे 'अल-अजीब' किते िैं, नष्ट निीं ंिोती। मानव िरीर में सवजप्रथम इस 'अल-अजीब' की रचना हुई। हजस प्रकार हकसी वृक्ष के बीज का नाि निीं ंिोता और उससे नया वृक्ष उत्पन्न िोता िै, 'अल-अजीब' अस्न्तम समय तक अहवकृत िी रिती िै।

मुिम्मद सािब बतलाते िैं हक कयामत का जो हदन आने वाला िै, उस हदन ईश्वर चालीस हदनों ंतक वृहष्ट करेंगे, हजससे यि समूपूणज पृथ्वी बारि िाथ ऊपर तक जलमि िो जायेगी और हजस प्रकार पौधे का अंकुर प्रसुफुहटत िोता िै, वैसे िी उससे समूपूणज िरीर हवकहसत िो उठेंगे।

यहदी भी यिी बात बतलाते िैं। वे मूल अस्स्थ को 'लज़' नाम से पुकारते िैं। परनुतु उनका किना यि िै हक पृथ्वी की रज से जो तुषार पैदा िोगा, उस (अल-अजीब) से िी यि िरीर हवकहसत िोगा।

बुन्दिेस के इकतीसवें प्रकरण में ऐसा प्रश्न हकया गया िै हक हजसे पवन उडा गया िै तथा हजसे तरंगों ंने आत्मसात् कर हलया िै, यि िरीर पुनिः कैसे बन जायेगा मृत व्यस्क्त का पुनरुत्थान कैसे िोगा? इसका उत्तर आहुरमज्द ने हदया िै हक 'उस पृथ्वी में वपन हकया हुआ बीज मेरे िारा पुनिः उगता िै और हफर से नवजीवन प्रापचत करता िै, जब मैंने वृक्षों ंको उनकी जाहत के अनुसार जीवन हदया िै, जब मैंने बालक को मााँ के उदर में रखा िै, जब मैंने मेघ को बनाया िै जो पृथ्वी के जल का िोषण का लेता िै और जिााँ मैं इच्छा करता हाँ, विााँ वि उसकी वृहष्ट करता िै। जब मैंने इस भााँहत प्रत्येक वसुतु की रचना की िै, तो हफर पुनरुत्थान के कायज को सम्भव बनाना क्या मेरे हलए दुष्कर िै? स्मरण रखो हक इन सभी वसुतुओं ंकी मैंने एक बार रचना की िै और जो वसुतुएाँ नष्ट िो गयी िों,ं उनकी रचना क्या मैं पुनिः निीं ंकर सकता ?'

अन्न के बीज की उपमा दी जाती िै। वि इस प्रकार िै। उस बीज को पृथ्वी के उदर में समारोहपत हकया जाता िै और तदुपरान्त वि बीज असंख्य अंकुरों ंके रूप में फूट हनकलता िै। यि उदािरण पुनरावतजन के हलए

हदया जाता िै। जब गेहाँ का कोरा बीज पृथ्वी के अन्दर दबा हदया जाता िै, तब वि संख्याबद्ध अंकुर पररधान के साथ प्रसुफुहटत िो जाता िै, तो जो सदाचारी व्यस्क्त अपने पररधानों ंमें दबा हदये गये िैं, वे हकतने िी हवहवध रूपों ंमें
प्रकट िोंगें।
परमात्मा के िाथ में जो तीन कुंहजयााँ िैं, वे हकसी दूसरे प्रहतहनहध को निीं ंदी गयी िैं। वे िैं : (१) वषाज की कुंजी, (२) जन्म की कुंजी, तथा (३) पुनरावतजन की कुंजी।

पुनरावतान के डिह्न

पुनरावतजन के हलए जो हदवस हनहित हकया गया िै, उस हदन के आगमन के हचह्न-स्वरूप कुछ बातें हनहित की गयी िैं। वे िैं: (१) सूयज का पहिम हदिा में उदय िोना, (२) दजाल का प्रकट िोना, यि दजाल एक हवकराल राक्षस िै जो अरबी भाषा में इसलाम-धमज के सत्यों ंकी हिक्षा देगा, तथा (३) सुर नामक दुन्दुहभ (नक्कारे) की ध्वहन यि स्वर तीन बार बजेगा।

ये सभी हवचार नूयूनाहधक रूप से यहदी धमज के िी िैं। हजन जीवों ंका पुनरावतजन िोता िै, उन्ें पुनरावतजन के हदन के अनन्तर तथा न्याय के हदन से पूवज, अपने मस्तक के कुछ िी मीटर की ऊाँचाई पर स्थथत सूयज के झुलसाने वाले ताप में दीघज काल तक प्रतीक्षा करनी पडती िै।

२. न्याय-हदवस

रीर से अलग हुए जीवात्मा को कुछ काल तक प्रतीक्षा करनी िोगी। उसके अनन्तर उसका न्याय करने के हलए परमात्मा प्रकट िोंगें। विााँ मुिम्मद सिाब मध्यथथ के रूप में कायज करेंगे। उसके पिात् प्रते्येक जीवात्मा की उसके जीवन के कमों के आधार पर जााँच िोगी। िरीर के प्रते्येक अंग और अवयवों ंको अपने पाप-कमों को स्वीकार करना पडेगा। प्रते्येक मनुष्य को एक पुस्तक दी जायेगी, हजसमें उसके सभी कमज अंहकत िोंगें। हिन्दू-धमज के अनुसार यमराज के अहधकारी हचत्रगुप्त की जो पुस्तक किी जाती िै, हजसमें हक सभी मनुष्यों ंके कमज अंहकत िोते िैं, उनके साथ इसकी तुलना की जा सकती िै।

गैब्रीअल के िाथ में एक तुला िोगी और वे पुस्तकें इस तुला में तोली जायेंगी। हजनके बुरे कमों की तुलना में भले कमज भारी िोंगें, वे स्वगज को भेजे जायेंगे और हजनके भले कमों की तुलना में बुरे कमज भारी िोंगें, वे नरक में िले जायेंगे।

मुसलमानों ंने यि मान्यता यहहदयों ंसे ली िै। अस्न्तम हदन पेि की जाने वाली इन पुस्तकों ंकी, हजनमें हक मनुष्यों ंके कमों का हिसाब रिता िै तथा उनको तोलने वाली तुला की चचाज प्राचीन यहदी लेखकों ंने की िै।

यहहदयों ंने पारसी-धमज के अनुयाहययों ंसे यि मन्तव्य स्वीकार हकया िै। पारसी लोगों ंकी ऐसी मान्यता िै हक हमर तथा सरूि नामक दो देवदूत न्याय के हदन पुल से पार जाने वाले प्रते्येक व्यस्क्त की जााँच करने के हलए पुल के ऊपर खडे िोंगें। हमर हदव्य दया के प्रहतहनहध िैं। वे अपने िाथ में एक तुला रखेंगे और लोगों ंके कमों को तोलेंगे। हमर के हदये हुए हववरण के अनुसार प्रभु प्रते्येक व्यस्क्त के दण्ड की घोषणा करेंगे। यहद व्यस्क्त के सुकमज की अहधकता हुई और यहद वे पलडे को बाल बराबर भी झुका सके, तो प्रभु उन लोगों ंको स्वगज में हमलेंगे; परन्तु हजनके सुकमों का भार िलका िोगा, उनको दूसरा देवदूत सरूि पुल के ऊपर से नरक में धकेल देगा। यि सरूि प्रभु के न्याय का प्रहतहनहध िै।

स्वगज के मागज में एक पुल िोता िै, हजसे मुिम्मद सािब 'अल हसरात' के नाम से पुकारते िैं। यि पुल नरक के प्रदेि से िो कर जाता िै। यि बाल से भी पतला और तलवार की धार से भी तीक्ष्ण िै। जो मुसलमान सुकमज हकये रिते िैं, वे इस पुल को सुगमता से पार कर जायेंगे। मुिम्मद सािब उनका नेतृत्व करेंगे। दुष्कमज करने वाले इस पुल पर लडखडा कर हिर के बल नीचे नरक में जा पडेंगे। यि नीचे पाहपयों ंके हलए अपना मुख फैलाये रिता िै।

यहदी लोग नरक के पुल की बात करते िैं। वि पुल सूत के धागे से अहधक हवसूतृत निीं ंिै। हिन्दू वैतरणी नदी की बात करते िैं। पारसी लोगों ंका उपदेि िै हक अस्न्तम हदन सभी मनुष्यों ंको 'हचनवत्' नामक पुल से पार िोना िै।

चतुथज प्रकरण

मृतूयूपरान्त आत्मा

१. मृतूयूपरान्त आत्मा

(पारसी-धमाानुसार)

मृतुयु के पित् आत्मा 'िहमस्स्तकेन' नाम के एक मध्यम लोक को जाता िै। यि लोक ईसाई धमज के 'परगेटरी' से हमलता-जुलता िै। सदाचारी व्यस्क्त का आत्मा एक सौन्दयजमयी अप्सरा से हमलता िै। यि अप्सरा उस आत्मा के पहवत्र हवचार, पहवत्र वाणी तथा पहवत्र कमों का प्रतीक िै। वि आत्मा न्यायासन-रूप से प्रहसद्ध 'हचनवत् पुल' को पार करती िै और विााँ से स्वगज को जाती िै। यि पुल सदाचारी व्यस्क्त को सरल मागज प्रदान करता िै। वि आत्मा 'आहुरमज़्द' के स्वणाजसन के रूप में प्रहसद्ध 'अमेि स्पेण्स' को प्राप्त िोता िै।

दुराचारी मनुष्य की आत्मा को एक दुष्ट कुरूप वृद्धा िी हमलती िै। वि िी उसके बुरे हवचार, बुरी वाणी तथा बुरे कमों का प्रतीक िै। वि दुराचारी आत्मा पुल को पार निीं ंकर सकती और उससे वि अहि अथवा नरक में जा हगरती िै। यि पुल दुष्ट मनुष्यों ंके हलए तलवार की धार के समान संकीणज बन जाता िै।

मृत व्यस्क्त की आत्मा तीन हदन तक उस घर में चक्कर काटती रिती िै, जिााँ हक उसने आराम के अस्न्तम हदन व्यतीत हकये थे। हजस खण्ड में उसका मरण हुआ िोता िै, उसमें 'उस्तवैती गाथा' गायी जाती िै, हजसका भाव यि िै हक 'हजसको आहुरमज़्द मुस्क्त प्रदान करेंगे, वि आत्मा सुखी िै।' उस थथान में चार हदन तक

अन्य बहुत-सी धाहमजक हियाएँ भी की जाती िैं। चौथे हदन प्राति: आत्मा को 'हचनवत् पुल' पर उपस्थथत िोना
ीता
ै। जब सदाचारी व्यस्क्त की आत्मा आगे बढ़ती िै, विााँ सुरहभत पवन प्रवाहित िोने लगता िै और विााँ पर एक सुन्दरी नारी प्रकट िोती िै। जीवात्मा आियजचहकत िो पूछता िै- "तू कौन िै?" वि अप्सरा उत्तर देती िै-"मैं तुम्हारी आत्म-चेतना हाँ। मैं तुम्हारे पहवत्र हवचार, पहवत्र वाणी तथा पहवत्र कमों की मूतज रूप हाँ।"
जब दुराचारी व्यस्क्त आगे जाता िै, तब दुगजन्धपूणज वायु प्रवाहित िोने लगती िै और जब वि पुल के पास पहुाँचता िै, तब विााँ एक कुरूप वृद्धा िी आ उपस्थथत िोती िै। आत्मा उससे पूछता िै-"िे वृद्धा िी, तू कौन िै?" तब वि उत्तर देती िै-"मैं तुम्हारी आत्म-चेतना हाँ। मैं तुम्हारे बुरे हवचार, बुरी वाणी तथा बुरे कमों की मूतज रूप हाँ।"

२. गीता इस हवषय में क्या किती िै?

भगवान् श्री कृष्ण किते िैं- "िे अजुजन! मेरे और तेरे बहुत से जन्म बीत चुके िैं। मैं उन सभी को जानता हाँ, परन्तु िे परन्तप ! तू निीं ंजानता।

"इस संसार में ये सनातन जीव मेरे िी अंि िैं। जब यि जीवात्मा इस िरीर से उत्क्रमण करता िै, तब वि श्रोत्र, चक्षु, त्वचा, हजह्वा तथा नाहसका पााँच ज्ञानेस्ियों ंके साथ छठे मन को अपने साथ खीचं लेता िै। इन सभी इस्ियों ंका थथान प्रकृहत िै। इस्ियों ंकी हनवास-थथान-रूप प्रकृहत उस पुरुष से हभन्न िै, हजसे परमात्मा के नाम से सम्बोहधत करते िैं। जैसे वायु पुष्प आहद से गन्ध ले जाता िै, वैसे िी यि जीवात्मा िरीर से उत्क्रमण के समय इन ज्ञानेस्यि और मन को आकहषजत कर लेता िै और अन्य िरीर में प्रवेि करते समय इनको साथ ले जाता िै। िरीर को छोड जाने वाले, िरीर में रिने वाले अथवा इस्ियों ंके हवषयों ंको भोगने वाले इस जीवात्मा को मूढ़ लोग निीं ं देख सकते, हकन्तु ज्ञान-नेत्र-युक्त मिात्मा गण िी उसको देखते िैं।

"इस लोक में दो प्रकार के पुरुष िैं-क्षर और अक्षर। सब भूतों ंको क्षर किते िैं और कूटथथ अहवनािी को अक्षर किते िैं। इन दोनों ंसे हवलक्षण एक उत्तम पुरुष िै, उसे परमात्मा किते िैं। वि अहवनािी ईश्वर तीनों ंलोकों ं में व्यापक िो कर उन सबका धारण-पोषण करता िै। मैं ऊपर बतलाये हुए क्षर तथा अक्षर से परे तथा उत्तम हाँ, इसके कारण मैं लोक तथा वेद में पुरुषोत्तम प्रहसद्ध हाँ।

"िे भरतषजभ! हजस काल में गमन करने से योगी लोग हफर निीं ंलौटते और हजस काल में गमन करने से लौटते िैं, मैं उस काल को तुम्हें बतलाऊाँगा।

"अहि, ज्योहत, हदवस, िुक्ल पक्ष तथा उत्तरायण के छि मिीनों ंके समय जो ब्रह्मज्ञानी गमन करते िैं, वे ब्रह्म को प्राप्त िो जाते िैं।

"धूम्र, राहत्र, कृष्ण पक्ष तथा दहक्षणायन के छि मिीनों ंके समय जो योगी जन गमन करते िैं, वे चिलोक को प्राप्त िोते िैं और हफर लौट आते िैं।

"संसार के िुक्ल तथा कृष्ण-ये दोनों ंिी मागज सदा से चले आ रिे िैं। इनमें से एक पर चलने वाला इस लोक में हफर निीं ंलौटता और दूसरे मागज पर चलने वाला पुन: वापस आ जाता िै।"

३. मृतुयु तथा उसके अनन्तर

देवी लीला ने पूछा- "देवी सरस्वती ! मृतुयु के हवषय में मुझे संक्ेषेप में बतलाइए हक मृतुयु सुखद िोती िै अथवा दुिःखद तथा मरण प्राप्त कर जो लोग इस लोक से परलोक को प्रयाण करते िैं, यिााँ से जाने के अनन्तर उनका क्या िोता िै?"

देवी सरस्वती ने उत्तर हदया- "मृतुयु प्राप्त कर यिााँ से प्रयाण करने वाले जीव तीन प्रकार के िैं-अज्ञानी, योग के ज्ञाता तथा धाहमजक वृहत्त वाले। उनकी मृतुयु के पररणाम भी हभन्न-हभन्न िैं।

"जो लोग धारणा-योग का अभ्यास करते िैं, वे अपने िरीर का त्याग करने के पिात् अपने इच्छानुकूल गहत करते िैं और इससे हसद्ध योगी अपनी इच्छानुसार सवजत्र हवचरण करने में स्वतन्त्र िोते िैं (यि हवषय मानहसक ध्यान, िारीररक तप तथा संयम पर आधाररत िै)।

"जो लोग धारणा-योग का अभ्यास निीं ंकरते तथा जो ज्ञान प्रास्प्त में भी संलि निीं ंिोते और न अपने भहवष्य के हलए सद्‌गुणों ंका संचय करते िैं, वे लोग अज्ञानी जीव किलाते िैं। उन लोगों ंको मृतुयु का दुिःख तथा दण्ड भुगतना पडता िै।

"हजनका मन संयहमत निीं ंिै तथा वि कामनाओं,ं सांसाररक वासनाओं ंऔर हचन्ताओं ंसे आपूणज िोता िै, वे लोग इतने अहधक दुिःखी िोते िैं, जैसे हक कमल अपनी नाल से हवलग िोने पर िोता िै। वास्तव में अपनी अपररहमत वासनाओं ंपर हवजय प्राप्त करने और अपनी अनन्त कामनाओं ंतथा हचन्ताओं ंको नष्ट कर लेने पर िी मिें वास्तहवक सुख प्राप्त िोता िै।

"जो मन िािों ंका अनुसरण निीं ंकरता और न पुण्याितलयों ंकी संगहत से अपने को पहवत्र िी बनाता िै, अहपतु वि दुजजनों ंकी संगहत में रिता िै, मरणावथथा- काल में वि मन अहन के समान धधकती कामनाओं ंसे अपने को सन्तप्त बनाता िै।

"हजस समय कण्ठ की घरघराट श्वास-प्रश्वास की गहत को अवरुद्ध बनाती िै, नेत्र-दृहष्ट मन्द िो जाती िै तथा मुख की कास्न्त म्लान िो जाती िै, मृतुयु के उन अस्न्तम क्षणों ंमें जीवात्मा भी अपनी बुस्द्ध की मन्दता अनुभव करता िै।"

“क्षीण पडी हुई दृहष्ट के ऊपर उस समय गिन अन्धकार छा जाता िै और हदन के प्रकाि में भी नेत्रों ंके समक्ष तारे हटमहटमाते हुए दृहष्टगोचर िोने लगते िैं। हक्षहतज भी मेघाच्छन्न-सा प्रतीत िोता िै तथा वि नेत्रों ंके समक्ष एक नैराश्यपूणज दृश्य उपस्थथत करता िै।

"इस समय सारे िरीर में तीव्र वेदना का संचार िोता िै और समूपूणज भूत गण नेत्रों ंके सामने नाचने लगते िैं। ऐसा प्रतीत िोता िै हक मानो पृथ्वी वायु का रूप धारण कर नाच रिी िो और अन्तररक्ष मरते हुए व्यस्क्त का हनवास थथान िो।

"सारा आकाि-मण्डल उसके समक्ष घूमता-सा दीख पडता िै। ऐसा मालूम िोता िै हक सागर की तरंगें उसे दूर हलये जा रिी िैं। जैसा हक स्वप्न की दिा में िोता िै, वि कभी तो अपने को वायु में ऊपर उठाया हुआ और दूसरे िी क्षण नीचे धकेला-सा अनुभव करता िै।

"ऐसे समय में उसे ऐसा हवचार आता िै हक वि एक अन्धकारपूणज गतज में हगर रिा िै और हफर ऐसा सोचने लगता िै हक वि हकसी पवजत की उपत्यका में पडा हुआ िै। वि अपने इस दुि:ख को लोगों ंसे किना चािता िै; परन्तु उसकी वाणी साथ निीं ंदेती।

"कभी उसे ऐसा लगता िै हक वि अभी आकाि से हगर रिा िै और हफर सोचता िै हक वि वात-चि में घूम रिा िै। कभी उसको ऐसा मालूम िोता िै हक वि रथ में आरूढ़ िो अहत-तीव्र वेग से जा रिा िै और हफर वि अपने को हिम की भााँहत हपघलता-सा अनुभव करता िै।

"वि संसार तथा जीवन के कष्टों ंके हवषय में अपने स्नेिी जनों ंको अवगत कराना चािता िाँ; परन्तु उसे ऐसा लगता िै हक वि इतनी तीव्र गहत से अपने स्नेिी जनों ंसे अलग ले जाया जा रिा िै, जैसे हक हवमान ले जाता िै।

"वि चक्कर करने वाले यन्त्र अथवा अलात-चि की भााँहत चक्कर काटता िै अथवा जैसे हक पिु को रस्सी से बााँध कर ले जाते िैं, वैसे िी वि घसीट कर ले जाया जाता िै। वि ऐसी गहत करता िै मानो भाँवर िो और इधर-उधर ऐसे हफराया जाता िै जैसे हक इंजन का यन्त्र।

"उसे ऐसा लगता िै हक वि आकाि में तृण की भााँहत उड रिा िै और जैसे पवन मेघ को खीचं ले जाता िै, वैसे िी वि खीचंा जा रिा िै। तब वाष्प की भााँहत ऊपर उठता िै और हफर नीचे हगर जाता िै जैसे हक भारी बादल समुि में बरसता िै।

"वि अनन्त आकाि से िोता हुआ जाता िै और विााँ चक्कर काटता िै जैसे हक वि कोई ऐसा थथान ढ़ूाँढ़ रिा िै जो पृथ्वी तथा समुि पर िोने वाले पररवतजनों ंसे मुक्त (िास्न्त एवं हवश्राम का थथान) िो।

"इस भााँहत वि जीव ऊाँचे उडता और नीचे हगरता हुआ अहवराम भटकता रिता िै। वि जीव बडी कहठनाई से श्वासोच्छवास लेता िै और इससे उसके िरीर को बहुत पीडा एवं कष्ट िोता िै।

"हजस प्रकार ज्यों–ज्यों ंसूयाजस्त िोता जाता िै, त्यों–त्यों ंपृथ्वी का धरातल दृहष्टगोचर िोना बन्द िो जाता िै, वैसे िी जीव की इस्ियों ंकी हियाएाँ बन्द िोने से उन इस्ियों ंके हवषयों ंका ज्ञान भी क्षीण पडता जाता िै।

"इस भााँहत वि जीवात्मा अपने भूत तथा वतजमान काल की सूमृहत खो देता िै और हजस प्रकार सन्ध्याकालीन प्रकाि के जाते रिने पर हदिाओं ंका ज्ञान जाता रिता िै, उसी प्रकार उसे हदिा का ज्ञान निीं ं रिता।

"मूच्छाज की दिा में उसका मन अपनी हवचार–िस्क्त को खो देता िै और इस भााँहत अपने हवचार और चेतना की िस्क्त के नष्ट िो जाने से वि जीव िून्यता की दिा में पड जाता िै।

"मूच्छाज की अचेतावथथा में िरीर के अन्दर प्राण की श्वास-हिया बन्द िो जाती िै और इस भााँहत जब प्राण की गहत पूणजतिः बन्द िो जाती िै, तब प्राण का अवरोध िो जाता िै जैसे हक मूच्छाज में िोता िै।

"मस्स्तष्क के ज्ञान-तनुतुओं ंके हनबजल पडने के साथ िी जब सहन्नपात का ज्वर अपनी अस्न्तम अवथथा में पहुाँच जाता िै, तब जडता के हनयमानुसार िरीर पाषाण के समान कठोर बन जाता िै। यि जड-तत्त् का हनयम चेतन प्राहणयों ंके साथ प्रारम्भ से िी लगा हुआ िै" (योगवाहसष्ठ)।

४. िोपेनिावर का मन्तव्य 'मृतूयूपरान्त की दिा'

हवद्याथी : मुझे आप एक िब्द में यि बतलाइए हक मैं अपनी मृतुयु के पिात् क्या बनूाँगा? ध्यान रिे हक आपका हवचार स्पष्ट एवं सारभूत िो ।

दिजहनक : सवज तथा िून्य ।

हवद्याथी : मैंने ऐसा िी सोचा था। मैंने आपके समक्ष एक प्रश्न रखा और आपने उसका उत्तर हवपरीत ढंग से हदया। यि रीहत तो बहुत िी हवहचत्र िै।

दिजहनक : जी िााँ ! परन्तु प्रश्न तो तुम अलौहकक करते िो और हफर यि आिा रखते िो हक उसका उत्तर ऐसी भाषा में हमले जो हक मयाजहदत ज्ञान को िी व्यक्त करती िै। इससे यहद उसमें कुछ हवरोध उठे, तो कोई आियज की बात निीं।ं

हवद्याथी : 'अलौहकक प्रश्न तथा मयाजहदत ज्ञान' - ऐसा किने से आपका क्या अहभप्राय िै? इस प्रकार के िब्द मैंने पिले िी सुन रखे िैं। वे मेरे हलए कोई नये निीं ंिैं। इस प्रकार के िब्दों ंके प्रयोग करने में मेरे प्राध्यापक की रुहच थी; परन्तु इन हविेषणों ंको वे केवल देवों ंके हलए िी प्रयोग करते थे और वे उसके अहतररक्त अन्य हकसी हवषय की चचाज निीं ंकरते थे। यि ठीक और उहचत िी था। वे अपना मन्तव्य यों ंव्यक्त करते थे हक 'यहद वि देव स्वयं इस जगत् में िै, तो वि मयाजहदत बनता िै; परन्तु यहद वि देव इस जगत् से बािर अन्यत्र किीं ंिै, तो वि अलौहकक बनता िै।' इससे अहधक सीधी और स्पष्ट व्याख्या अन्य कोई िो िी निीं ंसकती। 'आप जिााँ िैं, विीं ंकी आप जानते िैं, उससे अहधक निीं।ं' केन्ट की यि अनगजल मान्यता अब कुछ हविेषता निीं ंरखती । यि बात प्राचीन िै और आधुहनक हवचारों ंके साथ संगत निीं ंिै; क्योंहक अभी तो जमजनी की हिक्षा के इस राजनगर में श्रेष्ठ पुरुषों ंका एक दल िी िमारे सामने खडा िै।

दिजहनक : (पाश्वज में) 'यि जमजन िंबग िै' ऐसा इनके किने का अहभप्राय िै।

हवद्याथी : उदािरण-स्वरूप पूवज-कालीन िस्स्तिाली िेलर मेचर तथा प्रखर मेधावी िेगल को िी लीहजए। परन्तु वतजमान युग में तो िम इन सब व्यथज की बातों ंको त्याग िी बैठे िैं। यिी निीं,ं वरन् मुझे तो इस हवषय में यों ंकिना चाहिए हक िम इन हवषयों ंसे इतना आगे बढ़ चुके िैं हक अब उनके साथ रि सकें, ऐसा सम्भव िी निीं ंरिा, तो हफर इनका उपयोग िी क्या िै? इन सब बातों ंसे िमारा प्रयोजन िी क्या रिा?

दिजहनक : अलौहकक ज्ञान वि ज्ञान िै जो सम्भाव्य अनुभव की मयाजदा से परे िो। यि ज्ञान वसुतुओं ंके उनके वसुतुगत स्वभाव का हनणजय करता िै। इसके हवपरीत वसुतुओं ंकी मयाजदा के अन्दर रिने वाला ज्ञान मयाजहदत ज्ञान िै। अतिः यि ज्ञान मयाजहदत दृश्य से परे कुछ भी निीं ंबतला सकता। इस मयाजदा के हवचार से तुम एक व्यस्क्त की भााँहत िो और तदनुसार मृतुयु तुम्हारा अन्त मानी जायेगी । परन्तु तुम्हारा व्यस्क्तत्व तुम्हारी वास्तहवक तथा आन्तररक सत्ता निीं ंिै। यि व्यस्क्तत्व तुम्हारी सत्ता की बाह्य अहभव्यस्क्त मात्र िै। यि स्वयं वसुतु निीं,ं वरन् काल के आकार में अहभव्यक्त िोने वाला दृश्य िै, अतिः इसका आहद तथा अन्त िै। तुम्हारा जो वास्तहवक आत्मा िै, वि तो काल को जानता भी निीं।ं वि व्यस्क्त की दी गयी आहद अथवा अन्त की सीमा से परे िै।

वि आत्मा तो सवजत्र ि तथा प्रत्येक व्यस्क्त में व्याप्त ि। उससे पृथक् तो हकसी की सत्ता िो िी निीं सकती । अतिः मृत्यु आने पर एक ओर जिाँ तुम व्यस्क्त-रूप से हतरोधान िोते िो, विाँ दूसरी ओर तुम अस्स्तत्व रखते िो तथा समूपूणज वस्तुओं के रूप में तुम हवद्यमान रिते िो। 'मृत्यु िोने के पित् तुम सवज तथा िून्य बनते िो' - पिले जो मैंने तुमसे ऐसा कि था, उस समय मेरा अहभप्राय यिी था। तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इससे अहधक संहक्षप्त रूप में हदया जा सके और वि सारपूणज भी िो; यि तो असक्य ि। यि मैं स्वीकार करता हाँ हक यि उत्तर उलटे ढंग से हदया गया ि; लेहकन ऐसा केवल इसहलए ि हक तुम्हारा जीवन तो काल की सीमा में ि, परन्तु तुममें रिने वाला अंिअमर ि, वि िाश्वत अहवनािी ि। तुम इस हवषय को यों भी कि सकते िो हक तुम्हारा जो अमर अंि ि, वि काल की मयाजदा में लुप्त निीं िो जाता और साथ िी वि अहवनािी भी ि। परन्तु यिाँ तुम्हारे हलए एक दूसरी उलटी बात उठ खडी िोती ि। तुम देख रिे िो हक यिाँ अलौहकक हवषय को मयाजहदत ज्ञान की सीमा में लाने का प्रयास हकया जा रिा ि । मयाजहदत
ज्ञान हजन उद्देश्यों की पूहतज के हलए निीं ि, वैसे हवषयों में इसका दुरुपयोग करना एक प्रकार से इसके प्रहत हिंसात्मक कायज ि।

हवद्याथी : देस्खए, यहद मैं एक हविेष व्यस्क्त के रूप में न रि सका, तो मैं आपकी अमरता के हलए एक कौडी भी देने का निीं।

दािजहनक : ठीक ि। मैं इस हवषय में तुम्हें सन्तुष्ट कर सकूँगा। कल्पना कीहजए हक मैं तुम्हें गारण्टी दूँ हक मरने के पित् तुम एक व्यस्क्त के रूप में रि सकोगे; परन्तु इसमें एक प्रहतबन्ध यि ि हक प्रथम तुम तीन मास तक पूणज अचेतावथथा में व्यतीत करो।

हवद्याथी : मुझे इसमें कोई भी आपहत्त न िोगी।

दािजहनक : यि स्मरण रिे हक मनुष्य जब पूणज रीहत से अचेत अवथथा में रिता ि, तब उसे समय का पता िी निीं चलता। इसी भाँहत जब तुम मृत हुए िोते िो तो तुम्हारे हलए समय तो एक-समान िी हुआ िोता ि। भले िी मृत्यु की मूस्च्छजत अवथथा में तीन मास व्यतीत हुए िों या दि सिस्र वषज, और जब इस मूच्र्छा से तुम उठते िो तो उस समय तुम्हें जो कुछ भी बतला हदया जाता ि, उस पर तुम्हें हवश्वास कर लेना िोता ि। चािे तीन मास व्यतीत हुए िों या दि सिस्र वषज, जब तक तुम्हारा व्यस्क्तत्व वापस निीं आता, तब तक तो तुमने उस समय के हवषय में ध्यान िी निीं हदया; उसे तुम स्वयं स्वीकार कर लेते िो।

और, कल्पना कीहजए हक ऐसा संयोग आ जाये हक प्रथम अचेतावथथा के दि िजार वषज व्यतीत िो जायें और उसके अनन्तर भी हकसी को तुम्हें उठाने का हवचार िी न सूझे, तो यि तो मेरी समझ में तुम्हारे हलए सबसे बडी दुभाजग्य की बात िोगी। इन थोडे से वषों के जीवन के उपरान्त िी आने वाली इस दीघज कालीन मूच्छाज का अनुभव करने के पित् तो तुम अपनी िून्यता के पूणज अभ्यस्त िो गये िोगे। जो कुछ भी िो, परन्तु इतना तो तुम्हें हनहित िी ि हक तुम मूच्र्छा के हवषय में समूपूणज रीहत से अनहभज्ञ िोगे। अब तुम्हें इतना और समझना ि हक जो अज्ञात िस्क्त तुम्हें तुम्हारी वतजमान अवथथा में जीहवत रखती ि, वि सत्ता पूवज के दि सिस्र वषों में भी अपने कायज से अहवरत निीं हुई और जो तुम्हें हभन्न दिा का अनुभव हुआ, ऐसी दिा में भी वि गयी निीं थी और इससे उस मूच्छाज की अवथथा में भी वि तुम्हें जीवन प्रदान करती ि। यहद तुम्हें ऐसा मालूम िो, तो तुम उससे पूणज आश्वस्त रिते िो।

हवद्याथी : हनिय िी। मालूम िोता िै हक आप इन पुस्ष्पत वचनों ंसे मुझे अपने व्यस्क्तत्व को भुला कर दूसरी ओर ले जाना चिाते िैं। परनुतु मैं आपकी युस्क्तयों ंसे पूणज रूप से पररहचत हाँ। मैं आपको यि स्पष्ट बतला देना चिाता हाँ हक अपने व्यस्क्तत्व के हबना रि सकना मेरे हलए सम्भव निीं ंिै। मैं अज्ञात िस्क्त से अपने को, अपने व्यस्क्तत्व को अपने से अलग िोने निीं ंदे सकता। आप हजसे अलौहकक घटना किते िैं, उसके कारण मैं अपने व्यस्क्तत्व के हबना कुछ न कर सकूाँ- यि सम्भव निीं ंिै और न मैं अपने व्यस्क्तत्व का पररत्याग करने को िी तैयार हाँ।

दिाजहनक : मैं समझता हाँ हक तुम्हारी ऐसी मान्यता िै हक तुम्हारा व्यस्क्तत्व ऐसी रमणीय वसुतु िै-ऐसी श्रे्ष्ठ, ऐसी पूणज तथा अनुपम हक उससे श्रे्ष्ठतर हकसी वसुतु की तुम कल्पना िी निीं ंकर सकते। तुम्हारी वतजमान पररस्थथहत से यहद-जैसा हक किा जाता िै उसी प्रकार-कोई वसुतु अहधक अच्छी तथा अहधक हटकाऊ िो, तो क्या तुम उस वसुतु के साथ अपनी वतजमान पररस्थथहत का हवहनमय करने को प्रसुतुत न िोगे ?

हवद्याथी : आपको पता निीं ंहक मेरा व्यस्क्तत्व, भले िी वि कैसा भी िो, मेरा अपना अस्स्तत्व िी िै। इस जगत् में मेरा अपना व्यस्क्तत्व मेरे हलए सबसे अहधक मित् की वसुतु िै; क्योंहक 'ईश्वर ईश्वर िै और मैं मैं हाँ।' मैं मैं िी बना रिना चािता हाँ। यिी एक मुख्य बात िै। मुझे िाश्वत सत्ता की आवश्यकता निीं।ं मैं हजस पर हवश्वास करूाँ, उससे पिले तो मेरा व्यस्क्तत्व मेरे हलए हसद्ध िोना िै।

दिाजहनक : तुम इस समय क्या कर रिे िो, जब तुम ऐसा किते िो हक 'मैं हाँ', 'मैं बना रिना चािता हाँ।' इस बात को किने वाले तुम अकेले िी निीं ंिो। प्रत्ेयेक प्राणी हजसमें चैतन्य का हंकंहचत् भी आभास िै, ऐसा िी किता िै। इसका अथज यि हुआ हक तुम्हारी जो इच्छा िै, यि तुम्हारा एक अंि िै, जो स्वयं तुम्हारा व्यस्क्तत्व निीं ंिै। वि अंहिबना हकसी भेद के सभी प्राहणयों ंमें सामान्य रूप से हवद्यमान िै। यि एक व्यस्क्त की इच्छा निीं ंिै, अहपतु यि स्वयं सत्ता की इच्छा िै। हजस हकसी भी वसुतु की सत्ता िै, उन सबका यि मूलगत तत्त् िै। इतना िी निीं,ं यि तो अस्स्तत्व रखने वाली सभी वसुतुओं ंका कारण िी िै। इस प्रकार की इच्छा एक िी बात के हलए सतृष्ण रिती िै। वि हकसी दूसरे प्रकार की हकसी साधारण वसुतु से सनुतुष्ट निीं ंिोती; अहपतु सामान्य रीहत से वि अपनी सत्ता के हलए सतृष्ण रिती िै। यि सामान्य सत्ता कोई हनहित की हुई सत्ता निीं ंिै। निीं,ं यि तो उसका लक्ष्य िी निीं ंिै। हफर भी ऐसा मालूम िोता िै हक यि इच्छा व्यस्क्त के अन्दर िी चैतन्य को प्राप्त िोगी और इसी से ऐसा मालूम िोता िै हक इस प्रकार की सत्ता केवल व्यस्क्तत्व से िी सम्बस्न्धत िै। यिी आभास िै। यि आभास िै, यि सत्य िै। इस आभास से िी व्यस्क्त दृढ़ता से आबद्ध िै; परनुतु यहद वि चािे, तो वि इस शृंृखला को तोड कर मुक्त िो सकता िै। अत: मैं ऐसा बतला दूाँ हक यि बात परोक्ष रूप से यों ंिै हक प्रत्ेयेक व्यस्क्त को अपनी सत्ता की तीव्र कामना रिती िै। जीहवत रिने की वि एक ऐसी इच्छा िै जो वास्तहवक िै तथा प्रत्यक्ष रूप से प्ेरेरणादायक िै और वि सभी वसुतुओं ंमें एक िी रीहत तथा समान भाव से रिती िै। तत्पिात् तो सत्ता का िोना एक स्वतन्त्र कायज िै। इतना िी निीं,ं वि इच्छा का एकमात्र प्रहतहबम्ब िै। जिााँ-जिााँ सत्ता रिती िै, विााँ-विााँ वि भी रिती िै और एक क्षण के हलए तो ऐसा कि सकते िैं हक सत्ता के अन्दर िी इच्छा का एकमात्र सन्तोष रिता िै और इससे मेरी धारणा तो यि िै हक यि कभी भी हवराम निीं ंलेती, वरन् सदा उत्तरोत्तर आगे िी बढ़ती रिती िै और अन्त में उसके अन्दर सन्तोष को प्राप्त करती िै। यि इच्छा व्यस्क्तत्व की अपेक्षा निीं ंरखती । व्यस्क्तत्व से इसका कोई प्रयोजन निीं ंिै। परनुतु जैसा हक मैं पिले कि चुका हाँ, उसके अनुसार तो यि ऐसी िी मालूम िोती िै; क्योंहक व्यस्क्त का तो अपने तक िी सम्बन्ध िोता िै, अतिः इच्छा

के चैतन्य के साथ उसका सीधा सम्बन्ध र्नीं ंिोता। इसका पररणाम यि िोता िै हक प्राणी अपनी सत्ता को बनाये रखने के हलए सावधान रिता िै और यहद ऐसा न िो, तो प्राणी की हभन्न-हभन्न
जाहतयों ंका रक्षण हनहित न रिे। इन सब बातों ंसे यि स्पष्ट िै हक व्यस्क्तत्व पूणजता का स्वरूप र्नीं ंिै, वरन् वि तो मयाजदा का स्वरूप िै; अतिः व्यस्क्त को मयाजदा से मुक्त करने में कोई िाहन
र्नीं,ं अहपतु लाभ िै। वसुतु के हवषय में तुम हचस्न्तत मत बनो। एक बार भी 'तुम कौन िो' इसे पूणज रूप से जान लो; 'तुम्हारी सत्ता वास्तव में क्या िै', उसे समझ लो, अथाजत् हवश्व में व्यापक इच्छा को जानो हक सबको जीना िै और तब सारा प्रश्न तुम्हें अहवचारपूवजक तथा उपिासात्मक-

हवद्याथी : दूसरे प्रतीत हजज्ञासुओं।ंकी भााँहत आप स्वयं िी अहवचारपूणज तथा िास्यास्पद िैं। इस भााँहत के अबोध व्यस्क्तयों ंके साथ मेरी आयु का मनुष्य वाताजलाप में पाव घण्टा समय नष्ट करता िै। इसका एक िी कारण िै हक इससे मेरा मन बिलाव िोता िै तथा समय भी कट जाता िै; परन्तु अभी तो हवदा मााँगता हूाँ; क्योंहक मुझे दूसरे आवश्यक कायज करने िैं।

५. अस्न्तम हवचार आकार धारण करता िै

मनुष्य का अस्न्तम हवचार उसके भावी भाग्य का हनमाजण करता िै। मनुष्य का अस्न्तम हवचार उसके भावी जन्म का हनणजय करता िै। भगवान् श्री कृष्ण श्रीमिगवद्गीता में बतलाते िैं- "िे कौन्तेय! अन्त समय में हजस-हजस भाव का स्मरण करता हुआ मनुष्य िरीर छोडता िै, वि सदा उस-उस भाव से प्रभाहवत हुआ उसी-उसी भाव को प्राप्त िोता िै" (गीता : ८-६)।

अजाहमल अपने अपहवत्र जीवन से पहतत िो कुस्त्सत जीवन व्यतीत कर रिा था। पापमयी वृहत्तयों ंके कारण वि दोषों ंके गिरे गतज में जा पडा था तथा चोरी एवं लूट-पाट इत्याहद जघन्य कमज करता था। सामान्य वेश्या के संग में पड कर वि उसका दास बन चुका था। वि दि लडकों ंका हपता बन गया था। उनमें से अस्न्तम लडके का नाम उसने 'नारायण' रखा। जब वि मरणासन्न था, तब अपने अस्न्तम पुत्र के हवचार में हनमि िो गया। उस समय मृतुयु के तीन भयंकर यमदूत अजाहमल के पास आ धमके। भय-कातर िो अजाहमल ने अपने अस्न्तम पुत्र 'नारायण' को उच्च स्वर से पुकारा।

'नारायण' का नाम लेते िी भगवान् हवषुणु के पाषजद िुतगहत से विााँ आ पहुाँचे तथा यम के दूतों ंको उनके कायज से रोक हदया। हवषुणु के पाषजदों ंने अजाहमल को मुक्त कर हदया और उसे वैकुण्ठ-लोक ले गये।

जब हििुपाल मरा, तो उसके िरीर से हदव्य ज्योहत प्रकट हुई और वि भगवान् श्री कृष्ण के िरीर में प्रहवि कर गयी। इस दुष्ट हििुपाल ने अपना सारा जीवन भगवान् श्री कृष्ण की हनन्दा करने में व्यतीत कर हदया था और उससे वि भगवान् श्री कृष्ण में प्रहवि कर गया।

हजस प्रकार दीवाल पर कीट भ्रमर से दंहित िोने पर भ्रमर का स्मरण करता-करता भ्रमर में िी रूपान्तररत िो जाता िै, उसी प्रकार एक मनुष्य, जो अपने घृणाहद भावों ंको भगवान् श्री कृष्ण पर केस्न्ित करता िै, अपने पापों ंसे मुक्त िो जाता िै और हनयहमत भस्क्त के िारा भगवान् को प्राप्त कर लेता िै-जैसे हक गोहपकाओं ंने काम-भाव से, कंस ने भय के कारण, हििुपाल ने घृणा के कारण तथा नारद ने भस्क्त के भाव से श्री कृष्ण को प्राप्त कर हलया था।

भगवान् श्री कृष्ण गीता में किते िैं- "जो व्यस्क्त अनन्य-हचत्त िो कर हनरन्तर प्रहतहदन मेरा स्मरण करता ाँ, उस सदा समाहित हचत्त वाले योगी को मैं सुलभ हाँ; और इस प्रकार मुझ को प्राप्त कर तथा मुझ में लीन िो कर वि दुिःख तथा कष्टमय इस अहनत्य संसार में पुनिः जन्म ग्रिण निीं ंकरता। िे अजुजन ! ब्रह्मलोक-पयजन्त सभी लोक काल-पररस्च्छन्न िैं तथा वे एक हनहित समय में लय को प्राप्त िोते िैं ; परन्तु मुझ को प्राप्त कर लेने पर पुनजजन्म निीं ंिोता। अतिः अपने मन और बुस्द्ध को मुझ सवोत्तम वासुदेव में स्थथर रखते हुए हनत्य-हनरन्तर मेरा िी ध्यान कर" (गीता : ८-१४, १५, १६)।

"यहद मनुष्य सांसाररक सुख-भोगों ंमें रत िोते हुए भी अपने मन को परमात्मा में लगाने का अभ्यास धीरे-धीरे करता रिता िै, तो मरण की अस्न्तम घडी में अपने आन्तररक ज्ञान की सियता से परमात्म-हवषयक हवचार उसमें स्वयमेव जाग्रत िो जाता िै।" भगवान् श्री कृष्ण किते िैं- "अभ्यास योग से युक्त हकसी दूसरी ओर न जाने वाले (स्थथर) मन से योगी उस हदव्य परम पुरुष को प्राप्त िोता िै" (गीता : ८-८)। आगे चल कर भगवान् किते िैं- "अन्त समय में जो व्यस्क्त मेरे वास्तहवक स्वरूप भगवान् श्री कृष्ण अथवा नारायण का स्मरण करते-करते िरीर त्याग करता िै, वि मेरे स्वरूप को िी प्राप्त िोता िै। इसमें कोई सन्देि निीं ंिै। मरण-काल में मनुष्य मुझे हजस रूप में स्मरण करता िै, उस स्वरूप को वि मनुष्य पा लेता िै। वे भाव उसके पूवज-संस्कार तथा सतत हचन्तन के पररणाम-स्वरूप िी िोते िैं" (गीता : २-७२)।

हजस मनुष्य को अपने जीवन में नस्-सेवन की कुटेव पूरी-पूरी पड गयी िो, वि मनुष्य जब मरण-काल के पूवज अचेत बन जाता िै, तब वि अपनी अाँगुली नाक पर इस प्रकार रखता िै मानो वि नस्-सेवन कर रि िो; क्योंहक उस मनुष्य में नस्-सेवन की बुरी आदत पडी िोती िै।

इसी प्रकार लम्पट मनुष्य को मृत्युु-काल में जो हवचार आता िै, वि हवचार उसकी िी के हवषय का िी िोता िै। पुराने मद्यपी का अस्न्तम हवचार महदरा-पान के हवषय का, लोभी साहकार का अस्न्तम हवचार अपने धन के हवषय का, युद्ध करते हुए सैहनक का हवचार अपने ितुरु को गोली से मार हगराने का तथा अपने इकलौते पुत्र में प्रगाढ़ ममता रखने वाली मााँ का अस्न्तम हवचार अपने पुत्र के हवषय का िोता िै।

राजा भरत ने दयावि एक मृगिावक का पालन-पोषण हकया और अन्त में वे उसमें आसक्त िो गये। मृत्युु के अस्न्तम समय में उनका हवचार उस मृग के हवषय का था, अतिः उन्ें मृग की योहन में जन्म लेना पडा; परन्तु उनकी आत्मा की स्थथहत पयाजप्त ऊाँची थी, हजससे मृग की योहन में भी उन्ें पूवज-जन्म की सूमृहत बनी रिी।

जो मनुष्य आजीवन अपने मन को अनुिाहसत रखेगा तथा सतत अभ्यास के िारा उसे ईश्वर से युक्त कर देगा, उसी व्यस्क्त का अस्न्तम हवचार ईश्वर-हवषयक िोगा। इस प्रकार का अभ्यास एक या दो हदन के सामान्य प्रयत्न अथवा एकाध सप्ताि या मिीने के अभ्यास से निीं ंिो सकता। इसके हलए तो यावज्जीवन सतत प्रयत्न तथा संग्राम की आवश्यकता िै।

६. व्यस्क्तत्व तथा व्यस्क्तगत सत्ता
(जीवत्व)

व्यस्क्तत्व तथा व्यस्क्तगत सत्ता में अन्तर िै। बहुतों ंको इन दोनों ंपदों ंका स्पष्ट बोध निीं ंिै। वे इन्ें हमला देते िैं और इससे उलझन आ खडी िोती िै। हकतने िी लोग ऐसा मानते िैं हक व्यस्क्तत्व िी व्यस्क्तगत सत्ता िै और व्यस्क्तगत सत्ता िी व्यस्क्तत्व िै। वास्तव में जो पदाथज व्यस्क्त को व्यस्क्त से अथवा व्यस्क्त को इतर पदाथों से पृथक् करता िै, विी व्यस्क्तत्व किलाता िै। यों ंसाधारण वाताजलाप में व्यस्क्तत्व िरीर का िी वाच्य िै। जब एक मनुष्य

दीघजकाय िोता िै, उसका रूप सौम्य िोता िै और अंग-प्रत्यंग सुिौल तथा मुखाकृहत सुन्दर िोती िै, तो िम उसके
हवषय में यो किते िैं हक 'अमुक व्यस्क्त का व्यस्क्तत्व आकषजक िै।' जब एक मनुष्य दूसरों ंको प्रभाहवत कर सकता िै, तो लोग यों ंकिते िैं हक 'अमुक व्यस्क्त का व्यस्क्तत्व बहुत िी प्रबल िै।' जब कोई मनुष्य भीरू तथा संकोची िोता िै, तो िम यों ंकिते िैं हक 'अमुक व्यस्क्त का व्यस्क्तत्व बहुत िी हनस्तेज िै; अतिः उसे अपने व्यस्क्तत्व का हवकास करना चाहिए।' जीवन में सफलता के प्राप्त्यथज समाज में व्यस्क्तत्व का बहुत िी मित्त्पूणज भाग िोता िै।

पसजनाहलटी (personality) िब्द मूल लैहटन िब्द पसजना (persona) से बना िै, हजसका अथज िै बाह्य रूप। अतिः पसजनाहलटी एक हविेष प्रकार की चेतना िै, हजसका सम्बन्ध इस थथूल िरीर से िै। अमुक पुरुष, अमुक िी अथवा अमुक कुमारी-ये व्यस्क्तत्व के िी अहभव्यंजक िैं। कुषुधा, हपपासा, िारीररक सौन्दयज, श्याम अथवा गौर वणज, ऊँचाई, आकार, िोध तथा िरीर के सभी मयाजहदत धमों को व्यस्क्तत्व िी किा जाता िै। वि ब्राह्मण िै, वि संन्यासी िै, वि व्यापारी िै, वि िाक्टर िै-इन सभी हवषयों ंका समाविे व्यस्क्तत्व िब्द में िै। यि एक प्रकार का बाह्य रूप िै, हजसे मनुष्य ने वतजमान पररस्थथहत में धारण कर रखा िै। मृतुयु मनुष्य के व्यस्क्तत्व को हवनष्ट करती िै; परन्तु यि उसकी व्यस्क्तगत सत्ता (जीवत्व) को नष्ट निीं ंकर सकती। व्यस्क्तगत सत्ता एक स्वतन्त्र वसुतु िै और अपना पृथक् अस्स्तत्व रखती िै। यि िरीर की सीमाओं ंसे हनतान्त परे िै तथा आपके व्यस्क्तत्व के साथ इसका हकंहचन्मात्र भी सम्बन्ध निीं ंिै। यि आपकी अिं-वृहत्त का हवषय िै और एक सतत गहतमान प्रवाि के समान िै। यि एक िी प्रकार के हवचार का-अिं-भाव का सातत्य िै। अन्य सभी हवचार इस 'अिं-वृहत्त' के चतुहदजक् िोते िैं। मैं बालक था। मैं पूणज वयस्क िो गया। मैं िाक्टर था। मैंने खाया। मैंने हपया। मैंने किा। मैंने ध्यान हकया। मैंने बातचीत की। मैं अमरीका, फ्ांस, इंगै्लैण्ड तथा जमजनी गया था। एक िी 'अिं' इन सभी अनुभवों ंको प्राप्त हुआ। यि 'अिं' िी इस िरीर का हनवासी िै तथा यि बाल्, यौवन तथा वृद्धावथथा में एक-सा स्थथर रिता िै।

आपके व्यस्क्तत्व में तो हनरन्तर रूपान्तरण िोता रिता िै; हकनुतु आपकी व्यस्क्तगत सत्ता में अिं-भावना में कभी भी पररवतजन घहटत निीं ंिोता, क्योंहक ' अिं-वृहत्त' का ज्ञान आपके साथ िी लगा रिता िै। इस थथूल िरीर का पररत्याग कर देने के अनन्तर भी यि 'अिं-वृहत्त' बनी रिती िै। मृतूयूपरान्त भी आप अपनी इस 'अिं-वृहत्त' को अपने साथ िी ले जाते िैं। स्वप्नावथथा में भी आपके अन्दर यि 'अिं-वृहत्त' रिती िै। इस प्रगाढ़ हनिा में भी आपकी 'अिं-वृहत्त' चालू रिती िै। यहद प्रगाढ़ हनिा में आपको अपनी 'अिं-वृहत्त' की चेतना न िोती, तो आपकी यि सूमृहत न िोती हक 'मैं सुख से सोया था।'

धारणा, ध्यान तथा हनहवजकल्प-समाहध के िारा आप अपनी इस 'अिं-वृहत्त' को परब्रह्म परमात्मा में एकाकार कर उसे हवलुप्त कर सकते िैं। हजस भाँहत पात्र के ध्वस्त िो जाने पर पात्र का जल सागर के जल में हमल कर एक बन जाता िै; उसी भाँहत जब अज्ञान का नाि िो जाता िै, तब अहवनािी परब्रह्म का ज्ञान िोने पर-ब्रह्महवद्या की प्रास्प्त से भेद-भाव नष्ट िो जाता िै, तब यि व्यस्क्तगत सत्ता (जीवत्व-भाव) भी अनन्त एवं हवश्वव्यापी परब्रह्म के साथ एक बन जाता िै। अब तो आपको व्यस्क्तत्व तथा व्यस्क्तगत सत्ता के भेद का स्पष्ट ज्ञान िो िी गया िोगा।

७. प्राचीन हमश्रवाहसयों ंकी मान्यता

हमश्रवासी छाया–िरीर (double) के अस्स्तत्व को मानते थे। इस छाया–िरीर का आकार थथूल िरीर की प्रहतच्छाया के समान था। जब तक थथूल िरीर का अस्स्तत्व रिता िै, तब तक छाया–िरीर का भी अस्स्तत्व रिता था। इस भाँहत जीवात्मा िी तथाकहथत छाया–िरीर था। इसका अपना कोई पृथक् अस्स्तत्व न था। थथूल िरीर से सम्बन्ध हवच्छेद करना इसके हलए कभी भी पररियज न था । यहद िरीर के हकसी भी अंग को आघात पहुँचता, तो

छाया िरीर अथवा जीवात्मा को भी आघात पहुाँचता । अतिः जीवात्मा को अनवस्च्छन्न बनाये रखने के हलए वे मृत रीर को भली-भााँहत सुरहक्षत रखते थे। िव को 'ममी' बना कर सुरहक्षत रखने की हिया का वे व्यविार करते थे। हवगत जीवात्मा को अमर बनाने के हवचार से वे िव को हचरकाल तक सुरहक्षत रखना चिाते थे।

छाया–रीर थथूल िरीर के स्थथत रिने तक िी अवस्थथत रिता िै। यहद िव नष्ट िो गया, तो हवगत आत्मा का भी निा िोना अवश्यम्भावी था। मृत्युु के अनन्तर वि जीवात्मा समस्त संसार में स्वच्छन्द रूप से भ्रमण करता तथा तीव्र कुषुधा एवं हपपासा से उत्पीहडत िोने पर अपने िव के पास पुनिः आ जाता।

चेस्यिन लोग भी छाया–रीर में हवश्वास रखते थे। उनकी मान्यता थी हक िरीर के निा िो जाने पर आत्मा भी नष्ट िो जाती िै। उन्ें यि आिा थी हक मृत िरीर पुनिः पुनजीवन प्राप्त करेगा। थथूल िरीर के अहतररक्त अन्य हकसी दिा की वे कल्पना िी निीं ंकर पाये।

प्राचीन हमश्रवासी तथा चेस्यिन लोग मृत व्यस्क्त की आत्मा के िरीर से अलग रिने की बात को स्वीकार करने को तैयार न थे अथाजत् उनकी मान्यता थी हक कहब्रस्तान अथवा जिााँ मृतक का िव रिता िै, उस थथान को छोड कर आत्मा अन्यत्र निीं ंरिती । इसी भााँहत कुछ ईसाई लोग भी िव का पुनजजन्म मानते िैं; अतिः वे िव को सुरहक्षत रखने के हलए मिाले लगाते तथा उसे दफन करते िैं। हजस प्रकार हिन्दू िव का दाि-संस्कार करते िैं, वैसा वे निीं ंकरते। उनकी अब भी यि हनहित धारणा िै हक मृत िरीर पुनिः जीहवत िो उठेगा।

हिन्दू यि निीं ंचिाते िैं हक िरीर त्याग करने के पिात् जीवात्मा एक क्षण भी िरीर के आस-पास चक्कर लगाता हफरे।

हदवंगत आत्मा जीवन का पुनिः उपभोग करने के हलए बहुत िी लालाहयत रिती िै। अपनी कामनाओं ंकी पररपूहतज िेतु वि थथूल िरीर में प्रवेि करने के हलए उत्कस्ण्ठत रिती िै। हिन्दुओं ंको अभीष्ट निीं ंहक मृत व्यस्क्त की आत्मा इस लोक से आबद्ध रिे। वे चिाते िैं हक वे आत्माएाँ अपने आनन्द-धाम की ओर िुतगहत से प्रयाण करें। यिी कारण िै हक वे अहवलम्ब िी िव का दाि-संस्कार कर डालते िैं।

पंचम प्रकरण

पुनजजन्म का हसद्धान्त

१. पुनजजन्म का हसद्धान्त

इमसजन, प्लेटो (अफलातून) आहद पुनजजन्म के हसद्धान्त को स्वीकार करते थे। पुनजजन्म का हसद्धान्त हिन्दू तथा बौद्ध-धमज का आधार िै। प्राचीन हमश्रवासी भी इसमें हवश्वास रखते थे। यूनानी दिाजहनकों ंने तो इसे अपने दिजन के मुख्य हसद्धान्त का िी रूप दे िाला।

मनुष्य इस पाहथजव िरीर से हचपका रिता िै। जीवन के साथ हचपके रिने की यि आसस्क्त भूतकाल के अनुभव तथा अस्स्तत्व को प्रमाहणत करती िै। साथ िी यि इस बात का भी प्रमाण िै हक भहवष्य में जीवन का अस्स्तत्व रिता िै। मनुष्य इस जीवन को अत्यहधक चािता िै तथा भावी जीवन की भी प्रबल आकांक्षा रखता िै।

हकतने िी जीव जन्म ग्रिण करते िैं और जन्म ग्रिण करने के पिात् कुछ िी सप्ताि, माि अथवा वषज में इस लोक से प्रयाण कर जाते िैं। हकतने िी गभाजिय में िी काल-कवहलत िो जाते िैं। कुछेक व्यस्क्त ितायु िोते िैं। तो ऐसा क्यों ंिोता िै? क्या कारण िै हक कुछेक प्राणी इस संसार में आते िैं और स्वल्प काल तक िी रि पाते िैं? इसके हवपरीत कुछेक अन्य प्राणी दीघज काल तक जीहवत रिते िैं? क्या ऐसा अकस्मात् िी िोता िै? क्या कोई ऐसा हनयम िै, जो जीवन तथा मृतुयु को हनयस्न्त्रत करता िै? क्या हकसी हनहित प्रयोजन के हबना मानव-प्राणी इस लोक में आते तथा यिााँ से प्रयाण कर जाते िैं? िााँ, इस हवषय में एक हनयम िै जो हक जीवन और मृतुयु का हनयमन करता िै। वि हनयम िै-कायज-कारण का हनयम ।

कायज-कारण का यि हनयम सब पर आहधपत्य रखता िै। कायज-कारण का हनयम अहत-दुद्धजषज तथा सवजिस्क्तसम्पन्न िै। यि समूपूणज जगत् इस सवोच्च हनयम के अन्तगजत गहतिील िै। अन्य सारे हनयम इस एक हनयम के अन्तगजत िैं। कमज का हनयम िी कायज-कारण का हनयम िै। ईश्वर हकसी भी प्राणी को दण्ड निीं ंदेता।

मनुष्य अपने िी कमों का फल भोगता िै। कायज-कारण का हनयम उस पर लागू िोता िै। मनुष्य सत्कमज िारा सुख की खेती काटता िै। इसी भााँहत अपने दुष्कमज से वि दुिःख, रोग, सम्पहत्त-निा आहद कष्ट अनुभव करता िै।

सिज-ज्ञान अथवा स्वाभाहवक प्रवृहत्त भूतकाल के अनुभव का िी पररणाम िै। पुनजजन्म के आधारभूत अनेक प्रमुख हसद्धान्तों ंमें हिन्दुओं ंने इस सिज ज्ञान को भी एक हसद्धान्त माना िै। भूतकाल में घहटत मृतुयु का अनुभव मानव-हचत्त में सुषुप्त अथवा अव्यक्त रूप से हवद्यमान रिता िै। ये अनुभव संस्कार-रूप में उसके हचत्त में रिते िैं। संस्कार चेतन मन के अन्तभाजग में हियािील रिता िै। भूतकाल की दुिःखानुभूहत मानव-हचत्त में वतजमान रिती िै और इसी कारण मानव-प्राणी मृतुयु से अत्यन्त भयभीत बना रिता िै।

हकसी के प्रहत प्रथम दृहष्ट में प्ेरम के जागरण का िेतु एक-साथ व्यतीत हकये हुए उनके पूवज-जीवन की एक हविेष प्रकार की भावना िी िै। इन युग्म आत्माओं ंमें इससे पूवज भी परस्पर प्ेरम था। वे ऐसा सोचते िैं तथा वास्तव में उन्ें ऐसा आभास-सा भी िोता िै हक 'िम दोनों ंइससे पूवज परस्पर किीं ंहमले थे।' इस प्रकार का पारस्पररक प्ेरम केवल लैंहगक आकषजण मात्र निीं ंिै और ऐसे प्ेरम का हवच्ेछेद भी कदाहचत् िी िोता िै। भगवान् बुद्ध ने अपनी पत्नी को बतलाया था हक वि पूवज जन्म में भी उन पर ममता रखती थी। उन्ोंनें अन्य प्रसंगों ंपर दूसरे कई लोगों ंके पूवज-जीवन की घटनाओं ंका हववरण भी हदया था।

प्रत्ेयेक कायज का कोई-न-कोई कारण अवश्य िोता िै। िून्य में से कोई वसुतु प्रकट निीं ंिोती और न असत् से सत् की िी उत्पहत्त िोती िै। वतजमान हवज्ञानिा–ा का भी यिी मौहलक हसद्धान्त िै। दिजनिा–ा का भी यिी मूलभूत हसद्धान्त िै। आप हकसी िून्य से प्रकट निीं ंिो गये। इस संसार में आपके अस्स्तत्व का कोई कारण िै। एक जन्मान्ध िै, एक मनुष्य मेधावी िै, एक मन्द-बुस्द्ध िै, एक मनुष्य धनवान् िै, एक हनधजन िै, एक व्यस्क्त स्वथथ िै, एक रोग-ग्रस्त िै, इन सबका एक हनहित कारण िै।

कारण कायज की अव्यक्तावथथा िै। कायज कारण की व्यक्तावथथा िै। वृक्ष कारण िै और बीज उसका कायज िै। वाष्प कारण िै और वृहष्ट उसका कायज िै। समूपूणज वृक्ष बीज में मौहलक रूप से अवस्थथत रिता िै। मनुष्य का अस्खलांग वीयज के एक हबन्दु में अदृश्य मौहलक दिा में रिता िै। वट-बीज वट वृक्ष को िी उत्पन्न कर सकता िै, वि आम्र-तरु को उत्पन्न निीं ंकर सकता। मनुष्य का वीयज-हबन्दु मानव-प्राणी का िी जनक िोता िै, अश्व का निीं।ं वीयज की एक लघु कहणका से समूपूणज अवयवों ंसे युक्त हविाल काया का आहवभाजव िोता िै। हकतना मिान् आियज िै यि ! एक कुषि बीज से एक दानवाकार सुहविाल वट वृक्ष प्रकट िोता िै। क्या िी अद्भुत चमत्कार िै। आप अपने नेत्रों ंको बन्द कर इस रिस्मयी घटना पर तहनक हवचार तो करें। आप स्वयं आियज एवं हवस्मय में पड जायेंगे।

इस थथूल दिे के अन्तगजत एक हलंग-दिे अथवा सूक्ष्म िरीर िोता िै। मृतुयु िोने पर यि थथूल िरीर अपने सभी संस्कारों ंतथा प्रवृहत्तयों ंके साथ थथूल िरीर से बािर आ जाता िै। उसका आकार वाष्प के सदृि िोता िै। यि कोरे नेत्रों ंसे दृहष्ट-गोचर निीं ंिो सकता िै। सूक्ष्म िरीर िी परलोक को जाता िै। यि सूक्ष्म िरीर पुनिः थथूल रीर में प्रकट िोता िै। सूक्ष्म िरीर के आकार का थथूल िरीर के आकार में पुनिः प्रकट िोने की हिया को पुनजजन्म का हनयम किते िैं। आप भले िी इस हनयम का हनषेध करें; परनुतु हनयम तो हनयम िी िै। यि बहुत िी कठोर तथा हनमजम िै। यहद आप इस हनयम का हनषेध करते िैं, तो स्पष्ट िै हक आप इस हनयम से अवगत निीं ंिैं। आप इस हनयम को स्वीकार करें अथवा न करें, हकनुतु यि तो लागू िोगा िी। उलूक पक्षी प्रकिा को स्वीकार करे अथवा न करे, हकनुतु सूयज के प्रकिा का अस्स्तत्व तो रिता िी िै।

अनुभव िारा िी आपको ज्ञान प्राप्त िोता िै। एक मनुष्य िारमोहनयम बजाता िै। प्रारम्भ में वि सावधानीपूवजक अपनी प्रत्ेयेक उँगली को प्रत्ेयेक चाबी पर रखता िै और बारम्बार इसकी पुनरावृहत्त करता रिता

ैं। कालान्तर में उँगहलयों ंकी यि गहत उसके हलए स्वाभाहवक-सी िो जाती िै। यिाँ तक हक चाबी की ओर हविेष ध्यान हदये हबना िी वि अमुक प्रकार के राग बजा सकने में सक्षम िो जाता िै। इसी भाँहत आपका वतजमान स्वभाव भी भूतकाल में सावधानीपूवजक हकये हुए आपके कमों का पररणाम िै।

श्री िंकराचायज तथा श्री ज्ञानदेव ने अपने बाल्काल में चारों ंवेदों ंतथा अन्यान्य ग्रिों ंका ज्ञान प्राप्त कर हलया था। एक बालक बडी िी कुिलता से हपयानो बजाता िै। एक बालक गीता पर प्रवचन करता िै। जमजनी का प्रख्यात कहव गोथे सतरि भाषाओं ंमें हनपुण था। इन मेधावी मिापुरुषों ंने अपने इस वतजमान जीवन में इन्िें प्राप्त निीं ंहकया। उन्िें इनका ज्ञान पूवज-जीवन में िी प्राप्त था।

प्रत्येक बालक अमुक प्रकार की प्रवृहत्त अथवा स्वभाव को ले कर जन्म ग्रिण करता िै। यि स्वभाव पूवज-काल में मनोयोगपूवजक हकये हुए उसके कमों से गहठत िोता िै। कोई भी बालक कागज के कोरे पृष्ठ के समान अथवा रेखािीन श्याम फलक जैसे िून्य मन के साथ जन्म निीं ंलेता। इसके पूवज भी िमारा जन्म हुआ रिता िै। प्राचीन तथा अवाजचीन युग के ऋहष, मुहन तथा योहगयों ंका भी यि स्पष्ट उद्घोष िै। ईसामसीि भी इसे मानते थे। उन्िोंने इंजील में बतलाया िै हक 'इब्राहीम से पूवज भी मैं था।' आहदकालीन हगरजाघरों ंमें भी पुनजजन्म के हसद्धान्त को थथान प्राप्त था। इलीजा ने िी जान बैहिस्ट के रूप में पुनिः जन्म हलया था।

बौद्धिक हविेषताओं ंमें रिने वाली इस प्रकार की हवषमता तथा असमानता के कारण का स्पष्टीकरण आनुवंहिक परम्परा निीं ंकर सकती। इन अलौहकक मिापुरुषों ंके माता-हपता तथा भाई-बिन आहद सभी सामान्य कोहट के िी व्यस्क्त थे। स्वाभाहवक प्रकृहत तो भूतकाल के कमों का िी पररणाम िोती िै। यि वंि-परम्परा से निीं ंआती। असाधारण प्रहतभािाली व्यस्क्तयों ंने अपने पूवज-जीवन में िी इन गुणों ंका अजजन हकया िोता िै।

यहद वतजमान पररस्थथहतयों ंमें आप अपनी इच्छाओं ंको इस जीवन में सन्तुष्ट न कर सके, तो इन अपूणज कामनाओं ंकी पररतृस्प्त के िेतु आपको पुनिः इस लोक में आना पडेगा। यहद आपको इस जीवन में कुिल संगीतकार बनने की तीव्र इच्छा जाग्रत िो उठी तथा अपनी इच्छा को आप पूणज निीं ंकर सके और वि इच्छा अब भी बनी हुई िै, तो यि इच्छा आपको पुनिः इस संसार क्षेत्र में लायेगी और आपको उपयुक्त वातावरण तथा तदनुकूल पररस्थथहत में रखेगी। एक कुिल संगीतकार बनने की प्रवृहत्त से आप अपने बाल्काल में िी संगीत का अभ्यास प्रारम्भ कर देंगे।

पुनजजन्म के हसद्धान्त के हवषय में एक आपहत्त यि उठायी जाती िै हक 'िमें अपने पूवज-जीवन की स्मृहत क्यों ंनिीं ंिोती ?' आपने अपने बाल्काल में जो-जो कायज हकये थे, क्या वे अब आपको स्मरण िैं? 'मुझे बाल्काल की बातें स्मरण निीं,ं अत: मैं बाल्काल में निीं ंथा' -क्या आप ऐसा कि सकेंगे ? हनिय िी आप ऐसा निीं ंकिेंगे। यहद आपकी स्मृहत के आधार पर िी आपके अस्स्तत्व का िोना हनभजर करता िै, तो आपका यि तकज यि हसद्ध करता िै हक आप अपने बाल्काल में एक बालक के रूप में स्थथत निीं ंथे; क्योंहक आपको अपने बाल्काल का स्मरण निीं ंआता । हनिय िी बाल्काल की हवगत घटनाएँ आपके स्मृहत-पटल से ओझल िो चुकी िैं; परन्तु आपने अपने अनुभवों ंके िारा जो ज्ञान प्राप्त हकया िै, वि तो आपके जीवन का एक अहवभाज्य अंग बन चुका िै। वे अनुभव अब भी आपके हचत्त में संस्कार-रूप से हवद्यमान िैं।

यहद आपको भूतकालीन जीवन की स्मृहत िो, तो सम्भवतिः आप अपने वतजमान जीवन का दुरुपयोग करेंगे। आपके पूवज-जीवन में जो आपका कट्टर ित्रु रिा िोगा, विी ंइस जीवन में आपके पुत्र के रूप में जन्म ले सकता िै। अब यहद आप गत जीवन को स्मरण करें, तो आप उसके प्राण लेने के हलए तुरन्त िी अपनी खड्ग खीचं लेंगे। ित्रुता की भावना आपके हृदय में िीघ्र िी जग उठेगी। जब आप कालेज में प्रहवष्ट िोते िैं, तो पाठिाला में प्राप्त सारे ज्ञान को भी आप अपने साथ िी ले जाते िैं। अब आप उच्चतर अभ्यास में उस ज्ञान की

वृस्द्ध तथा हवकास करते ि ैं। जब आप कालेज में जाते ि ैं, तो पाठिाला में जो कुछ आपने हकया ि ै, उन सबको स्मरण निीं ं रखते; परनुतु पाठिाला का अनुभव आपके साथ रिता ि ै। इसी भााँहत आपका भूतकालीन जीवन भी आपके साम्प्रहतक जीवन पर प्रभाव िालता ि ै।

प्रकृहत माता ने भूतकाल को आपसे गुप्त रख रखा ि ै; क्योंहंक भूतकाल की सूमृहत वांछनीय निीं ंि ै। थोडी देर के हलए आप कल्पना करें हक आप अपने हवगत जीवन के हवषय में जानते ि ैं। आपको यि भी पता ि ै हक गत जीवन में आपने एक पाप हकया था और अभी आपको उसका दण्ड हमलने वाला ि ै। अब आप सदा ि ी इस हवचार में हनमि रिेंगे और इसके पररणाम स्वरूप अपने को हनरन्तर हचन्तातुर बनाये रखेंगे। इसके कारण न तो आपको प्रगाढ़ हनिा आयेगी और न आपको भोजन ि ी रुहचकर प्रतीत ि ोगा। इसी कारण ऋहषयों ंने कि ा ि ै- "भूतकाल का हचन्तन न कीहजए। भहवष्य की योजना न बनाइए। वतजमान जीवन का हनमाजण कीहजए। ठोस वतजमान में ि ी जीवन-यापन कीहजए। सहिचारों ंका पोषण कीहजए। पुण्य-कमज कीहजए। इससे आप अपने भहवष्य को सुन्दर बना सकेंगे।"

योगी संस्कारों ंपर संयम कर अपने पूवज-जन्म का स्मरण कर सकता ि ै। वि आपके हचत्त में स्थथत संस्कारों ंपर संयम कर आपको भी आपके पूवज-जीवन के हवषय में सब-कुछ बतला सकता ि ै।

आपका वतजमान जीवन आपके भूतकाल के कायों का पररणाम ि ै। इसी भााँहत आप वतजमान जीवन में जो-कुछ कायज कर रि े ि ैं, वे आपके भावी जीवन के हनणाजयक ि ोंगे। इस कायज-कारण के हनयम को आपने स्वयं पररचाहलत हकया ि ै और इससे आप जन्म-मरण के चि में फाँस गये ि ैं। पुनजजन्म के हवषय में भी यिी हनयम ि ै। यि हनयम भी सभी प्राहणयों ंके हलए बन्धनकारक ि ै। जब आप उस अहवनािी परमात्मा का पूणज ज्ञान प्राप्त कर लेंगे, तभी यि चि नष्ट ि ोगा और आप मोक्ष तथा पूणजत्व को प्राप्त करेंगे।

आपके अनुभवों ंका नाि ि ोना दुष्कर ि ै। आपके कायज एक अदृश्य िस्क्त से सम्पन्न ि ोते ि ैं, हजसे अदृश्य अथवा अपूवज किते ि ैं। ये फलोत्पादक ि ैं। कायज प्रवृहत्त के रूप में पुनिः प्रकट ि ोते ि ैं। यहद आप दया के बहुत से कायज करें, तो आप दयालुता के कायज करने की सुदृढ़ प्रवृहत्त का हवकास करेंगे। जो लोग इस जीवन में बहुत ि ी दयालु ि ैं, उन्ोंने अपने पूवज-जन्मों ंमें दया के बहुत से बडे-बडे कायज हकये थे।

इस भााँहत पुनजजन्म कमज पर आधाररत ि ै। यहद मनुष्य पापहवक कायज करता ि ै, तो वि पिुयोहन में जन्म लेगा।

पुनजजन्म का हसद्धान्त उतना ि ी पुरातन ि ै, हजतने हक वेद और हिमालय । पुनजजन्म का हसद्धान्त जीवन की बहुत-सी समस्ाओं ंका समाधान करता ि ै। आपका प्रत्ेयेक िब्द, हवचार तथा कायज आपके हलए एक भण्डार तैयार करता ि ै। भला बहनए, भले कायज कीहजए। सहिचारों ंको प्रश्रय दीहजए। पुण्य-कायज कीहजए। हृदय को िुद्ध बनाइए। अमर आत्मा पर हनत्य-प्रहत ध्यान कीहजए। यि आपका ि ी आत्मा ि ै। ऐसा करने से आप अपने को जन्म-मृतुयु के चि से मुक्त करेंगे और इस जीवन में ि ी अमरत्व तथा िाश्वत सुख को प्राप्त कर लेंगे।

२. कमज तथा पुनजजन्म (ख)

आज के युग में भी मानव जाहत का बहुसंख्यक भाग इस पुनजजन्म के हसद्धान्त को स्वीकार करता ि ै। पूवज के िस्क्तिाली राष्टरों ंने भी इस हसद्धान्त को सत्य के रूप में ग्रिण हकया था। हमश्र की प्राचीन संसूकृहत का गठन इसी हसद्धान्त के ऊपर था। पायथागोरस, पे्लेटो (अफलातून), वहजजल और ओहवद आहद ने इसे स्वीकार कर इटली

तक इसका प्रचार हकया। प्लेटो के दिजन का तो यि मूलगत हसद्धान्त िै, जब हक वि किता िै हक 'प्रत्येक प्रकार का ज्ञान सूमृहत-रूप से हवद्यमान िै।' प्लेटो के हसद्धान्त के हवरोधी प्लोहटनस, प्रोकलस आहद ने भी इस हसद्धान्त को पूणज रूप से अंगीकार हकया था। करोडों ंिी हिन्दुओं,ं बौद्धों ंतथा जैहनयों ंने इस हवचार-धारा को अपने दिजन, धमज,
राज्य तथा सामाहजक संथथाओं ंका मौहलक आधार बनाया। फारस के उनागी सम्प्रदाय में इसे मुख्य हसद्धान्त माना गया था। जीवात्मा के पुनजजन्म को िूिइ मत में एक आवश्यक हसद्धान्त माना जाता था। उसका प्रभाव केल्ट, गाल तथा हब्रहटि जनता पर पडा । रोमन, िूइ तथा हिबूरू लोगों ंकी प्रथा-प्रणाली तथा धाहमजक कृत्यों ंमें इस हसद्धान्त
की सुस्पष्ट झलक हमलती िै। बेबीलोन के साम्राज्य के आहधपत्य में आने पर यहहदयों ंने भी इस हवचारधारा को स्वीकार हकया। बैहिसर जान को वे हितीय इलीजा मानते थे। इसी प्रकार ईसा को वे बैहिस्ट जान अथवा प्राचीन पैगम्बरों ंमें से हकसी एक का अवतार मानते थे। रोमन कैथोहलकों ंका पहवत्रता का हसद्धान्त भी इसी का कामचलाऊ रूप-सा प्रतीत िोता िै, हजसका हक उन लोगों ंने इसके थथान की पूहतज के हलए आहवष्कार हकया था। कैण्, हिहलंग, िोपेनिावर प्रभृहत दािजहनक इस हसद्धान्त के समथजक थे। जूहलयस, मुल्लर, िोनजर तथा एिविज बीचर जैसे धमजिा–ाज्ञ भी इसको स्वीकार करते िैं। आज भी बमाज, श्याम, चीन, जापान, तुहकजस्तान, हतब्बत, ईस्ट इंहिज तथा लंका दि के हनवाहसयों ंपर इस हसद्धान्त का साम्राज्य िै। इन दिों ंकी जनसंख्या ७५०० लाख िै, जो
हक समूपूणज मानव-जाहत का दो-हतिाई भाग िै। ईसा संवत् से सिस्रों ंवषज पूवज से हिन्दू, बौद्ध तथा जैन इस मिान् एवं
सवोत्कृष्ट तत्त्ज्ञान के हसद्धान्त का हिक्षण संसार को प्रदान कर रिे थे; परनुतु पिाात्य जगत् तथा यूरोपीय दिों ंमें जो आत्मघाती असंगत मान्यताएाँ अन्धयुग के कारण प्रचहलत हुई िैं, उन हवहचत्र मान्यताओं ंके आधार पर पूवज के वास्तहवक हसद्धान्तों ंका अस्स्तत्व हमटाया जा रिा िै। क्या यि बात हवस्मयजनक निीं ंिै? ज्ञानी पुरुषों ंको उत्पीहडत कर तथा कुसुतुनुतुहनयााँ के भव्य पुस्तकालय में संग्रिीत असंख्य ग्रिों ंको नष्ट कर चचज के धमाजहधकाररयों ने समस्त यूरोप को मानहसक अन्धकार में ला पटका िै। धाहमजक हवचारों ंके निंसतापूणज दमन के काले कारनामे जगत में इसकी िी देन िै। इसके पररणाम-जन्य साम्प्रदाहयक युद्धों ंतथा उपिवों ंसे लाखों ंमनुष्यों ंकी प्राणा–हन हुई िै।

पुनजजन्म के इस हसद्धान्त में अहवश्वास रखने वालों ंके हलए यिााँ एक हवचारणीय उदािरण िै। अभी थोडे िी समय हुए, हदल्ली में िास्न्त देवी नाम की एक छोटी बाहलका ने अपने पूवज-जन्म का हववरण हवस्तारपूवजक हदया था। इससे हदल्ली तथा मथुरा में िी निीं,ं वरन् सारे उत्तर प्रदि में बडी सनसनी फैल गयी। उसका बयान सुनने के हलए लोगों ंका एक बडा जमघट एकहत्रत िो गया। उस लडकी ने मथुरावासी अपने पूवज-जन्म के पहत तथा पुत्र को पिचान हलया। पूवज-जन्म में उसने जिााँ धन गाड रखा था, उस थथान को उसने बतला हदया तथा घर के आाँगन का वि कुआाँ भी बतलाया जो अब बन्द कर हदया गया िै। उसके बतलाये हुए हववरण की हनयहमत जााँच तथा पुहष्ट प्रत्यक्षदिी माननीय व्यस्क्तयों ंिारा की गयी। सूपून, सीतापुर तथा अन्य अनेक थथानों ंमें इस प्रकार की घटनाएाँ प्राय: सामान्य-सी िो चली िैं। ऐसी अवथथा में जीवात्मा पिले के थथूल िरीर को छोड कर तुरन्त िी अपने सूक्ष्म रीर के साथ नवीन जन्म धारण कर लेता िै और यिी कारण िै हक जीवात्मा को अपने पूवज-जीवन की सूमृहत आ जाती िै। वि जीवात्मा मानहसक लोक में अहधक काल तक निीं ंरुकता जिााँ हक उसे जगत् के अपने हवहभन्न अनुभवों ंके अनुसार नये मन तथा सूक्ष्म िरीर का नव-हनमाजण करना िोता िै।

आहद कालीन हगरजाघरों ंमें पुनजजन्म के हसद्धान्त को थथान प्राप्त था । इलीजा ने िी बैहिस्ट के रूप में पुनिः जन्म हलया था। क्या अन्धे बालक ने स्वयं पाप हकया था अथवा उसके हपता ने, हजससे हक वि बालक जन्मान्ध पैदा हुआ ? ऐसा उन लोगों ंने प्रश्न हकया जो कमज के प्रहतफल में दूसरों ंको भी कारण मानते थे। मृतुयु के तुरन्त बाद िी एक हचन्ताजनक घडी आ उपस्थथत िोती िै। उस समय पहवत्र थथान की ओर प्रयाण करने वाले जीवात्मा को अपने अहधकार में लेने के हलए देवदूतों ंका असुरों ंसे सामना िोता िै।

पायथागोरस तथा दूसरे तत्त्ज्ञाहनयों ंने जन्म-मरण के आवागमन के हसद्धान्त का हवश्वास भारत से िी ग्रिण हकया। पायथागोरस का जन्म छठी िताब्दी में हुआ था। उसने पुनजजन्म के हसद्धान्त की हिक्षा दी और ओियज तो यि िै हक इसके साथ िी उसने मांस-भक्षण का हनषेध भी चालू हकया।

नवजात िििु स्वतिः िी अपनी माँ का दुग्ध-पान करने की चेष्टा करता िै और बत्तख का बच्चा स्वयमेव तैरना आरम्भ कर देता िै। इस प्रकार की स्वाभाहवक हियाएँ पूवज-सूमृहत का प्रमाण िैं। पूवज-जन्मों ंमें जो हियाएँ की िोती िैं, उन हियाओं ंके पररणाम-स्वरूप संस्कार पडे िोते िैं। ये संस्कार अहवभेद्य िोते िैं और उनके िी पररणाम-स्वरूप इस जीवन की सूमृस्क्त िै। िमारा प्रत्येक कायज हचत्त पर एक संस्कार िालता िै। वि संस्कार िी सूमृहत में पररणत िो जाता िै। यि सूमृहत आगे चल कर अपने अनुरूप नये कमज तथा नये संस्कारों ंको उत्पन्न करती िै। वृक्ष और बीज के दृष्टान्त के समान िी कमज और संस्कार का जन्म और मरण का चि अनाहद काल से चालू िै।

कामनाओं ंके आहद काल का हनणजय निीं ंिो सकता, क्योंहक जीहवत रिने की कामना िाश्वत िै। कामनाओं ंका आहद-अन्त निीं ंिै। भौहतक जीवन के उपभोग का आग्रि (अहभहनवेि) प्रत्येक प्राणी में पाया जाता िै। जीहवत रिने की यि कामना िाश्वत िै। इसी प्रकार अनुभव भी अनाहद िै। आप हकसी ऐसे समय की कल्पना रि कर सकते, जब हक अिं-वृहत्त आपके हृदय में न िो। अिं-भाव की यि वृहत्त हदस हकसी अन्तराय के िाश्वत बनी रिती िै। इससे िम इस बात का हनणजय सुगमता से कर सकते िैं हक इस जीवन से पूवज भी िमारे कई जन्म थे।

हजस प्राणी को मृत्यु से िोने वाले कष्ट का अनुभव निीं ंिै तथा उसने प्रथम वा िी जन्म हलया िै, उसे कष्ट से बचाने के हलए भला मृत्यु का भय क्यों ंिोगा? कारण हक ऐसा समझा जाता िै हक हकसी भी हवषय से बचने की इच्छा केवल तभी जाग्रत िोती िै, जब हक उस हवषय के संयोग से िोने वाले दुिःख के अनुभव की सूमृहत िो। स्वाभाहवक गुण वसुतुतिः हकसी भी कारण की अपेक्षा निीं ंरखता। एक बालक उक माता की गोद में हगरने वाला िोता िै, तो यि सोच कर हक 'मैं हगर पिूंगा' - भय से काँपने लगता िै और माता के वक्षिःथथल पर लटकते हुए िार को अपने िाथों ंसे दृढ़ता के साथ पकडे रखता िै। भला उस बालक ने तो अपने जीवन में मृत्युजन्य दुिःख का अभी अनुभव भी निीं ंहकया। हफर वि ऐसा क्यों ंकरता िै? मृत्यु के पररणाम स्वरूप िोने वाले दुिःखों ंकी सूमृहत िी मृत्यु से भयभीत िोने का एकमात्र सम्भाव्य कारण िै. तो हफर इतना नन्ाँ-सा बच्चा मृत्यु से कैसे भयभीत िोता िै, जैसा हक बच्चे के कम से प्रकट िोता िै।

अद्भुत मेधावी बालकों ंके बहुत से उदािरण देखने में आते िैं। पाँच वषज का एक बालक कुिलतापूवजक हपयानो अथवा वायहलन बजा लेता िै। ज्ञानदेव ने अपना चौदि वषज की अवथथा में गीता पर 'ज्ञानेश्वरी' टीका हलखी। हकतने िी बालब गहणतिा–ा में हनष्णात पाये जाते िैं। मिास में भागवतार नाम का एक बालक था। जब वि आठ वषज का था, तब वि कथा करता था। आप इस प्रकार की अद्भुत घटनाओं ंका कैसे स्पष्टीकरण करेंगे? यि प्रकृहत की लीला मात्र निीं ंिै। एकमात्र पुनजजन्म का हसद्धान्त िी इन सबका स्पष्टीकरण कर सकता िै। वतजमान जीवन में जो एक व्यस्क्त संगीत अथवा गहणत का अभ्यास कर अपने मन में उनके गिरे हवचार अंहकत कर लेता िै, तो वि इन संस्कारों ंको अपने साथ िी आगामी जीवन में भी ले जाता िै और इस प्रकार जब वि एक बालक िी िोता िै, तभी वि इन िाथचत्रों ंका धुरन्धर हविान् बन जाता िै।

ईसाई धमज की मान्यतानुसार धाहमजक जीवन का अस्न्तम फल िाश्वत जीवन की प्रास्प्त और पापमय जीवन का अस्न्तम फल हचरन्तन अहि अथवा िाश्वत नरक वास िै। भला ऐसा कैसे िो सकता िै? क्योंहक पापी व्यस्क्त को तो इसमें अपने आगामी जन्मों ंमें पाप से मुक्त िोने का कोई अवसर िी निीं ंप्रदान हकया जाता िै।

पुनजजन्म का यि हसद्धान्त हिन्दू, बौद्ध तथा जैन धमों में सामान्य रीहत से सवजमान्य िै। परन्तु पुनजजन्म का यि हसद्धान्त िै क्या वसुतु ? पुनजजन्म के हसद्धान्त का भाव यि िै हक जीवात्मा इस जीवन में नये सजजन के रूप में प्रवेि निीं ंकरता िै। अस्न्तम लक्ष्य तक पहुाँचने से पूवज उसे अनेक अस्स्तत्वों ंके लम्बे मागज से िो कर आना पडता िै। बुस्द्ध में हकस हविेष प्रकार की हिया के िारा इस प्रकार का हवचार जाग्रत िोता िै हक 'मैं हाँ?' इस भााँहत
वास्तहवक तत्त्व को बतलाने वाली हिया में जन्म से ले कर मृत्युपयजन्त कोई भी पररवतजन निीं ंिोता िै। िैिव काल
से ले कर वृद्धावथथा तक बुस्द्ध के ज्ञान-तन्तुओं ंमें आमूल पररवतजन संघहटत िोता रिता िै; परन्तु 'मैं हाँ' का हवचार कभी भी दूर निीं ंिोता। यि अिंकार िी जीवात्मा िै। इस जीवात्मा के कारण िी सूमहत सक्षम रिती िै। यि जीवात्मा की अपनी हनज की चेतना िोती िै, हकसी अन्य की निीं।ं अतिः यि अिय तत्त्व स्वयं अपने-आपमें स्थथत रिता िै। िस्क्त के संग्रि और संरक्षण का हनयम भौहतक जगत् में हजतना सत्य िै, उतना िी आध्यास्त्मक जगत् में भी। अतिः जैसे कोई भी अणु न तो उत्पन्न हकया जा सकता िै और न नष्ट । तो हफर प्रश्न उठता िै हक हजसे मि
'मृत्यु' की संज्ञा देते िैं, उसके अनन्तर इस जीवात्मा का क्या िोता िै? इसका एकमात्र यिी उत्तर िै हक हवश्व की कोई भी िस्क्त इसके अस्स्तत्व का नाि निीं ंकर सकती।
मृत्यु का मूलगत कारण क्या िै? यि आज का बहुत िी हववादास्पद हवषय िै। एकमात्र पूवज-जन्म का हसद्धान्त िी इसका पूणज समाधान कर सकता िै। 'अपने पूवजों ंके अपराध के कारण िी िम आनुवंहिक दुिःख भोगते िैं' - इस बात को स्वीकार करना संसार में एक ऐसे मिान् अन्याय को स्वीकार करना िै हजसकी हक किीं ंसमता निीं।ं अपने पापों ंके हलए मनचािा उत्तरदाहयत्व ठिराना तो धमाजहधकाररयों ंका काम चलाने का एक साधन िै। अपने दुषृकृतों ंके हलए व्यस्क्त स्वयं िी दोष का भागी िै, न हक कोई अन्य। क्या संयुक्त राज्य के न्यायालय न्याय के हसद्धान्त पर आधाररत निीं ंिैं? यहद विााँ का एक न्यायाधीि न्यायासन पर बैठ कर 'ब' की मृत्यु को-स्वेच्छा से हकये हुए उसके आत्मघात को-एक अन्य व्यस्क्त 'अ' के िारा की हुई हकसी प्राणी की ित्या के उहचत प्रहतकार के रूप में स्वीकार करे, तो क्या यि न्यायपूणज िोगा ? और, यहद वि ऐसा करता िै, तो क्या विााँ का उच्चतर न्यायालय उस न्यायाधीि को जान-बूझ कर 'ब' को आत्मित्या के अपराध के हलए प्रोत्साहित करने का दोषी निीं ं ठिरायेगा? ऐसा िोने पर भी िमें यि हवश्वास करने के हलए किा जाता िै हक एक व्यस्क्त का पाप दूसरे व्यस्क्त के कष्ट सिन करने पर धुल सकता िै।

जब िम इस संसार में असमानता, अन्याय तथा दोष देखते और उन सबके सुलझाव का प्रयास करते िैं, तो पुनजजन्म का यि हसद्धान्त िमें हविेष सिायक हसद्ध िोता िै। क्यों ंएक व्यस्क्त धनी उत्पन्न िोता िै और दूसरा हनधजन ? क्यों ंएक व्यहक्त मध्य अफ्रीका के नरभक्षी मनुष्यों ंके मध्य जन्म ग्रिण करता िै और दूसरा भारत के िान्त, सास्त्वक वातावरण में? क्या कारण िै हक राजा जाजज ने एक ऐसे हविाल भूभाग पर िासन करने को जन्म हलया हजस पर हक सूयज कभी अस्त िी निीं ंिोता और क्यों ंआसाम के एक श्रहमक को एक अाँगरेज के चाय के बगीचे में एक गुलाम की भााँहत काम करना पडता िै? इस प्रत्यक्ष अन्याय का कारण क्या िै? जो लोग ईश्वर को इस हवश्व के स्रष्टा के रूप में मानते िैं, उन्िें भी ईश्वर को ईष्याज आहद दोषों ंसे मुक्त रखने के हलए पुनजजन्म के इस हसद्धान्त को अवश्यमेव मानना चाहिए।

नूयू टेस्टामेन्ट (बाइहबल का उत्तराधज) में पुनजजन्म के पयाजप्त उदािरण पाये जाते िैं। सन्त जान (प्रकरण ९-२) में ईसा के अनुयाहययों ंने उनसे एक प्रश्न हकया हक 'यि बालक अन्धा पैदा हुआ; इनमें से हकसने पाप हकया था-इस बालक ने अथवा इसके माता-हपता ने?' यि प्रश्न उस युग में इस हवषय में प्रचहलत दो लोक-मान्यताओं ंकी ओर हनदेि करता िै। उनमें से एक मान्यता थी मूसा के आधार पर। मूसा का यि उपदेि था हक माता-हपता के हकये हुए पाप उनके बाद आने वाली तीसरी या चौथी पीढ़ी में उत्पन्न िोने वाली उनकी सन्तान में उतर आते िैं। दूसरी मान्यता थी-पुनजजन्म का यि हसद्धान्त। उस प्रश्न के उत्तर में ईसा ने केवल इतना िो किा था हक उनके अन्धा पैदा िोने का कारण न तो उस बालक का हकया हुआ अपना पाप था और न उसके हपता का िी। उन्िोंने उस बालक के पूवज-अस्स्तत्व का हनषेध निीं ंहकया। भगवान् ईसा यि मानते थे हक जान पुनिः इलीजा के रूप में उत्पन्न हुए थे।

परनुतु यिााँ लोग कि सकते िैं हक यहद यि हसद्धान्त ठीक िै, तो हफर मनुष्य को अपने पूवज-जीवन की सूमृहत क्यों ंनिीं ंरिती? ऐसे लोगों ंसे मेरा केवल यि प्रश्न िै हक िम अपनी स्मरणिस्क्त का हकस ढंग से प्रयोग करते िैं? यि बात तो हनहित िी िै हक जब तक िम इस िरीर में जीहवत रिते िैं, तब तक िम अपने मस्स्तष्क
िारा िी इस सूमृहत को प्रयोग में लाते िैं। परनुतु जीवात्मा जब एक िरीर से दूसरे िरीर में जाता िै। तब वि अपने साथ इस पूवज-मस्स्तष्क को इस नये िरीर में निीं ंले जाता। यिी कारण िै हक मनुष्य को अपने पूवज-जीवन की सूमृहत निीं ंरिती। इसके अहतररक्त भला क्या आप अपने इस वतजमान जीवन में भी भूतकाल की अपनी सभी हियाओं ंको सदा स्मरण रखते िैं? क्या कोई भी व्यस्क्त अपने िैिव-जीवन की-उस हवहचत्र अवथथा की-सभी बातों ंको स्मरण रख सकता िै?
यहद आपको संयम (धारणा, ध्यान और समाहध के समस्न्वत अभ्यास) िारा संस्कारों ंको साक्षात् करने की राजयोग की कला का ज्ञान िै, तो आप अपने पूवजकाहलक जीवनों ंको स्मरण कर सकते िैं। मिहषज पतंजहल के योग-दिजन में आप देखेंगे-"संस्कारसाक्षात्करणात् पूवजाहतज्ञानम्" (योगसूत्र : ३-१८) अथाजत् (संयम िारा) संस्कारों ं का साक्षात् कर लेने से पूवज-जन्मों ंका ज्ञान िो जाता िै। आपने अपने अनेक जन्मों ंमें जो अनुभव प्राप्त हकये िैं, वे सब के सब आपके अन्तिःकरण में अत्यन्त सूक्ष्म रूप में उसी प्रकार रिते िैं जैसे हक ग्रामोफोन के ररकाॅज में ध्वहन सूक्ष्म रूप से रिती िै। जब ये संस्कार वृहत्त का रूप धारण करते िैं, तभी आपमें भूतकालीन अनुभवों ंकी सूमृहत जाग पडती िै। यहद कोई योगी अन्तिःकरण में स्थथत इन भूतकाल के अनुभवों ंपर संयम कर सकता िै, तो वि अपने सभी पूवज-जन्मों ंका पूणज हववरण प्राप्त कर सकता िै।

३. पुनजजन्म-एक हनतान्त सत्य (क)

मनुष्य एक िी जन्म में पूणजता निीं ंप्राप्त कर सकता। इसके हलए उसे अपने हृदय, बुस्द्ध तथा बाहुबल का हवकास करना िोता िै। उसे अपने चररत्र का पूणज रीहत से गठन करना िोता िै। दया, हतहतक्षा, पे्रम, क्षमा, समदृहष्ट,
सिास आहद हवहभन्न सद्गुणों ंका उसे हवकास करना िोता िै। इस हविाल संसार-रूपी पाठिाला में उसे बहुत से पाठ सीखने िोते िैं, बहुत से अनुभव प्राप्त करने िोते िैं। अतिः उसे इस पूणजता की प्रास्प्त के हलए कई जन्म ग्रिण करने पडते िैं। पुनजजन्म का यि हसद्धान्त हनतान्त सत्य िै। आपका यि लघु जीवन तो आपके सम्मुख तथा पृष्ठभाग में फैली हुई हविाल जीवन-रूपी शृंखला की एक कडी, एक अंि मात्र िै। एक जीवन का तो कुछ भी मित्व निीं।ं
एक जीवन में तो मनुष्य को बहुत िी अल्प अनुभव प्राप्त िोते िैं। उसका हवकास भी बहुत िी कम िो पाता िै।
अपने जीवन-काल में मनुष्य अनेक दुष्कमज करता िै; सुकमज तो वि कम िी करता िै। भले मनुष्य के रूप में मरने वालों ंकी संख्या बहुत िी कम िोती िै। ईसाई धमज वाले मानते िैं हक मनुष्य का एक जीवन िी उसका पूणज हनणाजयक तथा हनधाजरक िोता िै। भला यि कैसे सम्भव िै? मनुष्य के हविाल तथा असीम भहवष्य को उसके एक लघु, अल्प तथा कुहिि जीवन पर हनभजर कैसे हकया जा सकता िै? मनुष्य यहद इस जीवन में ईसा पर हवश्वास लाता िै,
तो उसे स्वगज में अनन्त सुखिास्न्त प्राप्त िोती िै; परनुतु यहद वि इस जीवन में ईसा पर हवश्वास निीं ंलाता, तो उसे
अनन्त काल तक नरक भोगना पडता िै। वि सदा के हलए अहम-कुण्ड अथवा भयंकर नरक में धकेल हदया जाता िै। क्या यि हसद्धान्त अन्यायपूणज निीं ंिै। क्या मनुष्य को अपनी भूल सुधारने तथा उन्नहत करने का अवसर निीं ं हमलना चाहिए। पुनजजन्म का हसद्धान्त इस दृहष्ट से बहुत िी न्याय-संगत िै। यि हसद्धान्त मनुष्य को अपनी भूल सुधारने, उन्नहत करने तथा िहमक हवकास करने के हलए पयाजप्त अवसर प्रदान करता िै।

४. जीवात्मा का दिान्तर-गमन

अ ाँगरेजी के टरांसमाइगे्रिन (Transmigration) िब्द का अथज ि-एक जीवन से दूसरे जीवन में गहत। चावाजक तथा भौहतकवाहदयों ंके अपवाद के अहतररक्त भारतीय दिजन की प्रायिः सभी िाखाओं ंका मुख्य तथा मौहलक हसद्धान्त ि-आत्मा की अमरता में उनका हवश्वास। पूणजता की प्रास्प्त के हलए जीव अनेक जन्मों ंसे गुजरता ी। इसी को हवहिष्ट पाररभाहषक िब्दों ंमें 'जीवात्मा का दिेान्तर-गमन' किते िैं।

पुनजजन्म अथवा जीव के आवागमन का यि हसद्धान्त आहद काल से िी चला आ रिा ि। यि हवश्वास उतना िी पुरातन ि हजतना हक आहदम मानव । जीवात्मा की अहवनश्वरता तथा मृतुयु के अनन्तर भी प्रकारान्तर से उसकी हवद्यमानता- यि एक ऐसा हसद्धान्त ि जो मृतुयु के रिस् को सुलझाता ि तथा मृतुयु-हवषयक हवचार को आश्वस्त करता ि। भारत के प्राचीन आयों ने युग-युगान्तर-व्यापी मानव-दिुःख की समस् का इसमें समाधान पाया और उन्ोंनें इसे एक हविेष धाहमजक हसद्धान्त के रूप में वरण हकया।

जीवात्मा के आवागमन का प्रयोजन न तो उसे पुरसृ्कत करने के हलए ि और न उसे दण्ड देने के हलए िी; वरन् यि तो उसकी भलाई और पूणजता के हलए ि। यि मानव-जाहत को उसके अस्न्तम लक्ष्य के साक्षात्कार के हलए तैयार करता ि, हजससे हक मनुष्य जन्म-मरण के चि से सदा के हलए मुक्त िो जाता ि। जीवन की हवपुलता के अभाव में इस पूणजता तथा पूणज स्वतन्त्रता को प्राप्त करना मनुष्य के हलए सम्भव न िो पाता।

मनुष्य अपने हवहवध जन्मों ंमें अपने संस्कारों ंएवं गुणों ंका हवकास करता ि। तथा अस्न्तम एक जन्म में वि एक असाधारण मेधावी बनता ि। बुद्ध अपने पूवजगामी अनेक जन्मों ंमें हभन्न-हभन्न अनुभव प्राप्त करते रिे थे। वे केवल अपने अस्न्तम जन्म में - िी बुद्ध बने। सभी सद्गुणों ंका हवकास एक िी जन्म में निीं ंहकया जा सकता। हिमक उन्नहत के िारा िी मनुष्य सद्गुणों ंका हवकास कर सकता ि। मनुष्य का नन्ा बच्चा -स्तन-पान करता ि और छोटा बत्तख जल में तैरता ि। इसकी हिक्षा उन्ें हकसने दी ? ये उनके पूवज-जन्मों ंके संस्कार िैं।

िास्न्त देवी आहद बच्चों ंके ऐसे अनेक उदािरण देखने को हमलते िैं, हजन्ोंनें अपने पूवज-जीवन के सम्बन्धों ंमें पूणज हववरण प्रसुतुत हकये। उनकी बतलायी हुई बातों ंकी पूणज रूप से पुहष्ट भी िो चुकी ि। इन बच्चों ंने तो अपने उन घरों ंके ठीक-ठीक पते भी बतलाये, हजनमें हक वे पूवज-जीवन में रिे रिे थे।

आत्मा, प्रतीकार, पुनजजन्म, हदव्यता आहद के हसद्धान्त मिान् दािजहनक प्ेलेटो (अफलातून) को भी मान्य थे। पायथागोरस भी लोगों ंको पुनजजन्म के हसद्धान्त की हिक्षा देते थे। इसी प्रकार भगवान् बुद्ध ने भी पुनजजन्म की हिक्षा दी थी।

प्राचीन हमश्र दिेवासी अपने मृत व्यस्क्त के िव को मसाले लगाते और तत्पिात् उन्ें अपने सामथ्यज के अनुसार सवोत्तम कब्र में दफन करते थे। उनकी मान्यता के अनुसार मृत व्यस्क्त के दो आत्मा िोते थे। उनमें से एक आत्मा तो, जब तक िव नष्ट न िो जाता तब तक, कब्र में िी रुका रिता था और दूसरा आत्मा अमर देवों ंसे प्रविे-पत्र प्राप्त करने के हलए अग्रसर िोता था। एक अलौहकक न्यायाधीि इस आत्मा के हवषय में आवश्यक सूचनाएँ देता था। उस आत्मा के गुण-दोष तथा प्रारि के हवषय में उस न्यायाधीि के हवचार िी अस्न्तम माने जाते थे। जो कुछ भी िो, हमश्र के पुरोहित पुनजजन्म के हसद्धान्त को हकसी-न-हकसी अप्रकट रूप में अंगीकार करते थे।

यि मानव िरीर तो अहवनािी आत्मा का एक पररधान मात्र अथवा उसका हनवास-थथान ि। अपना हवकास साधने तथा दैवी योजना एवं उद्देदेश्य के पूवाजपेक्षा अहधक सुचारुरूपेण साक्षात्कार करने के हलए हनिय िी जीवात्मा दूसरे थथान में का हनवास कर सकता ि अथवा नये िि धारण कर सकता ि। हवश्व-स्रष्टा ने ऐसी िी * योजना पररकस्ल्पत की ि। पहतत एवं अधम मानव के आत्मा को नयी प्रकार की हिक्षा देने के हलए दूसरे िरीर में

ालिा जाता िै। सभी प्राहणयों ंका हवकास उनके भले िैं के हलए िी िोता िै। सामान्यतिः प्रकृहत का हनयम एवं हसद्धान्त िै उत्थान, न हक पतन; परन्तु इस सामान्य हनयम के अपवाद भी पाये जाते िैं

अपने पूवज-जीवन-काल में जीवात्मा ने जो थोडे गुण एवं हदव्यता को प्राप्र हकया िै, उनसे सुसस्ज्जत िो कर वि अपने इन गुणों ंकी मूल पूूँजी में वृस्द्ध करने, उन्ें हवकहसत करने तथा उनमें सुधार करने के हलए नये जीवन में प्रवेि करता िै। आत्मा िारा हनयस्न्त्रत इस देि में ईश्वर तथा सत्यता, पहवत्रता आहद ईश्वरीय गुणों ंकी ग्रािकिस्क्त अब कििं ंअहधक िोती िै।

जो पापी जीव िैं, उन्ें अपने बाद के जन्मों ंमें अपने को सुधारने का अवसर निीं ंप्रदान हकया जाता िै तथा मनुष्य के सीहमत पाप, यहद वे हकसी प्रकार दूर न हकये गये, तो मृत्यु िोने पर उसे अनन्त दुिःखों ंमें धकेल देते िैं। ऐसा कदाहप निीं ंिो सकता। यि बात हवचार-संगत निीं ंिै। पुनजजन्म का हसद्धान्त पापी जीवों ंको भावी जन्मों ं में अपने को सुधारने तथा हिहक्षत करने के हलए पयाजप्त अवसर प्रदान करता िै। वेदान्त किता िै हक अत्यन्त पापी के हलए भी मोक्ष की आिा िै।

पापी जीव अपने दुष्कमों का फल एक हनहित काल तक भोगते िैं। जब वे उन पापों ंसे मुक्त िो जाते िैं, तब वे पुनिः बुस्द्धिील प्राणी के रूप में जन्म ग्रिण करते िैं और इस भाूँहत उन्ें पुनिः मुस्क्त-साधन के हलए एक नया अवसर प्रदान हकया जाता िै, हजसमें उन्ें सन्मागज तथा कुमागज के मध्य चुनाव करने का इच्छा-स्वातन्य तथा भले-बुरे का अन्तर बतलाने वाला हववेक भी प्राप्त रिता िै।

आप अपने सुख-दुिःख के, अपने हनजी कमों के कारण स्वयं िी उत्तरदायी िैं। प्रत्येक व्यस्क्त के चररत्र में हवभेद का िोना, हभन्न-हभन्न संस्कार जो बालकों ंके जन्म-समय में देखने में आते िैं तथा मानव जाहत के अन्दर वतजमान हवषमता-इन सबके कारण का हनदेि तथा उनका स्पष्टीकरण एकमात्र कमज के हसद्धान्त िारा िी हकया जा सकता िै। कमज का हसद्धान्त मनुष्य को उसके पूणज हवकास के हलए स्वतन्त्रता एवं छूट प्रदान करता िै।

मनुष्य का प्रहतहबम्ब एक दपजण में पडता िै। मनुष्य की कोई अपनी वस्तु उसके िरीर से हनकल कर इस प्रहतहबम्ब में निीं ंजाती। यि प्रहतहबम्ब स्वयं वि मनुष्य तो निीं ंिै; परन्तु उससे यि हभन्न भी निीं ंिै। पुनजजन्म भी ठीक इसी प्रकार घहटत िोता िै। नया जन्म प्रहतहबम्ब के सदृश्य िै और नये जन्म का िेतु जो कमज िै वि दपजण के तुल् िै, इसके माध्यम से िी मनुष्य की छाया नये जन्म में प्रहतहबस्म्बत िोती िै।

योहगयों ंतथा ऋहषयों ंकी ज्ञान-प्रज्ञा का, उनके जीवन तथा उपदेिों ंका नये जीवन में अहधक हनखार िोता िै। ईश्वरीय ज्योहत की खोज बढ़ जाती िै तथा ईश्वर की ओर का आकषजण अहधक दृढ़ िो जाता िै। जीवन ईश्वर का साक्षात्कार करने तथा उसकी वाणी सुनने के हलए अहधक उपयुक्त बन जाता िै। इस भाूँहत प्रगहत एक सत्ता से दूसरी सत्ता की ओर आगे-आगे िी बढ़ती िै। यद्यहप िम यि निीं ंकि सकते हक इसके हलए हकतने जन्मों ंकी आवश्यकता िोती िै; परन्तु जब तक पूणजता की अस्न्तम तथा हनष्कलंक अवथथा की प्रास्प्त निीं ंिोती तथा जब तक जीवात्मा का परमात्मा में हवलय निीं ंिो जाता, तब तक यि प्रगहत सतत चालू रिती िै।

मैं किाूँ से आया हूँ? मुझे किाूँ जाना िै? प्रत्येक बुस्द्धमान् मनुष्य ऐसे प्रश्न करता िै। ये जीवन-सम्बन्धी समस्ाएूँ िैं। आपका यि वतजमान जन्म तो आपके असंख्य जन्मों ंमें से एक िै। िाूँ, वे सभी जन्म मनुष्य-योहन में हुए िों,ं यि आवश्यक निीं।ं

जीवात्मा का हकसी देि-हविेष के साथ योग िोना जन्म किलाता िै और उससे हवयोग िो जाना िी मृत्यु किलाती िै। जब जीवात्मा अपने भौहतक िरीर का पररत्याग कर देता िै, तब वि दूसरे िरीर में प्रवेि कर जाता

ीं। अपने गुणों ंके अनुसार उसे जो नया िरीर प्राप्त िोता िै, वि मनुष्य, पिु अथवा वनस्पहत-वगज का िो सकता ीं। कठोपहनषद् बताती िै - "िे नहचकेता! मृतुयु के अनन्तर जीवात्मा हकस प्रकार रिता िै, इस हवषय का जो ाश्वित
एवं हदव्य रिस् िै, उसे अब मैं तुम्हें बतलाता हाँ। हकतने िी जीवात्मा तो दूसरा िरीर धारण करते िैं और हकतने ीं जीवात्मा वनस्पहत जैसी अधम योहनयों ंमें जा पडते िैं। इस हवषय में उन जीवात्माओं ंके कमज तथा भाव िी कारणभूत िैं" (कठोपहनषद् : २-२-६, ७) ।
जब तक जीव अपने समूपूणज दोषों ंसे मुक्त िो कर तथा योग िारा अहवनािी ब्रह्म का सच्चा तथा पूणज ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष निीं ंप्राप्त कर लेता िै अथवा जब तक वि परब्रह्म से योग प्राप्त कर पूणज अहचरानन्द का उपभोग निीं ंकरता, तब तक जन्म-मरण का यि प्रविा सतत गहतिील रिता िै। भारतीय दिजन के अनुसार इस थथूल रीर के अन्दर एक सूक्ष्म िरीर िोता िै।

यि सूक्ष्म िरीर थथूल िरीर के हवनष्ट िोने पर हवनष्ट निीं ंिोता, वरन् वि अपने इिलौहकक पुण्य-कमों के फलोपभोग के हलए स्वगज को जाता िै। जीव के मुक्त िोने पर िी वि नष्ट िोता िै। संस्कार एवं वासनाएँ इस सूक्ष्म िरीर के साथ भी जाती िैं।

यिाँ वामदेव, ज्ञानदेव, दत्तात्रेेय, अष्टावि, िंकराचायज आहद जैसे हकतने िी ऐसे भाग्यिाली आत्मा देखने में आते िैं, हजन्िोंने इस संसार में प्रथम बार प्रवेि करते िी, मृतुयु से पूवज अपने जीवन-काल में िी उच्च कोहट की पूणजता प्राप्त कर ली थी। ३ सब जन्मजात हसद्ध थे। इनके अहतररक्त कुछ ऐसे जीवात्मा िोते िैं हजन्िें अिेष पूणजता की प्रास्प्त करने तथा मोक्ष-लाभ करने के हलए कुछ और अहधक जन्म-ग्रिण करने की आवश्यकता रिती िै।

भला जीवात्मा भले िरीर का हनमाजण करता िै और बुरा जीवात्मा बुरे िरीर का। जीवात्मा के ईश्वर की ओर प्रगहत करने में िरीर उसका एक अपररियज साधन िै। जीव को प्रगहत-पथ पर उन्नयन करने के हलए िी भगवान् ने इस िरीर की रचना की । पेटरोल तथा वाष्प में मिान् िस्क्त िै; परनुतु वे स्वयं अकेले एक हनहित पथ से हकसी हनहित लक्ष्य तक निीं ंजा सकते। इसके हलए उन्िें हकसी यन्त्र, रेलगाडी अथवा जलपोत का आश्रय लेना पडता िै। हवमान-चािक अथवा यन्त्र-चालक पेटरोल अथवा वाष्प को अपने पररविन में िालता िै और तब उसे अपने हनहदजष्ट थथान की ओर चलाता िै। अतिः जीवात्मा को भी अपने मागज को तय करने और अपने परमात्मा तक पहुँचने के हलए एक िरीर का रखना अहनवायज िै।

ब्रह्मज्ञान प्राप्त िो जाने पर जीवात्मा का आवागमन निीं ंरि जाता । प्रकृहत माता का काम तब समाप्त िो जाता िै। प्रकृहत जीवात्मा को इस संसार के सभी अनुभव प्राप्त कराती िै और जब तक जीवात्मा अपने वास्तहवक स्वरूप का ज्ञान निीं ंप्राप्त कर लेता तथा जब तक वि परब्रह्म में लीन निीं ंिो जाता, तब तक वि उसे अनेकानेक रीरों ंिारा अहधकाहधक ऊँचाइयों ंकी ओर ले जाती िै।

आध्यास्त्मक-संस्कार-सृजन तथा व्याविाररक योग की अहवराम साधना िारा अपने जीवन को श्रेेष्ठतर बनाने का प्रयास प्रत्ेयेक सम्भव उपाय से करते रिें। एकमात्र ब्रह्मज्ञान के िारा िी आप इस जन्म-मरण के कष्ट से मुक्त िो सकते िैं।

५. पुनजजन्मवाद

मनुष्य की तुलना एक पौधे से की जा सकती िै। पौधे की तरि िी वि उत्पन्न िोता तथा हवकहसत िोता िै और अन्त में मर जाता िै; परनुतु वि पूणजतिः मरता निीं।ं पौधा भी उगता और बढ़ता िै तथा अन्त में मर जाता िै।

वि पौधा अपने पीछे ऐसे बीज छोड जाता िै जो हक नये पौधे उत्पन्न करते िैं। इसी भााँहत मनुष्य भी जब मरता िै, तब वि अपने भले-बुरे कमों को पीछे छोड जाता िै। मनुष्य का थथूल िरीर भले िी मृतुयु को प्राप्त िोता और नष्ट िी जाता िै; परनुतु उसके कमों के संस्कार नष्ट निीं ंिोते। इन कमों का फल भोगने के हलए उसे पुनिः जन्म लेना पडता िै। कोई भी जीवन प्रथमजात निीं ंिो सकता; क्योंहंक वि पूवज-जन्म का पररणाम िोता िै। इसी प्रकार कोई
जीवन अस्न्तम भी निीं ंिो सकता; क्योंहंक उस जीवन के कमों का िोधन उससे आगामी जीवन में िोता िै। यि दृश्यमय अस्थथर जगत् आहद-अन्त-रहित िै। परनुतु जो अपने सस्च्चदानन्द-स्वरूप में स्थथत िैं, उन जीवनुमुक्तों ंके हलए इस संसार की कोई सत्ता निीं ंिै।

मनुष्य जब मरता िै, तब वि अपने साथ अपनी हचरथथायी हलंग-दिे को ले जाता िै। यि हलंग–रीर पााँच ज्ञानेस्यि, पााँच कमेस्यि, पंच प्राण, मन, बुस्द्ध, हचत्त तथा अिकार, पररवतजनिील कमाजिय और जीवन के कमज- इन सबसे बना हुआ िोता िै। यि सूक्ष्म िरीर िी आगामी नये िरीर का हनमाजण करता िै।

आलन्दी के भूतपूवज सुप्रहसद्ध योहगराज ज्ञानदेव जी जब चौदि वषज की वय के थे, तब उन्ोंनें श्रीमिगवद्गीता पर 'ज्ञानेश्वरी' नाम की टीका हलखी। वे जन्मजात हसद्ध योगी थे। यहद आप उहचत रीहत से सम्यक् प्रयास करें, तो आप भी उन्ीं ंकी तरि हसद्ध पुरुष बन सकते िैं। हजस स्थथहत को एक व्यस्क्त ने प्राप्त हकया िो, उस स्थथहत को अन्य व्यस्क्त भी प्राप्त कर सकता िै।

एक नवजात ििु, हजसने अपने इस जीवन में कोई भी अहनष्ट कमज निीं ंहकया, यहद अत्यन्त कष्ट से पीहडत िो रिा िै, तो हनिय िी यि उस बालक के पूवज जन्म में हकये हुए दुष्कमज का पररणाम िै। इस पर यहद आप यि प्रश्न करें हक वि व्यस्क्त अपने गत जीवन में पाप कमज करने के हलए कैसे प्रवृत्त हुआ, तो उसका उत्तर यि िै हक यि उससे पूवज के जन्म में हकये हुए दुष्कमों का पररणाम िै और इस भााँहत यि कमज हनरन्तर आगे बढ़ता जाता िै।

बहुत से बुस्द्धिाली व्यस्क्तयों ंके मूखज पुत्र िोते हुए पाये जाते िैं। पूवज-जन्म में जब आप कुषुधा से मृतप्राय िो रिे िों,ं उस समय यहद भेडों ंके एक चरविो ने आपको अन्न-जल हदया िो, तो वि चरविाा आपकी सम्पहत्त का उपभोग करने के हलए इस जीवन में अपनी अल्प बुस्द्ध के साथ िी आपके पुत्र के रूप में आपके यिााँ जन्म ग्रिण करेगा।

प्राणी जब जन्म लेता िै, तब तुरन्त िी उसे अपनी मााँ के स्तन-पान की इच्छा जाग्रत िो जाती िै तथा उसमें भय का सिज ज्ञान भी हदखायी देता िै। इससे सिज िी यि हनष्कषज हनकलता िै हक उसे अपने पूवज-जन्म में अनुभव हकये हुए कष्ट की तथा मााँ के स्तन-पान करने की हिया का स्मरण िोता िै। इससे यि प्रकट िोता िै 'पुनजजन्म िै।'

एक नन्े से बालक में भी िषज, िोक, भय, िोध, सुख, दुिःख आहद वृहत्तयााँ देखी जाती िैं। इसका कारण उसके वतजमान जीवन के धमज-अधमज के संस्कार निीं ंिो सकते। इससे िम सिज िी यि पररणाम हनकाल सकते िैं हक जीव पूवज-थथान में हवद्यमान था और यि भी हक वि अनाहद िै। यहद आप जीव को अनाहद स्वीकार निीं ंकरते, तो उस अवथथा में दो दोष उपस्थथत िोंगें-एक तो कृतनिा-दोष और दूसरा अकृताभ्यागम-दोष । पूवज-जन्म-कृत िुभ-अिुभ कमों के पररणाम स्वरूप िै जीव को सुख-दुिःख प्राप्त िोते िैं। वे कमज यहद अपना फल हदये हबना िी समाप्त िो जायें, तो हकये हुए कमज (कृत) का निा िोगा। यि कृतनिा-दोष िोगा। इसी भााँहत हजन िुभ-अिुभ कमों को जीवात्मा ने पूवज जन्म में हकया िी निीं,ं उनके फल-स्वरूप प्राप्त सुख-दुिःख उसे भोगना पडेगा। यि अकृताभ्यागम-दोष िै। इस दोनों ंसे बचने के हलए यि स्वीकार करना पडेगा हक जीव अनाहद िै।

योग के हकतने िी साधक मुझसे यि प्रश्न करते िैं हक कुण्डहलनी जागरण के हलए योगी को हकतने काल तक ीिाजसन, पहिमोत्तानासन, कुम्भक, मिामुिा आहद का अभ्यास करना चाहिए? योग के हकसी भी ग्रन्थ में इसका उल्लेख निीं ंपाया जाता। एक साधक अपने जीवन में साधना का प्रारम्भ विााँ से करता िै, जिााँ पर हक उसने अपने गत जीवन में उसे छोडा था। यिी कारण िै हक भगवान् श्री कृष्ण अजुजन से किते िैं- "िे कुरुनन्दन। उसका जन्म बुस्द्धमान् योहगयों ंके कुल में िोता िै। विााँ वि अपने पूवज-जन्म की बुस्द्ध के संस्कारों ंको प्राप्त करता िै और उसके अनन्तर हफर योग-हसस्द्ध के हलए प्रयत्न करता िै" (गीता : ६-४२, ४३)। यि सब व्यस्क्त की ुस्द्धि की मात्रा, हवकास की दिा, नाडी-ुस्द्ध की मात्रा, प्राणायाम, वैराग्य की स्थथहत तथा मोक्ष के हलए व्याकुलता पर हनभजर करता िै।

हकतने िी व्यस्क्त आत्म-साक्षात्कार के हलए आवश्यक िुस्द्ध तथा अन्य साधनों ंसे सम्पन्न िो कर जन्म लेते िैं; क्योंहक उन्होंने अपने पूवज-जीवन में िी आवश्यक अनुिासन का पालन हकया िोता िै। वे जन्मजात हसद्ध िोते िैं। गुरुनानक, अमालदी के ज्ञानदेव, बामदेव तथा अष्टावि ये जन्मजात हसद्ध िोते िैं। िोइल थे। गुरुनानक जी, जब एक बालक िी थे, तभी उन्होंने पाठिाला में अपने अध्यापक ॐ के मित्व के हवषय में प्रश्न हकया था। श्री वामदेव जी जब मााँ के उदर में थे, तभी उन्होंने वेदान्त पर प्रवचन हकया था।

मनुष्य फल-प्रास्प्त की इच्छा से कमज करता िै और इस कारण वि नया जन्म लेता िै, हजससे हक वि अपने कमज के फल का उपभोग कर सके। उसके पित् जन्म में वि कुछ और अहधक नये कमज करता िै और उसे उनके हलए पुनः दूसरा जन्म लेना पडता िै। इस भााँहत जन्म-मरण का यि संसार-चि अनाहद काल से अनन्त काल तक चलता रिता िै। जब मनुष्य को आत्मज्ञान िो जाता िै, तभी वि इस जन्म-मरण के चि से मुक्त िो जाता िै। कमज अनाहद िै और इसी भााँहत यि संसार भी अनाहद िै। मनुष्य जब कमज-फल की आिा से मुक्त िो हनष्काम भाव से कमज करता िै, तब उसके सभी कमज-बन्धन िनैः िनैः ढीले पड जाते िैं।

जीने के हलए मर हमहटए। इस छोटे से अिं को हवनष्ट कीहजए, इससे आप अमरत्व प्राप्त करेंगे। ब्रह्म में हनवास कीहजए, इससे आप अजर-अमर बन जायेंगे। आत्मा को प्राप्त कीहजए, इससे आप िाश्वत जीवन प्राप्त करेंगे। आत्म-भाव को प्राप्त कीहजए, इससे आप संसार सागर का सन्तरण कर जायेंगे। अपने सस्च्चदानन्द- स्वरूप में स्थथत िों, ं इससे आपको हचरन्तन जीवन प्राप्त िोगा।

एक जोंक घास के िण्ठल पर चलती िै और उसके छोर पर जा पहुाँचती िै। अब यि पिले तो अपने िरीर के अगले भाग से दूसरे िण्ठल को पकड लेती िै और - तब अपने हपछले अंग को खीचं कर नये िण्ठल पर लाती िै। ठीक इसी भााँहत जीवात्मा भी मृत्यु के समय वतजमान िरीर को त्याग कर अपनी भावनाओं ंिारा नये िरीर की रचना करता िै और तब वि उसमें प्रवेि कर जाता िै।

िुभ और अिुभ कमज अपने िुभ-अिुभ फल तो अवश्य प्रदान करते िैं। मिाभारत में आप देखेंगे, "हजस भााँहत सिस्रों ंगायों ंके मध्य में बछडा अपनी मााँ को ढूाँढ़ लेता िै, उसी भााँहत पूवज-जन्म-कृत कमज अपने कताज का अनुसरण करते िैं।"

यादृशं डक्रयते कमा तादृशं भुज्यते फलम् ।
यादृशं वप्यते बीजं तादृशं प्राप्यते फलम् ।।

हजस प्रकार का बीज बोया जाता िै, तदनुरूप िी फल प्राप्त िोता िै। इसी भााँहत िमारे हकये हुए कमज का फल िमारे हकये हुए कमज के अनुरूप िी िोता िै। यि प्रकृहत का अकाट्य हनयम िै। आम के वृक्ष का रोपण करने

वाला व्यस्क्त कटिल के फल की आिा निीं ंकर सकता। हजस व्यस्क्त ने आजीवन दुष्कमज िी हकया िै, वि अपने अगले जीवन में सुख, िास्न्त और समृस्द्ध की आिा निीं ंरख सकता।

मिारे जीवन में ऐसे अनेक प्रसंग आये िैं, जब हक िम सब भूतकाल में कई बा इकट्ठे रिे और अलग हुए। भहवष्य में भी ऐसे प्रसंग आते रिेंगे। हजस भााँहत अन्न-राहि को एक अन्नागार से हनकाल कर दूसरे अन्नागार में ालिने पर उसका गठन और हमश्रण सदा नवीन रूप धारण करता िै, ऐसी िी अवथथा इस जीव की संसार में िै।

६. पुनजजन्म-एक हनतान्त सत्य (ख)

गीतामूहतज के नाम से प्रहसद्ध सुश्री कमलिैकुमारी देवी ने अपने ढाई वषज की वय में गीता पर प्रवचन करना आरम्भ कर हदया था। सन् १९३९ के हदसम्बर मास की १२ तारीख को मंगलवार के हदन उसका जन्म हुआ था। जीवात्मा के आवागमन तथा जीव की अमरता का अहभलेख यद्यहप िमारे ग्रिों ंमें पाया जाता िै, परन्तु वे मिारे व्याविाररक जीवन में सुप्त एवं अव्यक्त से िोते िैं।

वि अपने हपता की गोद में बैठ कर अपनी टूटी-फूटी तोतली भाषा में गीता के श्लोकों ंका उच्चारण करती थी। वि गीता की पुस्तक की ओर देखती भी रिती थी। जब वि ढाई वषज की हुई, तो एक हदन उसके हपता पस्ण्डत देवीदत्त जी उसे अमृतसर के लोिगढ़ दरवाजे के बािर स्थथत एक बाग में ले गये। उन हदनों ंस्वामी कृष्णानन्द जी विााँ पर गीता पर प्रवचन करते थे। स्वामी जी ने इलािाबाद की एक अष्ट वषीया बाहलका की किानी सुनायी, जो गीता के श्लोकों ंका बहुत सुन्दर पाठ करती थी। इसे सुनते िी कमलिैकुमारी कुछ उत्साहित हुई और उसने स्वामी जी तथा श्रोताओं ंसे गीता पर अपना प्रवचन सुनने का आग्रि हकया। उसने उस हदन अपना प्रथम भाषण हदया, हजसका विााँ पर उपस्थथत जनता पर बहुत िी गम्भीर प्रभाव पडा।

स्वामी कृष्णानन्द जी ने उसे हिन्दू-धमज की कुछ पुस्तकें भेंट कीं।ं उसने उन पुस्तकों ंके कुछ अंिको धारावाहिक रूप से पढ़ कर स्वामी जी को आियज में िाल हदया। इस घटना के अनन्तर उस बाहलका ने िररिार, लुहधयाना, जंहियाला, गुरु िरसिाय मण्डी, मुकेररयााँ, धमजकोट, गुजरााँवाला तथा अन्य थथानों ंपर प्रवचन हकया।

एक दूसरी बाहलका ििमैा कुमारी हुई। उसका एक दूसरा नाम चााँदरानी भी था। उसकी मृत्यु १५-१०-१९३९ को वमाज के टााँगु ििर में हुई और मई १९४९ में उसने पुनिः जन्म हलया। जब वि साढ़े तीन वषज की हुई, तब वि अपने इस जन्म की माता पर अपने हपछले जीवन के माता-हपता के घर ले चलने के हलए जोर देने लगी। वि बार-बार अपनी मााँ से आग्रि करती और उससे हनत्य-प्रहत िी अपने असली घर जाने और वास्तहवक भाभी से हमलने के हलए अपने साथ चलने की याचना करती। यि ठीक िी किा िै हक िठ की हवजय िोती िै और इस प्रसंग में तो यि पूणज रूप से सच हसद्ध हुआ । अन्त में मााँ ने स्वीकार कर हलया। बाहलका मागज हदखाते हुए आगे थी और मााँ पीछे । दोनों ंएक अज्ञात थथान की ओर चल पडे। उस बाहलका ने अपनी मााँ को अमृतसर के मुिी मुिल्ले से ले जा कर हवहभन्न गहलयों ंऔर अन्धकारपूणज मोडों ंसे िोते हुए कूचा बेरीवाला मुिल्ले के अन्त में एक घर के सामने खडा कर हदया और किने लगी-"यिी मेरा घर िै।" दरवाजा खटखटाने की आवाज सुन कर जब उस बाहलका के पूवज-जन्म की भाभी साथ वाले घर से आ गयी, तब उस बाहलका ने अपनी जिाई (भाभी) को पिचान हलया और उसका आहलंगन करते हुए उसके पैरों ंसे हचपट गयी। उसने उसके बीस वषीय पुत्र हिव को, सगे-सम्बस्न्धयों ंको तथा घर की अन्य वस्तुओं ंको पिचान हलया। उसने अपने स्वणजि–ार तथा मृत िरीर का फोटो भी पिचाना और बतलाया हक हचत्र में वि िी सोयी हुई िै। मृत्यु के समय उसके मन में अपने भाई सरदार सुन्दर हसंि तथा उनकी पत्नी से हमलने की तीव्र वासना थी। वे उस समय विााँ उपस्थथत न थे। वमाज में िरीर त्याग करते समय

की इस दृढ़ वासना के कारण िी कदाहचत् उस बाहलका को अपने भाई और भाभी से हमलने के हलए अमृतसर में पुनिः जन्म लेना पडा।

बडौदा का एक जैन बालक (स्टेट्समैन ५-९-३७) -बडौदा के एक छि वषीय जैन बालक ने अपने पूवज-जीवन की हकतनी िी घटनाओं ंको सुना कर अपनी माता को आियजचहकत कर हदया। उसने बताया हक वि पूवज-जन्म में अपने माता-हपता के पास पाटन में रिता था। उसके माता-हपता पाटन नगर के हनवासी थे। उस समय उसका नाम केवलचि था और वि पूना में कपडे की दुकान करता था। पाटन के हकतने िी व्यापाररयों ंके साथ उसका व्यावसाहयक सम्बन्ध था। उसके छि पुत्र थे, हजनमें से एक का नाम रमणलाल था। जब वि बालक और उसकी माता पाटन गये, तब ये सभी बातें ठीक प्रमाहणत हुई।

गुरुनानक देव ने गुरुग्रिसािब में पुनजजन्म के इस हसद्धान्त की पुहष्ट की िै। यिी निीं, ं यूनान के दो प्रहसद्ध तत्त्वेत्ता सुकरात और प्लेटो (अफलातून) भी इस हसद्धान्त का अनुमोदन करते थे। इनका जन्म आज से लगभग २५०० वषज पूवज हुआ था।

"अपने जन्म लेने से पूवज जो बातें िम सीखे िोते िैं, उनकी स्मृहत िी िमारा यि वतजमान ज्ञान िै" (प्लेटो का स्मृहतज्ञान का हसद्धान्त)।

"जब िम जन्म लेते िैं, उससे पूवज िी िमें सम्पूणज हवषयों ंका अपना ज्ञान प्रार हुआ िोता िै।" "मानवी आकृहत में आने से पूवज िमारी जीवात्माएँ िमारे इस िरीर से अलग अपना अस्स्तत्व रखती िैं। उनमें ज्ञान भी िोता िै" (सुकरात का दिजन)।

यि िरीर जीवात्मा के अलग िोने पर मर जाता िै; परन्तु जीवात्मा स्वयं निीं ंमरता। इस हवषय में िमें यि ज्ञात िै हक यहद एक व्यस्क्त हकसी काम को अधूरा िी छोड कर सो जाता िै और जब वि जागता िै, तब वि स्मरण करता िै हक अमुक काम को उसने अधूरा िी छोड हदया था। इसी भाँहत िम यि भी देखते िैं हक प्राणी जबा जन्म लेता िै, तब जन्म लेने के साथ िी उसे अपनी माँ के स्तन-पान की इच्छा जाग्रत िोती िै और उसमें भय की भावना भी पायी जाती िै। इससे सिज िी यि हनष्कषज हनकलता िै हक उसे पूवज-जन्म में अनुभूत हकये हुए कष्टों ंकी तथा माँ के स्तन-पान करने की हिया की स्मृहत िोती िै।

७. हनम्न-योहनयों ंमें हफर से जन्म

ऐसा देखने में आया िै हक अहधकांि जीवात्माओं ंको हनम्न-योहनयों ंमें जन्म लेना साधारणतया रुहचकर निीं। ं इसका मुख्य कारण यि िै हक अपने गत मानव-जीवन में वे अपने िरीर से बहुत से िुभ कमज हकये िोते िैं। कोई भी मानव िैतान का पूरा-पूरा अवतार निीं ंिोता। कुछ हविेष प्रकार के िुभ गुण तथा कमज जो हक वास्तव में िुभ गुणों ंके पररणाम िोते िैं, सारे दुगुजणों ंऔर दुष्कमों से ऊपर उठ जाते िैं और इस भाँहत मानव-प्राणी जीवात्मा के भावी हवकास के हलए अपनी िी जाहत में से हकसी एक ऊँच अथवा नीच जीवन में प्रवेि करता िै।

एक मानवजात आत्मा को गीदड अथवा िूकर जैसी हनम्न-योहन में जन्म लेना पडे, ऐसे उदािरण बहुत िी कम देखने में आते िैं। इस स्थूल जगत् में िी िम देखते िैं हक एक मनुष्य की ित्या करने वाले खूनी व्यस्क्त को फाँसी के तख्ते पर ले जाने तक की प्रतीक्षा करनी पडती िै। ऐसी अवस्था में भी िम धमजग्रन्थो ंमें हलखी हुई बातो

की सत्यता का हनषेध निीं ंकर सकते िैं, यद्यहप यि िो सकता िै हक उनमें से कुठेक रूपक िों ंऔर उनके हलखने का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को बुरे कमज से अच्छे कमज वी ओर मोडना रिा िो।

प्रत्येक जीवात्मा का भावी जन्म उसके भूतकाल के कमों का िी पररणाम िोता िै और इसके हनणजय में कमज और पुनजजन्म के हसद्धान्त मित्त्पूणज काम करते िैं। यि कायज-कारण का हनयम, घात-प्रहत-घात का हनयम कमज के हवषय में भी लागू िोता िै। सामान्य रीहत से मनुष्य का हवकास ऊपर की ओर िोता िै। प्राणी को उसकी हवकास-कक्षा से अहधकाहधक ऊपर की ओर ले जाना हवकास का स्वभाव िी िै। यि प्राकृहतक जीवर्ि–ा का हनयम िै; परन्तु इसके कुछ अपवाद भी पाये जाते िैं। यहद एक व्यस्क्त में आसुरी गुण िैं और वि बहुत िी िूर कमज करता िै, यहद वि कुत्ते, - गधे अथवा बन्दर जैसा बरताव करता िै, तो वि अपने भावी जीवन में हनिय िी मनुष्य-जन्म का अहधकारी निीं ंिोगा। वि पिु-योहनयों ंमें जन्म लेगा। परन्तु ऐसी बातें वास्तव में बहुत िी कम िोती िैं।

यहद मनुष्य घोर पाप करता िै, तो उसके इस मनुष्य-िरीर में रिते हुए िी उसे अहधक-से-अहधक दण्ड हदया जा सकता िै। इसके हलए मनुष्य को पिु-योहन में जन्म लेना आवश्यक निीं ंिै। मनुष्य जब अपने मानव िरीर में रिता िै, तब वि अपने हकये हुए पापों ंके कारण हजतना दुिःख अनुभव करता िै, उतना दुिःख वि पिु-योहन में जन्म लेने से निीं ंअनुभव करता िै। कुष्ठ, क्षय, गरमी, सुजाक आहद रोगों ंसे मनुष्य को जो पीडा िोती िै, वि वणजनातीत िै।

यि हनयम हकतनी कठोर रीहत से काम करता िै, इसे हनम्नांहकत घटना बहुत िी प्रभावकारी ढंग से उपस्थथत करती िै। यि घटना असामान्य िोने के साथ-साथ बहुत रोचक भी िै। बंगाल के कहवराज (वैद्य) गिमिनाथ सेन के यिााँ १८ अथवा १९ वषज के तारक नाम के एक कम्पाउण्डर थे। उनके इतना जोरों ंसे उदरि–ूल उठता था हक उससे वे अचेत िो जाते थे। एक हदन श्रीहवद्या के परम्परागत उपासक एक ब्राह्मण ने करुणाहभभूत को तारक के भाल में हसन्दूर का टीका लगाया और मन्त्र पढ़ कर उसने काली माँ से प्राथजना की तथा प्रश्न हकया- "माँ, यि तारक इतना कष्ट क्यों ंभोग रिा िै?"

तारक ने अचेतावथथा में िी गरज कर किा- "मैं काली माँ का एक अंि हाँ। क्या मैं तारक को दण्ड न दूाँ। इस तारक ने अपने हपछले जीवन में अपनी माता का अपमान हकया था। इसकी माता ने भी तारक के हपता को, जो हक उसका अपना िी पहत था, पैरों ंसे ठुकराया था। इस भााँहत माँ और पुत्र दोनों ंको सात जन्म तक दण्ड भोगना पडेगा, हजसमें तारक को तो भयंकर उदरि–ूल का कष्ट िोगा और उसकी माँ हववाि के चौदि हदन के पिात् हवधवा िो जायेगी। ये दोनों ंअब तक चार जन्म का कष्ट भोग चुके िैं और तीन जन्मों ंका कष्ट भोगना अभी िेष िै।"

दयालु ब्राह्मण ने प्रश्न हकया-"माँ, उसके उद्धार का क्या कोई उपाय निीं ंिै?"
तारक ने अचेतावथथा में उत्तर हदया "तारक को अपनी माँ का पादोदक और उस्च्छष्ट प्रसाद ग्रिण करना चाहिए। इस भााँहत यहद इसकी माँ इसे औषहध प्रदान करे, तो यि इस जन्म में िी स्वथथ िो सकता िै। इसके अहतररक्त अन्य कोई उपाय निीं ंिै।"

यि पूछने पर हक तारक की माँ किााँ िै, तारक ने अचेतावथथा में िी उततचर हदया-"गोपाल सेन की हवधवा पत्नी तारक की माँ िै।"

इसके अनन्तर तारक को चेतना प्राप्त हुई। ब्राह्मण से सब बातें सुनीं ंऔर उसके आदेि का पालन हकया। तारक की पूवज-जन्म की माता ने उसे तामूबूल का एक टुकडा हदया, हजसे तारक ने ताबीज में रख कर पिन हलया। इससे तारक तुरन्त िी ठीक िो गया।

दूसरे हदन विी रोग हफर वापस आ गया, परन्तु तारक की माँ ने जब उसके ऊपर अपना पादोदक हछडका, तो वि ठीक िो गया। बाद में यि पता चला हक तारक ने हकसी रजस्वला िी के िाथ से जल ग्रिण हकया था और उसके कारण िी उसके ताबीज की िस्क्त जाती रिी थी।

इस जगत् के कटु एवं कष्टप्रद अनुभवों ंसे मनुष्य बहुत से पाठ सीख सकता िै। मनुष्य हकतना िी पापी, कठोर तथा पिाहवक क्यों ंन िो; परन्तु वि दुि:ख, पीडा और िोक से, संकटों, ं कहठनाइयों ंऔर रोगों ंसे, सम्पहत्त-निा, हनधजनता तथा हप्रयजनों ंकी मृतुयु से अपने को सुधारता और प्रहिहक्षत करता िै।

परमेश्वर पापी को रिस्पूणज ढंग से सुधारते और ढालते िैं। दुि:ख और पीड हिक्षा प्रदान करने वाली स्क्ति के रूप में उपयोगी काम करते िैं। वे बुरे कमज करने बालों ंकी आँखें खोलने का काम करते िैं। वे उन् पतन से बचाते िैं और उन्नत करते िैं। इससे पापी लोग सत्कमज करने में लग जाते िैं और सत्संग का आश्रय लेते ैं।

हकतने िी लोगों ंकी ऐसी मान्यता िै हक मनुष्य की आत्मा पिु-योहन में हफर कभी भी अवतररत निीं ंिो सकती। इसका कारण यि िै हक मानव-योहन में प्रकट हुआ व्यस्क्तत्व पिु–िरीर में निीं ंसमा सकता। वि िरीर उसके हलए सवजथा अपूणज एवं अिक्त िोता िै। पिु-योहन का िरीर अपेक्षाकृत कठोर, हवषम तथा अपूणज िोता िै, अत: मनुष्य के उच्चतर हसद्धान्तों ंको न तो उसमें प्रश्रय हमल सकता िै और न उनकी अहभव्यस्क्त िी विाँ िो सकती िै। प्राणी का थथूल िरीर उसके सूक्ष्म िरीर का एक प्रकार से किो िोता िै, अत: उसके सूक्ष्म एवं कारण रीरों ंके आकार और गठन उसके थथूल िरीर के समान िी िोते िैं। इस कारण मानव-आत्मा को सदा मानव रीर में िी रिना चाहिए। मानव-जीवात्मा की आवश्यकता, माँग तथा अिा के अनुरूप िी उसके िरीर का हनमाजण िोना चाहिए। उसे हवचार और ज्ञान के साधनों ंसे सम्पन्न िोना चाहिए जो हक मानव-जीवात्मा के हलए आवश्यक िै। संक्षेप में िम यि कि सकते िैं हक मनुष्य का थथूल िरीर उसके सूक्ष्म एवं कारण िरीर के साँचे में ढालना चाहिए, क्योंहक साधारणतया इनसे िी उसके थथूल िरीर की रूपरेखा का हनमाजण िोता िै। इससे यि प्रकट िोता िै हक मानव-आत्मा मानव िरीर में िी अवतररत िो सकती िै, अन्य िरीर में निीं। ं प्राचीन िाकारों ं के ये सब कथन रूपक मात्र िैं हक िूर मनुष्य दूसरे जन्म में भेहडया िोता िै, लोभी मनुष्य हवषैला नाग िोता िै, कामी पुरुष कुहतया बनता िै, इत्याहद । िाकार जब ऐसा किते िैं हक िूर मनुष्य भेहडये के रूप में जन्म लेता ैं, तब उनके ऐसा किने का तात्पयज यि िोता िै हक वे भेहडये की तरि िूर एवं हिंसक व्यस्क्त बनेंगे। इसी भाँहत दूसरे कथनों ंका भी यिी तात्पयज समझना चाहिए।

दूसरे लोगों ंका अहभप्राय यि िै हक मनुष्य अपने को नीचे की ओर ले जाना चिाता िै, इतना िी निीं ंवरन् वि नीच पिाहवक जीवन-यापन करने का भी यथासम्भव प्रयास करता िै। वि अपने अन्ति:करण से सभी उच्चतर एवं श्रेष्ठ संस्कारों ंको हनकाल फेंकने का प्रयत्न करता िै और यहद वि वास्तव में अपने को बन्दर जैसा बनाने में सफल िो जाता िै, यहद वि अपनी वासनाओं ंको पिुओं ंजैसी हनम्न-वासनाओं ंका रूप देने में कृतकायज िो जाता ैं, यहद वि अपने को पिु के समान बना िालता िै, तो यि हनहित िै हक वि मनुष्य दूसरे जन्म में बन्दर की जाहत में जन्म लेगा। परन्तु मनुष्य के हलए ऐसा कर सकना सम्भव निीं, ं क्योंहक उसमें कुछ दूसरी िस्क्तयाँ भी िोती िैं, जो उसे ऐसा करने से रोकती तथा पकडे रखती िैं। मनुष्य की ये िस्क्तयाँ वे िी िैं हजन्िें िम िोक, संकट, कष्ट इत्याहद नाम से पुकारते िैं। मनुष्य को हकसी भी प्रकार के पतन से बचाने में ये हवश्वसनीय साधन िैं। इनके िाथों ंमें

मानव-जाहत की प्रगहत हनहित रिती िै, क्योंहंक वे उसे अधम योहनयों ंमें निीं ंपडने देतीं।ं हवकास साधक-जीवन की प्रगहत िै और इस प्रगहत को बनाये िी रखना चाहिए

और इस भााँहत हनरन्तर संघषज एवं अहवराम युद्ध मानव-जाहत के हलए आवश्यक िै। मानव-जन्म िुभ-अिुभ कमों का पररणाम िै। जब िुभ कमज अिुभ कमों से बढ़ जाते िैं, तब वि मनुष्य देव, यक्ष, गन्धवज आहद श्रेष्ठ योहनयों ंमें जन्म लेता िै और जब अिुभ कमज िुभ कमों से बढ़ जाते िैं, तब वि पिु, राक्षस आहद नीच योहनयों ंमें जन्म लेता िैं, वि अधम योहन में पड जाता िै। परन्तु जब उसके िुभ और अिुभ कमज समान िोते िैं। तब वि मानव-जाहत में जन्म लेता िै। मनुष्य पुण्य-कमज िारा स्वगजलोक को, पाप-कमज िारा नरकलोक को और हमश्र-कमज िारा मत्यजलोक को प्राम करता िै।

हजस िरीर में जीवात्मा हनवास कर रिा िोता िै, चािे वि िरीर मनुष्य का िो अथवा पिु का, वि उसी में आसक्त िो जाता िै। यि प्रकृहत का हनयम िै। एक चींटी को अपना िरीर उतना िी हप्रय िोता िै हजतना हक िाथी को उसका िाथी का िरीर अथवा मनुष्य को उसका मनुष्य–िरीर हप्रय िोता िै। िरीर के प्रहत इस प्रकार की अद्भुत आसस्क्त िी जन्म-मरण के चि के प्रवाि को सतत बनाये रखती िै। एक प्राणी अपने हकसी जन्म-हविेष में हजस प्रकार का िरीर ग्रिण करता िै, वि उसे िी सब जन्मों ंकी अपेक्षा श्रेष्ठ समझता िै, मनुष्य को मानव-जीवन रुहचकर िै। िाथी अपने िाथी-रूप में जन्म लेने से प्रसन्न िै। यिी दिा अन्य प्राहणयों ंकी भी िै; परन्तु ऐसी अवथथा में भी प्रत्येक प्राणी अपने हवकास-साधन की तथा हविुद्ध आनन्द की प्रास्प्त की आकांक्षा रखता िै। सृहष्टजात सभी प्राहणयों ंमें यि हनयम सामान्य रूप से पाया जाता िै।

अन्य योहनयों ंमें जन्म लेने की अपेक्षा मानव जाहत में जन्म लेना श्रेयस्कर िै, क्योंहंक इसमें प्राणी को बुस्द्ध तथा हववेक प्राप्त रिते िैं। वि अपने-आपको जानता िै और साथ िी दूसरों ंको भी जानता िै। इसके अहतररक्त उसमें प्रेम, हवश्वास, लज्जा, िील, अहिंसा आहद सद्गुण प्राप्त रिते िैं। पिु-योहन में बुस्द्ध, सूमृहत और ज्ञान निीं ंिोते, अतिः उसमें जन्म लेना वांछनीय निीं।ं

हववेक, आत्मज्ञान, थथूल िरीर और आत्मा के भेद का ज्ञान तथा अपने सिवाहसयों ंके प्रहत प्रेम और हवश्वास आहद उत्तम गुणों ंसे जो व्यस्क्त सम्पन्न निीं ंिै, उस मनुष्य का जीवन तो पिु-जीवन के िी समान िै।

अज्ञानी मनुष्य के जब तक ज्ञान-चक्षु उन्मीहलत निीं ंिो जाते तथा जब तक वि उन्नत पथ पर ले जाने वाले हकसी गुरु के सम्पकज में निीं ंआता, तब तक वि इस संसार-सागर में िूबता रिता िै तथा उसे अनेक माताओं ंके उदर में जन्म लेना पडता िै। अज्ञानी संसारी जीव कुत्ता, सााँप, भेहडया अथवा हसंि की योहन में जन्म लेता िै।

इसके हलए कोई हवहिष्ट हनयम निीं ंिै। इस हवषय में िािों ंके कथन सवजथा सत्य िैं। िािों ंकी इन उस्क्तयों ंको केवल रूपक अथवा अलंकाररक मानना बहुत बडी भूल िै।

हजस आध्यास्त्मक साधक ने हदव्य जीवन यापन प्रारम्भ कर हदया िै, उसे हनम्न-योहन में जन्म लेने का कोई भय निीं ंरिता । एक योगी योगाभ्यास करते हुए यहद लक्ष्य से चुयुत भी िो जाये, तो भी वि नष्ट निीं ंिोता। वि अपेक्षाकृत अहधक अनुकूल वातावरण में जन्म लेता और अपने आध्यास्त्मक पथ का अनुसरण करता िै। श्रीमिगवद्गीता में आप देखेंगे- "िे पाथज, उस (योग-भ्रष्ट व्यस्क्त) का न तो इस लोक में और न िी परलोक में हविाि िोता िै। िे तात! िुभ कमज करने वाला कोई भी व्यस्क्त कभी भी दुगजहत को निीं ंप्राप्त िोता। पुण्य-कमज करने वाले हजन लोकों ंको जाते िैं, उन्िें योग-भ्रष्ट प्राप्त करता िै और विााँ अनन्त काल तक हनवास करके या तो िुहि आचरण करने वाले धनी लोगों ंके घर जन्म लेता िै अथवा उसका जन्म बुस्द्धमान् योहगयों ंके कुल में िोता िै" (गीता : ६-४०, ४१ और ४२) ।

भगवान् ऋषभदेव के पुत्र राजा जडभरत ने अपने राज्य को हतलांजहल दे तपस्वी-जीवन वरण हकया। एक हदन उन्ोंनें उस वन में एक मातृ-हपतृ–ीन मृग–ावक को देखा। उनें उस हनरीी प्राणी पर दया आयी। कालान्तर में तो वे उस मृग-ीिु से इतना उत्कट प्ेरेम करने लगे हक उनका सारा ध्यान उस मृग की ओर ी लगा रिता और परमात्म-हवषयक उनकी वृहत्त िनैः–नैः क्षीण ो चली। मरण-काल उपस्थथत ोने पर उनें इस नन्ें मृग का हवचार बहुत ी उहि बनाता रिा और उसके पररणाम-स्वरूप उनें मृग की योहन में जन्म लेना पडा ।

राजा जि्भरत वेद, पुराण और सभी ीों ंमें पारंगत थे। उन्ोंनें उग्र तपस्ा की थी और भगवान् वासुदेव के चरणों ंका वे ध्यान भी करते रिे थे; परन्तु मृग- ावक में उनकी आसस्क्त ोने के कारण उनें मृग-योहन में जन्म लेना पडा। अब भरत की आँखें खुल गयीं ंऔर उनें अपनी भूल का पता चला। उस मृग–रीर में उनें राजा भरत के रूप में अपने गत जीवन की सभी बातें स्मरण ो आयीं।ं वे मृग-रूप में रिते हुए भी भगवान् का हनरन्तर ध्यान करने लगे। वे स्वल्प आिार लेते और अपनी जाहत के दूसरे मृगों ंसे बहुत ी कम हमलते-जुलते। वास्तव में तो वे उस हनम्न योहन से मुस्क्त पाने की आि लगाये अपनी आयु के हदन हगन रिे थे। भरत ने अपने मृग-रीर को त्याग कर पुनिः एक ब्राह्मण के िरीर में जन्म हलया। जडभरत अब यथेष्ट बुस्द्धमान् ो चुके थे, अतिः उन्ोंनें उस भूल को दोिराया निीं।ं वे बचपन से ी संसार से अलग रिने लगे । उनका मन राग–ष से सवजथा मुक्त था। इस भााँहत वे माया के पंजों ंसे बच हनकले और मत्यज िरीर का पररत्याग कर परमात्मा में हवलीन ो गये।

गजेि को यद्यहप ाथी की योहन में जन्म लेना पडा था; परन्तु उसने अपने वास्तहवक स्वरूप को कभी भी हवस्मृत निीं ंोने हदया। वि भगवान् िरर का सदा ी ध्यान करता रिता था और इसके ारा उसने अपने उस ाथी के जीवन में ी मोक्ष प्राप्त कर हलया। मारे ीों ंमें ऐसे अनेक उदािरणों ंका उल्ेलेख ै हजसमें हक पिु और पहक्षयों ंकी योहन में भी मुस्क्त हमली थी। वृत्रासुर एक मिान् राक्षस था। वि वासुदेव का परम भक्त हुआ। वि अपने पूवज जीवन में हचत्रकेतु नाम का राजा था। उमा देवी के ाप से उसे राक्षस बनना पडा।

पूवोक्त उदािरणों ंसे यि स्पष्ट ै हक एक सचे्चे एवं हनष्कपट साधक के हलए पतन की आिंका निीं ं रिती ै। भागवत जन पूणज हनभजय एवं हनष्काम ोते ैं। वे ऐसी हकसी भी योहन में जन्म ग्रिण करने को तैयार रिते ैं, हजसमें हक भगवान् का भजन ो सके।

भगवान् की परा भस्क्त ी वास्तव में अभ्यथजनीय ै। इसकी प्रास्प्त ो जाने पर, मनुष्य को कैसे भी जीवन में अथवा कैसी भी पररस्थथहत में क्यों ंन रिना पडे, वि सुखी रिता ै। उसे ऐसी अवथथा में एक प्रकार के अलौहकक आनन्द की उपलस्ि ोती ै, हजससे वि संसार के अहत-व्यथाप्रद कष्टों ंको सिन कर सकता ै।

पुरातन ऋहषयों ंमें दुष्टों ंको ाहपत करने और साधु जनों ंको आिीवाजद देने की िस्क्त ोती थी। देवहषज नारद के ाप से कुवेर-पुत्रों ंको यमलाजुजन वृक्ष बनना पडा था । ऋहष गौतम ने अपनी पत्नी अिल्ा को पाषण-हिला बनने का ाप हदया। ाप देने में उनका प्रयोजन न तो स्वाथज-भावना ोती ै और न ी वे ोध के विीभूत ो ऐसा करते ैं, वरन् वे तो श्री भगवान् के चरणारहवन्द से हवमुख ो कर भटक रिे प्राहणयों ंपर दया कर उनके कल्ाण-साधन के हलए ी ऐसा करते ैं। अतिः सन्तों ंका सम्पकज मनुष्य के भाग्य को पलटने में बहुत ी लाभकर ै।

ऋहष भूत, भहवष्य और वतजमान तीनों ंकालों ंके ज्ञाता-हत्रकालज्ञानी थे; अतिः उनें कमज की रिस्मयी गहत का पूणज ज्ञान था। उन्ोंनें आत्मज्ञान प्राप्त हकया था और उस आत्मज्ञान की िस्क्त से अन्य सभी बातें भी उनें हवहदत थीं।ं

मिें हकस प्रकार का िरीर प्राप्त िै, इसका कोई हविेष मित्त् निीं िै; परन्तु यि बात अवश्य िी मित्त्पूणज िै हक िमारे हवचार कैसे िैं। एक उच्च श्रेणी के व्यस्क्त में भी पािवक हवचार िो सकते िैं। काम एवं िोधि से अहभभूत िोने पर तो मनुष्य मनुष्य न रि कर पिु से भी हनकृष्टतर बन जाता िै। हजनमें हववेक–स्क्त निीं िै, जो कुछ हवषय-भोगों में िी रत रिते िैं तथा जो साधारण-सी बातों में अपने मन का संयम खो बैठते िैं, ऐसे व्यस्क्त की अपेक्षा तो पिु-योहन में उत्पन्न एक गाय सिस्रगुना श्रेष्ठ िै।

आप इस हवषय की हचन्ता न करें हक भहवष्य में आप कैसा जन्म ग्रिण करेंगे। वतजमान जीवन का सदुपयोग कर अपने को जन्म-मरण से मुक्त बना लें। भगविस्क्त को हवकहसत करें, कुछ एषणाओं का पररत्याग करें। परोपकार के हलए सदा प्रयत्निील रिें। दयालु बनें और सुकमज करें।

भगवान् िरर हत्रलोकी के रक्षक िैं। सृहष्ट के प्रत्येक प्राणी को अपने अमर धाम तक पहुँचाने का उत्तरदाहयत्व उन भगवान् पर िी िै। वे आपको हजस हकसी भी पथ से ले जाना चािें, उसी पथ से ले जाने दीहजए। मनुष्य, पिु अथवा राक्षस-हजस हकसी भी योहन में वे आपको मुक्त करना चािें, मुक्त करने दीहजए। अपने मन को सदा उन पर केस्न्द्रत रस्खए और अपने भ्रमर-रूपी मन को उनके पाद-पद्मों में लीन कर दीहजए। उनके चरण-कमलों से हनःसृत मकरन्द-सुधा का पान कीहजए। एक बालक की भाँहत सरल भाव से उन्हें आत्मापजण कीहजए।

हजसके कारण प्राणी को अनेकानेक योहनयों में अगहणत जन्म ग्रिण करने पडते िैं, ऐसे सतत गहतिील कमज-चि से आप सब मुक्त बनें और इसी जीवन में अमरात्मा के सुख का उपभोग करें!

८. बालक की िहमक वृस्द्ध

छान्दोग्योपहनषद् की हवद्या में पुण्यिाली जीवों की उत्क्रास्न्त का हवचार हकया गया िै। विाँ यि बतलाया गया िै हक जीवात्मा इस लोक से चिलोक को जाता िै। विाँ से वापस िोते हुए वि पजजन्यलोक को जाता िै। विाँ से वृहष्ट िारा इस लोक में आता िै। वृहष्ट से वि जीवात्मा अन्न में और अन्न से पुरुष के वीयज में जाता िै। इसके बाद वि हसंचन-हिया िारा िी के उदर में प्रवेि करता िै। इस भाँहत देवता गण जीवात्मा की इन पंचाहियों में आहुहत देते िैं और तब वि पुरुष बनता िै।

इस प्रकार चिलोक से प्रत्यावतजन करता हुआ अनियी जीव अभ्र के साथ हमल कर पृथ्वी पर आता िै। विाँ अन्नाहद पदाथों में उसे दीघज काल तक ठिरना पडता िै।
विाँ वि चार प्रकार का भोजन भक्ष्य, पेय, लेह्य तथा चोश्य बनता िै। मनुष्य जब उसको खाता िै, तब वि वीयज बनता िै और ऋतुकाल आने पर पुरुष कर िी-योहन में वीयज-सेचन करता िै, तब वि िी के उदर में आता िै।

माता के उदर में िुि–िोहणत के संयोग से वि गभज हदवस में 'कलल' का जाता िै। पाँच राहत्र के व्यतीत िो जाने पर वि बुदबुद बनता िै। सात राहत्र में वि हपण्ड (मांसपेिी) का आकार ग्रिण करता िै। एक पक्ष के अनन्तर वि हपण्ड रक्तपूणज बन जाता िै और पच्चीस राहत्र के पिात् वि अंकुररत िोने लगता िै। पिले मास में उसमें कण्ठ, हिर, स्कन्ध, मेरुदण्ड तथा पेट बनता िै। ये पाँचों एक के बाद एक िहमक रूप से िी बनते िैं। दूसरे मास में िमिः िाथ, पैर, पाश्वज, कहट-दे‍ि, अ तथा घुटनों का हनमाजण िोता िै। तीसरे मास में िरीर की सस्न्धयाँ बनती िैं। चौथे माम में धीरे-धीरे उँगहलयाँ तैयार िोती िैं। पाँचवें मास में मुख, नाहसका, नेत्र और श्रोत्र की रचना िोती िै। दाँतों की पंस्क्त, नख तथा गोपनीय अंग भी पाँचवें मास में िी बनते िैं। छठे मास में कणजरन्ध्र बनता िै और उसी मास में मानव जाहत में पुरुष-िी-सम्बन्धी जननेस्न्द्रय, गुदा और नाहभ भी बनते िैं। सातवें मास में िरीर और

हिर में रोम एवं कि हनकल आते िैं। आठवें मास में िरीर के सभी अंग अलग-अलग िो जाते िैं। इस भााँहत िी के गभाजिय में गभज बढ़ता िै। गभाजिय में स्थथत जीव को पााँचवें मास में सभी प्रकार की सूझ-बूझ आ जाती िै।

नाहभ-नाल के एक सूक्ष्म हछि िारा गभजथथ जीव अपनी माता के खाये आिार के सूक्ष्म भाग से अपना पोषण करता िै। वि अपने कमज के प्रभाव से गभाजिय में जीहवत रिता िै।

गभाजिय में स्थथत जीव अपने पूवज-जन्मों ंको और उनमें हकये हुए हिभिभ कमी को स्मरण कर जठराहि की ज्वाला से हवदग्ध िो अधोहलस्खत प्रकार से सोचता िै :

"अब तक मैंने नाना प्रकार की योहनयों ंमें सिस्रों ंजन्म हलये और लाखों ंिी, पुत्र और सम्बस्न्धयों ंके साथ रि कर आनन्द लूटा ।

"कुटुम्ब के भरण-पोषण में अनुरक्त रि कर मैंने हिभिभ साधनों ंसे धनोपपाजन हकया। मैं अभागा हाँ हक मैंने स्वप्न में भी हवष्णु भगवान् का स्मरण निीं ंहकया।

"अब मैं उन कमों का फल इस गभाजिय में असह्य पीडा के रूप में भोग रि िै। कामनाओं ंसे सन्तप्त िो तथा िरीर को िी सत्य मान कर मैंने वि सब-कुछ हकया जो हक मुझे न करना चाहिए था और जो कायज मेरे हलए हितकर था, उसे करने में में चूक गया।

"इस भााँहत मैं अपने िी कमााँ के िारा हवहवध प्रकार से कष्ट भोग चुका । अब मैं भला इस नरकतुल् गभाजिय से कब बािर हनकलूाँगा। इसके पित् मैं भगवान् हवष्णु के अहतररक्त अन्य हकसी की उपासना निीं ं करूाँगा।"

इस प्रकार के अनेक हवचार करता हुआ तथा अपनी मााँ के आन्तररक अंगों ंकी चपेट से पीहडत हुआ वि वैसे िी बडे कष्ट के साथ गभज से बािर आता िै जैसे पापी जीव नरक से बािर हनकलता िै। जैसे हक हवष्ठा से कीट बािर आता िै, वैसे िी वि बािर आता िै।

इस जीवन में आने के उपरान्त भी वि बाल्, यौवन और जरा अवथथाओं ंके कष्ट तथा दूसरे कष्ट भी सिन करता िै।

षष्ठ प्रकरण

हवहभन्न लोक

१. प्रे्रेतलोक

हजस मनुष्य का मन हनम्न कामनाओं ंतथा इस्यि-सुख की तीव्र वासनाओं ंमें आपूररत िोता ि ै तथा जो इस लोक में रि कर इस्यि के हवषय-भोगों ंमें मि रिता ि ै, ऐसा हवषयी मनुष्य अपनी मृतुयु के अनन्तर पे्रेतलोक में प्रवेि करता ि ै। मृतुयु के पित् वि जीवात्मा कुछ काल तक अचेतावथथा में, हनिा की-सी दिा में रिता ि ै। जब वि उस हनिा से जागता ि ै, तब अपने को पे्रेतलोक में पहुाँचा हुआ पाता ि ै।

इस लोक में जीवात्मा के जगने के साथ िी उसकी कामनाएाँ, वासनाएाँ और तृष्णाएाँ उसे बहुत िी व्यहथत करने लगती िैं। वि खाना-पीना और िी के साथ प्रसंग करना चािता ि ै; परनुतु उस लोक में प्राप्त हुए िरीर से अपनी उन वासनाओं ंको वि तृप्त निीं ंकर सकता। वािाँ वि कारागार में पडे हुए बन्दी की भााँहत रखा जाता ि ै और अपनी भोग-वासनाओं ंको तृप्त न कर सकने के कारण बहुत िी दुि:स्खत तथा पीहडत रिता ि ै। इस दिा में उसकी इस्यिााँ भी बहुत िस्क्तिाली िोती िैं; परनुतु उन्ें सनुतुषटच करने के हलए उस लोक में उसके पास साधन किााँ ? इस भााँहत उसे अकथनीय दुि:ख िोता ि ै; क्योंहक वि अपनी कामनाओं, ं वासनाओं ंऔर तृष्णाओं ंको तृप्त निीं ंकर सकता ि ै। वािाँ उसकी दिा ठीक एक कुषुधातज प्राणी की-सी िोती ि ै।

इन वासनाओं ंका मूल कि मन के अन्दर ि ै-थथूल िरीर में निीं। ं यि सूमृत िरीर तो मन और इस्यि का एक उपकरण मात्र ि ै, हजसके माध्यम से उन्ें तृस्प्त प्रापचत िोती ि ै।

श्राद्ध-हिया के िारा आप पे्रेतलोक में पीहित जीवात्मा को सिायता प्रदान कर सकते िैं। श्राद्ध-हिया जीवात्मा को कष्ट से मुस्क्त प्रदान करती ि ै और उसे वािाँ ि ै स्वगजलोक जाने में सिायता प्रदान करती ि ै। उस अवसर पर पढ़े जाने वाले मन्त्र बहुत िी िस्क्तिाली स्पन्दनों ंका सृजन करते िैं। ये स्पन्दन जीवात्मा को बद्ध बनाये रखने वाले िरीर से टकरा कर उसे ध्वस्त कर िालते िैं।

अब तो आपने श्राद्ध-हिया के मित्त् को समझ हलया िोगा। हजन लोगों ंअज्ञान, कुसंस्कारजन्य बुस्द्ध-हवकार, कुसंग अथवा कुहिक्षा-इनमें से हजस हकसी भी कारण से श्राद्ध करना छोड हदया िै, उन्ें चाहिए हक कम-से-कम अभी से श्राद्ध-हिया करना आरम्भ कर दें। हजस भााँहत दयालु मााँ अपनी सन्तहत की साँभाल रखती िै, वैसे िी ऋहष और िि आपकी साँभाल रखते िैं।

यहद आप प्ेरेतलोक में प्रवेि करना और विााँ के कष्ट सिन करना निीं ंचािते, तो बुस्द्धमान् बनना सीस्खए। इस्ियों ंका दमन कीहजए। हनयहमत तथा अनुिाहसत जीवन-यापन करना सीस्खए । इस्ियों ंको उपिवी न बनने दीहजए। अहत-िोजन का पररत्याग कीहजए। 'िरीर िी सवजस्व िै' - इस दिजन को न अपनाइए। मृतुयु-काल में काम और तृष्णा आपको व्यहथत करेंगे। यहद आप आत्म-संयम का अभ्यास करते िैं, तो आनन्द के राज्य में प्रवेि करेंगे।

२. प्ेरेतों ंके अनुभव

मिहषज वहसष्ठ 'योगवाहसष्ठ' में बतलाते िैं :
"प्ेरेत छि प्रकार के िोते िैं-साधारण पापी, मध्यम पापी, मिापापी, सामान्य धमाजत्मा, मध्यम धमाजत्मा और उत्तम धमाजत्मा ।

"इन मिापातकी प्ेरेतों ंमें से कई तो एक वषज-पयजन्त घन-पाषाण के तुल् मृतुयु की मूच्छाज की जडता का अनुभव करते रिते िैं। चेतना प्राप्त िोने पर वे अपनी वासनाओं ंिारा प्राप्त अक्षय नारकीय दुिःखों ंको हचरकाल तक भोगने के हलए बाध्य-सा अनुभव करते िैं; तब वे सैकडों ंयोहनयों ंके भोग तब तक भोगते रिते िैं, जब तक हक वे इस भ्रान्त जगत् से मुक्त िो कर अपने अन्तिःकरण में िास्न्त निीं ंप्राप्त कर लेते।

"इसी श्ेरेणी में कुछ दूसरे प्रकार के पापी िोते िैं जो हक मरण-मूच्छाज के समाप्त िोते िी अपने अन्तिःकरण में वृक्षाहद थथावर योहनयों ंकी जडता का अकथनीय दुिःख अनुभव करने लगते िैं और हफर हचरकाल तक नरक की यातना भोग कर अपनी-अपनी वासना के अनुरूप भूतल पर नाना योहनयों ंमें जन्म लेते िैं।

"जो मध्यम पापी िोते िैं, वे मृतुयुकाहलक मूच्छाज के अनन्तर कुछ काल तक पाषाण-तुल् जडता का अनुभव करते िैं। उन्ें जब चेतना प्राप्त िोती िै, तब वे कुछ काल के पिात् अथवा उसी क्षण खग, मृग, सपाजहद हतयजक् योहनयों ंको भोग कर इस संसार में सामान्य मानव-जीवन को प्राप्त िोते िैं।

“जो साधारण पापी िोते िैं, वे प्रायिः मृतुयु-मूच्छाज के तुरन्त बाद िी अपनी पूवज-वासना के अनुसार सांसाररक जीवन को चालू रखने के हलए मानवि–रीर धार करते िैं। मृतुयु के पिात् िीघ्र िी उनकी पूवज-सूमृहत उहदत िो उठती िै। उनकी पूवज-वासनाएाँ और कल्पनाएाँ उनके अनुभव-जगत् में स्वप्न-राज्य की भााँहत एक नये संसार की सृहष्ट करती िैं।

"जो मिान् धमाजत्मा िोते िैं, वे मरण-मूच्छाज के दूर िोते िी देवलोकों ंके सुख का उपभोग करते िैं। स्वगजलोक में देवि–रीर से अपने पुण्यफल-भोग के अनन्तर से इस मृतुयुलोक में धनी सतुपुरुषों ंके कुटुम्ब में जन्म लेते िैं।

"जो मध्यम पुण्यात्मा िोते िैं, वे मृतुयुजहनत मूच्र्छा के पिात् ऐसा अनुभव करते िैं हक वायु उनके सूक्ष्म िरीर को हलये जा रिी िै और हफर वे वृक्ष और वनस्पहत-वगज की योहन में िाल हदये गये िैं। कुछ काल तक इस

अवथथा में रिने के पित् वे अिार के रूप में मानव िरीर में प्रवि करते िैं और विााँ वीयज का रूप धारण कर
माताओं ंके गभाजिय में प्रवि कर जाते िैं।"

३. हपतृलोक

यि लोक चिलोक के नाम से भी प्रहसद्ध िै। यिीं ंपर हपतृ गण हनवास करते िैं। यि स्वगजलोक भी किलाता िै। जो यज्ञ करते िैं तथा जनता के हलए कूप-वाप खुदवाते, धमजिाला बनवाते और उद्यान लगवाते िैं; जो सकाम भाव से इष्टापूतज कर करते िैं, वे इस लोक में प्रवि करते िैं। उन जीवात्माओं ंके सुकृत फल जब वि समाप्त िो जाते िैं, तब वे इस मानवलोक में पुनिः वापस आ जाते िैं। भगवान् श्री कृष्ण गीता में किते िैं: "धूम, राहत्र, कृष्ण पक्ष, दहक्षणायन के छि मास-इस समय चर की हकरणों ंके िारा योगी चिलोक को जाता िै और विााँ
से पुनरावतजन करता। (गीता : ८-२५) । अथाजत् वे पुण्यिाली जीवात्माएँ िरीर-त्याग करती िै तब प्रधा तो धूम िारा प्रयाण करती िैं और धूम से राहत्र में, राहत्र से कृष्ण पक्ष में और कृष्ण पा से दहक्षणायन काल में िो कर हपतृलोक में जाती िैं। यि मागज हपतृयान किलाता िै।

हपतृ गण के वंिज जब उनके हलए श्राद्ध-तपजण करते िैं, तब वे बहुत िी प्रसन्चन िोते िैं और संवत्सरी के हदन जब उनके वंिज श्राद्ध-हिया करते िैं, तब वे अपने वंिजों ंको आिीवाजद देते िैं।

जीव इस चिलोक में देव-तुल् सुन्दर हदव्य िरीर प्राप्त करते िैं। वे यिााँ अपने हपतरों ंके साथ हनवास
करते और देव बन कर हचरकाल तक यिााँ के स्वगीय सुख का आनन्द लूटते िैं। तत्पिात् वे आकाि तथा मेघ के
मागज से नीचे आते िैं और वषाज के जल-हबन्दुओं ंिारा इस लोक में पहुाँचते िैं। यिााँ के अन्न में प्रवि कर हकसी एक ऐसे पुरुष का आिार बनते िैं जो उन्ें नवि–रीर हनमाजण के हलए आवश्यक सामग्री प्रदान कर सके। हजन जीवों ंके पूवजकृत कमज बहुत िी भले िोते िैं, वे अचे्छे पररवार में जन्म लेते िैं।

हपतरों ंका यि स्वगज, हजसे हपतृलोक अथवा चिलोक किते िैं, िाश्वत सत्य का सवोत्तम धाम निीं ंिै। यि
एक दृश्यमान् जगत् िै। उस लोक के हनवासी कमज के हनयम से, कायज-कारण के हनयम से, घात-प्रहत-घात के
हनयम से बाँधे रिते िैं। भले िी वे विााँ सिस्रों ंवषज हनवास करें; परनु्त विााँ का हनवास अथथाई िी िोता िै।

हपतरों ंको ब्रह्महवद्या अथवा अमरात्मा का ज्ञान निीं ंिोता िै। वे कामनाओं ंसे बद्ध रिते िैं। उन्ें स्वयं ब्रह्महवद्या का ज्ञान निीं ंिोता िै, अत: वे दूसरों ंको भी इस हवद्या में हिहक्षत निीं ंकर सकते।

भगवान् श्री कृष्ण गीता में किते िैं :

"वेदत्रयी के ज्ञाता, सोमपान करने वाले तथा हनष्पाप लोग यज्ञों ंिारा मेरा पूजन कर स्वगज-प्रास्प्त की प्राथजना करते िैं। वे पहवत्र देवलोक को प्राप्त कर स्वगज में उत्तम हदव्य भोगों ंको भोगते िैं" (गीता : ९-२०) ।

"वे उस हविाल स्वगज के सुख को भोग कर पुण्य क्षीण िोने पर मृतुयुलोक में आते िैं। इस प्रकार वेदों ंमें
कि हुए कमों का अनुष्ठान करने वाले कामना-परायण लोग आवागमन को प्राप्त िोते िैं" (गीता : ९-२१) ।

"देवताओं ंकी उपासना करने वाले देवताओं ंको प्राप्त िोते िैं, हपतृ-पूजक व्यस्क्त हपतरों ंको प्राप्त िोते िैं, भूतों ंकी पूजा करने वाले भूतों ंको प्राप्त िोते िैं और मेरे उपासक मुझे िी प्राप्त िोते िैं" (गीता : ९-२५) ।

ब्रह्मलोक में हनवास करने वाले जीव भी पुनजजन्म तथा आवागमन के हनयमानुवतीं ंिैं। केवल विी व्यस्क्त जन्म-मरण के चि से मुक्त िोता िै और दृश्य जगत् का अहतिमण कर जाता िै हजसने हक परम सत्य का ज्ञान प्राप्त कर, परमात्मा का साक्षात्कार कर ब्रह्म के साथ एकत्वभाव प्राप्त कर हलया िै।

४. स्वगज

स्वगज के हवषय में हिन्दुओं ंकी मान्यता ईसाइयों ंऔर मुसलमानों ंकी मान्यता से हभन्न िै। हिन्दुओं ंके हलए स्वगज वि थथान िै जिाँ जीवात्मा अपने पुण्य-कमों के फल भोगने के हलए जाता िै। जब तक उसके सुकृतों ंके फल समाप्त निीं ंिो जाते, तब तक वि विाँ हनवास करता िै और उसके पित् वि इस मत्यजलोक को वापस आ जाता

ै। पुण्यिाली जीवात्माएँ स्वगज में हदव्य भोगों ंको भोगती और स्वगीय हवमानों ंमें हवचरण करती िैं। इ इस स्वगजलोक का अहधपहत िै। इस लोक में अनेक देव गण हनवास करते िैं। उवजिी, रम्भा आहद अप्सराएँ यिाँ नृत्य करती िैं और गन्धवज गण गायन करते िैं। यिाँ हकसी प्रकार के रोग-व्याहध का कष्ट निीं,ं कुषुधा-तृष्णा की पीडा। निीं।ं यिाँ के हनवाहसयों ंके तेजस् िरीर िोते िैं। वे हदव्य विभरणों ंसे अलंकृत िोते िैं। स्वगज एक मानहसक

लोक िै। जीवात्मा यिाँ हजस भोग की कामना करता िै, वि भोग-पदाथज उसे तुरन्त हमल जाता िै। ईसाई, मुसलमान तथा पारसी लोगों ंके अनुसार स्वगज इस्यिों ंके सभी प्रकार का भोगप्रदायक थथान िै। जीवात्मा को 'अलसीरात' नामक सेतु पार करना पडता िै। श्रद्धालु जीवात्माएँ, हजन्िोंनें सुकृत हकया िोता िै, आकिा-स्थथत स्वगजलोक को प्राप्त िोती िैं। मुसलमानों ंकी मान्यता में स्वगज एक रमणीय उद्यान िै और उसमें जल-स्रोत, हनझजर और सररताएँ प्रवाहित िो रिी िैं। इनमें जल, दूध, मधु तथा हस्नग्ध हिना सदा बिता रिता िै। यिाँ सुस्वादु फल उत्पन्न करने वाले सोने के वृक्ष िोते िैं। यिाँ हविाल श्याम नेत्रों ंवाली मनोिर कुमाररयाँ रिती िैं हजन्िें रुिल अयूाँ किते िैं। यहदी और पारहसयों ंकी भी स्वगज के हवषय में ऐसी िी धारणा िै।

पारसी लोगों ंके स्वगज के नाम 'बहिस्त' और 'हमनू' िैं। अपने इिलौहकक जीवन में हजन्िोंनें पुण्याजजन हकया िोता िै, वे लोग देवदूत जाहमयत के रक्षण में यिाँ रिने वाली 'हराने बहिस्त' के नाम से प्रहसद्ध स्वहगजक अप्सराओं ं के साथ भोग-हवलास करते िैं। उनके स्वगज का नाम गरीमन (फारसी-गरोत्मन) िै, हजसका अथज िै-सूक्तों ंका धाम। हजस भाँहत हिन्दुओं ंके स्वगज में गन्धवज गण गान करते िैं, उसी भाँहत यिाँ देवदूत स्तोत्र-गान करते िैं।

यहदी और पारसी लोग सात आसमान (स्वगज) को मानते िैं। एिन का स्वगज मूल्वान् िीरों ंसे जहटत िै। एिन के उद्यान और पारहसयों ंके स्वगज के मध्य बहुत-कुछ समता िै। एिन के दो वृक्ष ज्ञान-तरु और जीवन-तरु श्वेत रोमा को उत्पन्न करने वाले गाओ-करेना और दुिःख-रहित (औिक) वृक्ष के अनुरूप िैं।

पारसी, ईसाई और मुसलमान मानते िैं हक स्वगज िाश्वत एवं हनत्य िै तथा विाँ के हनवाहसयों ंको सभी प्रकार के भोग-साधन हबना हकसी प्रकार की हवघ्न-बाधा अथवा कष्ट के सदा उपलि रिते िैं।

स्वगज भी ऐस्कि सुख-भोग का एक थथान िै। िाँ, यि सच िै हक स्वगज के भोग अपेक्षाकृत अहधक संवेदनिील, सूक्ष्म और संसृकृत िोते िैं, हफर भी वे हचरथथायी िास्न्त अथवा सच्चा सुख प्रदान निीं ंकर सकते िैं। वे इस्यिों ंकी िस्क्त को क्षीण करते िैं। हववेक-वैराग्य से सम्पन्न प्रबुद्ध जन तो स्वगज-सुख की कदाहप आकांक्षा निीं ं रखते। वे स्वगज में हनवास करने की स्वप्न में भी कल्पना निीं ंकरते। स्वगज में भी ईष्याज, राग, िेष आहद पाये जाते िैं तथा देवताओं ंऔर असुरों ंका संग्राम तो हछडा िी रिता िै। अतिः सच्चे साधकों ंको स्वगज के प्रहत सवजदा उदासीन रि कर एकमात्र मोक्ष की िी उत्कट अहभलाषा करनी चाहिए।

अपनी व्यस्क्तगत वासनाओं ंऔर कल्पनाओं ंके अनुरूप िी प्रते्येक मानव हनज के स्वगज की रचना करता ीं। सुख भोग की यि कल्पना भी प्रते्येक व्यस्क्त की अपनी िी िोती िै। ये सुख-भोग हनत्य िी पररवहतजत िोते रिते ीं। एक मद्यपी ऐसे स्वगज के स्वप्न देखता िै हजसमें सुराविी सररताएँ िों;ं परन्तु एक संयमी िुद्धाचारी व्यस्क्त के हलए ऐसा सुरा-प्लाहवत स्वगज बहुत िी िेय िोगा। एक तरुण िैण व्यस्क्त के स्वहप्नल स्वगज में देवांगनाओं ंकी, हदव्य हवमान तथा लहलत नृत्य एवं संगीत के आयोजन की पररकल्पना रिती िै; परन्तु विी तरुण व्यस्क्त जब वृद्ध िो जाता िै, तब उसे िी की इच्छा निीं ंिोती िै। आपकी आवश्यकताएँ और वासनाएँ िी आपके स्वगज का सृजन करती िैं।

आत्मा में उपलि सचे्चे िाश्वत आनन्द का आपको कुछ भी पता निीं ंिै; क्योंहंक आपका मन इस्यि के हवषय-भोगों ंमें उलझ गया िै और यिी कारण िै हक आप स्वगज की हवचार-तरंगों ंसे आलोहडत रिते िैं। आत्मा के वास्तहवक स्वरूप का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त कीहजए, तदनन्तर आपको स्वगज-सुख-भोग की लालसा निीं ंरि जायेगी। आत्मा तो आनन्द का सागर िै। यि आनन्द-सागर, यि आनन्द-हनझजर आपके अन्तरतम में िी िै। इस्यिों ंको अन्दर की ओर समेट लीहजए, अन्दर की ओर देस्खए और अपने मन को आत्मा में लगाइए। इससे आपकी सभी प्रकार िै। इस्यि-वासनाएँ हवगहलत िो जायेंगी और आप आनन्द-सागर में हनमि िो जायेंगे।

आप स्वगज में हकतने काल तक हनवास करेंगे-यि आपके हकये िा पुण्य-कमी की मात्रा पर हनभजर करता ीं। यहद आप चािें तो आप स्वगाजहधपहत इर बन सकते िैं। इि एक पदवी िै। पिले वाले इि वतजमान कालीन इि निीं ंिै। असंख्य इि आये और चले गये।

क्लेि, िोक, हनरािा, हवफलता, सम्पहत्तिाहन, रोग, हप्रयजनों ंकी मृतु्य इत्याहद सांसाररक पररस्थथहतयाँ मनुष्य को चारों ंओर से घेर लेती िैं और उनसे मनुष्य जब क्लान्त-सा िो जाता िै, तब वि एक ऐसे थथान में जाने की सोचता िै जिाँ पर दुःख और क्लेि का लेिमात्र भी न िो, जिाँ पर सदा सब प्रकार का सुख–ी-सुख हवद्यमान िो, जिाँ वि अपने हपतरों ंके साथ अहवकल िरीर के साथ रि सके। इस भाँहत वि मनुष्य स्वगज की रचना करता ीं। परन्तु देिकालावस्च्छन्न इस सीहमत जगत् में िाश्वत आनन्द भला किाँ? इस िाश्वत आनन्द और अमरता को आप केवल अपनी अन्तरात्मा में िी पा सकते िैं।

आप यिाँ पर जैसा जीवन व्यतीत कर रिे िैं, स्वगज का जीवन भी बहुत कुछ वैसा िी िै; िाँ, अन्तर केवल इतना िी िै हक स्वगज में सुख की मात्रा हंकंहचत् अहधक िोती िै। आपकी विाँ की हजन्दगी भले िी अहधक सुख-सुहवधामय िो; परन्तु वि िाश्वत आनन्दमय अहवनािी जीवन तो निीं ंिै। इसके अहतररक्त आपके पुण्य-कमाँ के फल जब समाप्त िो जायेंगे, तब आपको पुनः इस लोक में आना िी पडेगा। स्वा िाश्वत धाम निीं ंिै। नाम-रूप-हवहिष्ट सभी पदाथों का हवनाि अवश्यम्भावी िै। आत्मा िी अमर एवं िाश्वत िै और यिी कारण िै हक ऋहष और सत्यान्वेषी साधन स्वगज-सुख की कामना निीं ंरखते।

वेदांत का हसद्धान्त स्वगज को कोई हविेष मित्त् निीं ंदेता िै। वेदान्त िमें हिक्षा देता िै हक स्वगज दृश्य-मात्र एवं क्षण-भंगुर िै। कल्पना कीहजए हक एक पुण्यिाली जीव स्वगज में लाखों ंवषज तक हनवास करता िै; परन्तु वे लाखों ंवषज अनन काल के समक्ष कुछ भी मूल् निीं ंरखते।

प्रभु ईसा मसीि ने किा था- "स्वगज का साम्राज्य आपके अन्दर िै।" वेदाना भी यिी बात किता िै। अपनी अमर आत्मा के साक्षात्कार से सत्य एवं िाश्व आनन्द प्राप्त हकया जा सकता िै। िाश्वत सुख आपके अन्दर िै। आपकी अन्तरात्म में िी अनवस्च्छन्न आनन्द िै। हवषय-पदाथों से जो आनन्द आपको प्राप्त िोता िै, वि उस आत्मानन्द का आभास-मात्र िै, आत्मा के सत्य-सनातन आनन्द का एक अंि िै।

मनुष्य भगवान् का साक्षात् दिजन करता ि◌ै। वि भगवान् में रिता ि◌ै। उसके और भगवान् के मध्य कोई अन्तराय, कोई हवभेद निीं ◌ंरिता ि◌ै। वि भगवान् के साथ परम पूणज एकता-भाव से हनवास करता ि◌ै। वि सदा आनन्दमय रिता ि◌ै। यिी स्वगज ि◌ै।

पारमाहथजक दृहष्ट न तो स्वगज ि◌ै और न नरकं। वे मन की सृहष्ट-मात्र ि◌ैं। आपका मन यहद सत्त्गुण से सम्पन्न ि◌ै तो आप स्वगज में ि◌ी ि◌ैं और यहद आपका मन तमोगुण और रजोगुण से अहभभूत ि◌ै तो आप नरक में ि◌ी रि रि ि◌ैं।

पुण्यिाली व्यस्क्त प्राणोत्सगज करने के अनन्तर देवता बन कर स्वगज में हनवास करता ि◌ै और विाँ नाना प्रकार के सुख भोगता ि◌ै। स्वगज के अपने उस आवास-काल में वि विाँ कोई नये कमज निीं ◌ंकरता ि◌ै। स्वगज का हनवास तो उसके पूवजकृत पुण्य-कमों का पारररतोहषक ि◌ै। देवि–रीर में वि जीवात्मा हकसी भी नये प्रकार के कमज निीं ◌ंकरता ि◌ै।

स्वगज की कल्पना को छोहडए। स्वगज में ि◌ाश्वत सुख प्राप्त करने का हवचार तो हनरथजक स्वप्न-सा ि◌ै। यि तो बालकों ◌ंकी-सी भोली बातें ि◌ैं। हनहदध्यासन के ि◌ारा अपनी आत्मा में ि◌ी ि◌ाश्वत आनन्द को ढूंहढ़ए। आप स्वयं हनत्य-मुक्त अमर आत्मा ि◌ै। आप स्वयं हनत्यि–ुद्ध, हनत्य-आनन्द रूप ि◌ैं। अपने इस जन्म-हसद्ध अहधकार की माँग कीहजए। अपने मुक्त स्वरूप की घोषणा कीहजए। आपका प्रकृत रूप हनत्यि–ुद्ध और हनत्य-आनन्द ि◌ै; विी आप बने रिें। दिे, काल और कारण हवहिष्ट सभी पदाथज सीहमत ि◌ोते ि◌ैं। आत्मा सभी दिे, काल और कारण से परे ि◌ै। ि◌ेतात्! तुम विी (आत्मा) ि◌ो- 'तत्त्महस'। इसका अनुभव प्राप्त कर सदा के हलए सुखी बहनए।

भगवान् बुद्ध किते ि◌ैं-"यिाँ पर करोडों ◌ंलोक ि◌ैं और इन सबसे आगे सुखवती नाम का एक आनन्दलोक आता ि◌ै। यि लोक ि◌िमिः अगजला, प्राचीर और झूमूते हुए वृक्षों ◌ंकी सात-सात पंस्क्तयों ◌ंसे आवृत ि◌ै। अिजतों ◌ंके इस लोक में तथागत ि◌ासन करते ि◌ैं और बोहधसत्त् यिाँ के हनवासी ि◌ैं। इसमें सात सरोवर ि◌ैं हजनमें स्फहटक के समान हनमजल जल सदा प्रवाहित ि◌ोता रिता ि◌ै। इन सबके जल में सात प्रकार के ि◌िव्य एवं गुण ि◌ैं; परनुतु प्रते्येक में अपना एक हविेष गुण भी ि◌ोता ि◌ै। ि◌े साररपुत्र ! यि देवचान ि◌ै। इस लोक में अवस्थथत उदम्बर वृक्ष का पुष्प समूपूणज जगत् में छाया हुआ ि◌ै। वि उन सबको सुगस्न्ध प्रदान करता ि◌ै जो हक उसके पास तक पहुँचते ि◌ैं।"

५. नरक

वेद-वेदान्त में नरक का कोई उल्लेलेख निीं ◌ंि◌ै। केवल पुराण ि◌ी नरक की-यातना-लोक की-चचाज करते ि◌ैं। पारमाहथजक दृहष्ट से तो न स्वगज ि◌ै और नरक। यि सब केवल मन की कल्पना ि◌ै; परनुतु सापेहक्षक दृहष्ट से तो नरक उतना ि◌ै सत्य ि◌ै हजतना की यि भौहतक जगत्। हववेकी व्यस्क्त के हलए तो यि संसार भी नरक ि◌ी ि◌ै।

ईसाई और मुसलमान ि◌ाश्वत नरक की बातें करते ि◌ैं; परनुतु अनन्त कालीन यातना के दण्ड का हवधान सम्भव निीं ◌ंि◌ै। ि◌ाश्वत जीवन की तुलना में तो एक दुराचारी व्यस्क्त के इलौहकक जीवन की कोई गणना ि◌ी निीं।◌ं 'पापी को अनन्चत कालीन नरकाहि की ज्वाला की यातना सिनी पडती ि◌ै' - ऐसा यहद ि◌म स्वीकार को तो सीहमत कारण से असीम फल की प्रहतपहत्त ि◌ोगी; परनुतु ऐसा ि◌ोना सम्भव निीं ◌ंि◌ै।

नरक की हवहवध यातनाएँ, नरक और कहथत सात हवभाग, स्वगज और नरक को हवभाहजत करने वाला अल-हिरात आहद मुसलमानों ंकी ये मान्यताएँ यहहदयों ंकी नकल-सी प्रतीत िोती िै।

स्वगज और नरक के हवषय में हिन्दू पौराहणकों ंके हवचार बहुत िी स्पष्ट िै। याज्ञवल्क्य, हवष्णु आहद सूमृहतयों ंके सूमृहतकारों ंने हवहवध नरकों ंका तथा स्वगज के हवहवध सुख-भोगों ंका बहुत िी गम्भीर हववेचन हकया िै। याज्ञवल्क्य ने अपनी सूमृहत में रौरव, मिारौरव, कुम्भीपाक, ताहमस, अन्धताहमस इत्याहद इक्कीस नरकों ंके नाम हदये िैं। हवष्णु-सूमृहतकार ने भी इन्हीं ंकी चचाज की िै। नरकलोक में तीक्ष्ण, उग्र तया अन्य यातनाएँ िैं। यिाँ पापी जन एक हनहित अवहध तक कष्ट भोगते िैं। इस भाँहत यिाँ रि कर दुष्कमी के फल भोगे जाते िैं और तत्पित् पापी जन भूलोक में पुन आते िैं। उन्हें पुनिः एक नया अवसर प्राप्त िोता िै।

नरक के िासक यमराज िैं। हचत्रगुप्त इनके सिायक िैं। नरक एक थथान अलग कर रखा िै। पाहपयों ंको यिाँ पर दण्ड-भोग के समय यातना-दिे' प्राप्त िोती िै। जीवात्मा जब पुनिः भूलोक में जन्म लेता िै, तब उसे नरक-यातना की सूमृहत निीं रिती िै। यि नरक की यातना जीवात्मा को सुधारने तथा उसे हिक्षा देने के हलए िोती िै। इसका हिक्षणात्मक प्रभाव अन्तिःकरण में थथायी रूप से बना रिता िै। पाप-कमज करते समय हकतने िी व्यस्क्तयों ंके अन्दर जो एक भय-सा उत्पन्न िोता िै उसका कारण उनकी उत्कृष्ट चेतना िै जो नरकाहि-कुण्ड में तप्त िो कर हवकहसत िै िोती िै। जीवात्मा को इससे यिी हचरथथायी लाभ प्राप्त िोता िै। नरकास्प्त में परिशुद्ध िोने के अनन्तर जीवात्मा पूवाजपेक्षाकृत अहधक संवेदनिील चेतना के साथ जन्म लेता िै। वि अपनी योग्यताओं ंका अब अपने आगामी जीवन में अहधक सदुपयोग कर सकेगा।

स्वगज अथवा नरक में भहवष्य जीवन के हवषय में यहहदयों ंकी मान्यता समूपूणज रीहत से वैसी िी िै जैसे हक िम जेंदअवेस्ता में पाते िैं। यि विीं ंसे अपनायी गयी िै। यहहदयों ंऔर पारहसयों ंके नरक और उसके सात उप-हवभागों ंके हववरण में समानता िै। अनन्त कालीन उपिार अथवा अनन्त दण्ड के हसद्धान्त के हवषय में यहहदयों ंकी मान्यता भी जेंदअवेस्ता से िी अपनायी गयी िै। उष्टवैती की गाथा किती िै-"पुण्यिाली पुरुष की जीवात्मा अमरत्व प्राप्त करती िै; परन्तु पापी पुरुष की जीवात्मा दण्ड भोगती िै।" आहुरमज्द का ऐसा िी हनयम िै। ये सभी प्राणी उसी के िैं।

यहद मन रजोगुण और तमोगुण से आपूररत िै, तो यि नरक िी िै। यि थथूल िरीर कारागार अथवा नरक िै। जप और ध्यान के अभ्यास हबना इस मांस-हपंजर में हनवास करना नरक िै।

िाकितज हृदय से अपने पापों ंके हलए पित्ताप करना सवोत्तम प्रायहित्त िै। पित्ताप से पाप के कुप्रभाव जाते रिते िैं। उपवास, दान, तप, जप, ध्यान और कीतजन-ये सभी पापों ंको हवनष्ट कर िालते िैं। इस भाँहत मनुष्य नरक के दुिःख से पररत्राण पा सकता िै।

भगवान् श्री कृष्ण गीता में किते िैं: "आत्मा के नाि (पतन) करने वाले काम, िोध और लोभ-ये नरक की प्रास्प्त के तीन िार िैं। अतिः इन तीनों ंको छोड देना चाहिए" (गीता : १६-२१)।

काम, िोध और लोभ के विीभूत िो आप अनेक बुरे कमज कर बैठते िैं। यहद आप इन तीनों ंबुरी वृहत्तयों ंका दमन कर लें तो आप िाश्वत िास्न्त का उपभोग करेंगे। इनकी हवरोधी वृहत्तयों ंकाि्ुहचता, क्षमा और उदारता का अजजन कीहजए। इससे ये बुरी वृहत्तयाँ स्वयं िी समाप्त िो जायेंगी।

६. कमज और नरक

अहवद्या तथा काम के वीभूत िो कर जीव जो हनहषद्ध कमज करता िै, उनके पररणामों ंको भोगने के हलए अनेकों ंतरि के नरक िैं। श्रीमिागवत में अट्ठाईस प्रकार के नरकों ंका वणजन िै, हजनें् जीव अपने कमों की गहत के अनुसार प्राप्त करता िै।

इनमें एक ताहमस्र नामक नरक िै। जो पुरुष दूसरों ंके धन, सन्तान अथवा स्त्रियों ंका अपिरण करता िै, वि इस नरक में पडता िै। काल-पाि से बााँध कर बलात्| अन्धकारमय नरक में हगरा हदये जाने से जीव को यिााँ असह्य वेदना िोती िै। यिााँ उसे अन्न-जल निीं ंहमलता िै। उस पर िण्डों ंकी मार पडती िै और भय हदखाया जाता िै। इससे अत्यन्त दुिःखी िोने के कारण वि मूस्च्छजत िो कर हगर पडता िै।

दूसरे नरक को अन्ध-ताहमस्र किते िैं। जो पुरुष दूसरे को धोखा दे कर उसकी िी तथा अन्य सम्पहत्त को भोगता िै, वि यातनाओं ंको भोगने के हलए इस नरक में िाला जाता िै। यिााँ अतीव पीडा के कारण जीव अपनी चेतना और सूझ-बूझ को खो बैठता िै और जड से कटे वृक्ष की भााँहत दुिःखी िोता िै।

जो पुरुष 'यि िरीर मैं हाँ और संसार की सम्पहत्त मेरी सम्पहत्त िै' -ऐसा सोचते िैं, वे रौरव नरक में पडते िैं। जो इस लोक में प्राहणयों ंको कष्ट पहुाँचाते िैं, वे इस भयावि रौरवलोक में रुरु नामक हवषैले जीव से पीहडत िोते िैं।

मिारौरव नरक भी तो ऐसा िी िै। जो लोग हवषय-भोग में लीन रिते िैं, उनें् यिााँ मांसािारी हिंसक पिु खाते िैं।।

जो िूर और हनदजयी पुरुष जीहवत पिु अथवा पहक्षयों ंको पकाता और खाता िै, उसे भयंकर यमदूत कुम्भीपाक नरक में ले जा कर खौलते हुए तेल में उबालते िैं।

जो मनुष्य धमाजत्मा, ब्राह्मण और माता-हपता की अवज्ञा करता िै, वि कालसूत्र नरक में िाला जाता िै। वि एक ऐसे तप्त तााँबे के तवे के ऊपर रखा जाता िै, हजसका घेरा चालीस िजार मील िै और जो ऊपर से सूयज और नीचे अहि के दाि से झुलसता रिता िै। यिााँ भूख-प्यास से व्याकुल िो वि अकथनीय कष्ट झेलता िै।

अहसपत्र-वन नाम का एक नरक िै। इस वन के वृक्षों ंकी पहत्तयााँ तलवार के समान पैनी िोती िैं। जीव को इस वन में भगाया जाता िै और वि पिु की तरि आित िोता िै। जो अपने वैहदक धमज को छोड कर पाखण्डपूणज धमो का आश्रय लेता िै, उसे इस नरक में िाला जाता िै। हकतनी दयनीय अवथथा िै! वि इधर-उधर भागता िै, हजससे उसके अंग तलवार के समान तीक्ष्ण पत्तों ंसे िै - वि िोने लगते िैं। जीव हचल्लाता िै, 'िाय, मैं मरा' और वेदना से मूस्च्छत िो कर हगर पडता िै।

जो राजा हकसी हनरपराध मनुष्य को दण्ड देता िै अथवा ब्राह्मण को िरीर-दण्ड देता िै, वि सूकरमुख नरक में हगरता िै। विााँ उस पापी के अंगों ंको कोल्हह में पेरे जाते हुए गन्चने के समान कुचलते िैं। वि आतज स्वर में हचल्लाता िै; हकनु्त कोई उसकी सिायता निीं ंकरता िै।

जो पुरुष समाज में सम्मान्य पद पा कर दूसरे व्यस्क्तयों ंको उत्पीहडत करता िै, वि अन्धकूप नरक में पडता िै। विााँ अनेक प्रकार के भयंकर पिु, सपज आहद उस जीव को अन्धकार में चारों ंओर से काटते िैं। यिााँ उसे भहवष्य में ऐसे कुस्त्सत कमज न करने की हिक्षा हमल जाती िै।

जो हिजाहत पंचमियज्ञ का हनत्य अनुष्ठान निीं ंकरता, जो-कुछ हमले उसे हबना दूसरों ंको हदये स्वयं िी उपभोग करता िै, उसे कौआ िी किना चाहिए। वि कृहमभोजन नामक नरक में हगरता िै जिााँ वि कीडों ंको खाता िै। वि कीडों ंके एक बहुत बडे हवसूतृत कुण्ड में हगरता िै और वे कीडे जीव को चारों ंओर से तंग करते िैं।

जो पुरुष हकसी ब्राह्मण अथवा हनधजन का धन आहद अपिरण करता िै और इस भााँहत अकारण िी उसे कष्ट पहुाँचाता िै, वि सन्ंदंश नरक में पडता िै। विााँ उसे तपायी हुई सैंडसी से नोचते िैं और धधकते हुए लोिे के गोलों ंसे उसे मारते िैं।

जो पुरुष अथवा िी अपने आहश्रत हनरपराध सेवकों ंऔर श्रहमकों ंकी दयनीय अवथथा पर दया निीं ं करता िै और न उनकी सियता करता िै, बार-बार उन्ें गाली देता िै, वि तप्तसूहमज नामक नरक में पडता िै। विााँ वि बडी िी िूरता से पीटा जाता िै तथा उसे पुरुष अथवा िी की तपायी हुई प्रहतमा से आहलंगन कराते िैं। जो पराये पुरुष अथवा िी से व्यहभचार करता िै, उसे भी यिी दण्ड हमलता िै।

जो पुरुष काम के वि िो कर पिु आहद सभी प्राहणयों ंके साथ व्यहभचार करता िै, उसे वज्रकण्क शाल्मिली नरक में िाला जाता िै। उसे उस नरक-प्रदेि में घसीटते िैं।

जो राजा या राजपुरुष धमज की मयाजदा का अहतिमण करता िै, वि मरने पर वैतरणी नदी में पडता िै। विााँ हगरने पर जल के जीव उसे काटते िैं, हकन्ुतु इससे उसका िरीर निीं ंछूटता। पाप कमज के कारण प्राण उसे विन हकये रिते िैं। यि नदी मल, मूत्र, पीब, रक्त, केि, नख, िड्डी, चबी, मांस और मज्जा आहद से भरी हुई िै।

जो पुरुष श्ेरेष्ठ कुल में जन्म ले कर ििू िी के साथ सम्बन्ध कर, लज्जा को हतलांजहल दे पिुवत जीवन वयचतीत करता िै, वि मरने के पश्वात् पीब, हवष्ठा, मूत्र, कफ से भरे हुए पूयोद नामक नरक में पडता िै और उन अत्यन्त घृहणत वसुतुओं ंको िी खाता िै।

जो ब्राह्मण और अन्य वगज के लोग कुते्ते या गधे पालते िैं और ििा की मांग का उच्छ्ेद कर पिुओं ंका आखेट करने में आमोद मानते िैं, वे मरने के बाद प्राणोद नरक में पडते िैं। यमदूत उन्ें अपने बाणों ंका लक्ष्य बना कर बींधंते िैं।

जो पुरुष िूरता से पिुओं ंका बध करते िैं, वे हविसन नरक में पिु बन का जन्म लेते िैं। विााँ उनके साथ भी वैसा िी व्यविार हकया जाता िै।

जो हिज कामातुर िो कर अपनी सवणाज पत्नी को वीयजपान कराता िै, उस प्राणी को लालाभक्ष नामक वीयज की नदी में िाल कर वीयज हपलाया जाता िै।

जो कोई व्यस्क्त, राजा अथवा राजपुरुष हकसी के घर में आग लगाता िै, हकसी को हवष देता िै अथवा गााँव या व्यापाररयों ंकी टोहलयों ंको लूटता िै, मरने के पित् वि सारमेयादन नरक में पडता िै। विााँ भयंकर दााँत वाले सात सौ बीस कुतचते उसे वेग से काटते िैं।

जो पुरुष हकसी की गविाी देने में अथवा दान के समय झूठू बोलता िै, वि अवीहचमान नरक में पडता िै। विााँ खडे िोने के हलए कोई आधार निीं ंिै। विााँ जीव को चार सौ मील ऊाँचे पवजत-हिखर से हिर के बल धकेला जाता िै। इस नरक में कठोर पत्थर की भूहम भी जल के समान जान पडती िै। इस भााँहत जीव और भी अहधक भ्रम

में पडता ि। यद्यहप उसके िरीर के टुकडे-टुकडे िो जाते िैं, हफर भी प्राण निीं ंहनकलते। उसे बार-बार ऊपर ले जा कर पटका जाता िै।

जो ब्राह्मण मद्यपान करता िै अथवा अहवहित भोजन करता िै, उसे अब पान नरक में गलाया हुआ लोिा पान करना पडता िै। जो वणाजश्रम-धमज का उल्लंघन करता िै, उसे यिााँ उहचत दण्ड हमलता िै।

जो पुरुष हनम्न श्रेणी का िो कर भी अपने को बडा मानता िै; हकन्त जन्म आश्रम अथवा हवद्या में अपने से जो वास्तव में बडे िैं, उसका आदर-सतकचार निीं ंकरता, वि जीते िी मरे के समान िै। उसे मरने पर अनन्त पीिाएाँ भोगने के हलए र क्षारकदजम नामक नरक में नीचे हिर करके हगराया जाता िै।

जो पुरुष नरमेध के िारा देवताओं ंका यजन करते िैं. वे रक्षोगण भोजन नामक नरक में िाले जाते िैं। विााँ उन्ें राक्षस गण टुकडे-टकेि करके काटते और खाते !! हफर भी वे मरते निीं, ं यातनाएाँ िी भोगते रिते िैं।

जो दृष्ट पुरुष अपने िरणागतों ंको, उनकी िरण में पडे रिने के कारण तरि-तरि की पीडाएाँ देते िैं, वे मरने पर िूलप्रेत नामक नरक में पडते िैं। विााँ वे भूख-प्यास से पीहडत िोते िैं। चारों ंओर से तीखे िौं ंसे बींधें जाते िैं, हजससे उन्ें अपने हकये हुए सारे पाप याद आ जाते िैं।

जो लोग सपों के समान उग्र स्वभाव वाले िोते िैं और दूसरे जीवों ंको पीडा पहुाँचाते िैं, वे मरने पर दन्दिूक नाम के नरक में पडते िैं। विााँ पााँच-पााँच और सात-सात फण वाले सपज उन पर िमण करते िैं और भय से उन्ें मृतप्राय बना देते िैं, हफर भी वे मरते निीं।ं

जो पुरुष दूसरे प्राहणयों ंको अाँधेरी कोठररयों ंऔर गुफाओं ंमें िाल देते िैं, वे मरने पर आग और धुएाँ से भरे हुए वैसे िी अन्धकारपूणज अवट-हनरोधन नरक = में जाते िैं।

जो गृिथ अपने अहतहथ-अभ्यागतों ंकी ओर िोध-भरी ऐसी कुहटल दृहष्ट से देखते िैं मानो उन्ें भस्म कर देंगे, मरने के बाद पयाजवतजन नरक में वज्र के समान चोंचों ंबाले गृद्ध उनके नेत्रों ंको हनकाल लेते िैं।

जो धनवान् िो कर भी सभी पर चोर िोने का सन्देि रखता िै और जो सदा हचंहतत मन से यक्ष के समान धन की रक्षा करता िै, वि मरने पर अन्धकार और हवष्ठा से पूणज, जल-रहित सूचीमुख नाम के नरक में हगरता िै।

यमलोक में इसी प्रकार के सैकडों–िजारों ंनरक िैं, हजनका वणजन यिााँ सुगमता से निीं ंहकया जा सकता। हजनका यिााँ उल्लेख हुआ िै, वे तो अधमज-परायण जीवों ंकी यातनाओं ंके कुछ नमूने िैं।

जो पुरुष अपनी इन्द्रियों ंका संयम करता िै, जो हनवृहत्त मागज का अनुसरण करता िै, जो भगवद् ध्यान में लीन रिता िै, जो सदाचारी, दयालु और उदार िै, जो हवषय-जगत् की रंचमात्र भी इच्छा निीं ंकरता, जो मोक्ष-साधन में तत्पर िै, वि हफर जन्म निीं ंलेता। धमाजत्मा पुरुष स्वगजलोक को जाते िैं और अन्य लोग, यहद इस लोक में जन्म निीं ंलेते तो इन नरकों ंमें से हकसी एक में पडते िैं।

७. असूयज-लोक

नरक एक ऐसी अवथथा िै हजसमें मनुष्य भगवान् से परम हवयोग का अनुभव करता िै, हजसमें वि भगवान् के प्रेम, पहवत्रता और सत्यता की ज्योहत का अनुभव निीं ंकर पाता िै। यि असूयज, सूयज-रहित लोक िै।

मनुष्य जान-बूझ कर, दौमजनस् तथा पित्ताप की भावना से रहित ि◌ो कर जो पाप करता ि◌ै, उसकी प्रहतहिया तथा प्रहतकार-स्वरूप वि यिााँ पूणज अव्यवथथा, अन्धकार तथा दि◌ुःख को प्राप्त करता ि◌ै।

पाहपयों ◌ंके हलए अनन्तकालीन दण्ड अथवा अनन्तकालीन अहि जैसी कोई वसु्तु निीं ◌ंि◌ै। ऐसा कदाहप निीं ◌ंि◌ो सकता ि◌ै। इस हसद्धान्त का बहुत पिले ि◌ी भण्डाफोड ि◌ो चुका ि◌ै। अनन्तकालीन दण्ड एक अनीश्वरीय हसद्धान्त ि◌ै। यि युग-युगान्तरों ◌ंसे लोगों ◌ंके हलए भयजनक तथा दि◌ुःस्वप्न-सा बना रिा ि◌ै। मनुष्य को पाप-कमज से उपरत करने के हलए ि◌ी नरक का इतना भयावि हचत्रण हकया गया ि◌ै। नरक एक भयानक ि◌ब्द ि◌ै।

ईश्वर ने मनुष्य की रचना इस ि◌ेतु से निीं ◌ंकी हक वि हनरन्तर नरकाहि का ईंधन बना रिे। हनिय ि◌ी इस सृहष्ट के रचने में भगवान् का ऐसा कोई प्रयोजन निीं ◌ंि◌ै। यहद भगवान् ऐसा ि◌ो, तो भला कौन उसे अपनी श्रद्धांजहल अहपजत करे ? भला तब कौन व्यस्क्त बच सकता ि◌ै? इस संसार में हनष्कलंक व्यस्क्त हकतने ि◌ैं? ऐसा कौन हनदोष चररत्र का व्यस्क्त ि◌ै, हजसे स्वगज में सीधे प्रवेि करने का पार-पत्रक हमल सके?

यहद यि सत्य ि◌ै तो सभी पस्ण्डत, ि◌ािी, आचायज, पुरोहित, धमोपदेिक, पोप, पादरी-यिााँ तक हक सारे संसार के सभी मनुष्यों ◌ंको नरकाहि में झुलसना पडेगा।

८. यमलोक का मागज

सबसे नीच एवं अधम कोहट के पाहपयों ◌ंके समुमुख हवकराल रूप धारण हकये हुए यम के दो दूत आ धमकते ि◌ैं और पापी जीवात्मा को यम-पाि में बााँध लेते ि◌ैं। उनके भय से त्रस्त ि◌ो कर उसका मूत्र हनकल पडता ि◌ै। यम-मागज का कष्ट भोगने के हलए, उसे एक हविेष ि◌रीर (यातना-देि) हमलता ि◌ै। यमदूत रस्स्सयों ◌ंसे जकड का उसे बााँध लेते ि◌ैं और सुदूर पथ से बलपूवजक घसीटते हुए उसे संयमनी नगर की ओर ले चलते ि◌ैं।

इस मागज में वृक्ष की छाया निीं ◌ंि◌ोती ि◌ै। न तो यिााँ आिार ि◌ै और न जल ि◌ी। यिााँ पर हनत्य ि◌ादि सूयज तपते रिते ि◌ैं। पापी जीव जब इस मागज से चलता ि◌ै, तो किीं ◌ंपर उसका ि◌रीर ि◌ीत-वायु से हवद्ध ि◌ोता ि◌ै और किीं ◌ंपर पथ के कण्कों ◌ंसे हवदीणज ि◌ोता ि◌ै। एक थथान में वि अत्यन्त हवषैले सपों ◌ंऔर हबचुछुओं ◌ंसे दुहित ि◌ोता ि◌ै और हकसी एक अन्य थथान में वि अहि से जलता ि◌ै।

भगचन-हृदय वि जीवात्मा मागज में ि◌र यमदूत की धमहकयों ◌ंसे कम्पायमान ि◌ोता ि◌ै। हनदजयी कुते्ते उसे काट खाते ि◌ैं। उसे भूतकाल में हकये हुए अपने पाप-कमों की सूमृहत ि◌ोती ि◌ै। वि तृषा तथा कुषुधा से व्यहथत ि◌ोता और प्रचण्ड सूयज से तपायमान के ि◌ोता ि◌ै। उसे तप्त अरुण बालुका में चलना पडता ि◌ै। पीठ पर कठोरता से आघात हकये जाने पर जब वि अधजमूस्च्छजत-सा ि◌ो हगरने लगता ि◌ै, तब यमदूत उसे पुनिः उठने के हलए हववि करते ि◌ैं और उसे यमराज के धाम की ओर घसीट ले जाते ि◌ैं। विााँ उसे हचरकाल तक कष्ट-भोग का दण्ड हमलता ि◌ै। इसके अनन्तर वि जीव कुषितम योहनयों ◌ंमें जाता ि◌ै और उनमें हवकासि–म के अनुसार उन्नत ि◌ोता हुआ सूअर, कुत्ता आहद योहनयों ◌ंमें आता ि◌ै। इस भााँहत इन योहनयों ◌ंके कष्ट-ताप हिया में वि ि◌हमक रूप से ि◌नैिः ि◌नैिः ि◌ुद्ध ि◌ो कर अन्ततिः मानव-योहन को प्राप्त ि◌ोता ि◌ै।

इस नरक में पापी जीव किीं ◌ंअन्धकूप में हगरता ि◌ै, तो किीं ◌ंपवजत के उच्च हिखर से नीचे आ पडता ि◌ै। किीं ◌ंपर वि तलवार की तीक्ष्ण धार पर अथवा ि◌ूल की पैनी नोक पर चलता ि◌ै। हकसी थथान में वि घोर अन्धकार में लडखडा कर जल में जा ● हगरता ि◌ै। किीं ◌ंपर वि जोंकों ◌ंसे भरे हुए कीचड में, किीं ◌ंपर तप्त करेली हमट्टी में, किीं ◌ंपर हपघले हुए ि◌ी के तप्त

रेत में और किीं ंपर धधकते हुए अंगारों ंमें चलता िै। किीं ंउस पर अंगारे बरसते िैं तो किीं ं
पर हिला, वज्र, र्शि– अथवा खौलते हुए जल की उसके ऊपर वृहष्ट िोती िै। मागज में रुहधर
तथा पूय से पररपूणज अहत-भयावि वैतरणी नदी पडती िै। इसे पार करना बहुत िी दुष्कर िै।

यमदूत पापी जन पर िथौडों ंसे प्रिार करते िैं और यम-पाि में बाँध कर उसे घसीटते िैं। उसके पुत्र प्रहत
मास जो हपण्ड दान करते िैं, विी उसे खाने को हमलता िै। उसका पुत्र यहद गौ-दान करता िै, तो उसे वैतरणी नदी
पार करने के हलए नौका हमल जाती िै।

एक वषज के अन्त में वि यम के धाम में पहुँच जाता िै। यमराज हचत्रगुप्त से उसके पाप के हवषय में पूछते
िैं और हचत्रगुप्त ब्रह्मा के पुत्र श्रवणों ंसे उसके पाप के हवषय में पता करते िैं; क्योंहक इन श्रवणों ंको सभी पुरुषों ंके
कमज का ज्ञान िोता िै। श्रवणों ंकी पहत्नयों ंको स्त्रियों ंके पाप-कमों का ठीक-ठीक पता िोता िै। पृथ्वी, जल, अहि,
वायु, आकाि, अन्तिःकरण, यम, हदवा-राहत्र, दोनों ंसन्ध्याएँ, धमज, सूयज और चिमा-ये मनुष्य के कमों को जानते िैं।

धमजराज यम पाहपयों ंको समुहचत दण्ड हनधाजररत करते िैं और तब यम के दूत उन्िें तदनुरूप नरक में ले
जा कर यातना देते िैं। यिाँ यम के दूत इन पाहपयों ंपर बारम्बार अपने िूल, गदा, मूसल आहद िस्त्रों ंसे प्रिार
करते िैं।

अपने जीवन-काल में जो व्यस्क्त पुण्याजजन करते िैं, वे पुण्यात्मा जन हदव्य हवमान में बैठ कर स्वगज के
उद्यान में जा पहुँचते िैं; परन्तु पाहपयों ंको उनके पापों ंके दण्ड-स्वरूप कण्टक, िूल तथा झाड-झंकाड से
आकीणज पथ िारा जाना िोता िै और वे हिम-हिलाओं ंतथा भू-हववरों ंको प्राप्त िोते िैं ।

हजनके पाप और पुण्य प्रायिः समान िोते िैं, ऐसे मध्यम श्रेणी के व्यस्क्त के यमपुरी जाने का मागज स्वच्छ
तथा सुन्दर िोता िै। इस पथ में कोमल घास हबछी िोती और मागज के दोनों ंओर िीतल लता-कुंज और जल-प्रपात
बने िोते िैं।

जब जीव यमपुरी में पहुँच जाता िै, तब उसे अपने अन्दर िी ऐसा प्रतीत िोता िै हक 'मैं अब यमराज के
पास आ गया हाँ और मेरे समक्ष वि मृत्युदेव यमराज हवराजमान िैं। ये दूसरे िमारे कमों के हनणाजयक हचत्रगुप्त िैं।
इन्िोंने मेरे प्रहत यि न्याय हकया िै।'

यिाँ यमराज की सभा िै, जिाँ जीव का न्याय िोता िै, हजससे हक जीव अपने कमों का फल भोग सके।
इस न्याय के आधार पर वि जीवात्मा अपना पुण्य भोगने के हलए ऊपर आनन्दमय स्वगज को प्रयाण करता िै
अथवा पाप भोगने के हलए नीचे नरक में पहतत िोता िै।

स्वगज के सुख अथवा नरक की यातनाएँ भोग लेने के पिात् वि जीवात्मा अपने कमों के पररणाम-स्वरूप
इस भूलोक में पुनिः आता िै और अनेक जन्म लेता िै। मनुष्य की मृत्यु के अनन्तर एक वषज तक उसके हनहमत्त जो
समय-समय पर श्राद्ध-हियाएँ की जाती िैं, उनका यिी रिस्य िै।

९. धमज (न्याय) की नगरी

भगवान् यमराज धमज (न्याय) के राजा माने जाते िैं। उनका नगर िीरे तथा मोहतयों ंसे जहटत िै। यि नगर
प्रभामय तथा अभेद्य िै, राजप्रासादों ंएवं अट्टाहलकाओं ंसे पूणज िै। चारों ंहदिाओं ंमें इस नगर के चार िार िैं और

यि ऊँचे प्राचीरों ंसे चतुहदजक आवृत िै। इस नगर का हवस्तार एक सिस्र योजन तक िै। सभी मनुष्यों ंके भाग्य का लेखा रखने वाले हचत्रगुप्त भी इसी धमज की नगरी में हनवास करते िैं। वे मनुष्य के पुण्य-पाप का लेखा रखते िैं। स्वयं हवश्व-स्रष्टा ने अपने यज्ञ के प्रभाव से इस नगरी की रचना की थी। यिाँ एक हदव्य सभागृि भी िै जिाँ पर एकहत्रत िोने वाले सभी लोग धिा-ममजज्ञ तथा धमजहप्रय िोते िैं। राजहषज गण भी यिीं ंहनवास करते िैं।

पापी जन इस नगर में दहक्षण पाश्वज से प्रवेि करते िैं। उन्िें यि धमज-सभा दृहष्टगोचर निीं ंिोती िै। जो पुण्यिाली जीव िोते िैं, वे इस धमज-सभा में पूवज आहद अन्य तीन िारों ंसे प्रवेि करते िैं।

इस नगर का पूवीय पथ पाररजात वृक्ष की कोपलों ंसे आच्छाहदत िै और इसमें बहुमूल् रत्न जडे हुए िैं। पूतात्मा ब्राह्मण, मुहन, राजहषज, हिव के भक्त, धमजिालाएँ हनमाजण कराने वाले, चातुमाजस् में तपस्स्वयों ंको आश्रय प्रदान करने वाले, िोध और लोभ से मुक्त जन, धमाजनुरागी तथा सत्यहप्रय, गुरुभस्क्तपरायण, भूदान, गृिदान तथा गोदान करने वाले, धिों ंके श्रोता-वक्ता-ये सभी पुण्यिाली जन इस मागज के पहथक िैं। वे धमज-सभा में प्रवेि करते िैं।

इस नगर का दूसरा-उत्तर हदिा का - पथ पीतवणज के चन्दन के वृक्षों ंसे हनहमजत िै। यिाँ पर अमृतरस से पूणज रमणीय सरोवर िैं। जो वेद के पारगामी िैं, जो अहतहथसेवी िैं, जो दुगाज तथा सूयज के उपासक िैं, जो ब्राह्मणों ंके हेतु, स्वाहमकायज अथवा प्राहणयों ंके रक्षाथज अपने प्राण उत्सगज करते िैं, जो दानिील िैं; वे सब उत्तर के िार से प्रवेि कर धमज की नगरी में पहुँचते िैं।

इस नगर का तीसरा-पहिम हदिा का-पथ रत्न-जहडत भवनों ंसे सुिोहभत िै। जो भगवान् हवष्णु और लक्ष्मी के भक्त िैं, जो गायत्री-मन्त्र का जप करते िैं, जो गािजपत्य अहि का सेवन करते िैं, जो वेदपाठी िैं, जो वैराग्यवान् िैं, जो पंचमिायज्ञों ंको करते िैं, जो हपतरों ंका श्राद्ध करते िैं, जो यथोहचत समय पर सन्ध्या करते िैं, जो ब्रह्मचयज और अहिंसा-व्रत का पालन करते िैं, जो अपनी पहत्नयों ंके हवश्वास-भाजन िोते िैं, जो सभी प्राहणयों ंके हित में सदा रत रिते िैं—ये सभी पुण्यात्मा जन उत्तम हवमानों ंपर सवार िोते िैं, अमृत-पान करते िैं और इस धमज की नगरी में पहिम िार से प्रवेि करते िैं।

भगवान् यम इन पुण्यिाली जीवों ंका स्वागत करते तथा चन्दनाहद से उनका आदर-सत्कार करते िैं। यिाँ वे कुछ काल हनवास कर हदव्य भोगों ंको भोगते िैं। कालान्तर में जब उनके पुण्य क्षीण िो जाते िैं, तब वे इस भूलोक में पुनिः पहवत्र मानव-जन्म धारण करते िैं।

१०. यम-सभा

हववस्वान् के पुत्र यमराज के सभा-भवन का हनमाजण हवश्वकमाज ने हकया था। इस भव्य सभा भवन का हवस्तार एक सौ योजन िै। यि सूयज के समान प्रकािमान िै । मनुष्य इससे जिो हजस वसुतु की कामना करे, वि वसुतु उसे प्राप्त िो जाती िै । दर थथान न तो अहधक उष्ण िै और न अहधक िीत िी । यि हृदय को आह्लादकारक िै।

यिाँ पर न िोक िै न जरा, न कुषुधा िै न तृषा, न अरोचकता िै और न दुख आहद िी िैं। इस सभा में हकसी प्रकार का क्लेि निीं ंिै। यिाँ हदव्य अथवा लौहकक, सभी प्रकार के काम्य पदाथज तथा मधुर, रसीले, रुहचकर, स्वाहदष्ट पदाथज तथा खाद्य, लेह्य, चोष्य, पेय इत्याहद प्रचुर मात्रा में उपलि िैं। यिाँ पर धारण हकये जाने वाले पुष्प-िारों ंमें बहुत िी भीनी सुगन्ध िोती िै। यिाँ के वृक्ष सभी प्रकार के ऐस्च्छक फल उत्पन्न करते िैं।

यिााँ पर िीत और उष्ण-दोनों ंप्रकार का जल िै जो हक मधुर और अनुकूल िै। इस सभा में पहवत्र राजहषज गण और हनष्पाप ब्रह्महषज गण रिते िैं। त्रसदसु, कृतवीयज, श्रुतश्रवा, धुरुव इत्याहद राजहषज गण यिााँ िोते िैं। इनके अहतररक्त मात्यज वंि के एक सौ, नेप वंि के सौ, हुय वंि के सौ, धृतराष्टर नाम के सौ, जनमेजय नाम के अस्सी, ब्रह्मदत्त नाम के सौ, इरी और अरी नाम के सौ, भीष्म नाम के दो सौ, भीम नाम के सौ, प्रहतहबन्द नाम के सौ, नाग नाम के सौ और िय नाम के सौ राजा रिते िैं। ये सभी प्रसन्न मुि से यमराज की सेवा में उपस्स्थत रिते िैं।

ये राजहषज गण सभी हसस्द्धयों ंमें तथा ििों ंमें हनपुण िोते िैं और यमराज की सभा में हवद्यमान रिते िैं। अगस्त्य, मंगल, काल, यज्ञयागाहद हिया करने वाले, साध्य, योगी, जीवन्त हपतर गण, काल-चि, यज्ञाहुहत-विाक अहि इत्याहद विााँ िोते िैं। इनके अहतररक्त पापी जन, दहक्षणायन में मरने वाले सभी प्राणी, सभी प्राहणयों ंकी हनहित आयु की गणना रखने वाले यमराज के कमजचारी, कि और कुि वृक्ष तथा सभी वृक्ष और वनस्पहत अपने हदव्य रूप में यमराज की सभा में रिते िैं। ऊपर बतलाये हुए ये सब लोग तथा और भी कई अन्य लोग यमराज की सभा में रिते िैं। उनकी संख्या इतनी अहधक िै हक उन सबका उल्लेख यिााँ निीं ंिो सकता िै। यि सभा अपनी इच्छा से किीं ंभी जा सकती िै। यि बहुत िी हविाल और सुन्दर िै। दीघज काल तक तपियाज करने के पिात् हवश्वकमाज ने इसकी रचना की थी। वि अपनी आभा से स्वयं प्रकािमान िै। उग्र तपस्या करने वाले तपस्वी, उत्तम व्रती, सत्यवादी, पहवत्र तथा िान्त मन वाले तथा पहवत्र कमज-सम्पादन िारा िुद्ध-हृदय वाले व्यस्क्त यिााँ पर रिते िैं। इन सबके िरीर देदीप्यमान िोते िैं। हनमजल विभूषा धारण करते तथा भुजबन्द एवं रत्निार से सुसस्ज्जत िोते िैं। उनके पुण्य-कमज उनके साथ िोते िैं तथा वे अपनी श्रेणी को प्रकट करने वाले हचह्न धारण करते िैं।

अनेक प्रख्यात गन्धवी तथा अप्सराओं ंके नृत्य, वाद्य, संगीत तथा िास-पररिास से सभा का कोना-कोना झंकृत रिता िै। हदव्य सुगन्ध, मधुर िब्द तथा हदव्य पुष्प-मालाओं ंकी यिााँ पर प्रचुरता िै। यिााँ पर सृहष्टजात सभी प्राहणयों ंके आराध्यदेव यमराज के पास हदव्य सौन्दयज और मिान् प्रहतभासम्पन्न सिस्रों ंपुण्यिाली व्यस्क्त उपस्स्थत रि कर उनका पूजन करते रिते िैं।

११. इिलोक

इि की हदव्य सभा प्रकािमान िै। यि इि को उनके पुण्य-कमों के पररणाम स्वरूप प्राप्त हुई िै। इस सभा को स्वयं इि ने सूयज के समान प्रकािमान बनाया िै। इसकी लम्बाई डेढ़ सौ योजन, चौडाई एक सौ योजन और ऊाँचाई पााँच =योजन िै। यि इच्छानुसार किीं ंभी जा सकती िै।

यिााँ से जरा, िोक, भय और क्लेि दूर रिते िैं। यि सुखकर तथा िुभकर िै। इसमें हविाल खण्ड और आसन बने हुए िैं। यि हदव्य वृक्षों ंसे सुिोहभत िै और बहुत िी रमणीय प्रतीत िोती िै। इस सभा में एक उच्चासन पर देवराज इि सौन्दयज और लक्ष्मी-रूपा अपनी पत्नी िची के साथ हवराजते िैं। उनका रूप अवणजनीय तथा अद्भुत िै। उनके हिर पर मुकुट और बााँिों ंमें भुजबन्ध िैं। वे िरीर पर िुद्ध िुभ्र वि धारण करते िैं। इि के वाम पाश्वज में सौन्दयज, कीहतज और हवनय की मूहतज िची देवी हवराजती िैं।

िितु इि की सेवा में मरुत गण, हसद्ध, देवहषज, साध्य तथा देव रिते िैं। सुन्दर रूप वाले ये मरुत गण सोने का िार धारण करते िैं। ये तथा इनके अनुचर हदव्य विालंकारों ंसे सुसस्ज्जत िो ितुरु-पीडक देवराज इि की हनत्य-प्रहत सेवा-पूजा करते िैं।

ुद्धात्मा देवहषज गण, जो अहि के समान तेजस्वी िैं, हजनके सभी पाप पूणजतिः पुल चुके िैं, जो ओजर्–स्क्त
से पूणज िैं, जो िोक तथा भय से मुक्त िैं, जो सोमयज्ञ करते िैं ये सभी तथा पररार, पवजत, सावहणज, दुवाजसा,
याज्ञवल्क्य, उद्दालक इत्याहद ऋहष इि की सुतुहत करते िैं। इनमें से कई एक तो माता के गभज से उत्पन्न हुए िैं और
कई एक िी के गभज से न उत्पन्न िो कर मानस-पुत्र िैं। इनमें से कुछेक वायु के ऊपर और कुछेक तैजस् पदाथज के
ऊपर जीवन हनवाजि करते िैं। ये ऋहष बज्रायुधधारी लोकपाल इि की सुतुहत करते रिते िैं। सिदेव, सुनीथ,
हिमक, हिरण्यगभज, गगज इत्याहद मुहन गण हदव्य जल तथा वनस्पहत, श्रद्धा, धी, सरस्वती आहद देहवयां पां अथज
तथा
काम, हवद्युत्, मेघ, पवन, घनघोष, प्राची हदिा, िव्यविाक सताईर अहधयाँ, अनल, सोम, इिाहि, हमत्र, सहवता,
अयजमा, भग, ग्रि, नक्षत्र और तागा गण, यज्ञ में प्रयुक्त िोने वाले मन्त्र-ये सभी इि की सेवा में सदा उपस्थथत रिते िैं।

बहुत-सी रमणीय अप्सराएँ तथा गन्धवज गण अपने-अपने हवहवध प्रकार के नृत्य-गान, कण्ठ तथा वाद्य के
संगीत तथा अन्य अनेक प्रकार के कला-कौिल प्रदहिजत कर स्वगाजहधपहत इि को प्रसन्न रखते िैं। राजहषज, ब्रह्महषज
तथा देवहषजगण हवहवध प्रकार के हदव्य हविानों ंपर आसीन िो तथा पुष्पमालाओं ंऔर अलंकारों ंसे सुसस्ज्जत िो
इि-सभा में आते-जाते रिते िैं।

बृिस्पहत तथा िुिाचायज भी यिाँ सभी अवसरों ंपर उपस्थथत रिते िैं। इनके अहतररक्त अनेक दृढ़व्रती
मिहषज गण तथा ब्रह्म के समान तेजस्वी भृगु और सप्तहषज गण सोम-रथ के समान अलौहकक हवमानों ंमें बैठ कर
इि की सभा में आते-जाते रिते िैं। इस सभा का नाम पुष्करमाहलनी िै।

१२. वरुणलोक

वरुण की हदव्य सभा अहितीय िै। यम-सभा के बराबर िी इस सभा का हवस्तार िै। यि स्फहटक की धवल दीवालों
ंऔर वृत्तखण्डों ंसे सुिोहभत िै। हवश्वकमाज ने इस नगर की रचना जल के अन्दर की िै। इसके चतुहदजक् िीरे
और महणयों ंके हदव्य वृक्ष लगे हुए िैं हजनमें बहुत िी सुन्दर फल-फूल उत्पन्न िोते िैं। नीले, पीत, श्याम, श्वेत
तथा अरुण पुष्प वाले पौधों ंके परस्पर हमलने से कुंज बन गये िैं हजनमें सैकडों ंऔर सिस्रों ंजाहत के रंग-हवरंगे
पक्षी मधुर
कलरव करते रिते िैं।
यि सभा बहुत िी आह्लादकारी िै। यिाँ पर न तो िीत िै और न उष्णता िो। इसका िासन वरुणदेव
करते िैं। इस सभा में कई खण्ड िैं हजनमें सुन्दर आसनों ंकी व्यवथथा की गयी िै। यिाँ पर वरुणदेव अपनी रानी
(वारुणी) के साथ हदव्य हविलंकारों ंसे सुसस्ज्जत िो हवराजते िैं। आहदत्य गण वरुण की सेवा में उपस्थथत रिी िैं।
उनके िरीर पर हदव्य सुगस्न्धत िव्य और चन्दन का लेप लगा रिता िै।

वासुकी, तक्षक, जनमेजय इत्याहद नाग धैयजपूवजक वरुणदेव की सेवा में उपस्थथत रिते िैं। ये नाग सुन्दर
हचह्न धारण करते िैं और इनके मण्डल और हविाल फण भली प्रकार िोभायमान िोते िैं। हवरोचन के पुत्र बहल,
संग्रोध, कलकपंच नाम वाले दानव, सुिनु, हपतर, हदग्रीव इत्याहद पािधारी वरुणदेव की सेवा में उपस्थथत रिते
िैं। ये सब कानों ंमें कुण्डल, गले में पुष्पिार, हिर पर मुकुट और िरीर पर हदव्य वि धारण हकये िोते िैं। इन्
वर प्राप्त हुआ िोता िै। इनमें मिान् िौयज तथा अमरत्व िोता िै। ये सब िुद्धाचारी, धमाजत्मा तथा सुव्रती िोते िैं।
चारों ंमिासागर, भागीरथी, काहलन्दी, हवहदिा, वेणु, वेदवती, नमजदा, चिभागा, सरस्वती, इरावती, हसन्धु, गोदावरी,
कावेरी, वैतरणी, सोन, सरयू, अरुणवणाज मिानदी, गोमती तथा अन्य सररताएँ, तीथज, सरोवर, कूप, वापी, प्रपात- ये
सभी जलािय मूतज रूप से विाँ हवद्यमान िोते िैं। स्वगज की हदिाएँ, पृथ्वी, पवजत तथा सभी प्रकार के जलचर
वरुणदेव की सेवा में उपस्थथत रिते िैं। वाद्य और गीतकलाहनपुण अप्सरा और गन्धवज वरुणदेव की सुतुहत करते

हुए उनकी सेवा में उपस्थथत रिते िैं। रत्न तथा िीरों ंसे सम्पन्न सभी पवजत विााँ उपस्थथत िो कर सुन्दर वाताजलाप में संलि रिते िैं। वरुण का मन्त्री सुनव अपने पुत्र-पौत्रों ंके साथ तथा गो नाम के प्रहसद्ध पुष्कर तीथज के साथ वरुणदेव की सेवा में उपस्थथत रिते िैं। ये सब हदव्य रूप धारण कर वरुणदेव की पूजा करते िैं।

१३. कुवेरलोक

वैश्रवण (कुवेर) के हदव्य सभा-मण्डप की लम्बाई एक सौ योजन और चौडाई सत्तर योजन िै। अपने तप के प्रभाव से कुवेर ने स्वयं इस सभा की रचना की थी। वि कुवेरलोक कैलास के हिखर-सा प्रतीत िोता िै। यि चिमा से भी बढ़ कर प्रकािमान िै। गुह्यक लोग इसे इस प्रकार धारण हकये हुए िैं, मानो यि आकाि में लटक रिा िै। इसमें स्वणज-हनहमजत अनेक हदव्य हविाल राजभवन िैं हजनसे यि अत्यन्त सुन्दर लगता िै।

यि कुवेर-सभा बहुत िी रमणीक िै। यि हदव्य सुगस्न्धत िव्यों ंसे सुवाहसत तथा अनेक बहुमूल् महणयों ं से सुिोहभत िै। श्वेताभ्र-खण्डहिखर के समान यि सभा गगन-मण्डल में हिलोरें-सी लेती हुई प्रतीत िोती िै। हदव्य स्वहणजम रंगों ंसे रंहजत यि ऐसी दृहष्टगोचर िोती िै मानो तहडत्-रेखाओं ंसे इसका शृंगार हकया गया िै। यिााँ पर सूयज के समान देदीप्यमान एक भव्य हसंिासन िै हजस पर हदव्य चादरें हबछी हुई िैं और उसके नीचे सुन्दर पाद-पीठ रखे हुए िैं। सुन्दर बहुमूल् विभूषणों ंसे सुसस्ज्जत तथा कानों ंमें चमकते हुए कुण्डल धारण हकये हुए परम सौन्दयजिाली राजा कुबेर अपनी एक सिस्र पहत्नयों ंके साथ इस आसन पर हवराजते िैं।

मन्दार-वृक्ष के सघन उपवनों ंसे बिता हुआ िीतल, मन्द, सुगन्ध वायु मस्ल्लका की क्याररयों ंसे अलका नदी के िोड में उत्पन्न नीरज पुष्पों ंसे तथा नन्दन वन के पाररजात-कहलकाओं ंसे सुगन्ध ला कर कुवेर भगवान् की अचजना करता िै।

देवता गण यिााँ पर अनेक प्रकार की अप्सराओं ंसे पररवृत गन्धवों ंके साथ हदव्य मधुर राग अलापते िैं। हमश्रकेिी, रम्भा, उवजिी, लता तथा नृत्य-गान में कुिल अन्य सिस्रों ंअप्सराएाँ, धनपहत कुबेर की सेवा में उपस्थथत रिती िैं। वाद्य-संगीत की मधुर राग-राहगनी तथा अनेक गन्धवों ंऔर अप्सराओं ंके नृत्य से यि सभा बहुत िी मनोरम तथा सुिावनी लगती िै।

सिस्रों ंकी संख्या में गन्धवज, हकन्नर तथा यक्ष और िंसचूड एवं वृक्षवस् कुळो की सेवा में हनत्यप्रहत उपस्थथत रिते िैं। श्री लक्ष्मी देवी तथा नल कुवेर भी इस सभा में उपस्थथत रिते िैं। इनके अहतररक्त अन्य बहुत से लोग भी यिााँ प्रायिः आते-जाते रिते िैं। अनेक राजहषज और मिहषज भी यिााँ आते िैं। कई राक्षस और गन्धवज कुबेर की सेवा में उपस्थथत रिते िैं। सवजभूतेश्वर हत्रनेत्रधारी भगवान् मिादेव सदा प्रसन्न मुिा और अस्खन्न भाव से अपनी पत्नी उमादेवी के साथ विााँ पर अपने सखा कुबेर के पास हनवास करते िैं। इनके साथ असंख्य भूत-प्रेत रिते िैं। उनमें से हकतने िी बौने िोते िैं और हकतनों ंके नेत्र िोहणत वणज के िोते िैं। इनमें से कई एक मांसािारी िोते िैं। िे सब-के-सब नाना प्रकार के अिि-िो ंसे सुसस्ज्जत िोते िैं। इनकी गहत वायु के समान तीव्र िोती िै।

सैकडों ंगन्धवज-नायक अपने-अपने विभूषणों ंसे सुसस्ज्जत िो प्रसन्न हृदय में कुबेर की सेवा में उपस्थथत रिते िैं। हवद्याधरों ंके प्रमुख नायक चिघमन अपने अनुचरों ंके साथ कुबेर की सेवा में उपस्थथत रिते िैं। बहुत से हकन्नर अपने प्रधान, भगदत्त के नेतृत्व में अनेक राजा, हकमुपुरुषों ंके प्रधान िुम तथा राक्षसों ंके प्रधान िमेि भी कुबेर की सेवा में उपस्थथत रिते िैं।

धमाजत्मा हवहविन अपने अग्रज कुवेर की सेवा में विााँ उपस्थथत रिते िैं। हिमालय, पाररपात्र, हवन्ध्य, कैलास, सुनव इत्याहद पवजत पुरुष-रूप धारण कर अपने प्रधान मेरु के साथ कुवेर के पास उपस्थथत रिते िैं।

प्रहसद्ध नन्दीश्वर, मिाकाल, गम्भीर नाद करने वाला भगवान् हिव का विान वृषभ, िर के समान तीक्ष्ण कान तथा नुकीले मुख वाले भूत-पे्रेत तथा अनेक राम और हपिाच कुवेर के पास उपस्थथत रिते िैं। पूवजकाल में कुबेर का पुत्र अपने हपता की आज्ञा प्राप्त कर अपने अनुचरों ंके साथ हत्रलोकीनाथ भगवान् हिव की िो नत-मस्तक िो हनत्य पूजा करता था। उदारात्मा भव ने एक हदन कुवेर से मैत्री कर ली और तब से वे कुबेर की सभा में सदा उपस्थथत रिते िैं।

कुबेर की यि सभा आकाि में संचरण करने की क्षमता रखती िै।

१४. गोलोक

गाय सभी प्राहणयों ंका आधार िै। गाय सब प्राहणयों ंका हनवास िै। गाय धमज की मूहतज िै। गाय पहवत्र िै और सबको पहवत्र बनाती िै। उसके रूप और गुण सवोत्तम िैं।

गाय में मिान् िस्क्त िै। गोदान की महिमा किी गयी िै- "मान-मुक्त िो जो सज्जन गोदान करते िैं, वे पुण्यिाली तथा सभी वसुतुओं ंका दान करने वाले माने जाते िैं। ऐसे पुण्यात्मा-जन परम पावन गोलोक के धाम को प्राप्त िोते िैं।"

गोलोक के वृक्ष मधुर फल प्रदान करते िैं। ये सदैव सुन्दर पुष्पों ंतथा फलों ंसे सुिोहभत रिते िैं। उनके पुष्पों ंमें हदव्य सुगन्ध िोती िै।

इस गोलोक की समूपूणज भूहम महणयों ंसे बनी हुई िै, इसकी रेती सोने की िै। विााँ की जलवायु में सभी ऋतुओं ंकी सौम्यता िोती िै। विााँ न तो कीचड िै और न धूल। हनिःसने्दि यि बहुत िी पावन धाम िै। यिााँ की सररताओं ंके वक्षिःथथल पर अरुणाभ पद्-पुष्प हवकहसत रिते िैं और उनके कूल-प्रदेि में िीरे, महण और स्वणज पाये जाते िैं हजनके कारण ये सररताएँ प्रातिःकालीन अंिुमाली की हदव्य छटा की भााँहत जगमगाती रिती िै।

यिााँ पर बहुत से सरोवर भी िैं हजनमें बहुत से कमल स्खले हुए िैं। इन पुष्पों ंकी पंखुहडयााँ रत्नों ंसे बनी हुई िैं और इनके पराग किर स्वणज रंग के िैं। इन सरोवरों ंके तट पर कुसुहमत वृक्षों ंसे लताएँ हलपटी हुई िैं। यिााँ पर सन्तानक वृक्ष के वन भी िैं। ये वृक्ष फूलों ंसे लदे हुए िैं।

यिााँ पर बहुत-सी ऐसी नहदयााँ िैं हजनके तट अनेक प्रकार के सुन्दर मोती, चमकीले िीरे और सोने के िरा हचत्र-हवहचत्र से बने हुए िैं।

यि प्रदेि भााँहत-भााँहत के िीरे-मोहतयों ंसे सजे हुए सुन्दर वृक्षों ंसे आच्छाहदत िै। इनमें से हकतने िी वृक्ष तो अहन के समान प्रकािमान िैं।

इस गोलोक में अनेक पवजत स्वणज के बने हुए िैं और अनेक पिाहडयााँ रत्न और महणयों ंसे बनी हुई िैं। इनके उच्च हिखर अनेक प्रकार के रत्नों ंसे जहटत िोने के कारण सौन्दयज से चमकते िैं।

इस प्रदिे में उगे हुए वृक्ष सभी ऋतुओं ंमें फूलते-फलते रिते िैं और सदेव सघन पत्रावहलयों ंसे आच्छाहदत रिते िैं। ये सदा िी हदव्य सुगन्ध हवकीणज करते िैं। इन वृक्षों ंमें लगे फल अहत-मधुर िोते िैं।

पुण्यिाली जन इस प्रदिे में सुख से हविार करते िैं। ये लोक दुिःख और िोक से मुक्त िोते िैं, उनकी प्रत्येक कामनाएँ विााँ पररपूणज िोती िैं; अतिः वे विााँ सन्तोष से समय व्यतीत करते िैं।

परम सुखदायी सुन्दर हवमानों ंमें बैठ कर ये पुण्यिाली तथा तेजस्वी लोग एक थथान से दूसरे थथान को जाते िैं और खूब आनन्दिीडा करते िैं।

अप्सराओं ंकी मण्डहलयााँ इन पुण्यिाली लोगों ंको सदा अपने नृत्य-गान से प्रमुहदत करती रिती िैं। मनुष्य हनिय िी अपने गोदान के पुण्य के फल-स्वरूप इस प्रदिे में प्रवेि पाता िै।

जो प्रदिे परम िौयजिाली पूषण और मरुत गणों ंके अहधकार में िै, उस प्रदिे को गोदान करने वाला पा लेता िै। समृस्द्धिाहलयों ंमें वरुणदेव सवजश्रेष्ठ माने जाते िैं। गाय का दान करने वाले को वरुणदेव के समान समृस्द्ध प्राप्त िोती िै।

जो पुण्यिाली मानव आदर भाव से गाय की सेवा करते िैं और जो हवनीत भाव से उनका आश्रय ग्रिण करते िैं, गोमाता उन पर प्रसन्न िोती िै और वे उससे अनेक अमूल् वरदान प्राप्त करते िैं।

मनुष्य को हृदय से भी गाय को आघात निीं ंपहुाँचाना चाहिए। उन्ें सदा सुख पहुाँचाना चाहिए। मनुष्य को गाय का आदर-सत्कार करना चाहिए और नतमस्तक िो उनकी पूजा करनी चाहिए।

१५. वैकुण्ठलोक

वैकुण्ठलोक के सभी हनवाहसयों ंका स्वरूप हवष्णु भगवान् की तरि िोता िै। वे सब हनष्काम धमाजचरण िारा हवष्णु भगवान् की उपासना करते िैं।

इस लोक में वेदज्ञेय मिमहिम परमाद्य पुरुष हवराजते िैं। वे रजोगुण में असंसृष्ट अपने िुद्ध सत्वगुण हवग्रि में स्थथत िो िम भक्तों ंको प्रमुहदत करने के हलए अपने िुभिीवाजद की वषाज िम पर करते िैं।

इस लोक में परमानन्द-धाम के नाम से प्रहसद्ध एक उपवन िै जो काम्य फल प्रदान करने वाले वृक्षों ंसे भरा पडा िै। यि मोक्ष-धाम की तरि िोभायमान िै।

इस वैकुण्ठलोक में मुक्त पुरुष अपनी प्रेयसी अप्सराओं ंके साथ हवमान में बैठ कर हविार करते िैं। वे विााँ की सुरहभत वायु से सवजथा उदासीन रिते िैं। जल के मध्य में मधु टपकाते हुए माधुरी लता के कुसुमों ंकी सुगन्ध से चलायमान हचत्त वाले ये मुक्त जन संसार के मल को हवदूररत करने वाली भगवान् िरर की लीलाओं ंका सदा गान करते िैं।

इस वैकुण्ठलोक में भगवान् िरर की लीलाओं ंका गान-सा करता हुआ भ्रमरराज गुंजार करने लगता िै तब कपोत, कोहकला, िौंचं, सारस, कलिंस, चातक, िुक, तीतर तथा मयूर का कलरव एक क्षण के हलए िान्त िो जाता िै।

इस वैकुण्ठलोक के उद्यान में मन्दार, कुन्द, कुरवक, उत्पल, चम्पक, अणज, पुन्नाग, नाग, बकुल, अमुबुज तथा पाररजात वृक्ष िैं। उनके पुष्प सुगन्ध से पूणज िैं। ये पुष्प तुलसी की तपियाज को बहुत िी आदरणीय समझते िैं; क्योंहंक उसकी सुगस्न्ध की प्रिंसा कर तथा मूल्वान् समझ कर श्रीिरर ने तुलसी की माला को आभूषण के रूप में अपने कण्ठ में धारण कर रखा िै।

यि वैकुण्ठलोक वैदूयज, मरकत तथा स्वणज के हवमानों ंसे भरा हुआ िै। हजनके मस्तक भगवान् के चरणों ं में नत रिते िैं, वे िी इन हवमानों ंको देख सकते िैं। थथूल हनतम्ब तथा स्स्मत मुख वाली अप्सराएँ अपने मनोन्मत्तकारी मन्द िास्ों ंतथा अन्य काम-कलाओं ंसे मुक्त पुरुषों ंको मोहित करती िैं; परन्तु हजन्ोंनें अपना हृदय भगवान् श्री कृष्ण को अहपजत कर हदया िै ऐसे मुक्त पुरुषों ंमें काम-भाव जाग्रत निीं ंिोता।

हजनकी कृपा-कोर की ब्रह्माहद सभी प्राणी याचना करते िैं, वे िी हनष्कलंक लक्षणों ंवाली मिालक्ष्मी देवी श्रीिरर के इस धाम में अपने सौम्य रूप में हवराजती िैं। उनके िाथ स्वाभाहवक रूप से लटक रिे िैं। उनके चरण-कमलों ंके नूपुर झंकृत िोते रिते िैं। सोने के चौखट से मस्ण्डत स्फहटक की दीवालों ंपर पडते हुए उनके प्रहतहबम्ब से ऐसा प्रतीत िोता िै मानो वे गृि-पररष्कार के कायों में संलि िैं।

यिााँ पर लक्ष्मी जी का अपना उद्यान िै। उस उद्यान में हविुम की दीवालों ंसे हनहमजत एक वापी िै हजसका जल अमृत के सदृि िै। यिााँ पर तुलसी-पुष्प से भगवान् हवष्णु की पूजा करते समय अपने सुन्दर हचतवन और उन्नत नाहसकायुक्त मुख का प्रहतहबम्ब भगवान् हवष्णु के मुख के प्रहतहबम्ब के साथ इस वापी के जल में पडा देख कर लक्ष्मी जी को ऐसा लगता िै हक भगवान् ने उनके मुख का चुम्बन हकया िै।

मन को हवकृत बनाने वाली कथाओं ंके जो रहसक िैं, वे पापी जन इस हवष्णुलोक में निीं ंजाते िैं; क्योंहंक उन कथाओं ंमें भक्तों ंके पापनािक भगवान् िरर की लीलाओं ंकी चचाज निीं ंिोती िै। इन लौहकक कथाओं ंको सुनने से उन अभा मनुष्यों ंके सभी गुण हवलीन िो जाते िैं और वे ऐसे घोर अन्धकारपूणज नरक में जा पडने िैं जिााँ हकसी प्रकार की सिायता पहुाँचना सम्भव निीं ंिोता।

हजसमें जन्म लेने से श्रेष्ठ धमाजचरण के िारा प्राणी सनातन सत्य का साक्षात्कार कर सकता िै ऐसे देव-याहचत मानवपन को पा कर भी हकतने िी प्राणी ऐसे िैं जो सवजव्यापी माया के भ्रम-जाल में पड कर परम कारुहणक भगवान् हवष्णु का भजन-पूजन निीं ंकरते िैं।

हजनके गुण और आचार सूपृिणीय िैं, जो िम साधारण मानवों ंसे बहुत ऊपर उठ चुके िैं, हजनके पास यमराज भी निीं ंफटकते (अथवा जो यम-हनयमों ंका अहतिमण कर चुके िैं) तथा भगवान् की सुखद महिमा की परस्पर चचाज करते समय हजनके िरीर में रोमांच िो उठता िै, हजनके नेत्रों ंसे अश्रु-जल प्रवाहित िोने लगता िै तथा हजनके हृदय और मन में भगवान् का प्रगाढ़ प्रेम उमड पडता िै, वे िी पुण्यिाली जीव यिााँ पर जाते िैं।

वैकुण्ठलोक सभी लोकों ंमें हविेष प्रिंसनीय िै। देवताओं ंऔर ज्ञानी जनों ंकी परम सुन्दर और अलौहकक अट्टाहलकाओं ंके कारण यि भव्य रूप से जगमगाता रिता िै। संक्षेप में किें तो यि एक हदव्य लोक िै। यिााँ पर हत्रलोकीपहत हवष्णु भगवान् हनवास करते िैं।

वैकुण्ठ में प्रवेि करने के हलए सात प्रवेि-िार िैं। प्रत्येक िार पर एक िी वय और रूप के दो पाषजद खडे रिते िैं। उनके करों ंमें गदा िोती िै। वे बहुमूल् केयूर, कुण्डल और हकरीट से सुिोहभत िोते िैं। वे अपनी चारों ंभुजाओं ंऔर कण्ठ में वनमाला धारण करते िैं। इन वनमालाओं ंपर प्रफुल्ल भ्रमर मााँरिाते रिते िैं। इनके मुख श्याम, भृकुटी कुहटल, नाहसका मोटी और नेत्र अरुण िोते िैं हजससे वे भयंकर प्रतीत िोते िैं।

१६. सप्त-लोक

लोक सात िै: भूलोक, भवलोक, स्वगजलोक, मिलोक, जनलोक, तपलोक और सत्यलोक । में हमट्टी के तेल से जलने, वाली लालटेन, सरसों ंके तेल से जलने वाला दीपक, गैप्स िै जलने वाला पेटरोमेक्स, मोमबत्ती, हबजली आहद हवहभन्न प्रकार के प्रकाि-साधनों ंको एक िी समय में जलायें तो ये हभन्न-हभन्न प्रकाि कमरे में परस्पर अन्तस्थथत िोते िैं। ठीक इसी भााँहत ऊपर के ये सातों ंलोक एक-दूसरे में अन्तव्याजप्त िैं। प्रत्येक लोक के अपने हविेष िव्य (तत्त्) िोते िैं। इन िव्यों ंकी घनता या थथूलता का स्तर उन लोकों ंके उपयुक्त िोता िै। ये िव्य अपने से हनम्नतर लोक के िव्यों ंमें अन्तस्थथत िोते िैं।

भुवलोक भूलोक में अन्तव्याजप्त िै और इससे कुछ दूर आगे तक फैला हुआ िै। इसी भााँहत स्वगजलोक भुवोंकं में अन्तस्थथत िै और अन्तररक्ष में उससे आगे तक फैला हुआ िै। भुवलोक के स्पन्दन भूलोक के स्पन्दन से अहधक वेगवान् तथा चपल िोते िैं। इसी भााँहत सत्यलोक के स्पन्दन स्वगजलोक के स्पन्दन की अपेक्षा अहधक वेगवान् तथा चपल िोते िैं। प्रत्येक लोक में जीवात्मा नवीन तथा उच्चतर चेतना का अहधकाहधक हवकास करता िै।

जब आप एक लोक से दूसरे लोक में जाते िैं, तब आपको आकाि में चलना निीं ंिोता िै। आप केवल अपनी चेतना को पररवहतजत करते िैं। आप केवल अपनी चेतना के लक्ष्य को बदलते िैं। हजस भााँहत हभन्न-हभन्न स्क्ति वाले हभन्न-हभन्न िीिों ंके प्रयोग से अथवा दूरवीक्षण तथा अणुवीक्षण यन्त्र िारा हभन्न-हभन्न प्रकार के दृश्य देख सकते िैं, उसी प्रकार आपके अन्दर इन हभन्न-हभन्न लोकों ंके अनुरूप हभन्न-हभन्न िरीर िैं जो इन लोकों ंमें कायजकर िोते िैं।

जब आप स्वप्नावथथा में िोते िैं, तब आपका सूक्ष्म-िरीर कायज करता िै और जब आप सुषुस्प्त-अवथथा में िोते िैं, तब आपका कारण िरीर काम करता िै; इसी भााँहत भुवलोक में आपका प्राणमय-िरीर काम करता िै, स्वगजलोक में आपका मनोमय-िरीर काम करता िै और ब्रह्मलोक में आपका कारण-िरीर काम करता िै। ये लोक हवहभन्न श्रेणी की घनता वाले पदाथों से बने िैं। स्वगजलोक के तत्त् भुवलोक के तत्त्ों ंकी अपेक्षा अहधक सूक्ष्मतर िैं। ब्रह्मलोक के िव्य स्वगजलोक के िव्यों ंसे अहधक सूक्ष्म िैं। सभी लोक आकाि में एक िी थथान में स्थथत िैं। इस भााँहत स्वगज भी यिीं ंिै और ब्रह्मलोक भी यिीं ंिै। प्रत्येक लोक के हलए हभन्न प्रकार का सूक्ष्मतर िरीर और हभन्न प्रकार के सूक्ष्मतर नेत्र चाहिए। यहद आप इन्ें प्राप्त कर लें, तो आप हकसी भी लोक में रि सकते िैं।

इस भूलोक में मनुष्य नेत्र, कणज, नाहसका, हजह्वा तथा त्वचा आहद ज्ञानेस्ियों ंसे पदाथों ंका ज्ञान प्राप्त करता िै; परन्तु स्वगज में पृथक् पृथक् रिने वाली इन सीहमत ज्ञानेस्ियों ंके माध्यम से वि न देखता िै, न सुनता िै और न अनुभव िी करता िै।

विााँ उसे हदव्य चकुषु प्राप्त िोते िैं हजनमें असाधारण हिया-स्क्ति िोती िै। वि इस नवीन मानहसक हदव्य दृहष्ट के िारा एक िी समय में सभी पदाथों को देख और सुन सकता िै तथा उनके हवषय में कुछ जान भी सकता िै। उसे सभी पदाथों का ठीक तथा पूणज ज्ञान प्राप्त िोता िै। हकसी भी बाह्य रूप से उसे भ्रास्न्त अथवा पथ-हवभ्रम निीं ंिोता। उस व्यस्क्त में हकसी प्रकार की भ्रान्त धारणा निीं ंिोती िै।

अपने मन के अन्दर सभी ज्ञानेस्र्यों ंकी िस्क्त केस्ि ि ै। मन िी सभी ज्ञानेस्र्यों ंका हमश्रण अथवा योग ै। इस भााँहत मन देख सकता ि,ै सुन सकता ि,ै चल सकता ि,ै सूंघ सकता ि ै तथा स्पिाजनुभव कर सकता ि।ै

यिााँ मानव अपने संकल्प अथवा इच्छा मात्र से सब-कुछ पा सकता ि।ै यहद वि हदव्य हवमान का हवचार करता ि,ै तो वि हवमान तुरन्त उसके सामने आ उपस्थथत िोता ि।ै यहद वि हकसी थथान का हवचार करता ि,ै वि तुरन्त उस थथान में जा पहुाँचता ि।ै यहद वि हकसी व्यस्क्त का हवचार करता ि,ै तो वि व्यस्क्त अहवलम्ब िी उसके सामने आ खडा िोता ि।ै उसके हलए कोई दूरी निीं ंि।ै उसे हकसी प्रकार के हवयोग का अनुभव निीं ंिोता। वि दूसरों ंके हवचारों ंको पढ़ लेता ि;ै अतिः स्वगजलोक में प्रश्नोत्तर की आवश्यकता निीं ंरिती ि।ै हवचारों ंका आदान-प्रदान यिााँ बहुत िीघ्र िोता ि।ै

यिााँ के प्राहणयों ंको भूत तथा भहवष्य का भी ज्ञान निीं ंिोता ि।ै उनमें दूर-दृहष्ट और दूर-श्रवण की क्षमता िोती ि।ै वे एक िी समय में अनेक रूप धारण कर सकते िैं।

स्वगज आनन्द-भोग के हलए एक लोक ि।ै भूलोक में हकये पुण्य-कमों के फल भोगने के हलए यि स्वगजलोक एक थथान ि।ै यिााँ कोई नये कमज निीं ंकर सकता ि।ै ग्रिााँ से कोई भी मोक्ष प्राप्त निीं ंकर सकता ि।ै मोक्ष-साधन के हलए प्राणी को विााँ से मत्यजलोक में पुनिः आना पडता ि।ै

इ, वरुण, अहि आहद-देव िैं। इनके अहतररक्त यिााँ पर कुछ कमज-देव भी रिते िैं हजन्िोंने इस भूलोक पर िुभ कमज सम्पादन िारा देवत्व-पद प्राप्त हकया ि।ै देवों ंके तेजस् िरीर िोते िैं। उनके िरीर में अहि-तत्त् की प्रधानता िोती ि।ै देवताओं ंने जो प्रगहत की िोती ि,ै उस प्रगहत की कक्षा के अनुरूप िी उनकी प्रहतभा तथा ज्योहत भी हभन्न-हभन्न कक्षा की िोती ि।ै

देवताओं ंतथा स्वगज के अहधवाहसयों ंके हलए न हदन ि ै और न राहत्र । वे न तो सोते िैं और न जागते िी िैं। जब वे स्वगज में प्रवेि करते िैं, तब वे अहमत सुख अनुभव करते िैं; यिी उनकी जाग्रतावथथा ि।ै जब स्वगज के जीवन की अवहध समाप्त िो जाती ि,ै तब वे अचेत अवथथा को प्राप्त िो जाते िैं।

ब्रह्मलोक ब्रह्म अथवा हिरण्यगभज का लोक ि।ै यि सत्यलोक के नाम से भी प्रहसद्ध ि।ै जो लोग देवयान मागज से प्रयाण करते िैं, वे इस सत्यलोक को प्राप्त िोते िैं। जो हनष्काम भाव से पुण्य-कायज करते िैं, जो िुद्ध सदाचारमय जीवन व्यतीत करते िैं, जो हिरण्यगभज की उपासना करते िैं, वे तथा साक्षात्कार-प्राप्त भक्त जन इस लोक को प्राप्त करते िैं।

वे लोग िम-मुस्क्त को प्राप्त करते िैं। भगवान् के सभी हदव्य ऐश्वयों को ये - लोग भोगते िैं और प्रलय काल आने पर ब्रह्मा के साथ परब्रह्म में हवलीन िो जाते िैं।

जो भगवान् िरर के भक्त िैं, उन्िें ब्रह्मलोक वैकुण्ठलोक-सा प्रतीत िोता ि;ै उसी भााँहत जो भगवान् सदाहिव जी के भक्त िैं, उन्िें यि ब्रह्मलोक कैलास अथवा हिवलोक-सा प्रतीत िोता ि।ै अतिः भाव िी मुख्य ि।ै

१७. अपाहथजव लोकों ंमें हनवास

मृतुयु तथा पुनजान्म के बिी का समय

लोग ठीक-ठीक यि जानना चािते िैं हक िरीर छोडने के अनन्तर दूसरा िरीर धारण करने में हकतना समय लग जाता िै? क्या यि जीवात्मा एक वषज में नया िरीर धारण करता िै? क्या नया िरीर धारण करने में उसे दि वषज लग जाते िैं? इस पृथ्वीलोक में पुनिः आ कर थथूल िरीर धारण से पूवज, ऊपर के सूक्ष्म लोकों ंमें जीवात्मा हकतना समय लगाता िै? ये उनमें से कुछेक प्रश्न िैं। असुतु, इस हवषय में कोई हनहित अवहध निीं ंिै। इस हवषय के हनणजय करने में दो बातें देखनी िोती िै-एक तो िै व्यस्क्त के हकये हुए कमज का स्वरूप और दूसरा िै मरण-काल में उस व्यस्क्त की अस्न्तम भावना। यि अवहध सिस्रों ंवषज तक के दीघज काल से ले कर कुछ मिीनों ंके अल्प काल तक िो सकती िै। जो लोग अपने इिलौहकक कमज के फल ऊपर के सूक्ष्म लोकों ंमें भोगते िैं, वे इस भूलोक पर
जन्म लेने से पूवज सुदीघज काल लगा देते िैं। यि बीच का समय बहुत िी लम्बा िोता िै। इसका कारण यि िै हक इस
इस हवषय में एक गाथा उधृत की जाती िै हक एक बार प्राचीन अविेष के दिजनाथज कुछ हवदेिी पक्की
पधारे उदे जब उस ध्वंसाविेष को देख कर आियज व्यक्त कर रिे थे और उसकी खूब प्रिंसा कर रिे थे, तब पास िी बैठे हुए एक सन्त पुरुष बतलाया हक अभी जो लोग इस अविेष को देख कर आियज प्रकट कर रिे िैं, उनमें से िी कुछ लोगों ंने िताब्दियों ंपूवज इस अविेष-रूप में दृश्यमान् भवनों ंकी रचना की थी और अब वे अपने िी िाथ की कलाओं ंको देख कर आियजचहकत िो रिे िैं।

प्रबल वासना वाले इस्न्द्रय-लोलुप व्यस्क्त तथा अत्यन्त आसस्क्त वाले व्यक्ह कभी-कभी बहुत िीघ्र िी जन्म ले लेते िैं। इनके अहतररक्त हजनका जीवन-सूर अपमृतुयु अथवा हकसी अप्रत्याहसत आकस्स्मक दुघजटना के कारण भंग िो जाता िै, वे जीव भी अपने उस भंग जीवन-सूत्र को पुनिः तत्काल िी पकड लेते िैं। इस प्रकार की घटना अमृतसर की बाहलका िीमा कुमारी के साथ हुई। सन् १९३९ के अकूतूबर माम में मृतुयु िोने के पिात् सात मिीने में िी उस बाहलका ने दूसरा जन्म धारण हकया। मृतुयु के समय उसकी अपने भाई से हमलने की इच्छा बहुत िी प्रबल थी। मृतुयु के अनन्तर िीघ्र िी पुनजजन्म की जब ऐसी घटनाएँ िोती िैं, तब िी जीव को प्रायिः अपने पूवज-जीवन के बहुत से प्रसंगों ंकी सूमृहत बनी रिती िै। वि अपने पूवज-जन्म के सम्बस्न्धयों ंतथा हमत्रों ंको पिचानता िै तथा पुराने घर एवं पररहचत वसुतुओं ंको भी बतलाता िै। इससे कभी-कभी बहुत िी हवहचत्र स्थथहत उत्पन्न िो जाती िै। कुछ उदािरण ऐसे पाये गये िैं जब हक ित्या हकये हुए व्यस्क्त ने पुनिः जन्म लेने पर बतलाया हक भूतकाल में वि हकस प्रकार मारा गया था और साथ िी उसने उस ित्यारे की पिचान भी बतलायी।

उदािरण-स्वरूप हदनांक २३-३-१९३६ के 'धमज राज्य' में इस प्रकार की एक घटना प्रकाहित हुई थी। ग्वाहलयर के एक ग्राम में उस ग्राम के पटवारी (लेखपाल) ने उसी ग्राम के ठाकुर छोटेलाल जी के हित-हवरोधी कुछ हववरण ग्राम के सरकारी कागजों ंमें हलखे । पटवारी के इस व्यविार से ठाकुर बहुत िी िोहधत हुए और उससे इस अन्याय का प्रहतिोध लेने के हलए वे उसकी घात में हछपे रिे। उन्िोंने पटवारी की छाती में गोली मारी और उसके दाहिने िाथ की उँगहलयाँ काट िालीं।ं इस ित्याकाण्ड के कुछ काल पिात् यिाँ से लगभग १४ मील की दूरी पर एक व्यस्क्त के यिाँ एक बालक उत्पन्न हुआ । उस बालक की छाती में बन्दूक की गोली के आघात का हचि था तथा उसके दायें िाथ की अ ँगहलयाँ निीं ंथीं।ं जब वि बालक बोलने लगा, तब उसके हपता ने उससे एक हदन पूछा- "क्या भगवान् उँगहलयाँ बनाना भूल गया था?" बालक ने तुरन्त िी उत्तर हदया- निीं,ं छोटेलाल ठाकुर ने उसकी छाती में गोली मारी थी तथा उसकी उँगहलयाँ काट िाली थीं।ं" उस बालक ने उस घटना का का हववरण बतलाया जो हक जाँच करने पर ठीक हनकला ।

हकतनी िी बार ऐसा पाया गया िै हक पुनजजन्म धारण करने वाले जीव अपने हपले हछपाये हुए धन के पास ठीक-ठीक जा कर उसे हनकाल लाये िैं। परनुतु के अहधकांि जीवात्माओं ंमें यि सूमृहत निीं ंरिती िै। ऐसी सूमृहत का न िोना सवजज्ञ परमात्मा का वरदान िी िै। ऐसी सूमृहत िमारे वतजमान जीवन में बहुत-सी उलझनें ला देंगी। जब तक भूतकाल की सूमृहत आपके हलए भली तथा लाभदायक निीं,ं तभी तक वि आपसे ओझल रिती िै। जब आप

पूणजता प्राप्त कर लेंगे, जब आप जन्म-मरण के चि का अन्त पा लेंगे, तब आप इन सभी जीवनों ंको पुष्पमाला की भााँहत एक िी व्यस्क्तत्व-सूत्र में गुाँथे हुए पायेंगे।

मृत्यु के पित् तुरन्त जन्म लेने की ऐसी घटनाएाँ सामान्य निीं ंिैं। एक मध्यम श्रेणी की जीवात्मा की मृत्यु के पित् उसे पुनिः जन्म लेने में इस मत्यजलोक की काल-गणना के अनुसार साधारणतया बहुत िी अहधक समय लग जाता िै। हजन लोगों ंने प्रचुर मात्रा में पुण्य-कमज हकये िोते िैं; वे इस भूलोक में पुनिः जन्म ग्रिण करने के पूवज सुदीघज काल तक देवलोक में हनवास करते िैं। मिान् आत्माएाँ, आध्यास्त्मक भूहमका में उन्नत जीव पुनजजन्म के पूवज हचरकाल तक प्रतीक्षा करते िैं।

मृत्यु और पुनजजन्म के बीच के समय में जीव-हविेषकर वे जीव जो मानहसक एवं आध्यास्त्मक हवषय में उन्नत िैं- आवश्यकतानुसार समय-समय पर भूलोक में मूतज रूप धारण कर सकते िैं। वे मनुष्य का आकार धारण कर बातचीत करते िैं तथा िरीर के साथ स्पिज करते िैं। इस प्रकार प्रकट हकये हुए उनके उस रूप का फोटो भी हलया जा सकता िै।

सूक्ष्म िरीर से उनका यि मूतज रूप हभन्न प्रकार का िोता िै। सूक्ष्म िरीर सामान्य नेत्रों ंसे दृहष्टगोचर निीं ंिोता िै। यि थथूल िरीर का ठीक प्रहतरूप-उसका एक सूक्ष्म हित्व िै। मृत्यु के अनन्तर जीवात्मा इस आहतवाहिक िरीर में िी प्रयाण करता िै।

असु्तु, इतना तो हनहित िी िै हक यि प्राणमय चेतना आपको जन्म-मरण के की चि से मुक्त कराने का हनहित आश्वासन निीं ंदे सकती िै। तन्त्र-ज्ञान और प्रेतात्म-हवद्या आपको मोक्ष प्रदान निीं ंकर सकते िैं और न जीवन के उस पार का पूणज रिस्योद्घाटन िी कर सकते िैं। आत्म-साक्षात्कार तथा आत्मज्ञान िी जीवन सदा मृत्यु की तथा मृत्यूपरान्त जीवन की गूढ़ पिेली को सुलझा सकते िैं।

सप्तम प्रकरण

प्ेरेतात्म-हवद्याल

प्ेरेतात्म-हवद्या

प्रकृहत में िोने वाली घटनाओं ंमें मृतुयु यद्यहप एक अत्यन्त सामान्य दृश्य िै। तथाहप इसका रिस् अभी तक बहुत ीि कम समझा गया िै। यि दिजनिास्र के अत्यन्त कहठन प्रश्नों ंमें से एक िै; क्योंहंक मृतुयु के समय तथा मृतूयूपरान्त वास्तव में िोता क्या िै? इस हवषय का कोई अनुभूत प्रमाण प्रायिः निीं ंिै।

योगी पुरुष योगाभ्यास िारा प्राप्त अपने हदव्य चकुषु से मृतुयु की घटना को भी भली प्रकार देख सकते िैं। मिहषज वहसष्ठ का यि दृढ़तापूवजक कथन िै हक उन्िोंनें सभी वसुतुओं ंका ज्ञान प्रत्यक्ष रूप से िी प्राप्त हकया था और उन्िोंनें मृतुयु के हवषय में जो-कुछ किा िै, उसे अपनी अपरोक्षानुभूहत के आधार पर िी किा िै।

साम्प्रहतक काल में मृतुयु-सम्बन्धी समस्ाओं ंका अध्ययन करने का प्रयास पिाात्य जगत् में विााँ की 'दी साइहककल ररसचज सोसायटी' नाम की संथथा का रिै िै। यिााँ पर संग्रिीत तथ्यों ंके आधार पर हकतने िी हवचारकों ं को अब यि हवश्वास िै चला िै हक मृतुयु मनुष्य के व्यस्क्तत्व का अन्त निीं ंकरती िै।

सर ओलीवर लॉज ने इस हवषय में बहुत से वैज्ञाहनक प्रयोग हकये। इससे उसे अब यि हनिय िो गया िै हक मृतुयु के अनन्तर भी जीवन बना रिता िै। वे किते िैं।

"मैं अभी जो किने जा रिा हाँ, बहुत सम्भव िै हक उससे यिााँ उपस्थथत श्रोताओं ंकी भावनाओं ंको आघात पहुाँचे और वे मुझसे कुषिु िो उठें। इस आिंका के िोने पर भी मैं अपने साहथयों ंतथा अपने प्रहत न्याय करते हुए अपने इस हवश्वास का हलहपबद्ध प्रमाण छोड जाता हाँ हक हजन चमत्कारी घटनाओं ंको अभी तक िम रिस्मयी समझते रिे िैं, उनकी अब वैज्ञाहनक पद्धहत से सावधानी तथा दृढ़तापूवजक प्रयोग से छानबीन की जा सकती िै तथा उन्िें िमबद्ध भी बनाया जा सकता िै से सावधानी तथा िै। इ िी निीं,ं इससे आगे बढ़ कर बहुत संक्ेषेप में मैं इस हवषय में यि भी किता िै हक हदिा में की गयी अब तक की खोजों ंने मुझे यि हनिय हदला हदया िै हक सूमृहत आ प्ेरेम हजन तत्वों ंके सम्पकज में आने पर िी यिााँ इस समय अपने को अहभव्यक्त कर सकते िैं, वे उन्िीं ंतक सीहमत निीं ंिैं और मेरा हनिय यि भी िै हक िारीररक मृतुयु के पिात भी व्यस्क्त का जीवन बना रिता िै। मेरा मन इस तथ्य को स्वीकार करता रिता िै हक असंग बुस्द्ध हकन्िीं ंहनहित संयोगों ंमें िमारे साथ भौहतक क्ेषेत्र में कायज कर सकती िै और इस भााँहत गौण रूप से यि हवषय हवज्ञान के क्ेषेत्र के अन्तगजत आ जाता िै।"

प्ेरेतात्मा के साथ बातचीत, मेज का झुकना, प्ेरेतों ंका खटखटाना, प्ेरेतात्मा का प्रकाि, प्ेरेतों ंके लेख, स्लेट के लेख, मूतज रूप धारण करने वाला िाथ, ताि का उठाना, हटन का बजाना, प्लानहचट लेख (पहियेदार लकडी का एक छोटा टुकडा िोता िै हजसमें पेस्लि लगी रिती िै और नीचे कागज रखा रिता िै। इस पर िाथ रखने से मन की सोची हुई बात कागज पर हलख जाती िै), ओझा संघ की िस्तकला तथा माध्यम के िारा बातचीत -इन सबका संसार में आहवभाजव िोने के पिात् आधुहनक मनुष्य की प्रवृहत्त मृतूयूपरान्त जीवन के हवषय में अहधकाहधक सोचने लग गयी िै। प्राच्य तथा पिाात्य-दोनों ंिी दिेिों ंमें इस हवषय में बहुत से लेख स्वतन्त्र रूप से प्रकाहित िो रिे िैं। पहिमी दिेिों ंमें मन और आत्मा के हवषय पर िोध करने के हलए बहुत-सी संथथाएाँ थथाहपत िैं। इन सब िोधों ंका

ुभि पररणाम यि हुआ हक पहिम के लोगों ंको अब यि दृढ़ हवश्वास िो चुका िै हक मृतुयु के उपरान्त भी आत्मा सजीव बनी रिती िै।

पिाात्य वैज्ञाहनक आज आध्यास्त्मक प्रगहत में जिाँ तक पहुाँच चुके िैं तथा प्रते्येक दृश्य पदाथज को वैज्ञाहनक ढंग से प्रयोग कर खोज हनकालने की उनकी जो हजज्ञासा िै, उसको देखते हुए यि किा जा सकता िै हक वे प्रमाण और प्रयोग की जो रीहत प्रसुतुत करते िैं, उनसे वे आत्मा के अस्स्तत्व का ज्ञान तथा उसकी खोज पा लेंगे। पहवत्र भारतीय ििाों ंके वातावरण में उत्पन्न तथा पले हुए प्राच्य दिजन के एक हजज्ञासु के हलए तो जीवात्मा का अस्स्तत्व तथा उसका आवागमन उसके दिजन के अभ्यास का प्रथम पाठ िै; परनुतु पिाात्य हवचारकों ंके हलए तो यि हसद्धान्त उनकी आज तक की सभी गवेषणाओं ंके प्रायिः अस्न्तम पररणाम-स्वरूप प्राप्त हुआ िै।

अध्यात्मवाद की हवचारधारा के अनुसार मृतुयु के अनन्तर िमें जिाँ जाना िै, उस परलोक में बहुत से प्रदेि िैं। िमारी हवहभन्न आध्यास्त्मक भूहमका के अनुरूप इन प्रदेिों ंके प्रकाि तथा सुख में सूक्ष्म भेद िोता िै। परलोक के उन प्रदेिों ंमें हविेष रूप से इस लोक के िी दृश्यों ंतथा सुख-सुहवधाओं ंका नव-हनमाजण हकया गया िै। विाँ के समाज की रचना भी सामान्यतिः यिाँ की िी तरि िै। देवदूतों ंकी उपस्स्थहत से मृतुयु सरल िो जाती िै। ये देवदूत परलोक के नवागनुतुकों ंको उनके धाम तक पहुाँचाते िैं।

जो जीवनुमुक्त तथा मिान् ऋहष परब्रह्म में हवलीन िो गये िैं, उनकी आत्माएं प्राथजना, पे्रेताविान अथवा माध्यम आहद की हकसी भी हिया िारा पुनिः बुलायी निीं ंजा सकती िैं।

मृत व्यस्क्त की जीवात्मा अपने पिले के सगे-सम्बस्न्धयों ंतथा हमत्रों ंके प्रहत अत्यन्त प्रगाढ़ पे्रेम रख सकती िै। यि इस लोक में पीछे छूटे हुए अपने कुटुम्बी से से बातचीत कर सकती िै।

हकतने िी मरणासन्न व्यस्क्तयों ंकी अपने बालकों ंके हलए अत्यन्त प्रगाढ़ आसस्क्त िोती िै। यहद घर में उनके बालकों ंकी साँभाल करने वाला व्यस्क्त न िो तो मृतुयु के पिात् वे प्राणमयि–रीर धारण कर अपने सम्बस्न्धयों ंके समुमुख प्रकट िोते िैं और उन्ें सने्देि देते िैं। इस प्रकार के बहुत से लेख पाये जाते िैं।

हजनकी आसस्क्त अपने कुटुम्बी जनों ंमें रि जाती िै, ऐसी हकतनी िी पे्रेतात्माएं इस लोक की वासना से बंध जाती िैं। वे आत्माएँ उन कुटुम्बी जनों ंके आस-पास माँडराया करती िैं। वे उनके हनकट सम्पकज में रि कर उनकी सिायता करने का प्रयत्न करती रिती िैं। वे अपने कुटुम्बी जन की पे्रेम-पात्र बने रिने के हलए भी प्रयत्निील रिती िैं। उन्ें अपने व्यस्क्तत्व की चेतना रिती िै। उन लोगों ंको यि पता निीं ंिोता हक वे मर चुके िैं।

एक मनुष्य अपने कमरे में बैठा हुआ हकसी गूढ़ प्रश्न के हवषय में सोच रिा था। वि कमरे में अकेला था और कमरा बन्द था। उसने अपने छाया रूप 'डबल' को देखा। यि उसके िी रूप और आकार के समान था। यि छाया रूप उसके िरीर में बािर हनकल कर मेज के पास गया, िाथ में कागज-पेस्न्सल ली और उस प्रश्न को िल करके उसका उत्तर कागज पर हलख हदया। यि छाया रूप उस व्यस्क्त का प्राण रूप था। यि स्थूल पाहथजव िरीर से स्वतन्त्र रि सकता िै। यूरोप और अमेररका को साइहककल ररसचज सोसायटी में इस हवषय के अनेक लेख िैं। इससे यि स्पष्ट िै हक आत्मा िै और उसका अस्स्तत्व स्थूल िरीर से सवजथा पृथक् िै।

मरणोपरान्त जीव अपनी सभी कामनाओं ंको अपने साथ िी ले जाता िै वि केवल संकल्प मात्र से अपने भोग-पदाथों को रचता िै। यहद वि नारंगी का हवचार करता िै, तो नारंगी विाँ आ उपस्स्थत िोती िै और वि उसे खाता िै। यहद वि चाय का हवचार मन में लाता िै, तो चाय आ पहुाँचती िै और वि उसे पीता िै।

जो व्यस्क्त स्वगज में सुरापान करना, स्वाहदष्ट फल खाना, हदव्यांगनाओं ंके साथ हविार करना तथा हवमान में हवचरण करना चािता िै, वि एक ऐसे चेतना-जगत् में प्रवेि करता िै जिााँ वि अपने इन हवचारों ंकी कल्पना करेगा और इस भााँहत अपना स्वगज बनायेगा।

प्ेरेतात्म-हवद्या के आधुहनक जानकारों ंने उन देि-हवयुक्त प्ेरेतात्माओं ंके अस्स्तत्व के हवषय में बहुत िी अद्भुत प्रयोग प्रदहिजत हकये िैं जो हक अपने थथूल िरीर के नष्ट िो जाने पर जीहवत रिती िैं। इसने पहिम के कोरे भौहतकवाहदयों ंतथा नास्स्तकों ंकी आाँखें खोल दी िैं।

हकतनी िी भली प्ेरेतात्माओं ंको भहवष्यवाणी, दूर-दिजन तथा दूर-श्रवण की हसस्द्धयााँ िोती िैं। उन्ें अपने सम्बस्न्धयों ंतथा हमत्रों ंसे प्ेरेम तथा मोि िोता िै और वे उनकी सिायता करने का प्रयत्न करती िैं। वे उन्ें आसन्न संकट से बचाने के हलए चेतावनी भी देती िैं।

मृत्यु के पिात् देि-हवयुक्त जीवात्मा कुछ काल तक इस भूलोक की वासनाओं ंसे बंधा रिता िै। वि इसके हलए अपने सगे-सम्बस्न्धयों ंतथा हमत्रों ंसे सिायता की आिा करता िै। प्ेरेतात्माओं ंको भूलोक के बन्धन से मुक्त िोने तथा प्रगहत कर अपने िुभ कमों के फल भोगने के हलए हपतृलोक में प्रवेि पाने में उनके कुटुस्म्बयों ंतथा हमत्रों ंिारा उनके हनहमत्त की हुई प्राथजना, कीतजन, श्राद्ध, दान तथा सहिचार हविेष सिायक िोते िैं।

इन प्ेरेतात्माओं ंको पारमाहथजक सत्य का ज्ञान निीं ंिोता िै। वे आत्म- साक्षात्कार के हवषय में दूसरे लोगों ं की कोई सिायता निीं ंकर सकती िैं। इनमें से हकतनी िी प्ेरेतात्माएाँ तो मूखज, ठग तथा अज्ञानी िोती िैं। ये भूलोक से बाँधी हुई आत्माएाँ माध्यम को अपने अहधकार में रखती िैं तथा परलोक के हवषय में पूवज ज्ञान रखने का दम्भ करती िैं। वे असत्य भाषण करती िैं। वे दूसरी प्ेरेतात्माओं ंका रूप धारण कर जनता को ठगती िैं। वे बेचारे भोले माध्यम अपनी धूतज प्ेरेतात्माओं ंके छल को निीं ंजानते िैं। प्ेरेतात्म-हवद्या के जानकार इन प्ेरेतात्माओं ंकी कृपा प्राप्त करने तथा उनके िारा पारलौहकक ज्ञान प्राप्त करने की आिा में अपने समय, िस्क्त और धन को व्यथज िी नष्ट करते िैं।

प्ेरेतात्म-हवद्या के इन जानकारों ंको मरण के समय प्ेरेतात्मा का िी हवचार आता िै। उन्ें ईश्वर-सम्बन्धी श्ेरेष्ठ हवचार निीं ंआते िैं। अतिः मरणोपरान्त प्ेरेतात्म-हवद्या के जानकार प्ेरेतलोक में िी प्रवेि करेंगे। इन प्ेरेतात्माओं ंके साथ बातचीत आहद का व्यविार रखने से ऊपर के आनन्दमय प्रदेिों ंकी ओर उनकी प्रगहत में अवरोध आ जाता िै और वे पृथ्वीलोक की वासना में बंध जाती िैं। अतिः प्ेरेतात्माओं ंके साथ प्ेरेतलोक के हवषय में बातचीत करने के अपने व्यथज के कौतूिल को त्याग दीहजए। इससे आपको कोई थथायी तथा ठोस लाभ निीं ंिोगा। आप उनकी िास्न्त को भंग करेंगे।

हकसी भी व्यस्क्त को अपने को माध्यम निीं ंबनने देना चाहिए। माध्यम बनने वाले व्यस्क्त अपनी आत्म-संयम–िस्क्त खो बैठते िैं। इन माध्यमों ंकी प्राण–िस्क्त, जीवन–िस्क्त तथा बौस्द्धक िस्क्त का उपयोग वे प्ेरेतात्माएाँ करती िैं हजनके वि में वे माध्यम िोते िैं। इन माध्यम-व्यस्क्तयों ंको कुछ भी उच्चतर ज्ञान निीं ंप्राप्त िोता िै। प्ेरेतात्म-हवद्या के जानकारों ंका यि कथन िै हक 'ये प्ेरेतात्माएाँ देवदूत िैं।' ये तो पृथ्वीलोक से बाँधी हुई आत्माएाँ िैं।

ये प्ेरेतात्माएाँ हचत्रकला तथा टाइप का काम करती िैं। प्ेरेतात्माएाँ आध्यास्त्मक मण्डहलयों ंमें मूतज रूप धारण करती िैं। वे श्ेवेत कुिासे जैसे पदाथज में रूपान्तररत िो अदृश्य िो जाती िैं। स्ेलेट पर स्वयं-लेखन की हिया के समय आप पेस्सल की आवाज सुन सकते िैं। जब प्ेरेतात्मा स्ेलेट पर हलखती रिती िै, उस समय आप कोमल आघात का अनुभव करेंगे। प्ेरेतात्माएाँ अपना िाथ आपके िरीर के ऊपर रख सकती िैं तथा आपकी कमीज, टाई इत्याहद को पकड सकती िैं।

आप अपने हवचारों ंएवं कायों के िारा अपने प्रारि, चररत्र तथा भहवष्य का हनमाजण करते िैं। यिाँ और इसके पिात् भी आपके अनुभवों ंका अन्त निीं ंिोगा। आपका जीवन चालू रिेगा। आपको इस जगत् में पुनिः आना और जन्म लेना पडेगा। पूणजता की प्रास्प्त का प्रयत्न कीहजए, और उस उत्तम पद को प्राप्त कीहजए जिाँ पर न जन्म ै और न मृतुयु, और न िी विाँ िोक, सन्ताप तथा दुिःख िैं। अपने हृदय-गुिा-वासी िाश्वत आत्मा का ध्यान कीहजए। अपने को यि पंचभौहतक हवनश्वर िरीर न समहझए । आत्म-साक्षात्कार कीहजए और मुक्त बहनए । अहवनिी आतमचा का ज्ञान प्रापतच कर पूणज िास्न्त, िाश्वत सुख, अनन्त आनन्द तथा अमरत्व को प्राप्त कीहजए ।

अष्टम प्रकरण

मृतकों ंके हलए श्राद्ध तथा प्राथजना

१. श्राद्ध-हिया का मित्त्

हिन्दुओं ंके पहवत्र ग्रि वेद के कमजकाण्ड में मनुष्य के हलए उसके वणज और आश्रम के अनुसार हवहवध प्रकार के कतजव्य हनधाजररत हकये गये िैं। मनुसूमृहत नामक ग्रि में इन सभी हवधानों ंका समाविे िै। यि मनुसूमृहत हिन्दुओं ंके िासन और आचार का ग्रि िै। अपने राज्य में िास्न्त और व्यवथथा बनाये रखने के हलए प्राचीन काल

के राजा-मिाराजा तथा िासक वगज इस ग्रि में हनदेहित हनयमों ंका अनुसरण करते थे। मनुसूमृहत में मानव-समाज को चार भागों ंमें हवभाहजत हकया गया ि-ै ब्राह्मण, क्षहत्रय, वैश्य और िि्ू। इसके अहतररक्त उसने वैयस्क्तक जीवन की हवहभन्न अवथथाओं ंके अनुसार भी चार हवभाग हकये िैं-ब्रह्मचयज, गृिथथ, वानप्रथथ और संन्यास। ब्रह्मचयज हवद्याथी-जीवन िै, गृिथथ हववाि कर सन्तहत-प्रजनन तथा पररवार-पालन का जीवन िै, वानप्रथथ वन में रि कर धाहमजक हनयमों ंके पालन का समय िै और सबसे अन्त का संन्यास-जीवन सभी सांसाररक प्रवृहत्तयों ंको त्याग कर तपस्वी का जीवन व्यतीत करना िै। ये िी जीवन के चार आश्रम िैं।

आधुहनक सभ्यता तथा मानव जीवन में अध्यात्म-भावना की अवनहत िोने के कारण समाज की उपयुजक्त वणाजश्रम-व्यवथथा का धीरे-धीरे ह्रास िो चला। रजोगुण और तमोगुण से उत्पन्न भौहतकता की आसुरी िस्क्तयों ंने सत्त्गुण की िस्क्तयों ंको अहभभूत कर हलया िै और इससे अब जीवन में धमज को गौण थथान हदया जाने लगा िै। इतना िी निीं,ं धाहमजक वृहत्त वाले व्यस्क्तयों ंको आजकल हतरस्कार की दृहष्ट से भी देखा जाता िै। आज के हवश्वहवद्यालयों ंमें हिक्षा प्राप्त करने वाले आधुहनक नवयुवकों ंको हिखाधारी साधक अथवा भक्त जन भले निीं ं लगते िैं।

धमजग्रिों ंका पाठ, धाहमजक व्रतों ंका पालन, मध्यम स्तर का आध्यास्त्मक जीवन तथा सदाचारमय सच्ची संसूकृहत को अनावश्यक तथा पुरातन बतला कर इनका प्रहतवाद हकया जाता िै हजसके पररणाम स्वरूप ये आज अपना मित्त् खो बैठे िैं। आज जीवन की समस्ा बहुत िी गम्भीर िो चली िै। वतजमान युग में जीवन को बनाये रखने के हलए घोर संग्राम करना पडता िै। भोजन तथा भोग-हवलास के साधनों ंके प्रश्न ने आज धमज का थथान ले हलया िै।

िििि ने गृिथथ के हलए पााँच मियज्ञ अहनवायज बतलाये िैं। इन यज्ञों ंके न करने से गृिथथ को प्रायहित्त करना पडता िै। वे पााँच मियज्ञ ये िैं—१. देव-यज्ञ, २. ऋहष-यज्ञ, ३. हपतृ-यज्ञ, ४. भूत-यज्ञ, तथा ५. अहतहथ-यज्ञ।

इनमें श्राद्ध-हिया हपतृ-यज्ञ के अन्तगजत आती िै। यि प्रत्ेयेक गृिथथ का एक पहवत्र धमज िै। प्रत्ेयेक गृिथथ को अपने हपतरों ंकी श्राद्ध-हिया करनी चाहिए। हपतृ गण िमारे पूवज िैं जो हपतृलोक में हनवास करते िैं। उन हपतृ गणों ंके पास दूर-श्रवण तथा दूर-दिजन की अलौहकक िस्क्तयााँ िोती िैं। जब श्राद्ध के मन्त्र पढ़े जाते िैं, तब वे मन्त्र अपने स्पन्दनों ंिारा हपतरों ंपर बहुत िी गम्भीर प्रभाव िालते िैं। दूर-श्रवण की िस्क्त िारा ये हपतर गण मन्त्र-ध्वहन को सुनते िैं और प्रसन्न िोते िैं। जो उन्ें श्राद्ध-तपजण देता िै, उसे वे आिीवाजद देते िैं। श्राद्ध में जो हपण्ड दान हदया जाता िै, उसका सार भाग सूयज की हकरणों ंसे ऊपर सूयजलोक में पहुाँचता िै और हपतर गण इससे प्रसन्न िोते िैं। जमजनी तथा दूसरे पिात्य देिों ंमें भी श्राद्ध और तपजण की हियाएाँ विााँ के बहुत से व्यस्क्त करते िैं। उन्ोंनें इस प्रकार के दान के लाभप्रद प्रभाव का वैज्ञाहनक ढंग से अनुसन्धान हकया िै। ऋहषयों ंऔर हपतरों ंको प्रसन्न करने के हलए श्राद्ध और तपजण की इन हियाओं ंको करना प्रत्ेयेक गृिथथ के हलए अहनवायज कतजव्य िै। गीता और उपहनषद् इस बात को स्पष्ट रूप से पुष्ट करते िैं हक श्राद्ध-हिया परम आवश्यक िै। उलटी बुस्द्ध वाले भ्रान्त जीव िी इसका गलत अथज लगाते िैं तथा धाहमजक कृत्यों ंके करने में टाल-मटोल करते िैं और उसके पररणाम-स्वरूप दुिःख भोगते िैं। झूठे वाद-हववाद तथा तकज के आधार पर वे पथ-भ्रष्ट िो चले िैं। आसुरी िस्क्तयााँ बडी सुगमता से उन पर अपना प्रभाव िाल लेती िैं। इस प्रकार के काम करने का मूल कारण उनका अज्ञान िी िै।

यि श्राद्ध-हिया वषज में एक बार की जाती िै। कारण यि िै हक मानव- काल-गणना का एक वषज हपतरों ं के एक हदन के बराबर िोता िै। प्रहत वषज एक बार श्राद्ध-हिया करने का यिी कारण िै हक यहद िम प्रहत वषज एक बार श्राद्ध-हिया करें, तो वि हपतरों ंके हलए दैहनक हिया के समान िोगी। इस भााँहत उन हपतरों ंकी काल- गणना के अनुसार उनकी सन्तानें बहुत थोडे िी हदन इस संसार में जीहवत रिती िैं, क्योंहक मनुष्य की अहधक-से-अहधक आयु सौ वषज की िोती िै और ये सौ वषज हपतरों ंके हलए तो केवल सौ हदन िी िैं।

हकतने िी व्यस्क्त इस प्रकार की िंका करते िैं हक 'जब जीव पररवतजन पाता िै और इस थथूल दिे का पररत्याग कर दूसरा जन्म लेता िै, तब क्या िमें उसके हलए आहद-तपजण करना आवश्यक िै? क्योंहक वि जीव स्वगज में तो रिता निीं ंिै, तो हफर यि श्राद्ध-दान हकसको प्राप्त िोगा ?' गीता के नवें अध्याय में भगवान् श्री कृष्ण ने इस बात को स्पष्ट रीहत से बतलाया िै हक 'स्वगज की प्रास्प्त के हलए जो पुण्यिाली लोग यज्ञ-याग आहद हिया करते िैं, वे अपने पुण्य भोगने वाले लोकों ंको प्राप्त िोते िैं। वे उस हविाल स्वगजलोक को भोग कर पुण्य क्षीण िोने पर मत्यजलोक में प्रवेि करते िैं। इस भााँहत वेदत्रय हवहित कमज के अनुष्ठान में तत्पर कामना-परायण लोग आवागमन को प्राप्त िोते िैं' (गीता : ९-२१) ।

मृतुयु के पिात् स्वगज की प्रास्प्त िोती िै तथा पुण्य-कमज के क्षीण िोने पर मत्यजलोक में पुनिः जन्म लेना िोता िै-इस बात को गीता की यि वाणी हसद्ध करती िै। श्राद्ध की हिया करने से स्वगज के भोगों ंमें तथा आत्मा की िास्न्त में वृस्द्ध िोती िै। स्वगजलोक के अहतररक्त अन्य लोकों ंमें जीव को अपने कमाजनुसार जो कष्ट भोगने पडते िैं, वे उनके पुत्रों ंिारा श्राद्ध-कमज करने से कम िो जाते िैं। इस भााँहत श्राद्ध की हिया दोनों ंिी रूपों ंमें बहुत िि

सियक िोती िै। हपतर गण हपतृलोक अथवा चिलोक में दीघज काल तक हनवास करते िैं।
पुनजजन्म के हसद्धान्त के अनुसार यहद यि भी मान हलया जाये हक जीवात्मा को मृतुयु के अनन्तर तुरन्त िी दूसरा जन्म लेना पडता िै, तो भी श्राद्ध-हिया उसके नवीन जन्म में सुख की वृस्द्ध करती िै। अतिः अपने हपतरों ंके हलए श्राद्ध-हिया करना प्रते्येक गृिथथ का अहत-आवश्यक कतजव्य िै। आपको आजीवन परम श्रद्धापूवजक श्राद्ध-हिया करनी चाहिए। श्रद्धा िी धमज का मुख्य आधार िै। प्राचीन काल में तो श्राद्ध की हिया करनी चाहिए अथवा निीं'ं, यि प्रश्न िी निीं ंउठता था। उस समय मनुष्यों ंमें पूरी-पूरी श्रद्धा थी तथा वे ििोों ंका सम्मान करते थे। आज के हदन जब हक श्रद्धा िून्य-सी िो चली िै तथा जब हक श्राद्ध न करने वालों ंकी संख्या बढ़ती जा रिी िै, तब दूसरे लोगों ंकी भी श्रद्धा चलायमान िो जाती िै और वे ऐसी िंका करने लगते िैं हक श्राद्ध-हिया करना आवश्यक िै अथवा निीं ंतथा यि हक श्राद्ध-हिया से क्या कोई िुभ फल िोगा? ििोों ंमें िमारी श्रद्धा के अभाव के कारण िी िम अपनी वतजमान िोचनीय अवथथा तक पहुाँच गए िैं। "श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्"- श्रद्धावान् को ज्ञान प्राप्त िोता िै और उससे अमरता और िास्न्त प्राप्त िोती िै। यि गीता की घोषणा िै।

कुछ लोग तकज करते िैं और किते िैं हक यहद हकसी व्यस्क्त ने गया तथा अन्य प्रहसद्ध तीथों में जा कर अपने हपतरों ंके हलए एक बार श्राद्ध-हिया कर दी िो, तो हफर उसे प्रहत वषज श्राद्ध की हिया करने की आवश्यकता निीं ंरि जाती िै। यि कोई सामान्य हनयम निीं ंिै और न यि सब पर लागू िी िोता िै। यि हकन्िीं ंहविेष अपवाद-स्वरूप अवथथाओं ंमें िी लागू िोता िै। यहद मनुष्य इस अपवाद का आश्रय ले और गया में एक बार हपण्डदान आहद करके श्राद्ध-हिया करना बन्द कर दें तो यि केवल उसका अज्ञान िी िै। ये लोग श्राद्ध-हिया को केवल भार-रूप मानते िैं और उससे बचना चािते िैं। उन्िोंनें अपने कतजव्य का समुहचत पररपालन निीं ंहकया।

िििीय ग्रिों ंने मानव-जाहत के ऊपर जो हभन्न-हभन्न धाहमजक हियाएाँ थोपी िैं, वे अज्ञानी जनों ंको िुद्ध करने के हलए िी िैं। कमज-फल का लक्ष्य अन्तिःकरण को िुद्ध बनाना िै। श्राद्ध-हिया भी ििा के हवधानानुसार एक अहनवायज कतजव्य िै और अन्तिःकरण को पहवत्र बनाती िै। इसके अहतररक्त हपतर गण भी प्रसन्न िोते िैं और उनकी िुभकामनाएाँ तथा उनके आिीवाजद िमारी भौहतक तथा आध्यास्त्मक उन्नहत में सियक िोते िैं।

जो मनुष्य पुत्र के हबना मरते िैं, उन्िें परलोक में दुिःख भोगना पडता िै; परन्तु यि बात हनत्य ब्रह्मचारी और आध्यास्त्मक साधकों ंपर लागू निीं ंिोती जो हक सभी स्वाथजमयी कामनाओं ंऔर लौहकक प्रवृहत्तयों ंको त्याग कर अध्यात्म-पथ का अनुगमन करते िैं। यिी कारण िै हक लोग मरने से पूवज दत्तक पुत्र लेते िैं हजससे हक वि उनके मरण के अनन्तर उनकी हवहधवत् श्राद्ध-हिया करता रिे। गीता भी इस मत का पोषण करती िै : "**पतस्मन्त**

डपतरो िह्येषां लुप्तडपण्डोदकडक्रयाः "उनके हपतर हपण्डदान तथा तपजण का लोप िो जाने से अधोगहत को प्राप्त तिि िैं।

परन्तु यहद एक मनुष्य धाहमजक मनोवृहत्त वाला िै और उसमें हववेक तथा वैराग्य िै, यहद उसकी वेदों ंतथा ाखिों ंमें श्रद्धा िै, यहद वि अपने जीवन के अस्न्तम समय तक धाहमजक जीवन व्यतीत करता रिा िै तथा यहद वि अपने जीवन के अस्न्तम हदनों ंको जप, ध्यान, स्वाध्याय आहद में हबताता रिा िै, तो यहद उसके पुत्र न िो तो भी उस व्यस्क्त का पतन निीं ंिोता। वि अवश्य िी पूणज िास्न्त का उपभोग करेगा। उसे अज्ञान के प्रगाढ़ अन्धकार का अनुभव निीं ंकरना पडेगा। संसार के हनम्न आकषजणों ंसे वि मुक्त रिेगा। ईश्वर उसकी प्रगहत की साँभाल रखता िै। उसमें आत्म-समपजण की भावना िोती िै, अतिः उसके पतन का भय निीं ंरिता िै। उसे मानहसक िुद्धता प्राप्त हुई रिती िै। सभी धाहमजक हियाओं ंका उदे्देश्य हचत्त-िुस्द्ध िी िै। इस हचत की िुस्द्ध को मनुष्य अपने हपछले संस्कारों ं तथा पूवज-जन्म के धमजपरायण जीवन के प्रताप से प्राप्त करता िै।

भारत में हकसी-हकसी जाहत के लोग श्राद्ध-हिया के पीछे केवल हदखावे के हलए हवपुल धनराहि अन्धाधुन्ध व्यय करते िैं। यि अपव्यय िै। हवलाहसता के हलए धन नष्ट निीं ंकरना चाहिए। यि सोचना भूल िै हक अहधक धन व्यय करने से हपतरों ंको अहधक िास्न्त प्राप्त िोगी। हपतरों ंकी िास्न्त में धन कोई मित्त् निीं ंरखता ै। हजस भाव से श्राद्ध हकया जाता िै, उसकी गम्भीरता िी इस हवषय में मूल्वान् िै।

श्राद्ध के ऐसे अवसरों ंपर हनधजन तथा योग्य व्यस्क्तयों ंको भली प्रकार भोजन कराना चाहिए तथा उनके जीवन की आवश्यकताओं ंकी भी पूहतज करनी चाहिए। ऐसे हदनों ंमें िीिों ंका पाठ कराना चाहिए। श्राद्ध-हिया करने वाले व्यस्क्त को स्वयं भी जप, ध्यान, मौन इत्याहद आध्यास्त्मक हनयमों ंका पालन करना चाहिए। उसे उस समय ब्रह्मचयज का पूणज रीहत से पालन करना चाहिए। उसे प्रमाद में अपना समय नष्ट निीं ंकरना चाहिए। सारा हदन उसे भगवान् के भजन-कीतजन में लगाना चाहिए। समयोपयुक्त वैहदक सूक्तों ंका पाठ कराना चाहिए। उपहनषद् में दी हुई नहचकेता की कथा सुननी चाहिए। इस प्रकार से श्राद्ध करने वाले यजमान को अमरता प्राप्त िोती िै।

वैहदक धमज का पुनरुत्थान कीहजए। सन्मागज का अनुसरण कीहजए। श्राद्ध- हियाओं ंको कीहजए। धमज-मागज के प्रहत अपने प्रमाद और उदासीनता को दूर िटाइए। उहठए; जाहगए! सत्य के मूल को पकहडए। अपने वणाजश्रम-धमज में हटके रहिए। अपने कतजव्य के पालन से बढ़ कर कोई यज्ञ निीं।ं गीता का हनत्य पाठ कीहजए। संसार में रहिए; परन्तु उसमें हनमि मत बहनए। गीता के उपदेिों ंको आत्मसात् कीहजए। अपने जीवन में तथा प्रभु-साक्षात्कार में भी सफलता प्राप्त करने का यि एक सवाजहधक हनहित मागज िै।

आप अनन्त आत्मा के आनन्द का अनुभव करें! अपने स्वधमज के हनयहमत आचरण, िरर-नाम के कीतजन, दीन-दुिःस्खयों ंकी सेवा, सन्मागज के अनुसरण, वेदों ंके हनत्य स्वाध्याय तथा आत्मा पर ध्यान के िारा आप ब्रह्म के अजर-अमर पद को प्राप्त करें। आपको अपने कायों में भगवान् का मागज-दिजन प्राप्त िोता रिे!

२. हदवंगत आत्मा के हलए प्राथजना और कीतजन

प्राथजना और सद्-कामना तथा कीतजन इत्याहद हदवंगत आत्मा की सिायता करते िैं। संसार के प्राय: सभी धमों में मृत व्यस्क्त के हलए प्राथजनाएँ मित्त्पूणज मानी गयी िैं। कैथोहलक हगरजाघरों ंमें मृत व्यस्क्त के हलए प्राथजना की जाती िै।

प्राथजना आकािवाणी के हसद्धान्त की भााँहत कायज करती िै और वि सिावनाओं ंकी लिररयों ंको उसी भााँहत प्रसाररत करती िै जैसे हक आकािवाणी िब्द की लिररयों ंको प्रसाररत करती िै।

भजन अथवा कीतजन एक प्रबल िस्क्त िै जो मृत व्यस्क्त की आत्मा को स्वगज के मागज में आगे बढ़ने में तथा स्वगज तक जाने के बीच के मागज में सियता देती िै।

मृतुयु िोने के पिात् तुरन्त िी मृत व्यस्क्त की जीवात्मा मूच्छाजवथथा में िोती िै। उसे यि पता निीं ंिोता हक वि अपने पूवज के थथूल भौहतक िरीर से हवयुक्त िो गयी िै। उसके हमत्र और सम्बन्धी उसके हलए जो प्राथजना, कीतजन और सिावना करते िैं, उनसे उस हदवंगत आत्मा को बहुत िी आश्वासन प्राप्त िोता िै। वे सब एक िस्क्तिाली स्पन्दन का हनमाजण करते िैं और उससे वे जीव को उसकी मूच्छाजवथथा से जगाते िैं और उसे पुनिः सचेत करते िैं। अब उस मृत व्यस्क्त की जीवात्मा को यि अनुभव िोने लगता िै हक वि अब वास्तव में अपने थथूल भौहतक िरीर में निीं ंिै।

तत्पिात् जीवात्मा मत्यजलोक की सीमा को-एक पतली नदी को पार करने के हलए प्रयत्निील िोता िै। इस नदी को हिन्दू लोग वैतरणी, पारसी हचन्वत सेतु तथा मुसलमान सीरात किते िैं।

मरने वालों ंके हलए उनके सम्बन्धी जन जब रोते-पीटते तथा असह्य खेद प्रकट करते िैं, इससे उन हदवंगत आत्माओं ंको बहुत िी दुिःख पहुाँचता िै और उन्ें ऊपर के लोकों ंसे नीचे खीचं लाता िै। यि उसकी स्वगज-यात्रा में रोडे अटकाता िै। इससे उन्ें बहुत बडा आघात पहुाँचता िै। जब वे िास्न्त में हनमि िो रिे िोते िैं और जब वे स्वगज की अलौहकक जाग्रहत के हलए तैयारी कर रिे िोते िैं, ऐसे समय में उनके पे्रमी और सम्बन्धी जन रोने-हबलखने से उनके इिलौहकक जीवन की सूमृहत सजीव बनाते िैं। सगे-सम्बस्न्धयों ंके हवचार उन जीवात्माओं ंके मन में सिधमी स्पन्दन उत्पन्न करके उनमें असह्य कष्ट और बेचैनी उत्पन्न करते िैं।

अतिः हदवंगत आत्मा की िास्न्त के हलए उसके सगे-सम्बन्धी तथा पे्रमी जनों ंको प्राथजना तथा कीतजन करने चाहिए। इस भााँहत िी वे हदवंगत आत्मा को सच्ची सियता तथा सान्त्वना दे सकते िैं। यहद दि-बारि व्यस्क्त एकत्र िी कर प्राथजना और कीतजन करें, तो हनिय िी अहधक िस्क्तिाली तथा प्रभावकर िोगा। सामूहिक भजन-कीतजन का अद्भुत प्रभाव पडता िै।

३. मरणासन्न व्यस्क्त के पास िोों ंका पाठ क्यों ंहकया जाता िै?

मनुष्य हकसी हनहित उद्देश्य को ले कर इस संसार में जन्म धारण करता िै। इस्यि-सुख भोगने के हलए िी उसने इस संसार में जन्म निीं ंहलया िै। मानव-जीवन का ध्येय आत्म-साक्षात्कार अथवा भगवद्-दिजन िै। िमारे जीवन की हवहवध प्रकार की प्रवृहत्तयों ंका अस्न्तम उद्देश्य इस लक्ष्य को प्राप्त करना िी िोना चाहिए, अन्यथा यि जीवन हनरथजक िी िोगा। यहद मनुष्य जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयत्न निीं ंकरता, तो उस मनुष्य के जीवन में और पिु के जीवन में कोई अन्तर निीं ंिै।

गीता में आप देखेंगे हक 'इसमें कोई सन्देि निीं ंहक अन्त समय में जो मुझको स्मरण करते-करते िरीर का त्याग करता िै, वि मेरे स्वरूप को प्राप्त िोता िै' (गीता : ८-५) ।

मृतुयु-काल में जब रोग िरीर को कष्ट पहुाँचाते रिते िैं, जब चेतना धुाँधली पड जाती िै, उस समय ईश्वर-भाव को बनाये रखना बहुत िी दुष्कर िै। कई व्यस्क्त ऐसा सोचते िैं हक मनुष्य को हकस हलए साधु बन जाना चाहिए और उसे हकस हलए अपना जीवन हिमालय में व्यतीत करना चाहिए? आवश्यकता तो इस बात की िै हक मरण के समय मनुष्य भगवान् को स्मरण करे और यि बात घर बैठे भी िो सकती िै-यि एक भूल िै।

यहद भगवान् की पूणज कृपा िो, तभी मरण-काल में मनुष्य को भगवान् का हवचार आता िै। आपको प्रभु के नाम स्मरण का अभ्यास प्रहत हदन, प्रहत घण्ा तथा प्रहत क्षण करना चाहिए। यहद आप अपने जीवन-भर सतत अभ्यास करके दृढ़ संस्कार बना लेंगे, तभी मृत्यु-काल में भगवान् को स्मरण करना आपके हलए सरल िोगा। इसके हलए आपको हकसी सन्त-मिात्मा की संगहत में रि कर इसकी हिक्षा प्राप्त करनी िोगी और तत्पिात् आपको सुसंयहमत जीवन यापन करना िोगा। यहद आप संसार में रिते हुए यि सब-कुछ कर सकें, तो आपके आत्म-हवकास के हलए यि बहुत िी उपयोगी हसद्ध िोगा। इस भााँहत आप संसार में रिते हुए भी संसार से बािर रि सकेंगे।

सारा हदन सांसाररक प्रवृहत्तयों ंऔर राहत्र हनिा में व्यतीत करने से आपको भगवस्च्चन्तन के हलए समय निीं ंहमलेगा। यहद आप प्रहतहदन दि-पन्दरि हमनट थोडा जप करें और उसके अनन्तर िेष समय सांसाररक प्रवृहत्तयों ंमें व्यतीत करें, तो इससे आप हविेष आध्यास्त्मक प्रगहत निीं ंकर सकेंगे। अतः नाम-स्मरण सदा चालू रखना चाहिए, हजससे मृत्यु-काल आ उपस्थथत िोने पर ईश्वर का हवचार स्वयमेव जग उठे।

एक भक्त भगवान् से किता िै-"प्रभो, अपने पाद-पद्मों ंकी िीतल छाया में मुझे आज िी ले लीहजए, इस समय मेरी इस्ियााँ बलवती िैं और मेरी स्मृहत ठीक िै। मृत्यु-काल हनकट आने पर जब बुस्द्ध कुहिि और हवकृत िो जाती िै, उस समय िरीर के त्रय-तापों ंसे मेरा मन हवचहलत िो जायेगा।" मरण के समय िारीररक दुबजलता के कारण भगवान् के दृढ़ और सच्चे भक्त भी अपने प्रभु का स्मरण करना भूल जाते िैं।

इसी कारण से रोगी व्यस्क्त के मरण की अस्न्तम घडी आ पहुाँचने पर गीता, भागवत, हवष्णुसिस्रनाम इत्याहद धाहमजक ग्रिों ंका पाठ उसकी मृत्यु–िय्या के पास हकया जाता िै। भले िी रोगी बोल न सकता िो; परन्तु जो कुछ पढ़ा जाता िै, उसे वि सुने। धमज-ग्रिों ंके इस प्रकार के पाठ से वि अपने िरीर की वेदना भूल जायेगा और उसे भगवान् का हवचार आयेगा। मनुष्य की सदा िी यि अहभलाषा िोती िै हक वि अपने हचत्त को सदा भगवान् में लगा कर मृत्यु की गोद में सदा के हलए िास्न्तपूवजक सो जाये। जब उसकी स्मरण िस्क्त काम निीं ं करती, तब धमजग्रन्थों ंकी पहवत्र वाणी उसे उसके वास्तहवक स्वरूप का स्मरण करायेगी।

सामान्य रीहत से मृतप्राय व्यस्क्त अनेक भयावि हवचारों ंसे ग्रस्त िो जाता िै। वि अपने मन को भगवान् में निीं ंलगा सकता िै। उसके मन में असंख्य हवचार छाये रिते िैं। उसे ऐसे हवचार आते िैं- "यहद मैं मर गया तो मेरी नवयुवती पत्नी तथा बच्चों ंकी देखभाल कौन करेगा? मेरी सम्पहत्त का क्या िोगा ? मेरे देनदारों ंसे ब्याज-बट्टे कौन उगािेगा? मुझे अमुक अमुक काम करना बाकी रि गया िै। दूसरा लडका अभी तक अहववाहित िी िै। ज्येष्ठ पुत्र को अभी तक सन्तान-सुख देखने को निीं ंहमला िै। मेरा अमुक काम अधूरा रि गया िै, हकतने िी दावे तो न्यायालय में अहनहणजत िी पडे िैं।" इस भााँहत अपने सम्पूणज जीवन के पुनरावलोकन तथा भहवष्य की हचन्ता में दुःखी िोता िै।

जब धमज-ग्रिों ंका पाठ हकया जाता िै और भगवान् की लीलाओं ंमें उसका अनुराग उत्पन्न िोता िै, तब यि बहुत सम्भव िै हक उस समय वि अपनी सांसाररक आसस्क्तयों ंको भूल जाये। उसके पास एकहत्रत हुए सम्बस्न्धयों ंको रोना-धोना निीं ंचाहिए। इससे उसके मन को और भी अहधक दुःख पहुाँचता िै। उन्ें चाहिए हक वे उसे एकमात्र भगवान् का हचन्तन करने के हलए प्रोत्साहित करें। ऐसा करने से जब रोगी व्यस्क्त का मन संसार के माया जाल से धीरे-धीरे िट कर प्रभु के हचत्र, लीला तथा उपदेिों ंमें लीन िोने लगता िै, तब उसके अस्न्तम श्वास के हवसजजन के हलए सभी प्रकार का अनुकूल वातावरण प्रादुभूजत िोता िै। उसका मन भी भगवस्च्चन्तन में लग जाता िै।

वि व्यस्क्त उस समय अपने पापों ंके हलए पित्ताप करता ि ै और भगवान् से सचे्चे मन से प्राथजना करता ि ै। सच्ची प्राथजना बुरे कमों के कुप्रभाव को दूर कर सकती ि ै। पल-मात्र में ि ी उसमें हववेक तथा वैराग्य जग उठता ि ै। यहद मरण की अस्न्तम घडी में भी सच्चा हववेक और वैराग्य मनुष्य के अन्दर जाग उठे, तो उसको सन्तोष देने के हलए पयाजप्त ि ै; क्योंहंक उसका जीवात्मा इसके हलए लालाहयत रिता ि ै।

अजाहमल एक पुण्यात्मा व्यस्क्त था; परनु्तु वन में दुष्ट ि ी के सम्पकज में आ कर उसने अपने सारे तेज और तपि:ि−स्क्त को नष्ट कर ि ाला। ि ाथ में पाि और ि ूल हलये हुए यम के दूत जब उसे धमकाने लगे, तब उन्ें देख कर उसने अपने छोटे पुत्र नारायण को पुकारा। ज्यों−ि ी उसने नारायण का नाम उच्चारण हकया, हवषु्णु के पाषजद उसी समय विााँ हवमान ले कर आ उपस्थथत हुए और उन्ोंनें यम-दूतों ंको मार भगाया। अजाहमल को वे अपने साथ वैकुण्ठ-धाम ले गये।

राजा परीहक्षत ने जन्मजात योगी तथा वेदव्यास के पुत्र श्री ि ुकदेव जी से एक सप्ताि तक श्रीमिागवत की कथा सुनी। उस राजा ने सात हदन तक उपवास हकया, सातवें हदन श्री ि ुकदेव मुहन ने उन्ें ब्रह्महवद्या का उपदेि हदया। उन्ोंनें परम तत्त् का ध्यान हकया और वे उसके साथ तिूप ि ो गये। भयानक तक्षक नाग ने उनके सामने प्रकट ि ो कर अपने कालकूट हवष से उन्ें ि ॅस हलया। परीहक्षत को ऐसा लगा मानो कोई नन्ाा कीट उनके पााँवों ंको काट रिा ि ै। वे देि-भावना से ऊपर उठ चुके थे। तक्षक के काटने के पूवज ि ी उन्ोंनें अपने ि रीर को योगाहि में भस्म कर ि ाला था।

खट्वांग राजा ने मात्र एक घणे् में परब्रह्म का साक्षात्कार हकया था। यि मिापुरुष जीवन-भर उग्र साधना और भगवान् को सतत स्मरण करते रिे थे।

भगवान् के हनरन्तर स्मरण ि ारा आप सब अपने इस जीवन में ि ी भगवान् के दिजन प्राप्त करें! यि ि रीर त्याग करते समय भगवान् आपके समु्मुख प्रकट ि ो दिजन दें!

नवम प्रकरण

मृतुयु पर हवजय

१. मृतुयु पर हवजय

सभी मनुष्य मृतुयु से अत्यन्त भयभीत रिते िैं। कोई भी काल का ग्रास निीं ंबनना चािता िै। आत्मा अमर िै और वि आत्मा िरीर से हभन्न िै; इस बात का हजनें् ज्ञान िो गया िै, वे बुस्द्धिाली पुरुष भी मृतुयु से बहुत िी भयभीत रिते िैं। िरीर के प्रहत यि मोि अद्भुत िै। माया अथवा अहवद्या आियजमय िै।

यि िरीर सभी प्रकार के हवषयों ंको भोगने का साधन िै। यिी कारण िै हक मनुष्य अपने िरीर से इतना आसक्त िै। अहवद्या के कारण वि स्वयं को िरीर मान बैठता िै। मानव की यि एक भूल-भरी असमीचीन धारणा िै हक जो िरीर अिुद्ध, अचेतन, क्षणभंगुर तथा दुिःख स्वरूप िै, उसे वि िुद्ध, चेतन, अव्यय तथा सुख- स्वरूप आत्मा मानता िै। इसके कारण िी वि जन्म-मृतुयु के चि में फाँसा रिता िै। अहवद्या अथवा अज्ञान के कारण मनुष्य ने अपनी हववेक–स्क्त खो दी िै। इस अहवद्या से अहववेक का जन्म हुआ। इसके कारण अहवनािी और हवनािील का, सत् और असत् का, आत्मा और अनात्मा का, ऋत और अनृत का तथा जड और चेतन का भेद वि निीं ंजान सकता िै। अहवद्या से अिंकार का जन्म हुआ िै। जिााँ-किीं ंभी अिंकार रिता िै, विीं ंराग और द्वेष-ये दोनों ंवृहत्तयााँ रिती िैं। वि राग–द्वेष के वि में िो काम करता िै। अपने हकये हुए कमों का फल भोगने के हलए नये-नये िरीर धारण करता िै। अतिः मानव के दुिःख का मूल कारण अहवद्या िी िै। समूपूणज कमज तथा जन्म का भी कारण अहवद्या िी िै। यहद आप अहवनािी आत्मा का ज्ञान प्राप्त कर अपने को अहवद्या से मुक्त कर लें, तब आप मृतुयु पर हवजय प्राप्त कर लेंगे तथा अहवनािी सस्च्चदानन्द ब्रह्म में हवलीन िो जायेंगे।

ज्ञानयोग का साधक साधन-चतुष्टय-हववेक, वैराग्य, षट्सम्पत् तथा मुमुकुषुत्व से अपने को सम्पन्न बनाता िै और तब वि साधक श्रोहत्रय तथा ब्रह्महनष्ठ गुरु के पास जा कर शुरुहतयों ंका श्रवण, मनन तथा हनहदध्यासन करता िै। वि हनगुजण ब्रह्म पर सतत ध्यान करता िै और आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करता िै। इस भााँहत वि ब्रह्म पर हवजय प्राप्त करता िै।

भस्क्तयोग का साधक नवहवधा भस्क्त का हवकास करता िै। वि मन्त्र जप, कीतजन और भागवतों ंकी सेवा करता िै। वि स्वेच्छा से अपने को पूणज रूप से भगवान् के चरणों ंमें समहपजत कर देता िै। वि भगवान् से हनवेदन करता िै-"भगवन्! मैं आपका िी हाँ। यि सवजस्व आपके िी िैं। आपके इच्छानुसार िी सब-कुछ िो।" वि प्रभु का दिजन पाता िै और इस भााँहत वि मृतुयु पर अहधकार प्राप्त कर लेता िै।

राजयोग का साधक यम-हनयम का पालन करता िै। वि स्थिर आसन में बैठता िै, प्राणायाम-हिया के द्वारा श्वास-प्रश्वास की गहत का हनरोध करता िै, इस्ियों ंका हनग्रि करता िै, प्रत्यािार द्वारा हचत्त की वृहत्त का हनरोध करता िै तथा धारणा, ध्यान और समाहध का अभ्यास करता िै। इस भााँहत वि मृतुयु पर हवजय प्राप्त करता िै।

िठयोग का साधक आसन, प्राणायाम, बन्ध तथा मुद्रा के अभ्यास द्वारा मूलाधार चि में प्रसुप्त कुण्डहलनी स्क्ति को जगाता िै और उस िस्क्त को मूलाधार में से स्वाहधष्ठान, महणपूर, अनाित, हविुद्ध और आज्ञाचि से ले जा कर सिस्रार चि में हिव के साथ संयोहजत करता िै। इस भााँहत वि मृतुयु पर हवजय पा लेता िै।

कमजयोगी सतत हनिःस्वाथज सेवा के िारा अपने अन्तिःकरण को िुद्ध करता िै। आत्म-त्याग के िारा वि अपने अिंकार को मारता िै और उसके िारा वि ज्ञान-ज्योहत प्राप्त करता िै। इस भााँहत वि मृत्यु पर हवजयी िोता िै।

२. मृत्यु क्या िै तथा उस पर हकस तरि हवजयी िों?

मृत्यु तो रूप का पररवतजन मात्र िै। सूक्ष्म िरीर का थथूल िरीर से हवलग िोना िी मृत्यु किलाती िै। हप्रय हवश्वनाथ! आप मृत्यु से इतना क्यों ंभयभीत िो रिे िैं ?

मृत्यु के अनन्तर जन्म उसी प्रकार आता िै जैसे हनिा के अनन्तर जागरण। हपछले जीवन में आपका जो काम अधूरा रि गया था, उसे आप पुनिः चालू कर देंगे। अतिः मृत्यु से भयभीत न बहनए।

मृत्यु का हवचार सदा िी धमज तथा धाहमजक जीवन की सबसे प्रबल प्ेरेरक िस्क्त रिी िै। मनुष्य मृत्यु से भयभीत रिता िै। अपनी जरावथथा में वि भगवान् को स्मरण करने का प्रयास करता िै। यहद वि अपनी बाल्यावथथा से िी ईश्वर का स्मरण करने में लग जाये, तो वृद्धावथथा के आने तक वि बहुत अच्छी आध्यास्त्मक फसल काट सकेगा। मनुष्य कभी भी मरना निीं ंचािता िै। वि सदा जीहवत बना रिना चािता िै। यिीं ंसे दिजनिा की हवचारधारा का प्रारम्भ िोता िै। दिजन इस हवषय की पूरी जााँच-पडताल तथा छानबीन करता िै। वि सािसपूवजक घोहषत करता िै- "िे मानव ! तू मृत्यु से भयभीत मत बन। एक अमर धाम िै और वि ब्रह्म िै। विी तेरा अपना आत्मा िै जो तेरी हृदय-गुिा में हनवास करता िै। अपने अन्तिःकरण को िुद्ध बना और इस िुद्ध, अमर, अव्यय आत्मा का ध्यान धर। ऐसा करने से तू अमर पद पा लेगा।"

िे मानव! मृत्यु से जरा भी भयभीत न बहनए। आप अहवनािी िैं। मृत्यु जीवन की हवपरीत अवथथा निीं ंिै। यि तो जीवन का एक चरण मात्र िै। जीवन तो हनरन्तर अहवराम गहत से ओत-प्रोत बना रिता िै। बीज नष्ट िो जाता िै; परन्तु उसमें एक हविाल वृक्ष का जन्म िोता िै। यि वृक्ष भी हवनाि को प्राप्त िोता िै; परन्तु इसमें से कोयला उत्पन्न िोता िै। जल लुप्त िो कर अदृश्य वाष्प का रूप धारण करता िै हजसमें एक नये जीवन का बीज ितिा िै। पाषाण नष्ट िोता िै और चूना बनता िै। यि चूना नव-जीवन से सम्पन्न िोता िै। केवल भौहतक किो का िी हवसजजन िोता िै। जीवन तो बना िी रिता िै।

हमत्र! क्या आप बतला सकते िैं हक इस संसार में क्या कोई ऐसा भी व्यस्क्त िै हजसे मृत्यु से भय न िो ? क्या ऐसा भी मनुष्य िै हजसके जीवन का सन्तुलन घोर संकट के आ जाने पर भी दोलायमान न िो चला िो अथवा जब वि असह्य वेदना से पीहडत िो, तब भी वि भगवान् का नाम निीं ंलेता िो। नास्स्तको ! तब आप भगवान् की सत्ता को क्यों ंअस्वीकार करते िैं? जब आप संकटग्रस्त िोते िैं, तब आप स्वयं िी उसकी सत्ता को स्वीकार करते िैं। अपनी हवकृत बुस्द्ध तथा सांसाररक मद के कारण आप नास्स्तक बन बैठे िैं। क्या यि एक भयंकर भूल निीं ंिै? गम्भीरतापूवजक हवचार कीहजए। वाद-हववाद को छोहडए। उस प्रभु को स्मरण कर अभी-अभी अमरता तथा िास्न्त प्राप्त कीहजए।

गरुडपुराण तथा आत्मपुराण में ऐसा वणजन हकया गया िै हक मृत्यु की वेदना बित्तर सिस्र हबच्छुओं ंके किों ंकी वेदना के समान असह्य िोती िै। इस प्रकार भयानक िब्दों ंमें वणजन करने का तात्पयज तो केवल इतना िी िै हक उससे सुनने और पढ़ने वालों ंके मन में भय उत्पन्न िो और वे मोक्ष के हलए प्रयत्न करने के हलए बाध्य िों। ंप्ेरेतात्म-हवद्या में सभी उच्च आत्माओं ंने एक मत से यि सूहचत हकया िै हक मृत्यु के समय रंचमात्र भी दुिःख निीं ं

िोता िै। वे अपनी मरणावथथा के अनुभवों ंका स्पष्ट वणजन करते िैं। वे बतलाते िैं हक अब वे इस थथूल िरीर के भारी भार से मुक्त िो चुके िैं। थथूल िरीर को छोडने के समय वे पूणज िान्त थे। माया उनके िरीर में मरोड तथा झटके उत्पन्न कर देखने वालों ंके मन में अनावश्यक भय का संचार करती िै। यि तो माया का स्वभाव तथा प्रकृहत िी िै। मृत्यु-यातना से भयभीत मत बहनए। आप स्वयं अमर आत्मा िैं।

जप, कीतजन, दीन-दुिःखयों ंकी सेवा तथा ध्यान के िारा ईश्वरमय जीवन व्यतीत करने का सतत प्रयास कीहजए। तभी आप काल पर हवजय प्राप्त कर सकेंगे।

जब भगवान् यमराज आपके प्राण लेने के हलए आ उपस्थथत िोंगे, उस समय वे यि बिाना निीं ंसुनेंगे हक 'मुझे अपने जीवन में भगवान् का भजन करने का समय निीं ंहमला।'

एकमात्र ब्रह्मज्ञान िी िमें अज्ञान तथा मृत्यु के चंगुल से मुक्त कर सकता िै। हनहदध्यासन के िारा िमें इस ज्ञान की अपरोक्षानुभूहत िोनी चाहिए। केवल हवित्ता, बुस्द्धमत्ता अथवा ग्रंथों ंका पाठ िी िमें अपने जीवन के परम लक्ष्य की प्रास्प्त में सिायक निीं ंिो सकते। यि तकज का हवषय निीं ंिै, यि तो प्रत्यक्ष अनुभव का हवषय िै।

आत्म-साक्षात्कार आपके अहवद्या, अज्ञान को दूर करेगा। यि अहवद्या िी मानव के दुिःखों ंका मूल कारण िै। आत्म-साक्षात्कार आपके अन्दर आत्मा की एकता का ज्ञान जाग्रत करेगा। यि दुिःख, िोक, भ्रम तथा संसार के आवागमन-रूप जन्म-मृत्यु के भयंकर दुिःख को दूर करने का साधन िै। यि आत्मा की एकता का ज्ञान िी िै।

सूक्ष्म हवषयों ंके हनयहमत अभ्यास के पररणाम स्वरूप इस संसार में जो आगामी जीवन प्राप्त िोता िै, उसमें सूक्ष्म हवषयों ंके हचन्तन की सुव्यवस्थथत िस्क्त िोती िै। इसके हवपरीत चपलता, हवचार, मन का एक हवषय पर से िीघ्र दूसरे हवषय पर भागना आहद बातें आगामी जीवन में मन को अिान्त तथा अव्यवस्थथत बनाती िैं।

आपके हृदय-मस्न्दर में िुद्ध ज्ञान का सूयज प्रकाहित िो रिा िै। सब सूयों का सूयज यि आत्मा स्वयं-प्रकाि िै। यि सभी प्राहणयों ंका आत्मा िै तथा मन और वाणी से परे िै। यहद आप इस आत्मा का साक्षात्कार कर लें, तो आपका इस मत्यजलोक में पुनरावतजन निीं ंिोगा।

माया ने अपने इन्द्रजाल से इस संसार-रूपी नाटक की रचना की िै हजसमें जन्म और मरण-ये दो काल्पहनक दृश्य िैं। वास्तव में न तो कोई आता िै और न कोई जाता िै। एकमात्र आत्मा िी सदा हवद्यमान रिता िै। आत्म-हवचार के िारा भय और मोि को नष्ट कीहजए, और सदा िास्न्त में हवश्राम कीहजए। "मैं उन मिान् से भी मिान् परम पुरुष को जानता हाँ। वे सूयज की भाँहत प्रकाि-स्वरूप िैं तथा अहवद्या-रूप अन्धकार से सवजथा अतीत िैं। उनको जान कर िी मनुष्य मृत्यु का उल्लंघन करने में समथज िोता िै। परम पद की प्रास्प्त के हलए इसके अहतररक्त अन्य कोई मागज (उपाय) निीं ंिै" (यजुवेद : ३१-१८१) ।

योग के मागज में जो प्रयत्न हकया जाता िै, वि कभी भी हनष्फल निीं ंजाता िै। आपको योग की थोडी-सी प्रहिया के अभ्यास का भी फल अवश्य प्राप्त िोगा। यहद आपने अपने वतजमान जीवन में योग के प्रथम तीन अंग-यम, हनयम और आसन के अभ्यास में सफलता प्राप्त कर ली िै, तब आप आगामी जीवन में उसके चतुथज अंग-प्राणायाम से अपना योगाभ्यास प्रारम्भ करेंगे। हजस वेदान्ती ने अपने वतजमान जीवन में हववेक और वैराग्य-इन दो साधनों ंका अजजन कर हलया िै, वि अपने अगले जीवन में िम-दम आहद षट्सम्पत् से अपना अभ्यास आरम्भ करेगा। अतिः यहद आप अपने इस जीवन में कैवल् अथवा असम्प्रज्ञात समाहध प्राप्त करने में असफल रिते िैं, तो उससे आपको हकंहचन्मात्र भी हचंहतत िोने की आवश्यकता निीं ंिै। स्वल्प काल का साधारण अभ्यास भी आपको अहधक बल, अहधक िास्न्त, अहधक आनन्द तथा अहधक ज्ञान प्रदान करेगा।

आपकी मृत्यु निीं ंिो सकती िै, क्योंहंक आपका अभी जन्म िी निीं ंहुआ। आप तो अमर आत्मा िैं। माया ने जो कृहत्रम नाटक की रचना की िै, उससे जन्म और मृत्यु-ये दो असत्य दृश्य िैं। इनका सम्बन्ध केवल भौहतक रीर से िै और यि भौहतक िरीर पंच-तत्त्ों ंके सस्म्मश्रण की हमथ्या उपज िै। जन्म और मरण का हवचार केवल मूढ़ हवश्वास िै।

यि भौहतक िरीर तो हमट्टी का एक पुतला िै हजसे भगवान् ने अपनी लीला के हलए बना रखा िै। वे िी इसके सूत्रधार िैं। जब तक उनकी इच्छा िोती िै, तब तक वे इस स्खलौने को दौडाते रिते िैं और अन्त में वे इसे तोड कर फेंक देते िैं। तब दो का खेल समाप्त िो जाता िै और एकमात्र वे िी रि जाते िैं। जीवात्मा परमात्मा में हवलीन िो जाता िै।

आत्मज्ञान मृत्यु-सम्बन्धी सभी भयों ंको दूर करता िै। मनुष्य अकारण िी मृत्यु से भयभीत रिते िैं। मृत्यु तो हनिा के समान िै और जन्म प्रातिःकाल हनिा से जागने के समान िै। हजस भााँहत आप नये वि धारण करते िैं, उसी भााँहत आप मृत्यु के पिात् नया िरीर धारण करते िैं। जीवन-प्रवाि में मृत्यु एक स्वाभाहवक घटना िै और यि आपके हवकास के हलए आवश्यक िै। यि पाहथजव िरीर जब नये काम और उद्योग के हलए अयोग्य िो जाता िै, तब भगवान् रुि उसे ले जाते िैं और उसके थथान पर नया िरीर प्रदान करते िैं। मृत्यु के समय हकसी प्रकार का कष्ट निीं ंिोता िै। मृत्यु के हवषय में अज्ञानी लोगों ंने बहुत िी भय और आतंक उत्पन्न कर रखा िै।

एकमात्र ब्रह्म िी सत् िै। जैसे रज्जु में सपज का आरोप करते िैं, वैसे िी ब्रह्म में इस संसार और िरीर का अध्यारोप हकया गया िै। जब तक रज्जु का ज्ञान निीं ंिोता िै और सपज का हवचार बना रिता िै, तब तक आप भय से मुक्त निीं ंिो सकते िैं। ठीक इसी प्रकार जब तक आप ब्रह्म का साक्षात्कार निीं ंकर लेते, तब तक यि संसार आपके हलए ठोस सत्य बना रिेगा। जब आप प्रकाि की सिायता से रज्जु को देखते िैं, तब सपज की भ्रास्न्त जाती रिती िै और भय भी दूर िो जाता िै; इसी भााँहत जब आप ब्रह्म का साक्षात्कार कर लेते िैं, तब यि जगत् हवलीन िो जाता िै और आप जन्म-मृत्यु के भय से मुक्त िो जाते िैं।

कभी-कभी आप ऐसा स्वप्न देखते िैं हक आप मर गये िैं और आपके सम्बन्धी रो रिे िैं। अपनी मृत्यु की उस कस्ल्पत अवथथा में भी आप अपने सम्बस्न्धयों ंको हवलाप करते हुए देखते तथा सुनते िैं। इससे यि स्पष्ट िोता िै हक इस प्रत्यक्ष मृत्यु के उपरान्त भी जीवन का अस्स्तत्व बना रिता िै। भौहतक िरीर के हवसजजन के पिात् भी आप हवद्यमान रिते िैं। यि अस्स्तत्व िी आत्मा अथवा 'अिं' िै।

यहद आप अपने हृदय में हनहित अमर आत्मा का साक्षात्कार कर लेते िैं, यहद अहवद्या, काम और कमज-इन तीन ग्रस्यियों ंका भेदन िो जाता िै, यहद अहवद्या, अहववेक, अिंकार, राग-द्वेष, कमज तथा दिे से हनहमजत अज्ञान की शृंखला टूट जाती िै, तो आप जन्म-मृत्यु के चि से मुक्त िो जायेंगे और आप अमर धाम में प्रवेि करेंगे।

३. अमरता की खोज

िे मानव! धन-सम्पहत्त, बाँगले और बाग से आपको क्या काम िै? हमत्रों ंऔर सम्बस्न्धयों ंसे आपको क्या काम िै? िी और बच्चों ंसे क्या काम िै? अहधकार, नाम, यि, पद और गौरव से आपको क्या काम िै? आपका मरण अवश्यम्भावी िै। इस संसार की सभी बातें अहनहित िैं; परन्तु मृत्यु एक हनहित वस्तु िै। अपनी अमर आत्मा की खोज कीहजए जो हक आपकी हृदय गुिा में िी स्थथत िै।

आध्यास्त्मक सम्पहत्त िी वास्तव में अक्षय सम्पहत्त िै। हदव्य ज्ञान िी वास्तहवक ज्ञान िै। मृतुयु पर हवजय प्राप्त करने का मागज ढूाँढ़ हनकाहलए। अहवनािी आत्मा का साक्षात्कार कीहजए और स्वतन्त्रता तथा पूणजता, अजरता और अमरता को प्राप्त कीहजए।

दैववादी सांसाररक जन धमज और उच्च पारमाहथजक बातों ंकी ओर ध्यान निीं ंदेते िैं। उन्ें परमात्मा, आवागमन का हसद्धान्त, अमर आत्मा, योग-साधना, साधन- चतुष्टय के हवषय की कुछ भी हचन्ता निीं ंिै। वे दो बातें िी अच्छी तरि जानते िैं-जेब भरना और पेट भरना। वे खाते-पीते िैं, आमोद-प्रमोद करते िैं, सोते िैं, सन्तान उत्पन्न करते िैं और नाना प्रकार के कपडे पिनते िैं।

कुछ लोग हवश्वहवद्यालय की उपाहध प्राप्त करने के हलए सात समुि पार जाते िैं। कुछ लोग ताम्रपत्र को स्वणज में पररणत करने के हलए रसायनहवद्या का अभ्यास करते िैं। कुछ लोग िीतायुष्मान् बनने के हलए प्राणायाम का अभ्यास करते िैं। कुछ लोग हवपुल धन-राहि के हलए व्यवसाय अथवा रुपये का लेन-देन करते िैं। यहद आप एक पल के हलए गम्भीरतापूवजक हवचार करें, तो आप देखेंगे हक ये लोग केवल खाने, पीने और सोने के झगडे में िी पडे रिते िैं। इन दो बातों ंके अहतररक्त वे और कुछ निीं ंकरते िैं।

परन्तु जब उनका कोई हप्रय आत्मीय काल-कवहलत िो जाता िै, जब वे असाध्य रोगों ंसे पीहडत िोते िैं तथा जब वे अपनी धन-सम्पहत्त से िाथ धो बैठते िैं, तब उनकी आाँखें कुछ-कुछ खुलती िैं। उन्ें सांसाररक जीवन से क्षहणक वैराग्य उत्पन्न िोता िै। वे प्रश्न करते िैं- "जीवन क्या िै? मृतुयु क्या िै? मृतुयु के उस पार क्या िै? मृतुयु से परे भी क्या कोई जीवन िै? मृतूयूपरान्त िमें किााँ जाना िोगा?" उनमें हववेक तो िोता निीं ंिै; अतः उनका वैराग्य िीघ्र िी लुप्त िो जाता िै।

मनुष्य हवषय-भोगों ंमें सुख पाने के हलए प्रयत्निील िोता िै। अत्यहधक हवषय-परायणता से इस्ियााँ क्षीण िो जाती िैं और उसके पररणाम स्वरूप हनरािा, रोग और व्याहध आ घेरते िैं। हजतना िी अहधक वि इस्िय-भोगों ंको भोगता िै, उतनी िी उसकी तृष्णा बढ़ती जाती िै। उसे बहुत कटु अनुभव प्राप्त िोता िै। उसे अब यि ज्ञान िो जाता िै हक िरीर और इस्ियों ंकी भोग-वासना की तृस्प्त में वास्तहवक सुख निीं ंिै। अन्त में वि अन्तस्थथत अपनी आत्मा में सुख की खोज करने लगता िै।

यहद आप हकसी व्यस्क्त को पीडा पहुाँचायेंगे, तो आपको दूसरे जन्म में पीडा भोगनी िोगी। इस भााँहत आप इस जीवन में जो बीज बोयेंगे, उसका फल आपको अगले जन्म में प्राप्त िोगा। यहद आप हकसी व्यस्क्त के नेत्र को आघात पहुाँचायेंगे, तो अगले जीवन में आपके नेत्र को आघात पहुाँचेगा। यहद आप हकसी व्यस्क्त का पैर तोडेंगे, तो अगले जीवन में आपका पैर टूटेगा। यहद आप हकसी हनधजन व्यस्क्त को भोजन करायेंगे, तो आपको अगले जीवन में बहुत भोजन प्राप्त िोगा। यहद आप धमजिालाएाँ बनायेंगे, तो आपको अगले जीवन में बहुत से घर प्राप्त िोंगें। हिया और प्रहतहिया परस्पर समान परन्तु प्रहतिन्द्वी िोती िैं। कमज का ऐसा हनयम िै। ऐसा िी यि चि िै और इससे िो कर िी आपको अपना मागज तय करना िै।

बहुत से व्यस्क्त धनवान् िैं; परन्तु वे अपने धन का समुहचत उपयोग निीं ंकरते िैं। उनके पास हवपुल सम्पहत्त िै, उनके पास कई बाँगले िैं; परन्तु हफर भी वे स्खन्न िैं। उनका जीवन बहुत िी दुिःखी िै। वे हकतनी िी जीणज व्याहधयों ंके कष्ट से पीहडत िोते िैं। उनकी सन्तानें प्रमादी तथा स्वेच्छाचारी िोती िैं। वे स्वयं कृपण िोते िैं। उनके हमत्र और सम्बन्धी भी उन्ें निीं ंचािते िैं। आप इसका क्या कारण बतलायेंगे? वे अपने हपछले जीवन में धन के हलए लालाहयत थे, अतः उन्ें इस जीवन में धन प्राप्त हुआ; परन्तु वे लोग उसका ठीक उपयोग निीं ंकर सकते िैं। वे अपने हपछले जीवन में स्वाथी तथा िूर िोते िैं। वे अपने जीवन में आचारवान् निीं ंिोते। अतः वे इस जीवन में कष्ट भोगते िैं।

सत्कमज कीहजए। उत्तम तथा हदव्य हवचारों ंको प्रश्रय दीहजए। सच्चाररय का हनमाजण कीहजए। एक ी िुद्ध तथा पहवत्र कामना-जन्म तथा मृतुयु के चि से मुक्त ोने की कामना-रस्खए।

आपके हवचारों ंसे ी आपका चररत्र बनता ै। आप जैसा हवचार करेंगे, वैसा ी आप बनेंगे। यहद आप सहिचारों ंको प्रश्रय देते ैं, तो आप सदाचारी व्यस्क्त के रूप में जन्म ग्रिण करेंगे और यहद दुहवजचारों ंको प्रश्रय देते ैं, तो आप दुराचारी व्यस्क्त के रूप में जन्म लेंगे। यि प्रकृहत का अकाट्य हनयम ै।

आपके वतजमान जीवन की इच्छाएँ इस बात की हनणाजयक ैं हक आपको भावी जीवन में हकस प्रकार के पदाथज प्राप्त ोंगें। यहद आपको धन की अहधक लालसा ै, तो आपको अगले जन्म में धन प्राप्त ोगा। यहद आपको अहधकार की अहधक कामना ै, तो आपको आगामी जीवन में अहधकार प्राप्त ोगा। परन्तु ध्यान रिे हक धन और अहधकार आपको िाश्वत आनन्द और अमरत्व प्रदान निीं ंकर सकते। आपको अपनी इच्छाओं ंके चुनाव में बहुत ी सावधान रिना चाहिए। एक ी दृढ़ इच्छा, मोक्ष की इच्छा रस्खए। आप जन्म-मृतुयु के चि से िीघ्र मुक्त ो जायेंगे।

दिम प्रकरण

कथा-वाताज

१. कीट की किानी

युहधहष्ठर ने पूछा :

"िे हपतामि जी! मरने की इच्छा से तथा जीने की इच्छा से बहुत से मनुष्य अपने जीवन की इस युद्ध-रूपी मिान् यज्ञ में आहुहत देते िैं। इसके पररणाम स्वरूप उन लोगों ंको क्या प्राप्त िोता िै? यि मुझे बतलाइए। (१)

"िे बुस्द्धिाली पुरुष ! युद्ध में जीवन को अहपजत कर देना मनुष्य के हलए बहुत िी खेदपूणज िै। आप जानते िैं हक मनुष्य का जीवन चािे हजतना समृद्ध िो अथवा हनधजन, चािे हजतना सुखी िो अथवा दुिःखी; परन्तु अपने जीवन का त्याग करना उसके हलए बहुत िी कहठन िै। मेरे हवचार में आप सवजज्ञ िैं, अतिः आप इसका कारण बतलायें।" (२-३)

भीष्म ने किा :

"िे राजन्! सम्पहत्त अथवा हवपहत्त में, सुख अथवा दुिःख में जीवन व्यतीत करते हुए सभी प्राणी इस संसार में एक हनहित रीहत से आते िैं। (४)

"िे युहधहष्ठर! आपने मुझसे बहुत िी उत्तम प्रश्न हकया िै। उसका जो कारण िै, उसे मैं आपको बतलाता हाँ। आप ध्यानपूवजक सुनें। (५)

"राजन् ! इस हवषय में िैपायन ऋहष और एक रेंगते हुए कीट के मध्य जो संवाद हुआ था, उसे मैं आपको सुनाता हाँ। (६)

"प्राचीन काल में परम हविान् ब्राह्मण कृष्ण िैपायन जी ब्रह्म में तन्मय िो इस संसार में हवचरण कर रिे थे, उस समय उन्िोंने राजपथ पर, हजस पर बहुत से रथ आ रिे थे, एक कीट को तीव्र गहत से भागते हुए देखा। (७)

"ऋहष प्रत्येक प्राणी की गहत तथा भाषा के जानकार थे। वे सवजज्ञ थे; अतिः उन्िोंने कीट से इस प्रकार पूछा (८) -

'िे कीट! ऐसा प्रतीत िोता िै हक तुम बहुत िी भयभीत तथा बडी उतावली में िो। मुझे बतलाओ हक तुम किाँ भागे जा रिे िो और हकससे तुम्हें इतना भय लग रिा िै?' (९)

उस कीट ने किा :

'हविन्! मैं उस बडी गाडी की आवाज सुन कर भयाक्रान्त हाँ। यि गाडी बहुत िी भयंकर िब्द करती िै। यि हनकट िी आ पहुाँची िै। (१०)

'वि िब्द मुझे कणजगोचर ि ो रि ि ै। क्या वि मुझे मार नि ीं ं ि ालेगा। मैं उससे दूर भाग जाना चि ाता हाँ। मुझे बैलों ंकी आवाज सुनायी पड रि ी ि ै। (११)

'भारी भार खीचंते हुए वे बैल गाडीवान के कोडों ंकी मार से दीघज श्वासोच्छवास ले रि े ि ैं। गाडीवान की हभन्न-हभन्न आवाजें भी मैं सुन रि ा हाँ। (१२)

'ि मारे जैसे कीट-योहन में उत्पन्न प्राणी इस प्रकार के िब्द नि ीं ंसिन कर सकते ि ैं। यि ी कारण ि ै हक मैं इस अहत-भयावि स्थथहत से दूर भागा जा रि ा हाँ। (१३)

'सभी प्राणी मृतुयु को भयानक समझते ि ैं। जीवन को प्राप्त करना कहठन ि ै। अतिः मारे भय के मैं यि ााँ से भागा जा रि ा हाँ। मैं इस सुख को छोड कर दुिःख में नि ीं ंपडना चि ाता हाँ।" (१४)

भीष्म ने कि ा :

"कीट के इस प्रकार कि ने पर ि ैपायन व्यास ने पूछा :

'कीट! तुम्हें सुख कि ााँ से हमल सकता ि ै? तुम्हारा जन्म तो एक सामान्य मध्यम योहन में हुआ ि ै। मैं समझता हाँ हक मृतुयु तुम्हारे हलए सुखद ि ोगी।' (१५)

'िब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पिज तथा अन्य हवहवध प्रकार के उत्तम भोगों ंका तो तुम्हें पता ि ी नि ीं ंि ै। अतिः ि े कीट! मृतुयु तुम्हारे हलए लाभप्रद ि ोगी।' (१६)

कीट ने कि ा :

'ि े ज्ञानवान् पुरुष ! एक जीवधारी प्राणी हकसी भी पररस्थथहत में क्यों ंन पडा ि ो, वि उसी जीवन से आसक्त बन जाता ि ै। इस कीट-योहन में भी मैं अपने को सुखी समझता हाँ। इसी कारण से मैं जीहवत रि ना चि ाता हाँ। (१७)

'इस अवथथा में भी मेरे िरीर के आवश्यकतानुसार सभी प्रकार के भोग-पदाथज उपलि ि ैं। मनुष्य तथा अन्य प्राहणयों ंके भोग-पदाथज हभन्न प्रकार के ि ोते ि ैं। (१८)

'पूवज-जन्म में मैं एक मनुष्य था। ि े वीर! उस समय मैं एक धनवान् ि ि ू था। मुझे ब्राह्मणों ंके प्रहत श्रद्धा न थी। मैं ि ूर तथा दुराचारी था और बहुत ि ी अहधक व्याज लेता था। (१९)

'मेरी वाणी कठोर थी। मैं अपने छल-कपट को बुस्द्धमानी समझता था। सभी प्राहणयों ंसे घृणा करता था। मेरे और दूसरों ंके मध्य जो समझौते ि ोते थे, उनकी ि ितों का अनुहचत लाभ उठा कर मैं सदा दूसरों ंके स्वत्वों ंका अपि रण करता था। (२०)

'मैं स्वभाव का अहभमानी, हजह्वा-लोलुप तथा ि ूर तो था ि ी; अतिः भूख लगने पर मैं अपने सेवकों ंतथा घर पर पधारे हुए अहतहथयों ंको भोजन कराने के पूवज ि ी अपने उदर की पूहतज कर हलया करता था। (२१)

'मैं धन का इतना अहधक लोभी था हक मैंने कभी भी देवताओं ंऔर हपतरों ंको श्रद्धापूवजक नैवेद्य अहपजत निीं ंहकया, यद्यहप एक गृिथथ के रूप में मेरे हलए यि अहनवायज कतजव्य था। (२२)

'जो लोग भयभीत िो मेरा आश्रय लेने के हलए मेरे पास आते, उन्ें हकसी प्रकार का संरक्षण हदये हबना दूर धकेल देता था। जो लोग भय से त्राण पाने की याचना करने के हलए आते, उनकी भी मैंने सिायता निीं ंकी। (२३)

'दूसरे लोगों ंके धन, धान्य, अत्यन्त हप्रय स्त्रियाँ, खान-पान के साधन तथा रिने के सुन्दर मकान देख कर मुझे अकारण िी ईष्याज िोती थी। (२४)

'दूसरों ंका सुख देख कर मैं िेष से भर जाता था। मैं सदा यिी चािता था हक वे हनधजन बने रिें। इस भाँहत अपनी इच्छाओं ंको सफल बनाने की आिा से मैं दूसरों ंके िील, सम्पहत्त और सुख का हवनाि करने पर तुला रिा। (२५)

'अपने पूवज-जीवन में क्रूरता तथा इसी प्रकार की अन्य भावनाओं ंसे प्रेररत िो मैंने अनेकों ंिी कृत्य हकये। उन कुकृत्यों ंको स्मरण कर मैं िोक तथा पित्ताप से वैसे िी सन्तप्त िो उठता हाँ जैसे हक हकसी को अपने हप्रय पुत्र के मर जाने पर दुिःख िोता िै। (२६)

'मेरे इस प्रकार के कमों के कारण सत्कमों का फल हकस प्रकार हमलता िै, इसका मुझे पता निीं ंिै। ऐसा िोने पर भी मैंने एक बार अपनी वृद्ध माता की सेवा की थी। (२७)

'भाग्यवि जन्म और गुण से भाग्यिाली एक ब्राह्मण यात्रा करते-करते मेरे घर पर एक बार अहतहथ-रूप में पधारे। मैंने उनका आहतथ्य सत्कार हकया। उस सत्कमज से प्राप्त पुण्यफल-स्वरूप मेरी सूमृहत नष्ट निीं ंहुई। (२८)

'मुझे ऐसा लगता िै हक उस पुण्यकमज के कारण मैं पुनिः सुख प्राप्त कर सकूाँगा। आप तो तपोधनी िैं, अतिः आप सब-कुछ जानते िैं। कृपया बतलाइए हक मेरे प्रारि में क्या िै'।" (१९) (मिाभारत-अनुिासन-पवज)

२. नहचकेता की कथा

मैं समझता हाँ हक कठोपहनषद् में वहणजत नहचकेता की कथा तो आपको याद िी िोगी। नहचकेता के हपता गौतम जी एक यज्ञ कर रिे थे। नहचकेता ने उस अवसर पर अपने हपता से पूछा- "आप मुझे हकसको देते िैं?" उसके हपता ने उत्तर हदया- "तुझे मैं मृत्युु को देता हाँ।"

तदनन्तर नहचकेता मृत्युदेव यमराज के घर जा पहुाँचे। मृत्युदेव उस समय किीं ंबािर गये हुए थे। विााँ पर उन (नहचकेता) की आवभगत करने वाला कोई न था। अतिः वे तीन हदन और तीन राहत्र तक हकसी प्रकार के अन्न-जल के सत्कार के हबना िी यम-सदन के िार पर पडे रिे। चौथे हदन जब यमराज वापस आये, तो उन्ोंनें देखा हक नहचकेता अपने हपता के इस वचन हक 'मैं तुझे मृत्युु को देता हाँ, का प्रहतपालन करते हुए उसकी प्रतीक्षा कर रिा िै।

यमराज ने नहचकेता से किा- "िे ब्राह्मण देवता! आप मेरे सम्मान्य अहतहथ िैं। आपने लगातार तीन राहत्रयों ंसे मेरे घर पर हबना भोजनाहद हकये हनवास हकया िै, अतिः उनके बदले में आप मुझसे तीन वर माााँग लें।" तब नहचकेता ने यि प्रथम वर माााँगा- "मेरे हपता मुझ पर जैसे पिले प्रसन्न रिते थे, वैसे िी पुनिः प्रसन्न िो जायें।"

यमराज ने कि- "आपके हपता आपको पिले की िी भााँहत अपने पुत्र के रूप में पिचान लेंगे। वे राहत्र को सुख की नीदं सोयेंगे और आपको मृत्ुयु के मुख से छूटा हुआ देख कर उनका िोध सवजथा िान्त िो जायेगा।"

हितीय वरदान के रूप में नहचकेता ने स्वगजदाहयनी अहि-हवद्या के हवषय में प्रश्न हकया। यमराज ने कि- "उस अहि-हवद्या का रिस् आपको हवहदत िो जायेगा और वि अहि आपके िी नाम से प्रहसद्ध िोगी।" तीसरे वर के रूप में ऋहषकुमार नहचकेता ने मृत्ुयु के रिस् के हवषय में हजज्ञासा प्रकट की। उसने पूछा- "मृत मनुष्य के सम्बन्ध में यि एक बडा संिय फैला हुआ िै। कुछ लोग तो ऐसा किते िैं हक मृत्ुयु के पित् भी आत्मा का अस्स्तत्व रिता िै और कुछ लोग किते िैं हक निीं ंरिता । मैं यिी जानना चािता हाँ। िे मृत्ुयुदेब! अपने रिस् को मुझे बतलाइए। क्या मनुष्य आपके पंजों ंसे बच सकता िै?"

यमराज ने कि- "नहचकेता! यि प्रश्न न कीहजए। पिले देवताओं ंको भी इस हवद्या में सन्ेदि हुआ था। वास्तव में यि हवषय बहुत िी गिन िै और सिज में िी यि समझ में निीं ंआने वाला निीं ंिै। अतएव आप कोई दूसरा वर मााँग लें। इस हवषय में मुझ पर दबाव न िालें। मैं आपको पुत्र, पौत्र, सुवणज, घोडे, साम्राज्य, दीघज जीवन, आपकी सेवा के हलए सुन्दर रमहणयााँ तथा रथाहद प्रदान करता हाँ।"

नहचकेता ने कि- "वे सभी भोग्य वस्ुतुएाँ क्षणभंगुर िैं। वे इस्ियों ंके तेज को क्षीण कर देती िैं। बडी-से-बडी आयु भी अल्प िी िै। यि दीघज जीवन अनन्त काल की तुलना में कुछ भी निीं।ं आप अपने रथ, रमहणयााँ, नृत्य तथा गीत अपने पास िी रखें। धन से मनुष्य कभी तृप्त निीं ंिो सकता। मैं तो केवल इसी वर की आपसे याचना करता हाँ हक मनुष्य काल का ग्रास बनने से क्योंकर बच सकता िै? आप मुझे एकमात्र यिी वर दें।"

यमराज ने इससे समझ हलया हक ऋहषकुमार नहचकेता ब्रह्महवद्या के उत्तम अहधकारी िैं। तब उन्ोंनें नहचकेता को बतलाया हक मनुष्य हकस उपाय से काल के िाथ से बच सकता िै। उन्ोंनें कि- "िे नहचकेता! अब मैं आपको अमरत्व-प्रास्प्त का उपाय बतलाता हाँ। आप मेरी बातें ध्यानपूवजक सुनें। मनुष्य वासनाओं ंसे बंधा हुआ िै। ये वासनाएाँ इस्ियों ंसे उत्पन्न िोती िैं और मनुष्य को ये िी जन्म-मरण के चि में फाँसाये रखती िैं। अतिः मनुष्य को इन वासनाओं ंको नष्ट करना चाहिए और अपने मन तथा इस्ियों ंका दमन करना चाहिए। यिी इस मागज का प्राथहमक पग िै। िरीर रथ के समान िै, इस्ियााँ घोडे िैं, मन लगाम िै, बुस्द्ध सारहथ िै, आत्मा रथ का स्वामी िै और हवषय उन घोडों ंके हवचरण के मागज िैं। घोडे हवषय-पदाथों के पीछे भागते-हफरते िैं और रथ को भी अपने साथ घसीट ले जाते िैं। इन घोडों ंको ठीक मागज पर चलाना चाहिए। जो मनुष्य हववेकिीन िै और हजसका मन सदा असंयहमत रिता िै, उस व्यस्क्त की इस्ियााँ असावधान सारहथ के उच्ृंछंखल घोडों ंकी भााँहत उसके वि में निीं ंरिीं।ं वि व्यस्क्त परम पद को प्राप्त निीं ंकरता, अहपतु बि बार-बार संसार-चि में भटकता रिता िै। परन्ुतु जो मनुष्य हववेक से सम्पन्न िै और हजसका मन हनत्य-हनरन्तर संयत रिता िै, उसकी इस्ियााँ सावधान सारहथ के अच्ेछे घोडों ंकी भााँहत उसके वि में रिती िैं। वि उस परम पद को प्राप्त िो जाता िै जिााँ से लौट कर पुनिः जन्म निीं ंिोता। वि संसार-मागज के पार पहुाँच कर हवष्ुणु भगवान् के उस सुप्रहसद्ध परम पद को प्राप्त िो जाता िै।

"उस अहितीय हनत्य आत्मा का ध्यान कीहजए जो हक हृदय-गुिा में स्स्थत िै। उस परम आत्मा में अपने मन को लगाइए। जब सभी ऐस्यि वासनाएाँ समूल नष्ट िो जायेंगी तब आपको अमरत्व, आत्म-साक्षात्कार अथवा ब्रह्मज्ञान प्राप्त िो जायेगा। िे नहचकेता! इस भााँहत आप काल पर हवजय पा सकेंगे। इतना िी मृत्ुयु-हवषयक रिस् िै।

"कामुक तथा बलिीन व्यस्क्त आत्मा को प्राप्त निीं ंकर सकते िैं। यि आत्मा न तो प्रवचन से, न तकजज्ञान से और न पठन-पाठन से िी प्राप्त िोता िै। यि आत्मा हजसे वरण कर लेता िै, केवल उसी के सामने वि अपने

स्वरूप को प्रकट करता ै। आत्मा के इस चुनाव का हनिय साधक के जीवन की पहवत्रता तथा हनिःस्वाथजता के आधार पर ोता ै।

"उहठए, जाहगए, श्रेष्ठ मिापुरुषों ंके पास जा कर इस अलौहकक आत्मा को जाहनए और इसका साक्षात् कीहजए। ज्ञानी जन उस (तत्त्ज्ञान के) मागज को छुरे की तीक्ष्ण एवं दुस्तर धार के सदृि दुगजम बतलाते ैं।"

यमराज ारा उपहदष्ट इस हवद्या और योग की समूपूणज हवहध को प्राप्त करके नहचकेता जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त तथा सब प्रकार की वासनाओं ंऔर हवचारों ंसे रहित ो कर परब्रह्म को प्राप्त ो गये। दूसरा भी जो कोई आत्मा के स्वरूप को इसी प्रकार जानने वाला ै, वि भी ऐसा ी ो जाता ै।

३. माकजणे्डेय की कथा

माकजणे्डेय भगवान् हिवजी के परम भक्त थे। उनके हपता मृकणुडु ने पुत्र-प्राप्त्यथज घोर तपस्ा की। भगवान् हिवजी उनके सामने प्रकट हुए और बोले-"ऋहष जी! आपको केवल सोलि वषज तक जीहवत रिने वाला गुणवान् पुत्र चाहिए अथवा हचरकाल तक जीहवत रिने वाला दुष्ट तथा मूखज पुत्र ?" मृकणुडु ने उत्तर हदया-"मेरे आराध्य देव! मुझे गुणवान् पुत्र ी प्राप्त ो।"

भगवान् हिवजी के वरदान-स्वरूप उनके एक पुत्र हुआ। इस ऋहषकुमार को जब अपने प्रारि का पता चला, तो वि पूरे मन से परम श्रद्धा और भस्क्तपूवजक भगवान् हिव की आराधना में तत्पर ो गया। अपनी मृत्यु के हनयत हदन वि ध्यान और समाहध में तल्लीन था; अत: उसके प्राण लेने के हलए यमराज स्वयं पधारे। अपनी रक्षा के हलए भगवान् हिव से प्राथजना करते हुए वि बालक हिव-हलंग से हलपट गया। यि देख यमराज ने हिव-हलंग समेत उस बालक को अपने पाि में बाँध हलया। उस हलंग से साक्षात् भगवान् हिव तत्काल ी प्रकट ो गये और उन्ोंनें उस बालक के रक्षाथज यमराज को मार ाला। उस हदन से भगवान् हिवजी मृतुंयुंजय तथा काल-काल के नाम से प्रहसद्ध हुए।

सभी देवता भगवान् हिवजी के पास गये और उनसे प्राथजना की-"पूजनीय मिादेव! े करुणा-सागर! उन्ें पुनिः जीवन-दान दीहजए।" उन देवों ंकी प्राथजना पर भगवान् हिव ने यमराज को पुनिः जीहवत कर हदया। उन्ोंनें ऋहषकुमार माकजणे्डेय को भी यि वरदान हदया- "तुम एक षोडष वषीय कुमार के रूप में सदा अमर बने रोगे।" अतिः वे हचरंजीवी ैं। आज भी दहक्षण भारत में यहद कोई बालक हकसी ी या पुरुष को नमस्कार करता ै, तो उसे वे आिीवाजद देते ैं- "माकजणे्डेय के समान हचरंजीवी बनो!"

एकादि प्रकरण

पत्र

१. मेरे पहत की आत्मा किााँ िै?

श्री स्वामी हिवानन्द जी!
आनन्द-कुटीर, ऋहषकेि।

परम पूज्य स्वामी जी!

आपके कृपा-पत्र के हलए अनेकानेक धन्यवाद। मेरे िोक के हनवारण में यि पत्र बहुत िी आश्वासनप्रद था।

मुझे यि जानने की उत्कट अहभलाषा िै हक इस समय मेरे पहत की जीवात्मा किााँ िोगी? इस िरीर को त्यागने के पिात् से पुनजजन्म प्राप्त करने तक उनके जीवात्मा की क्या दिा िोगी? 'हिवाइन लाइफ' पहत्रका में प्रकाहित 'मृत्यु के पिात् जीवात्मा की यात्रा' िीषजक लेख समझने का मैंने भरसक प्रयास हकया; परन्तु इसके कुछ अंि हविेषकर २६१ वें पृष्ठ के हितीय अवच्छेद से आगे मैं समझ न सकी। मुझे ऐसा लगता िै हक दूसरों के समझाने की अपेक्षा आपके समझाने से मैं अहधक स्पष्ट रूप से समझ सकूाँगी। मैं आपकी बहुत आभारी रहाँगी यहद आप मुझे यि बतलायें हक मृत्यूपरान्त जीवात्मा की क्या गहत िोती िै? हदवंगत आत्मा की िास्न्त के हलए िमें कौन-से पुण्य-कमज करने चाहिए? क्या जीवात्मा मत्यजलोक के लोगों को देख-सुन सकता िै? प्रेतात्म-हवद्या के

जानकार यि किते िैं हक वे तथाकहथत माध्यम की सियता से हदवंगत आत्मा के साथ वाताजलाप कर सकते िैं-क्या इसमें कुछ सत्यता िै? उस समय जो उत्तर देता िै, क्या वि सचमुच िी मृत व्यस्क्त की जीवात्मा िै?

आपकी हवनीत हिष्या

..

आनन्द-कुटीर फरवरी १२, १९४५
भाग्यिाली हदव्य आत्मा !

वन्दन और आराधन।

आपके कृपा-पत्र के हलए आभार। पे्रेतात्म-हवद्या, पे्रेतात्मा के दिजन, माध्यम आहद के मिो में न पहडए। वे आपको हवपथगामी बना देंगे। भूतात्मा के साथ व्यविार रखना तथा उसके साथ वाताजलाप करना-एक सनक िै। वास्तहवक अध्यात्मिाि से इसका कुछ भी सम्बन्ध निीं।ं जीवन का धे्येय तो इससे हभन्न िी िै। अपनी आत्मा की अहवनश्वरता का अनुभव करना िी आपके जीवन का लक्ष्य िै। यिी आपको सुख और िास्न्त प्रदान कर सकता िै।

आत्मा न तो जन्मता िै और न मरता िी िै। जैसे मनुष्य एक कमरे में से दूसरे कमरे में जाता िै, उसी प्रकार जीवात्मा एक चेतना-स्तर से दूसरे चेतना-स्तर को प्राप्त िोता िै। मृतु्यु और पुनजजन्म के बीच की अवहध में जीवात्मा सूक्ष्मतर जगत् में अपने कुछेक कमों का हिसाब करता िै। आपने हजस लेख के हवषय में हलखा िै, उसमें मृतु्यु के पित् जीवात्मा के प्रयाण तथा प्रत्यावतजन का जो वणजन हदया गया िै, उसका तात्पयज यि समझाना िै हक जीव थथूलता से िनैःिनैः सूक्ष्मता की दिा में क्योंकंर प्रवेि करता िै। सूक्ष्मता की अनुिहमक मात्रा के भाव को व्यक्त करने के हलए िी उसमें आकाि, वायु, धूम्र, अभ्र, मेघ, वृहष्ट आहद का उले्लेख िै। हनहित समय पर जीवात्मा पुनः नया िरीर धारण करता िै।

हदवंगत आत्मा को िास्न्त पहुाँचाने का सवोत्तम उपाय िै-कीतजन कीहजए, अहधक जप कीहजए, दूसरों ंके कष्ट को दूर कीहजए, हनःस्वाथज सेवा कीहजए और दान कीहजए। िाहदजक प्राथजना कीहजए।

अपने मृत पहत की आत्मा से सम्बन्ध थथाहपत करने का प्रयास न कीहजए। मृत व्यस्क्त की आत्मा से सम्बन्ध रखने से जीवात्मा के उच्चतर आनन्दमय लोकों ंकी ओर प्रगहत के मागज में बाधा पहुाँचती िै और वि भूलोक में आसक्त िो जाती िै। उस आत्मा को नीचे लाने का प्रयास न कीहजए। इससे उसकी िास्न्त भंग िोगी। माध्यम को अपने वि में रखने वाली आत्माएाँ अज्ञानी तथा कपटी िोती िैं। वे असत्य बोलती िैं।

आपकी िी आत्मा
डशवानन्द

२. स्वगज किाँ ि?ै

५ अगस्त, १९४३

माननीय मित्मन् !

'हिवाइन लाइफ' के अगस्त मास के अंक में 'ऋतु-धमज' नामक एक लेख प्रकाहित हुआ था। इसका अस्न्तम भाग मुझे कुछ अस्पष्ट-सा लगता ि ै। उसमें हलखा ि-ै

"इस थथूल िरीर का पररत्याग कर देने के पित् जीव स्वगज की ओर प्रयाण करता िै, कमज के फल समाप्त िोने तक वि विााँ हनवास करता िै, उसके पित् वषाज के िारा वि इस भूलोक में वापस आता िै और अन्न के साथ हमल जाता िै। इस भााँहत वि पुरुष के वीयज में और वीयज से िी के गभज में प्रवेि करता िै। तत्पित् वि जीव सातवें मिीने में भ्रूण (गभज-स्थथत बालक के िरीर) में प्रवेि करता िै।"

यहद आप इस सम्बन्ध में हनम्नांहकत हवषयों ंपर प्रकाि िालें, तो मैं आपका बहुत िी कृतज्ञ रहाँगा -

१. जिााँ जीवात्मा जाता िै, वि स्वगज किााँ िै और वि विााँ कैसे पहुाँचता िै? हजस भााँहत जीव को नीचे आने के हलए मेघ-हबन्दुओं ंकी आवश्यकता िोती िै, उसी भााँहत उसे ऊपर जाने के हलए भी हकसी वस्तु की सिायता की आवश्यकता पडती िी िोगी।

२. मेघ-हबन्दु तो बादलों ंके क्षेत्र में िी प्राप्त िो सकते िैं; परन्तु स्वगज और बादल-ये दोनों ंएकदेिीय निीं ं िैं। यहद बात ऐसी िी िै, तो जीवात्मा स्वगज से बादलों ंतक हकस प्रकार आता िै?

३. मैं जानता हाँ हक िमारा यि संसार कमज-भूहम िी निीं ंवरंच भोग-भूहम भी िै। यहद यि बात सच िै, तो यि किना क्योंकर ठीक िो सकता िै हक जीवात्मा अपने कममों का फल स्वगज में समाप्त कर िालता िै और सम्पूणज फलों ंके समाप्त िो जाने पर वि भूलोक को वापस आता िै?

४. ऐसा किा गया िै हक जीव पुरुष के वीयज के साथ िी के उदर में प्रवेि करता िै और हफर यि भी किा गया िै हक जीवात्मा सातवें मास भ्रूण में प्रवेि करता िै। ये दोनों ंबातें कैसे संगत िो सकती िैं? क्या जीव आत्मा से हभन्न िै? यहद ऐसी बात िै, तो उनमें परस्पर क्या भेद िै? और यहद ऐसी बात निीं ंिै, तो ये दोनों ं िी बातें क्योंकर सम्भव िो सकती िैं?

आपका हवश्वसनीय
के. बी. आर.

आदरणीय अमर आत्मन् !

नमस्कार और वन्दन ।

आपका पााँच तारीख का पत्र प्राप्त हुआ। जीवात्मा आकिा में यात्रा कर सकता िै। इसके हलए मेघ की बूाँदें, पृथ्वी आहद थथूल पदाथों के आश्रय की अहनवायज आवश्यकता निीं ंरिती िै। वि मेघ की बूाँदों ंके िारा पाहथजव जगत् में प्रहवष्ट िोता िै, बस बात इतनी िी िै। कुल सात लोक िैं। वे सभी एक-दूसरे के मध्य में अवस्थथत िैं और वे एक लोक दूसरे लोक की अपेक्षा अहधक सूक्ष्म िैं। स्वगज भी उनमें से िी एक लोक िै।

आध्यास्त्मक साधना तथा पुण्य-कमज के सम्पादन िारा प्रगहत करने के हलए िमारा यि जगत् एक साधन िै। इसके साथ िी अपने िुभािुभ कमों के पररणाम- स्वरूप जीवात्मा को सुख-दुिःख भोगने पडते िैं; परन्तु दुिःख की तुलना में भोग की कोई गणना निीं ंिै। दुिःख िी मनुष्य को वास्तव में बुस्द्धमान् तथा अन्तमुजखी बनाता िै। स्वगज में केवल भोग–िी-भोग िैं। विााँ दुिःख का नाम निीं ंिै।

सातवें मास तक जीव अव्यक्त अवथथा में रिता िै। 'जीव-भ्रूण (गभज-स्थथत हििु) में सातवें मास में प्रवेि करता िै' - इसका यि तात्पयज निीं ंहक जीवात्मा भ्रूण में नये रूप में प्रवेि करता िै। इसका भाव केवल यि िै हक सातवें मास में, जब थथूल िरीर की रचना पूणज िो जाती िै, वि व्यक्त िोने लगता िै।

आध्यास्त्मक पथ में आपकी भव्य प्रगहत िो ! परमेश्वर आपको सुखी रखे !
हस्नग्ध मान, प्रेम और ॐ के साथ

आपका िी आत्मा
डशवानन्द

३. मेरे पुत्र के हवषय में क्या ?

श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमिः ।

आपका कृपा-पत्र प्राप्त हुआ। इसने मुझे बहुत िी िास्न्त दी।

पूज्य स्वामी जी! मेरे हनम्नांहकत प्रश्नों ंके उत्तर प्राप्त निीं ंहुए। मेरी हवनम्र प्राथजना िै हक आप इस हवषय पर प्रकाि िालें।

१. गीता के चौदिवें अध्याय के चौदिवें तथा पन्द्रिवें श्लोकों ंमें उन लोगों ंके आगामी जीवन का वणजन िै हजनकी मृत्यु सत्त्, रज और तमोगुण की प्रधानता िोने पर िोती िै, परन्तु इस अवथथा में तो बच्चा अचेत था।

गीता के आठवें अध्याय के छठे श्लोक में यि बताया गया िै हक मरण-समय के हवचार िी आगामी जन्म के हवषय में हनणाजयक िोते िैं। एक पााँच वषज का बच्चा मरण-समय में जब अचेत अवथथा में पडा िो, तो क्या उसमें हकसी प्रकार की हवचारि–स्क्त िोने की आिा की जा सकती िै?

तो इस बालक को हकस प्रकार का दूसरा जन्म प्राप्त िोगा?

२. उस बालक के हित के हलए यहद कोई जप, दान आहद सत्कमज हकये जायें, तो क्या उससे उसकी आत्मा को कुछ लाभ पहुाँचेगा? मुझे लगता िै हक हकसी प्रकार की साधना हकये हबना िी वि बालक इस संसार से चल बसा।

३. मैं यि मानता हाँ हक प्राथजनाओं ंका प्रभाव पडता िै; परनु्तु यि एक िंकास्पद हवषय िै हक जब मनुष्य को उसके कमाजनुसार िी फल प्राप्त िोता िै और यि दैवी हनयम जब हक अटल िै, तो एक व्यस्क्त की प्राथजना से दूसरे की आत्मा को कैसे लाभ पहुाँच सकता िै?

४. जन्म लेने से पूवज िी क्या आयु की सीमा हनहित िोती िै?

आपका हवनीत

उत्तर :

आपके बालक की पााँच वषज की आयु में मृतु्यु िो गयी। इससे उसने अपने पूवज-जन्म-कृत हकसी बहुत िी बलवान् बुरे कमज का हिसाब चुकता कर हदया। अब वि उस बुरे कमज से मुक्त िो चुका िै। उसे अब उत्तम जन्म प्राप्त िोगा और उस स्थथहत में वि अहधक साधना कर सकेगा।

मनुष्य का अस्न्तम भाव उसके जीवन-भर के हवचारों ंका सार िोता िै। मृतु्यु से पूवज यहद मनुष्य अचेत िो गया, तो अचेत िोने से पूवज जो उसका अस्न्तम हवचार था, उस हवचार के आधार पर िी उसका अगला जन्म िोगा।

प्राथजना से बहुत िी लाभदायी पररणाम हनकलता िै। हजस भााँहत आप जमजनी में गये हुए अपने पुत्र की धन और सत्परामिज के िारा सियता कर सकते िैं, उसी भांहत आप प्राथजना िारा भी अपने पुत्र की इस लोक तथा परलोक में सियता कर सकते िैं। िुभ तथा पहवत्र हवचार और प्राथजना का बहुत िी सुखद प्रभाव पडता िै। उससे उस मनुष्य के अपने तथा उसके साहन्नध्य में रिने वाले दूसरे लोगों ंके जीवन को ढालने में हविेष सियता हमलती िै।

आयु पूवज-हनधाजररत िोती िै। काल की मयाजदा का कोई उल्लंघन निीं ंकर सकता िै। नन्ीं ंचीटी से ले कर ब्रह्मा तक इस संसार के सभी प्राहणयों ंको काल अपनी झपट में ले लेता िै।

४. प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : जीवात्मा स्वर्ा में डकतने काल तक डनवास करता िै**?**

उत्तर: वि पचास वषज अथवा पााँच सौ वषज तक रि सकता िै। यि इस लोक में हकये हुए उसके पुण्य-कमों के फल पर हनभजर करता िै।

प्रश्न: क्या स्वर्ा में तथा इस लोक में वषा की र्णना समान िी िै**।**

उत्तर: निीं, ं भूलोक के दि वषज स्वगज में रिने वाले देवताओं ंके दि हदन के समान िैं।

प्रश्न : मृतुयु िो**ने से पूवा क्या दशा** िो**ती** िै**?**

उत्तर: जीवात्मा सभी इस्यिों ंका आकुंचन कर उनें् अपने अन्दर खीचं लेता िै। हजस प्रकार दीपक में रखे हुए तेल के समाप्त िोने पर उसकी ज्योहत ि**नैः** ि**–नैः** क्षीण पडती जाती िै, उसी प्रकार थथूल इस्यिााँ भी धीमी िोती जाती िैं।

प्रश्न : जीवात्मा शरीर से डकस प्रकार बािर डनकलता िै**?**

उत्तर: सूक्ष्म िरीर इस थथूल िरीर में अभ्र की भााँहत सूक्ष्म रूप से बािर हनकलता िै।

प्रश्न : जीवात्मा डकस द्वार से शरीर का त्यार् करता िै**?**

उत्तर: जब प्राण ऊध्वज हदक् की ओर और अपान अधोहदक् की ओर चलते िैं, तब तक जीवन चालू रिता िै। परनुतु हजस क्षण प्राण अथवा अपान इन दोनों ंमें से कोई एक मन्द पड जाता िै, उसके साथ िी जीवन-स्क्ति बािर चली जाती िै। यहद अपान बन्द िो जाता िै तो जीवात्मा मस्तक, नाहसका, कान अथवा मुख

के िार से िरीर से बिार हनकल जाता िै। यहद प्राण बन्द िो जाता िै, तो जीवात्मा गुदा–िार से बिार हनकल जाता िै।

प्रश्न : जन्म और मृतुयु से ऊपर उठने में पे्रेतात्म-डवद्या क्या कुछ सियता कर सकती िै?

उत्तर: हबलकुल निीं।ं अमर आत्मा का ज्ञान अथवा ब्रह्मज्ञान िी आपको जन्म-मरण के चि से मुक्त कर सकता िै और अमरत्व तथा िाश्वत सुख प्रदान कर सकता िै।

प्रश्न : क्या डदवंर्त आत्मा तत्काल िी जन्म ले सकता िै?

उत्तर: ऐसा सम्भव िै; परनुतु ऐसे उदािरण बहुत िी कम पाये जाते िैं। यहद जीवात्मा की पुनिः जन्म लेने की इच्छा तीव्र िो, तो वि तुरन्त िी जन्म ले सकता िै। जीवात्मा को स्वगज अथवा नरक में अपने कमों के फल भोगने िोते िैं। यहद जीवात्मा मरने के पिात् तत्काल िी दूसरा जन्म ले लेता िै, तो उसे अपने पूवज-जीवन की बहुत-सी बातें स्मरण रिती िैं।

प्रश्न : नया शरीर धारण करने के डलए जीवात्मा को डकतने काल तक प्रतीक्षा करनी पड़ती िै?

उत्तर: इस हवषय में कोई हनहित बात निीं ंकिी जा सकती िै।

प्रश्न : क्या डदवंर्त आत्मा को मूता रूप धारण करने की शस्मत िोती िै?

उत्तर: हजनमें मानहसक िस्क्त अहधक िोती िै, वे उच्च आत्माएँ िी मूतज रूप धारण कर सकती िैं। वे मनुष्य का रूप धारण करती िै, पे्रेतात्माओं ंको बुलाने वाली कुसी पर बैठती िैं और विााँ पर उपस्थथत लोगों ंसे िाथ हमलाती िैं। उनका स्पिज उतना िी प्रभावक तथा गमज िोता िै हजतना हक एक जीहवत व्यस्क्त के िरीर का स्पिज। थोडी देर में इन पे्रेतात्माओं ंका िरीर अदृश्य िो जाता िै। पे्रेतात्माओं ंके हचत्र भी हलये गये िैं।

प्रश्न : प्राणमय शरीर क्या िै?

उत्तर: हजस भााँहत फुटबाल के अन्दर रबर की एक थैली िोती िै, उसी भााँहत थथूल िरीर के भीतर सूक्ष्म िरीर िोता िै, उसे प्राणमय िरीर किते िैं। यि प्राणमय िरीर थथूल िरीर का ठीक प्रहतरूप िै। प्राणमय िरीर पााँच कमेस्िय, पााँच ज्ञानेस्िय, पााँच प्राण तथा अन्तिःकरण-चतुष्टय अथाजत् मन, बुस्द्ध, हचत्त और अिंकार से बना िोता िै। अतिः इस सूक्ष्म िरीर को िी कोई-कोई छाया–िरीर (double) के नाम से पुकारते िैं। मृतुयु के पिात् यि सूक्ष्म िरीर िी थथूल िरीर को त्याग कर स्वगज को जाता िै। आत्मज्ञान को प्राप्त कर लेने पर इस सूक्ष्म िरीर की मृतुयु िोती िै और उसकी मृतुयु िोने पर िी मनुष्य जन्म-मरण के चि से मुक्त बनता िै।

प्रश्न : जन्मान्तर (Metempsychosis) तथा पुनरार्मन (Re-incarnation) में भेद क्या िै?

उत्तर: मानवात्मा का पिु के िरीर में जन्म लेना जन्मान्तर (Metempsychosis) किलाता िै। एक िी मानव आत्मा का पुनिः मानव िरीर में िी जन्म लेना पुनरागमन (Re-incarnation) किलाता िै।

प्रश्न : िमें अपने भूतकाल के जीवन की िृडत क्यों ंनिीं ंरिती ?

उत्तर: मिारी इस वतजमान सीहमत अवथथा में यहद िमें भूतकाल की सूमृहत िो, तो उससे िमारे वतजमान जीवन में बहुत-सी उलझनें उठ खडी िोंगी। अतिः चतुर एवं दयालु परमात्मा ने िमारे मानहसक हवकास की इस प्रकार व्यवथथा की िै हक हजसमें िमारे भूतकाल के जीवन की सूमृहत जब तक िमारे हलए भली प्रकार और हितप्रद न िो, तब तक िम उसे स्मरण न कर सकें। जीवन-पररवतजन की ऐसी घटनाओं ंका एक चि-सा बन जाता िै। जब िम इस चि के अस्न्तम छोर पर पहुाँच जाते िैं, तब िम इसे स्पष्ट रूप से देखते िैं। उस समय िम इन सभी जीवनों ंको पुष्पमाला की भााँहत एक िी व्यस्क्तत्व-सूत्र में गुंथे हुए पाते िैं।

पररहिष्ट १

पुनजजन्म

१. स्वगज में हनवास

जब पुण्यात्मा व्यस्क्त िरीर त्याग करते िैं, तो वे स्वगज को प्रयाण कर विााँ हनवास करते िैं। सामान्यतया ऐसा हवश्वास हकया जाता िै हक स्वगज में उनके हनवास की अवहध अस्सी से दो सौ चालीस वषज तक की िोती िै। स्वगज में उनके हनवास की अवहध समाप्त िोने के पित् वे इस भूलोक में पुनिः जन्म लेते िैं।

पुण्यात्मा जन मृतुयु के अनन्तर अपने पुण्यों, अपने सत्कमों, अपनी सेवाओं तथा अपने त्यागों के पुरस्कार-स्वरूप स्वगज-सुख का उपभोग करते िैं। जब उनके पुण्य-फल समाप्त िो जाते िैं, तो वे भूलोक में वापस आ जाते िैं।

भगवान् कृष्ण भगवद्गीता में कहते िैं :

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं डवशालं क्षीणे पुणे्ये मत्यालोकं डवशस्मन्त ।
एवं त्रयीधमामनुप्रपन्ना र्तार्तं कामकामा लभने्ते ।। (९-२१)

"वे उस हवपुल स्वगज-सुख का भोग करने पर पुण्य क्षीण िो जाने पर मत्यजलोक में पुनिः प्रवेि करते िैं। इसी प्रकार स्वगज की कामना से वेद-प्रहतपाद्य कमज का अनुष्ठान करने से संसार में बारम्बार गमनागमन करना िोता िै।"

हकनु्तु पुण्यात्मा व्यस्क्त जब स्वगज से पाहथजव जगत् में वापस आता िै, तो वि कुलीन तथा पुण्यात्मा पररवार में जन्म ग्रिण करता िै। पुण्य-कमज का यिी लाभ िै। व्यस्क्त के पुण्य-कमों का दोिरा प्रहतफल या पुरस्कार हमलता िै। स्वगज में हनवास करने के पित् भूलोक में वापस आने पर उसे अपने सत्कमों तथा आन्तर उहिकास के हलए अच्छा वातावरण, पररस्थथहतयााँ तथा सुयोग प्रदान करने वाला अच्छा जन्म प्राप्त िोता िै।

२. ज्ञानी की मरणोत्तर दिा

ज्ञानी, हजसने अपनी आत्म-सत्ता का परम ब्रह्म के साथ तादात्म्य अनुभव कर हलया िै, उसके हलए न तो जन्म िै और न लोकान्तरण । उसके हलए मुस्क्त भी निीं िै; क्योंहक वि पिले िी मुक्त िो चुका िै। वि सस्च्चदानन्द आत्मा की अनुभूहत में सुस्थथत िै।

ज्ञानी को इस हवश्व तथा अपने स्वयं के िरीर की धारावाहिक सत्ता मात्र भ्रास्न्त प्रतीत िोती िै। इसके आभास को वि दूर निीं कर सकता िै; पर वि अब उसको और धोखा निीं दे सकती िै। वि िरीर की मृतुयु के पित् ऊध्वजगमन निीं करता, हकनु्तु वि जिााँ िै और वि जो िै और सदा था-सभी प्राहणयों तथा पदाथों का प्रथमजात मूल-तत्त्; आद्य, िाश्वत, िुद्ध, मुक्त ब्रह्म-बना रिता िै।

रीर के रिते समय तथा िरीरपात िोने के पित् भी ज्ञानी अपने स्वरूप में हवश्राम लेता ि ै जो हक परम पूणज, परम िुद्ध, सत्, हचत् और आनन्द िै। हनम्नांहकत दृढ़ कथन में एक ज्ञानी की अपनी गम्भीरतम दृढ़ धारणा तथा अनुभूहत ि-ै"मैं असीम, अहवनािी, स्वयं-प्रकाि तथा स्वयमूभू हाँ। मैं अनाहद, अनन्त, अक्षय, अजन्मा तथा अमर हाँ। मेरी कभी भी उत्पहत्त निीं हुई िै। मैं हनत्य मुक्त, पूणज, स्वाधीन हाँ; एकमात्र में िी हाँ; मैं समूपूणज हवश्व में
व्याप्त हाँ, मैं सवजव्यापक तथा सबमें अन्तहवजष्ट हाँ; मैं परम िास्न्त तथा आत्यस्न्तक मोक्ष हाँ।"
ज्ञानी सदा जीहवत रिता िै। उसने अनन्त जीवन प्राप्त कर हलया िै। लालसाएँ उसे उत्पीहडत निीं करतीं, पाप उसे कलंहकत निीं करते, जन्म तथा मृत्यु उसे स्पिज निीं करते। वि सभी लालसाओं तथा आिाओं से मुक्त िोता िै। वि सदा अपने सस्च्चदानन्द-स्वरूप में हवश्राम लेता िै। वि सभी में एक िी असीम आत्मा के तथा एक असीम आत्मा में सबके दिजन करता ि-ै असीम आत्मा जो हक उसकी अपनी िी सत्ता िै। वि हचदानन्दमय असीम आत्मा के रूप में सदा बना रिता िै।

३. पिु-योहन में अधोगमन

हिन्दूिास्त्र किते िैं हक मनुष्य अपने िुभािुभ कमों के अनुसार देव, पिु, पक्षी, वनस्पहत अथवा पाषाण बन सकता िै। उपहनषदें भी इस कथन का समथजन करती िैं। कहपल भी इस हवषय पर सिमत िैं। हकन्तु, बौद्ध
तथा कुछ पािात्य दािजहनक हिक्षा देते िैं- 'प्राणी जब एक बार मानव-जन्म ले लेता िै, तो हफर उसकी पुनिः अधोगहत निीं िोती । अिुभ कमों के कारण पिु-योहन में जन्म लेने की आवश्यकता निीं िै। उसे मानव-योहन में िी अनेक प्रकार से दण्ड हदया जा सकता िै।"
जब मनुष्य देव-रूप धारण करता िै, तो उसके सभी मानवीय संस्कार, स्वभाव तथा प्रवृहत्तयाँ प्रसुप्तावथथा में रिती िैं। जब मनुष्य श्वान का स्वरूप धारण करता िै, तो केवल पािवी प्रवृहत्तयाँ, स्वभाव तथा संस्कार प्रकट िोते िैं। मानवीय प्रवृहत्तयाँ दहमत रिती िैं। कुछ कुत्तों के साथ राजा के राजप्रासादों तथा अहभजातवगीय लोगों के प्रासादों में राजसी व्यविार हकया जाता िै। वे मोटर गाहडयों में चलते िैं, स्वाहदष्ट भोजन करते िैं और गद्दों पर सोते िैं। ये सब अध:पहतत आत्माएँ िैं।

४. थथूलिरीर की मृत्यु के पित् भी हलंगिरीर जीहवत रिता िै

मृत्यु के पित् पंचतत्त्वों से हनहमजत यि थथूल िरीर साँप के हनमोक या केंचुल की भाँहत त्याग हदया जाता िै। हलंगिरीर-हजसमें उन्नीस तत्त् अथाजत् पाँच कमेस्न्द्रयाँ, पाँच ज्ञानेस्न्द्रयाँ, पंच-प्राण, मन, बुस्द्ध, हचत्त तथा अिंकार िोते िैं-स्वगज को जाता, भूलोक को वापस आता तथा पुनजजन्म ग्रिण करता िै।

हलंगिरीर में िी अतीत के सब कमों के संस्कार रिते िैं। यि िरीर आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने और तत्पररणाम स्वरूप मोक्ष-लाभ करने तक बना रिता िै। तब इसका हवघटन िो जाता िै और इसके घटक तन्मात्राओं अथवा अव्यक्त के मिासागर में हमल जाते िैं।

५. आगामी जन्म का स्वरूप

व्यस्क्त के मरण-काल में उसके मन में जो अस्न्तम सबल हवचार अहभभूत रिता ि ै, विी उसके आगामी जन्म के स्वरूप को हनधाजररत करता ि ै। यहद मृतुयु के समय उसके मन में चाय का हवचार आता ि ै और यहद उसने सत्कमज हकये ि ैं, तो वि अपने आगामी जीवन में चाय बागान का प्रबन्धक बनता ि ै, और यहद उसने कोई पुण्यप्रद कायज निीं ंहकया, तो वि चाय बागान में भाररक रूप में जन्म लेता ि ै।

मरते समय एक मद्यप का हवचार मद्य के सम्बन्ध में िोता ि ै। व्यहभचारी व्यस्क्त जब मरणासन्न िोता ि ै, तो उसका हवचार िी-हवषयक िोता ि ै। मैंने एक ऐसे मरते हुए व्यस्क्त को देखा, हजसे नस्-सेवन की आदत थी। जब वि अचेतावथथा में था, तो अपना िाथ बार-बार अपनी नाहसका की ओर ले जाता और काल्पहनक रूप से सूाँघता था। यि स्पष्ट ि ै हक उसका हवचार नस् के हवषय में था। एक औषधालय का हचहकत्साहधकारी अपिब्द प्रयोग करने का व्यसनी था, वि जब मरणावथथा में था, उसने सभी प्रकार के अपिब्द तथा अश्लील िब्दों ंका प्रयोग हकया। मैं इससे पूवज अन्यत्र बतला चुका हाँ हक राजा जडभरत ने करुणावि एक मृग की बहुत देख-रेख की। धीरे-धीरे उनमें राग उत्पन्न हुआ। जब वे मरणावथथा में थे, तो उनके मन में एकमात्र उस मृग का हवचार िी अहभभूत था; अतिः उन्ें मृग-रूप में जन्म ग्रिण करना पडा।

प्रते्येक हिन्दू-पररवार में मरते हुए व्यस्क्त के कानों ंमें 'िरर ॐ', 'राम', 'नारायण' आहद भगवान् का नाम फूंका जाता ि ै। इसका मूल कारण यि ि ै हक मरने वाला व्यस्क्त भगवान् के नाम और रूप को स्मरण करे और उसके िारा आनन्द-धाम पहुाँच जाये। यहद व्यस्क्त अनेक वषों तक धाहमजक जीवन-यापन करता ि ै और सुदीघज काल तक जप तथा भगवान् का ध्यान करता ि ै, तभी वि मरण-काल में स्वभाववि भगवान् और उनके नाम को स्मरण कर सकेगा।

६. स्वगज तथा नरक के हवषय में वेदास्न्तक दृहष्टकोण

वेदान्त के अनुसार स्वगज तथा नरक केवल मन की सृहष्ट ि ैं। धमाजत्मा लोगों ंको सद्गुण, परोपकाररता, पे्रम तथा सेवा के और अहधक कायज करने की ओर अहभपे्ररेरत करने के हलए स्वगज के आनन्दों ंका उले्लेख हकया जाता ि ै। दुष्ट लोगों ंको उनके दुष्ट, अनैहतक, अहनष्टकर तथा िाहनकारक कामों ंसे रोकने के हलए िी नरक की यातनाएाँ
प्रसुतुत की जाती ि ैं।
मानव-मन िुद्धता, साधुता, पे्रम, सेवा आहद से अपने चतुहदजक् अपने स्वगज का हनमाजण करता ि ै। वि अपहवत्रता, भूल, बुराई, अज्ञान आहद िारा अपने हलए कष्ट और िोक उत्पन्न करता ि ै हजन्ें नरक की संज्ञा दी गयी ि ै। कहव हमल्टन ने अपने गीत में सच िी किा ि ै हक मन का अपना थथान ि ै और वि अपने अन्दर िी स्वगज तथा नरक की सृहष्ट कर सकता ि ै।

मनुष्य अपने सत्स्वरूप में, अपने आत्म-रूप में हनत्य, अजन्मा, अनन्त तथा प्रकाि, आनन्द और िास्न्त-स्वरूप ि ै। अज्ञान िी उसके दुिःख, पररसीमन, वैयस्क्तकता, भूल तथा जन्म-मृतुयु का मूल कारण ि ै। आत्म-साक्षात्कार व्यस्क्त को असीम िास्न्त, स्वतन्त्रता तथा आनन्द के साम्राज्य में मुक्त कर देता ि ै।

पौराहणक साहित्य इस बात की पूणज रूप से पुहष्ट करता ि ै हक एक नरक नामक स्वावलम्बी लोक ि ै जो स्वयं में अवस्थथत ि ै। कल्पना कीहजए हक एक दुष्ट तथा हचरकाल से मद्य पीने वाला व्यस्क्त ि ै। वि प्रते्येक प्रकार के दुगुजणों ंके प्रहत असंवेदनिील ि ै। यमराज के दूत मृतुयु के अनन्तर उसे नरक नामक लोक में ले जाते ि ैं और उसे तरसाने वाली यातनाओं ंतथा उन झुलसाने वाले मरुथथलों ंमें चलने के सन्ताप को भोगने के हलए छोड देते ि ैं जिााँ उसकी मद्य पीने की तडफाने वाली हपपासा िान्त निीं ंिोती। इस भााँहत व्यस्क्त को कष्ट के रूप में अपनी

भूलों ंका बदला चुकाना तथा अपनी आत्मा को िुद्ध करना िोता िै। इसी भााँहत एक स्वगज नामक स्वावलम्बी लोक िैं जिााँ धमाजत्मा व्यस्क्त को ले जाया जाता िै।

७. ऐन, जो पूवज-जन्म में हसपािी थी

जब धरती के अपने जीवन से बहुत मोि रिता िै और इस जीवन की कामनाएँ और सम्बन्धी धरती की घटनाओं से जुडे रि जाते िैं, तब अहधकांि व्यस्क्त अपनी मृतुयु के तुरन्त बाद धरती पर िी जन्म लेते िैं। उनकी आत्माएँ दूसरे लोकों ंमें निीं ंजातीं। उनमें से कुछ लोग (यद्यहप ऐसा बहुत कम िोता िै) अपने अनन्तररत गत जन्म की घटनाएँ स्मरण रखते िैं। 'फेट' पहत्रका में इस प्रकार की दो घटनाएँ वषज १९५४ में प्रकाहित हुई थीं। इनका हववरण हनम्नांहकत िै :

चार वषीय ऐन, अपने हपता से बोलीिााँ, मैं इस धरती पर कई बार आयी हाँ।"

उसके हपता िाँसने लगे। इस पर ऐन नाराज िो कर पैर पटकते हुए बोली- "िााँ–ााँ, आयी हाँ, आयी हाँ, आयी हाँ, एक बार मैं आदमी बन कर कनािा में जन्मी थी। तब मेरा नाम हलिस फेबर था। मैं तब एक हसपािी थी तथा मोरचे लगाये थे।"

कई मिीनों ंकी खोजबीन के बाद यि पता चला हक कनािा में सचमुच एक युद्ध हुआ था, हजसमें एक लेफ्टीनेन्ट ने अकेले िी मोरचे साँभाले थे। उस लेफ्टीनेन्ट का नाम था एलॉयहसयस ला फेने। इसी नाम को ऐन ने अपने ढंग से उच्चाररत हकया था-हलिस फेबर ।

८. पूवज-जन्म की माँ से भेंट

बरेली में जन्मे हवश्वनाथ ने तीन वषज की आयु से िी पीलीभीत नामक कस्बे में हबताये गये अपने गत-जीवन का हववरण देना प्रारम्भ कर हदया था। उसके माता-हपता ने इसका अथज यि लगाया हक बालक जल्दी िी मर जायेगा। इसहलए अपने पुत्र की इस असाधारण किानी को उन्होंने भरसक हछपाये रखा।

बालक हवश्वनाथ ने अपने पीलीभीत के उस स्कूल का भी नाम बताया हजसमें वि पढ़ता था। यि भी बताया हक उसके पडोसी का नाम लाला सुन्दरलाल था। सुन्दरलाल की तलवार और उनके घर के िरे फाटक का हववरण भी उसने हदया।

इन हववरणों ंकी जाँच करने के हलए बालक को पीलीभीत ले जाया गया जिााँ इस जन्म में वि पिले कभी निीं ंगया था। विााँ उसने पूवज-जन्म के मकान (जो अब टूटी-फूटी िालत में था) के हवहभन्न भागों ंके बारे में सिी-सिी जानकारी दी। उसने मकान के एक ऐसे जीने के बारे में भी बताया जो बािर से हदखायी निीं ंपडता था। उसको एक 'सामूहिक फोटो' (Group photo) हदखलाया गया। उसने उसमें अपने पूवज-जन्म के चाचा की िी निीं, वरन् एक बालक के रूप में बैठे हुए अपनी भी फोटो पिचान ली। उसने जो कुछ बताया, हबलकुल सिी हनकला। पता चला हक पूवज-जन्म में उसका नाम लक्ष्मीनारायण था तथा ३२ वषज की आयु में यक्ष्मारोग से पीहडत िो कर उसका देिान्त िो गया था।

लक्ष्मीनारायण की माँ उन हदनों ंजीहवत थीं।ं उन्होंनें हवश्वनाथ से तरि-तरि के प्रश्न पूछे। उसने हबना हकसी हिचक के िर प्रश्न का सिी-सिी उत्तर हदया।

९. बमी भाषा बोलने वाले सोल्जर कैस्टर

जाजज कैस्टर ने लन्दन के 'सण्डे एक्सप्रेस' (१९३५) में अपने भूतकाल के हकतने िी अनुभवों ंका हववरण हदया था। वि सैहनक थे और उनका जन्म सन् १८८९ में हुआ था। बाल्यावथथा से िी वि स्वप्न में िुद्ध बमी भाषा बोलते थे। सन् १९०७ में वि सेना में भती िो गये और सन् १९०९ में जब उनकी २० वषज की वय थी, तब उनका थथानान्तरण बमाज दिे के मेहमयो नगर को िो गया। उन्हें विााँ ऐसा लगता हक 'मैंने इस दिे को देखा था, इसमें रिा था, बमी भाषा बोलता था और ईरावदी नदी को जानता था।' उन्होंनें लिा कापोरल कैररगोन को बतलाया हक ईरावदी के दूसरे तट पर एक हविाल देवालय िै। उसकी दीवाल में चोटी से ले कर नीचे तक एक मोटी दरार िै और उसके पास िी एक घण्टा पडा हुआ िै। उनकी बतलायी हुई वे सभी बातें अक्षरिः सत्य हनकलीं।ं

१०. जमापुखुर ग्राम का युवक

कलकत्ता के जमापुखुर ग्राम का एक अठारि वषज का बालक अपनी मरण–य्या पर पडा था। उसके माँ-बाप ने उसको स्वथथ बनाने के हलए एक साधु पुरुष के चरणों ंकी िरण ली और साथ िी अन्य उपाय भी करते रिे। उस लडके की चाची उन साधु को दोष देने लगी हक उनमें हवश्वास रखने के कारण िी वि लडका मर रिा िै। इसे सुनते िी लडका बोल उठा :

"साधु पुरुष को दोष निीं ंदेना चाहिए। आप सब उनमें अपना हवश्वास निीं ंरख सके । यहद मेरे भूतकाल के कमों को देखा जाये, तो जो-कुछ मेरे हिर पर बीत रिी िै, वि कुछ भी निीं ंिै। मुझे तो इससे सिस्रों ंगुणा अहधक कष्ट भोगना था। मैं अपने गत जीवन में एक रेलवे आहफस में काम करता था। मैंने एक मनुष्य को मार कर उसके टुकडे-टुकडे कर िाले। ओि; मैंने उसे हकतनी पीडा पहुँचायी! वि कमज किााँ जायेगा ?

"यि बात आज से पचास वषज पिले हुई थी। उस समय िुके स्टरीट थाना एक प्रहसद्ध कमजचारी के अहधकार में था। एक आाँख खराब िोने के कारण लोग उसे 'काना साजेण्ट' किते थे। उसने मुझे पकड हलया। फााँसी से तो मैं बच गया; परन्तु मुझे कठोर कारावास का दण्ड हमला।"

अपनी माँ को सम्बोहधत करते हुए उस बालक ने किा- "माँ! अब मैं जाता हाँ। क्या आप जानती िैं हक ऐसा हकस हलए? (अपने हपता जी की ओर लक्ष्य करके) साथ वाले कमरे में जो मनुष्य सो रिा िै, वि हपछले जन्म में मेरा पुत्र था। उसने मुझे दुिःखी बनाने का भरसक प्रयत्न हकया। भूतकाल में इसने जो कमज हकये, उनके पररणाम का इसे पता चल जाये-इसहलए मैं इसके पुत्र के रूप में इस जन्म में आया हाँ। अभी इसे पता लगेगा हक पुत्र अपने हपता को कैसे-कैसे दुिःख और क्लेि देता िै। कमज कभी भी टाला निीं ंजा सकता िै। उसको सिन करने से िी छुटकारा हमलता िै।"

(इस बात की खोज करने से ऐसा पता चला हक िुके स्टरीट थाने का अहधकारी सारे ििर में 'काना साजेण्ट' के नाम से प्रहसद्ध था। उसने पचास वषज पूवज अपने पद से अवकाि ग्रिण हकया था।)

११. हिल-दहक्षण अमरीका का पयजवेक्षक

श्री हिल 'पीपुल' पत्र के सम्पादक को पत्र हलखते िैं "मेरा यि दृढ़ हवशचवास था हक दहक्षणी अमरीका के कुछ प्रदेि मेरे पररहचत िैं। मुझे बार-बार ऐसे थवचपचन आते िैं हक मैं एक पयजवेक्षक हाँ और मैं उष्णकहटबन्धीय वनों ं
में एकाकी पयजटन करता हाँ। उस समय काले लोगों ंका एक दल अकस्मात् मेरे सामने आ पहुाँचा, उनके साथ उनकी िी भाषा में बातचीत की; परनुतु हकसी कारण से वे मुझ पर िोहधत िो उठे और उनके नेता ने मुझे मार िािा। अन्ततिः मैं रॉयल मेल लाइनसज में जिाज का एक कमजचारी (steward) बना और दहक्षण अमरीका पहुाँच गया। विााँ मैंने देखा हक मैं विााँ की हकतनी िी अनजानी गहलयों ंऔर इमारतों ंके नामों ंका ठीक-ठीक अनुमान पिले से िी लगा लेता था और जब मैं ररयो-हि-जनेरो, संटोज़ तथा बूयूहनस आयसज के मागज से गया, तो मुझे ऐसा लगा िै हक मैं अवश्य िी पिले कभी इस मागज से गया िै। आपनी इन समिुी यात्राओं ंमें एक बार मैंने िैहनि लेखक को संटोज़ के बन्दरगाि से आपने जिाज पर हबठाया। एक हदन उसने मुझे अपने कमरे में बुला भेजा और किा :

'स्स्टविज! एक उलेल्खनीय घटना पिले कभी हुई थी। आप उस घटना से भले िी अनजान िों;ं परनुतु आपका उसके साथ सम्बन्ध मालूम पडता िै।'

"ऐसा कि कर उन्िोंनें मुझे मनुष्य की एक खोपडी हदखलायी। अमेजन की घाटी में िेर का हिकार करने वाले लोगों ंसे वि उन्िें प्राप्त हुई थी। उन्िोंनें उस मस्तक को एक हविेष प्रहिया िारा उसके सामान्य आकार से आधा छोटा बना कर अपने पास सुरहक्षत रख छोडा था। उसे देख मैं स्तस्म्भत रि गया और मुझे ऐसा लगा हक मैं अपने िी हिर का ठीक प्रहतरूप देख रिा हाँ।"

१२. बजीतपुर के िाकबाबू का लडका

(डदनांक १५-७-३६ के एिवांस पत्र से)

फरीदपुर के हनकट बजीतपुर के िाकबाबू का तीन वषीय पुत्र एक हदन रोने लग पडा और अपने घर जाने का आग्रि करने लगा। एक प्रश्न के उत्तर में उसने बतलाया-

"हचटगााँव के फरीदपुर का मैं हनवासी हाँ। लक्षम रेलवे स्टेिन से एक सडक िमारे गााँव जाती िै। विााँ मेरे तीन पुत्र और चार पुहत्रयााँ िैं। मंहदर की काली बाडी मेरे हनवास-थथल से अहधक दूर निीं ंिै। काली बाडी में िी सवाजनन्द जी ने मोक्ष प्रापचत हकया था। विााँ पर काली माता की कोई प्रहतमा निीं ंिै। एक हविाल वट वृक्ष िै और मूल में िी पूजा की जाती िै। विााँ पर एक ऊंचा ताि का भी वृक्ष िै।"

उस बालक के हपता ने कभी हचटगााँव, लक्षम अथवा काली बाडी निीं ंदेखी िै। यि बालक हकतने िी बार ऐसे गीत गाता िै, हजसे हक उसने अपने इस जीवन में कभी सुना भी निीं।ं

१३. अपने माता-हपता को भूल जाने वाली िंगरी देि की बाहलका

बुिापेस्ट नगर में सन् १९३३ में िंगरी देि के एक इंजीहनयर की पन्दरि वषज की एत्री मरणिय्या पर पडी हुई थी। प्रकट में तो वि बाहलका मर गयी; परनुतु कुछ काल के पिात् वि पुनिः चैतन्य िो उठी, वि अपनी

मातृभाषा िंगेररयन पूणजतिः भूल गायी और केवल से्पेहनि भाषा में िी बातचीत करने लगी। वि अपने माता-हपता को भी पिचान निीं ंसकती िै। उनके हवषय में वि किती- "ये भले मानस मेरे साथ बहुत िी सज्जनता का व्यविार करते िैं। वे मेरे माता-हपता िोने का हदखावा करते िैं; परनु्तु वे मेरे माता-हपता िैं निीं।ं" एक से्पेहनि दुभाहषये से उसने किा- "मेरा नाम सीनोर लूहसि अत्तरज़िज सैस्यियो िै। मैं मैहिरि के एक श्रहमक की पत्नी हाँ और मेरे चौदि बचे्चे िैं। चालीस वषज की अवथथा में मैं कुछ बीमार पडी। कुछ हदन पूवज में मर गयी अथवा मुझे ऐसा
प्रतीत-सा हुआ हक मैं मर रिी हाँ। अब मैं इस अनजाने दिे में आ कर स्वथथ िो गयी हाँ।"

वि बाहलका अब से्पेहनि गीत गाती िै, से्पेन दिे के हविेष प्रकार के भोजन बनाती िै और मैहिरि नगर का बहुत िी स्पष्ट वणजन करती िै, हजसे हक उसने कभी देखा निीं।ं

१४. हदल्ली के जंगबिादुर की पुत्री

हदल्ली के व्यापारी लाला जंगबिादुर की आठ वषज की पुत्री ने जबसे बोलना आरम्भ हकया, तभी से वि किती िै हक हपछले जन्म में उसका हववाि मथुरा के एक सज्जन के साथ हुआ था। उनका पता भी उसने बतलाया।
जब उसके पूवज-जीवन के पहत को इस बात की सूचना दी गयी, तो उन्ोंनें अपने भाई को भेजा। इस बाहलका ने उनें् पिचान हलया। तदनन्तर जब उसका पहत उससे हमलने आया, तो उनें् भी उसने तुरन्त पिचान हलया और उनें् हकतनी िी बातें ऐसी बतलायीं ंहजनें् वि सज्जन तथा उनकी पिली पत्नी िी जानते थे। उसने उनें् यि भी बतलाया हक उसने उनके घर के अन्दर एक थथान में सौ रुपये गाड रखे िैं।

१५. कानपुर के देवीप्रसाद का पुत्र (अमृत बाजार पहत्रका, हद.१-५-३८)

कानपुर के पे्रेमनगर में रिने वाले देवीप्रसाद भटनागर का एक पााँच वषज का पुत्र किता िै हक पूवज-जन्म में उसका नाम हिवदयाल मुख्तार था और सन् १९३७ में कानपुर के उपिव के समय उसकी ित्या की गयी। उसके दो मुसलमान हमत्रों ंने छलपूवजक उसे घर में ले जा कर मार िाला। एक हदन वि बालक अपने पिले के घर जाने
का आग्रि करने लगा, जिााँ उसकी पत्नी बीमार पडी थी। उस बालक को विााँ ले जाया गया और उसने तुरन्त िी अपनी पत्नी को, अपने बच्चों ंको तथा अन्य वसु्तुओं ंको पिचान हलया।

१६. िेढ़ वषज की आयु में गीता-पाठ

(अमृत बाजार पडत्रका के प्रयार्राज के संवाददाता की सूिना)

झााँसी का एक तीन वषज का बालक भगवद्गीता तथा रामायण का मौस्खक पाठ करता िै और उसका उच्चारण िुद्ध िोता िै। जब वि बालक पााँच मास का था, तभी से वि कुछ किने का प्रयास करता; हकनु्तु बोल न सकता था। िेढ़ वषज की आयु प्राप्त करने पर वि अपने श्रोताओं ंको गीता सुनाने लगा।

१७. पााँच वषज की बाहलका तथा हपआनो

(पीपुल, डद. १०-६-३७)

ब्लैकपूल की एक पंचवषीय बाहलका गुहडयों ंके साथ खेलने के थथान पर हपआनो बजाती ै। उसने हपआनो बजाने की हिक्षा कभी निीं ंली; हफर भी वि उसे बडी कुिलता से बजा लेती ै। जो कोई भी मधुर राग वि सुनती ै, उस पर अच्छी तरि से हपआनो बजा सकती ै। इसके साथ ी वि अपनी भी दो-एक रचनाएँ
बजाती ै।

१८. कलकत्ता के बैररस्टर की पुत्री

कलकत्ता के ाई कोटज के बैररस्टर की लडकी जब वि केवल तीन वषज की थी, तभी वि घर का फिज बहुत ी सुन्दर ढंग से साफ करती थी। पूछने पर उसने बतलाया-

"बेलदंग में मैं अपने श्वसुर के घर की सफाई हकया करती थी। मैं पूजा करती तथा ठाकुर जी का भोग
लगाती थी। मेरे श्वसुर के घर में एक ोल मंच था। ोल-यात्रा के हदन म ठाकुर जी को एक हिंिोले में पधराते थे और उसको खूब अबीर मलते थे।"

यि बाहलका बडे आचार से रिती ै और अपने माता-हपता के साथ खान-पान तथा उठने-बैठने का
व्यविार निीं ंरखती; क्योंहक वे लोग पाात्य सभ्यता के प्रभाव में आ गये ैं; अतः उस बाहलका के हवचार से वे लोग असूपृश्य ैं। उसका भोजन अलग पकाया जाता ै।

इन बातों ंकी सत्यता की जाँच आज (सन् १९४३ में) भी सरलता से की जा सकती ै।

१९. जीव के पुनजजन्म की एक हवहचत्र घटना

(अमृत बाजार पडत्रका, अर्स्त १९४३)

मुरादाबाद, अगस्त २३- बदायूँ हजले के हबसौली ग्राम का प्रमोद नाम का एक बालक १५ अगस्त को जब
से यिाँ आया, तब से यिाँ पर एक सनसनी-सी फैल गयी ै। इस बालक ने अपने पूवज-जन्म की घटनाएँ बतलायीं ं और वे सवाांितः सत्य हनकलीं।ं यिाँ पर उसके इस दो हदवसीय हनवास-काल में सिस्रों ंव्यस्क्तयों ंने, हजनमें इस नगर के हकतने ी गणमान्य व्यस्क्त भी सस्म्महलत थे, उससे भेंट की और अन्त में यि हनहित हुआ हक यि पुनजजन्म की एक असस्न्दग्ध घटना ै। साढ़े पाँच वषज का यि बालक किता था हक वि श्री बी. मोनलाल का भाई
परमानन्द ै हजसकी मृतुयु ९ मई, १९४३ को सिारनपुर में जीणज उदर-िूल के कारण हुई थी। श्री बी. मोनलाल मैससज मोन ब्रदसज की प्रहसद्ध केटररंग फमज के माहलक ैं। इस फमज की ाखाएँ सिारनपुर तथा मुरादाबाद में भी ैं।

परमानन्द की मृतुयु के ठीक नौ मिीने छि हदन के पिात् १५ माचज, १९४४ को हबसौली ग्राम में थथानीय इण्र
कालेज के प्राध्यापक बाबू बाँकेलाल माज, ी, एम. ए. के पुत्र-रूप में उनका जन्म हुआ। बालक ने जब से बोलना आरम्भ हकया, तभी से मोअन, मुरादाबाद तथा सारनपुर अथाजत् सिारनपुर स्पष्ट रूप से किने लगा और बाद में वि 'मोन ब्रदसज' िब्द भी स्पष्ट रूप से किने लगा। जब कभी वि अपने सम्बस्न्धयों ंको हबसुकुट, मक्खन आहद खरीदते देखता, तो वि किता हक 'मेरी मुरादाबाद में हबसुकुट की बहुत बडी फैक्टरी ै।' जब कभी वि कोई बडी दुकान देखता ै, तो किता ै हक 'मुरादाबाद की मेरी दुकान सभी दुकानों ंसे बडी ै।' कभी-कभी वि अपने माता-हपता से उसे मुरादाबाद ले चलने के हलए आग्रि करता। यि एक हवहचत्र संयोग ै हक पस्ण्डतों ंने उसकी जन्म कुण्डली में उसका नाम परमानन्द ी रखा; परनुतु उसके बडे भाई का नाम वमोद था। इससे उसका

नाम भी प्रमोद रखा गया; परनुतु बालक तो सदा अपनी इस बात पर अडा रि हक उसका नाम परमानन्द ि ै और मुरादाबाद में उसके भाई, पुत्र, पुत्री और एक पत्नी ि ैं।

इस वषज के प्रारम्भ में ि ी ऐसी बात हुई हक हबसौली ग्राम के लाला रघुनन्दन लाल ने मुरादाबाद में रिने वाले अपने एक सम्बन्धी से इस बालक के तथा मोिन ब्रदसज के साथ अपने सम्बन्ध ि ोने के उसके दावे के हवषय में चचाज की। तदुपरान्त उस सम्बन्धी ने फमज के माहलक श्री मोिनलाल से वे सब बातें बतलायी। अपने कुछेक सम्बस्न्धयों ंके साथ श्री मोिनलाल जी हबसौली पधारे और उस बालक के हपता से भेंट की। बालक अपने एक सम्बन्धी के साथ दूर ग्राम में गया हुआ था; अत: उससे वे न हमल सके। श्री मोिनलाल ने प्राध्यापक बाँकेलाल से उस समय बालक को मुरादाबाद लाने के हलए प्राथजना की। श्री बाँकेलाल ने इसे स्वीकार कर हलया और तदनुसार यि हनिय हुआ हक आगामी स्वतन्त्रताहदवसोत्सव पर प्राध्यापक जी उस बालक को मुरादाबाद लायेंगे।

पन्दरि अगस्त को जब उस बालक को मुरादाबाद ले गये, तो गाडी से उतरते ि ी उसने अपने भाई को तुरन्त पिचान हलया और उसके गले से हलपट गया। से्टिन से श्री मोिन लाल जी के घर जाते समय उस बालक ने मागज में टाउनिाल को पिचान हलया और बोला हक 'अब मेरी दुकान हनकट ि ी ि ै।' उस बालक की परीक्षा के हलए पिले से ि ी व्यवथथा की गयी थी, तदनुसार मोिन ब्रदसज की दुकान आ जाने पर ताँगा रोका निीं ंगया; परनुतु उस बालक ने तुरन्त ि ी ताँगा रुकवा हदया। बालक दुकान के सामने वाले घर की ओर बढ़ा और जिाँ पर स्वगीय परमानन्द अपनी पूजा की सामग्री तथा हतजोरी रखते थे, उस कमरे में चला गया। कमरे में प्रवेि करते ि ी उसने िाथ जोड कर नमस्कार हकया। जब उस बालक ने पूवज-जन्म की अपनी पत्नी तथा पररवार के अन्य लोगों ंको पिचान हलया और उनके सम्बन्ध में अपने जीवन की हकतनी ि ी घटनाओं ंको स्मरण हदलाया, तब विाँ का वातावरण बहुत ि ी करुण ि ो उठा। सभी ने यि स्वीकार हकया हक वे सभी घटनाएँ सच्ची ि ैं। परमानन्द की मृतुयु के समय उसके ज्येष्ठ पुत्र की आयु केवल तेरि वषज की थी। अब वि सतरि वषज का ि ो चला था। वि बालक पूवज-जन्म के अपने इस पुत्र को पिचान न सका। जब उस बालक ने यि स्मरण हदलाया हक सभी भाई इकट्ठे बैठ कर लेमन इत्याहद हपया करते थे, तो उसके सभी भाई तथा अन्य उपस्थथत जन रो पडे।

इसके पिात् उस बालक ने अपनी दुकान की गद्दी को जाना चािा। दुकान में जाने के अनन्तर वि सोिा मिीन के पास गया और सोिा तैयार करने की हवहध बतलायी। यि वसुतु उसने अपने इस जीवन में पिले कभी निीं ंदेखी थी। उसने बतलाया हक पानी का कनेक्शन बन्द कर रखा ि ै और वास्तव में ि ी उसकी सूमृहत की जाँच के हलए ऐसा हकया गया था।

तत्पिात् उस बालक ने हवक्टोररया ि ोटल जाने की इच्छा प्रकट की। इस ि ोटल के माहलक स्वगीय परमानन्द के चचेरे भाई श्री कमजचन्द जी थे। वि ि ोटल में गया और जब वि उस मकान के ऊपरी खण्ड पर पहुँचा, तो उसने तुरन्त ि ी किा हक 'छत पर बने हुए वे कमरे पिले विाँ निीं ंथे।'

मुरादाबाद के प्रमुख नागररक श्री साहु नन्दलाल ि रण उस बालक को अपनी मोटर में बैठा कर मेस्टन पाकज ले गये और जिाँ पर एक समय उसकी दुकान की हसहवल लाइन की ि ाखा थी, उस थथान को बतलाने के हलए किा। वि बालक उस जन-समुदाय को श्री साहु नन्दलाल ि रण की गुजराती हबस्ग िके पास ले गया और जिाँ पर पिले मोिन ब्रदसज की ि ाखा थी, उस दुकान को उसने बतलाया। मेस्टन पाकज के मागज में उस बालक ने इलािाबाद बैंक, वाटर वक्सज तथा हजला जेल आहद पिचान हलये।

यि बात यिाँ ध्यान देने की ि ै हक वि बालक अपने पूवज-जन्म से सम्बस्न्धत थथानों ंको देखने की इच्छा से अथवा अपनी सूमृहत की परीक्षा के हलए नगर के हजन हवहभन्न थथानों ंको गया, विाँ पर बहुत बडी संख्या में लोग

उपस्थथत थे। यि एक दिजनीय दृश्य था। इससे सभी लोगों ंके हृदय गद्गद िो उठे । उस बालक ने अन्य अनेक थथानों ंको तथा उन लोगों ंको जो हक उसके जीवन काल में उसकी दुकान पर आते-जाते थे, पिचान हलया।

आयज समाज भवन में १६ अगस्त को एक बहुत बडी सावजहनक सभा हुई, हजसमें बालक के हपता प्रोफेसर श्री बााँकेलाल ने बालक की पूवज-सूमृहत उसकी बाल्ावथथा में हकस प्रकार हवकहसत हुई, इस हवषय के बारे में समझाया।

जो लोग ईश्वर अथवा पुनजजन्म में हवश्वास निीं ंरखते, उन लोगों ंपर इस घटना का बहुत िी गम्भीर प्रभाव पडा। एक सज्जन ने किा- "हजन लोगों ंको इस हवषय पर श्रद्धा िै, उन्हें हकसी भी व्याख्या की आवश्यकता निीं ं और जो लोग हवश्वास निीं ंरखते, उनके हलए कोई भी व्याख्या सम्भव निीं ं।"

उस बालक को मुरादाबाद से वापस ले जाने में बडी कहठनाई हुई। वि अपने पूवज-जन्म के सम्बस्न्धयों ंको तथा दुकान को छोडना निीं ंचािता था; अतिः सतरि अगस्त को बडे प्रातिःकाल िी जब वि सो रिा था, तब उसे ले जाया गया।

यिााँ यि बताने की आवश्यकता निीं ंिै हक न तो बालक और न उसके हपता िी इससे पूवज कभी मुरादाबाद गये थे। उस बालक ने हजस ढंग और हजस रूप से हववरण प्रस्तुत हकये, वे सभी सम्पूणज रीहत से ठीक हनकले, उनमें कुछ भी त्रुहट न थी।

लगभग बारि वषज पूवज इसी प्रकार की अथवा इससे भी हविेष कुतूिलपूणज घटना हदल्ली में हुई, हजसमें िास्न्त देवी नाम की नौ वषीया बाहलका को मथुरा ले जाया गया। विााँ उसने अपने पूवज-जन्म के पहत, घर और पूवज-जन्म से सम्बस्न्धत बहुत-सी वस्तुएाँ पिचान लीं।ं

२०. जीवात्मा के पररवतजन की एक हवहचत्र घटना

(अमृत बाजार पहत्रका)

जीवन में हकतनी िी हवहचत्र घटनाएाँ िोती िैं, वे सभी मान्य िैं अथवा निीं–इस हवषय में िमें असमंजस-सा िोता िै और यहद संयोगवि वे घटनाएाँ किीं ंअलौहकक हुई, तो यि असमंजस और भी बढ़ जाता िै। यद्यहप एक सुसंस्कृत एवं सुसभ्य मानव के रूप में िम ऐसी बात मानने को तैयार निीं ंिोते, तथाहप प्रत्येक मानव-मस्स्तष्क में हजज्ञासा की वृहत्त िोती िै और जब तक यि ज्ञान-हपपासा िान्त निीं ंिो जाती, तब तक िम उस हवषय की और अहधक गिराई में प्रवेि करते रिते िैं और उसके पररणाम-स्वरूप उस हवषय में अहधकाहधक अनुभव प्राप्त करते िैं।

गंगानगर (राजथथान) के सेठ सोिनलाल मेमोररयल इंस्टीट्यूट के मनोहवज्ञान हवभाग के हनदेिक श्री एच. एन. बनजी ने मानव-जीवात्मा के देिान्तरण के हवषय में एक हवहचत्र उदािरण प्रस्तुत हकया िै। मुजफ्फरनगर हजले के रसूलपुर ग्राम के जिवीर नामक एक तीन वषीय बालक के हवषय की यि घटना िै। यि बालक एक राहत्र में मर गया; परन्तु उसके माता-हपता ने दूसरे हदन तक उसके िव को न गाडने का हनिय हकया। कुछ काल पिात् उस बालक के िरीर में जीवन के कुछ-कुछ लक्षण प्रकट िोने लगे और दो एक हदनों ंमें तो वि पूणज स्वथथ िो चला। परन्तु जब वि बालक स्वथथ हुआ, तो वि पिले से सवजथा हभन्न व्यविार करने लगा। उसने घर में भोजन करने से इनकार कर हदया। वि किता हक 'मैं तो ब्राह्मण का बालक हाँ। यिााँ से बाईस मील दूर हवदेिी ग्राम के हनवासी श्री िंकरलाल त्यागी मेरे हपता लगते िैं।' उस बालक को लगभग अठारि मास तक एक ब्राह्मणी के

ाथि का पकाया हुआ भोजन हदया गया। इतने में एक हदन हवर्दी ग्राम के पस्ण्डत रहवदत्त जी, जो हक पाठिाला में एक अध्यापक िैं, रसूलपुर आये। बालक यिवीर ने उन अध्यापक को तुरन्त िी पिचान हलया और उनके साथ वि हवर्दी ग्राम की तथा श्री िंकरलाल त्यागी के घर के हवषय में हकतनी िी बातें करने लगा। इससे सबको बहुत
ीी आियज हुआ और उस बालक को हवर्दी ग्राम में ले गये। उसने उस ग्राम वालों ंको पिचान हलया। विााँ पर जााँच करने से ऐसा पता लगा हक िंकरलाल त्यागी का पचीस वषज का एक पुत्र था। वि हववाहित था और उसके तीन पुत्र थे। वि जब मरा, तभी से यिवीर के िरीर में पररवतजन घहटत हुआ। यि घटना चार वषज पिले की िै। यिवीर अब भी रसूलपुर ग्राम में रिता िै; परन्तु उसकी और उसके माता-हपता की परस्पर बनती निीं ंिै और इससे वे दोनों ं
ीी दुिःखी रिते िैं।

वाहणज्य एवं व्यवसाय हवभाग के एक कमजचारी श्री जे. पी. भारिाज जी ने श्री बनजी का ध्यान इस हवहचत्र
घटना की ओर आकहषजत हकया। श्री बनजी ने दोनों ंग्रामों ंके लगभग एक सौ व्यस्क्तयों ंको बुलवा कर इस घटना की जााँच की और ऐसा मालूम हुआ हक घटना हबलकुल सत्य िै।

२१. पुनजजन्म की एक नवीनतम सुप्रहसद्ध घटना–िास्न्त देवी

बीस वषज पूवज हदल्ली के एक पुनजजन्म-सम्बन्धी अत्यन्त ममजस्पिी समाचार के प्रमुख भारतीय तथा हवर्दी
समाचार-पत्रों ंमें प्रकािन की खूब धूमधाम रिी। ममजस्पिी इसे इसहलए किते िैं हक इसमें आियजनक रूप से पूवज जन्म की सच्ची तथा हवश्वसनीय बातें प्राप्त हुई थीं ंतथा इसका समाचार देने वाली एक थथानीय सहमहत थी हजसमें प्रगहतिील हववेकी तथा योग्य व्यस्क्तयों ंका समावेि था।

िास्न्त देवी का जन्म १२ अक्तूबर सन् १९२५ को हुआ था। इस बाहलका के स्मृहत-पटल पर सन् १९०२ से
ले कर सन् १९२५ तक की सम्पूणज अवहध की अपने हवगत जीवन-सम्बन्धी सभी घटनाओं ंका सुस्पष्ट तथा जीवन्त हचत्र अंहकत था। जब से इस नन्िीं ंबाहलका ने बोलना आरम्भ हकया, तब से िी वि प्रायिः प्रहतहदन अपने पूवज-जन्म में घहटत हुई बातें स्मरण करके बतलाती रिती थी। मथुरा के पस्ण्डत केदारनाथ चौबे को वि अपना पहत बतलाती
थी और उनके साथ-सम्बन्धी प्रसंग आियजकर रूप से वणजन करती थी। इन बातों ंमें हवश्वास न करने वाले उसके माता-हपता उसके हवगत जीवन के इस सहचत्र हववरण को िीहु-प्रलाप समझ कर न केवल उपेक्षा िी करते थे, वरन् वे इस आिा में थे हक आयु के बढ़ने के साथ िी उसके स्मृहत-पटल से ये हचत्र स्वतिः िी हमट जायेंगे; परन्तु उनकी आिा एवं आकांक्षा के प्रहतकूल वि बाहलका अपने हवगत जीवन की स्मृहत में अहधकाहधक दृढ़ रिी तथा अपने माता-हपता से यि आग्रि करती रिी हक वे उसे मथुरा ले जायें जिााँ उसका हपछला जन्म हुआ था। उसकी
यि इच्छा थी हक 'मैं अपने इस जन्म के माता-हपता को अपना पुराना घर तथा उसकी कुछ ऐसी हविेष वस्तुएाँ हदखाऊाँ जो हक उस घर से सुपररहचत तथा दीघज काल तक रिने वाला व्यस्क्त िी हदखला सकता िो।'

यि बाहलका अन्ततिः अपने माता-हपता को समझाने में सफल हुई। उस लडकी के दादा को बुलवाया
गया। िास्न्त देवी ने उन्िें अपने पूवज-जन्म के पहत का पता बतलाया। उस पर खोज की गयी। उसके पहत पस्ण्डत केदारनाथ के साथ पत्र-व्यविार हकया गया और बडा आियज यि हक मथुरा के पस्ण्डत केदारनाथ जी का उत्तर
प्राप्त हुआ। उन्िोंने अपने पत्र में अन्य बातों ंके साथ जााँच-सहमहत को यि परामिज हदया हक 'वे हदल्ली में मेससज भानमल गुलजारीमल के यिााँ काम करने वाले मेरे एक सम्बन्धी पस्ण्डत कानजीमल से हमलें और बाहलका िास्न्त देवी से उनकी भेंट करायें।' इस पर पस्ण्डत कानजीमल जी जब उस बाहलका से हमले, तो उसने उन्िें केवल पिचान िी निीं ंहलया हक वि उसके पहत के चचेरे भाई िैं, वरन् अपने पूवज-जीवन में घहनष्ठ रूप से सम्बस्न्धत घटनाओं ंको स्पिज करने वाले उनके सभी प्रश्नों ंका बहुत िी सन्तोषजनक उत्तर हदया।

इस प्रकार जब ि◌स्न्त देवी ने अपने हवगत जन्म की घटनाएँ तथा अनुभव की बातें बतलायीं,◌ं तब उसके माता-हपता, जााँच-सहमहत तथा कानजीमल में इस बात की गम्भीरता से छानबीन करने की नवीन सहिय अहभरुहच जग उठी। उन्ोंनें केदारनाथ चौबे को मथुरा से हदल्ली बुलवाया। तद्नुसार जब पस्ण्डत केदारनाथ चौबे अपने दि वषीय पुत्र तथा नव-पररणीता पत्नी के साथ ि◌स्न्त देवी से हमलने हदल्ली आये, तब ि◌स्न्त देवी ने तुरन्त ि◌ी अपने पहत को पिचान हलया। अपने पुत्र को देख कर वि इतनी प्रभाहवत हुई हक उसके नेत्रों ◌ंसे आाँसू उमड पडे। ि◌स्न्त देवी तथा उसके तथाकहथत पहत पस्ण्डत केदारनाथ चौबे में परस्पर बडी देर तक वाताज ि◌ोती रिी। ि◌स्न्त देवी ने जो सत्य घटनाएँ प्रसुतुत कीं,◌ं उनसे चौबे जी बहुत प्रभाहवत हुए और उन्ोंनें स्वीकार हकया हक 'मेरी पत्नी का अभी कुछ ि◌ी वषज पूवज मथुरा में दीेान्त हुआ था, उसकी आत्मा इस बाहलका में ि◌ै और इसने जो-जो बातें प्रसुतुत की ि◌ैं, वे
सभी सच्ची ि◌ैं।'

िस्न्त देवी ने इससे पूवज भी अनेक बार अपने माता-हपता से मथुरा जाने की याचना की थी; परनुतु जब से उसकी भेंट श्री चौबे जी से हुई, तब से उसकी मााँग ने और अहधक जोर पकडा। अब उसके माता-हपता भी उसकी इस बार-बार की प्राथजना को स्वीकार करने को तैयार थे। ि◌स्न्त देवी ने अपने मथुरा वाले घर का रंग तो बतलाया िी, साथ ि◌ी उसने उस घर को जाने वाली सडकों ◌ंतथा गहलयों ◌ंके नाम भी बतलाये। इसके अहतररक्त हवश्राम घाट तथा ि◌ारकाधिी के मस्न्दर का वणजन भी हकया। इतना ि◌ी निीं,◌ं उसने कुछ बातें ऐसी भी बतलाथी हजनका हक पस्ण्डत केदारनाथ जी की पिली धमजपत्नी को ि◌ी पता था। उसने यि भी बतलाया हक उसने मथुरा में अपने घर की ऊपरी मंहजल के कमरे में सौ रुपये गाड रखे ि◌ैं हजन्ें हक उसने ि◌ारकाधिी के मस्न्दर में चढ़ाने का संकल्प कर रखा था।

िस्न्त देवी के मथुरा जाने की प्राथजना और अहभलाषा को स्वीकार कर उसके माता-हपता तथा घटना की सत्यता की जााँच करने वाली सहमहत के सदस्ों ◌ंने ि◌स्न्त देवी के साथ हदल्ली से प्रथथान हकया। अभी जब गाडी मथुरा से्टेन के पास पहुाँची ि◌ी थी हक ि◌स्न्त देवी उल्लास में आ कर 'मथुरा आ गया, मथुरा आ गया' पुकारने लगी और जब वि गाडी से उतरी, तो उसने भीड में खडे हुए एक वृद्ध सज्जन को पिचान हलया। यि सज्जन मथुरा की हवेिष वेिभूषा धारण हकये हुए थे और ि◌स्न्त देवी इससे पूवज उनसे कभी भी निीं ◌ंहमली थी। वि श्री देिबनुधु गुप्त जी की गोद में थी। विााँ से वि नीचे उतरी और सिज भाव से उन वयोवृद्ध सज्जन के चरण स्पेिज कर किने लगी हक 'यि मेरे पहतदेव के जे्येष्ठ भ्राता ि◌ैं।' बात हबलकुल ठीक थी। यि बात भी ि◌स्न्त देवी के उन अनेकानेक कौतूिलजनक कायों में से एक थी हजनके कारण वि अपने देिजकों ◌ंकी प्रेिंसा तथा सम्मान का पात्र बनी।

से्टेन से अपने घर आने का मागज तो वि बतलाती ि◌ी रिी, साथ ि◌ी उसने कई रोचक बातें भी बतलायीं।◌ं उदिारणतिः उसने बतलाया हक उस हवेिष सडक पर उन हदनों ◌ंअलकतरा (तारकोल) निीं ◌ंपडा था। जब उसने अपने घर में प्रवेि हकया, तो उसकी जााँच करने के हलए उसके साथ एक सज्जन भी थे। उन सज्जन ने उसके परीक्षाथज जो भी प्रश्न हकये, उन सबके उसने बहुत ि◌ी सन्तोषजनक उत्तर हदये। जब उसे मथुरा की धमजेिाला ले गये, तो विााँ उसने अपने पूवज जन्म के भाई को पिचान हलया। उसकी पूवज-कहथत सभी बातें हजन्ें हक पिले लोग िहुि-प्रलाप मात्र समझ कर उपेक्षा करते थे, अब पग-पग पर सच हनकलीं– वि भी ऐसी अकाट्य सत्य हक हजनमें सनेि्दे का कोई थथान न था। उसके पूवज-जीवन-काल में उसके घर के प्रांगण में एक कुआाँ था। विााँ प्रवेि करने पर जब ि◌स्न्त देवी ने उस कुएँ को विााँ न देखा, तो उसे कुछ हनरािा-सी हुई। उसके पहत पस्ण्डत केदारनाथ जी उसके इस भाव को जान गये और उन्ोंनें दीवालि–ीन कुएँ को ढकने वाले पत्थर को ि◌टा हदया और उसे वि कुआाँ हदखलाया।

िस्न्त देवी ने घर की ऊपरी मंहजल पर जा कर, हजस कोने में रुपये गाड रखे थे, उसे स्वयं खोदा; परनुतु रुपये विााँ न हमले। इससे वि उदहि-सी ि◌ो गयी। पस्ण्डत केदारनाथ ने यि स्वीकार हकया हक प्रथम पत्नी (वतजमान िस्न्त देवी) के स्वगजवास के अनन्तर उन्ोंनें उस धन को विााँ से हनकाल हलया था। तदनन्तर ि◌स्न्त देवी को

उसके पूवज-जीवन के माता-हपता के पास ले गये। उसने उन्‌ तुरन्त ि◌ी पिचान हलया। इस पर बाहलका तथा उसके माता-हपता-तीनों ◌ंि◌ी हससक-हससक कर रोने लगे। बडी कहठनाई से बाहलका को उनसे अलग हकया जा सका। माता-हपता के पास से उस बाहलका को हवश्राम घाट ले गये। विाँ भी उसने अपने पूवज जीवन के संस्मरण- सम्बन्धी हकतनी ि◌ी बातें बतला कर जााँच करने वाली सहमहत के सदस्ों ◌ंतथा अन्य लोगों ◌ंको आियज में ि◌ाल हदया।

इस प्रकार की घटनाएँ भारत में असाधारण निीं ◌ंि◌ैं। अभी सात वषज पूवज एक ऐसी ि◌ी दूसरी बाहलका का उदािरण देखने में आया था। उस बाहलका ने भी अपने पूवज-जन्म के माता-हपता को पिचान हलया था। इसकी सत्यता की जााँच करने पर उसकी बतलायी हुई सभी बातें ठीक हनकलीं।◌ं उस बाहलका के पूवज-जन्म के माता-हपता धनाढ्य ि◌ैं; अतिः वे उस बाहलका के भरण-पोषण का प्रबन्ध करते ि◌ैं तथा उसे उच्च हिक्षा भी हदला रिे ि◌ैं, क्योंहक बाहलका के वतजमान माता-हपता हनधजन ि◌ैं। पुनजजन्म के हवषय में खोजबीन की गयी ि◌ैं, उनके पररणाम को जानने का कष्ट न कर इस हसद्धान्त को ि◌ी अयथाथज मान बैठना ि◌ास्‌स्पद ि◌ी ि◌ै।

२२. मृदुला अपने हवगत जीवन का हववरण देती ि◌ै

एक बाहलका, हजसकी आयु लगभग दो वषज ि◌ोगी, 'माँ, माँ' हचल्लाती हुई अपनी माता की गोद से कूद पडी और अपनी इष्ट वसुतु की ओर दौडने लगी। उसी समय एक सम्भ्रान्त महिला मृदुला के घर के सामने अपनी मोटर कार से बिार हनकल रिी थी। बाहलका मोटर की ओर भाग कर गयी और तुतलाते हुए किने लगी- "अिो, यि मोटर कार तो मेरी ि◌ै और यि मेरी माँ ि◌ै।" बाहलका की ओर ध्यान न दे कर वि महिला आगे चली गयी। मृदुला की माँ को भय लगा हक किीं ◌ंवि सडक पर खो न जाये, अत: वि भाग कर बिार आयी।

हकनुतु मृदुला मोटर कार के पास से जाने को तैयार न थी। वि इधर-उधर देख रिी थी मानो हक वि हकसी वसुतु की खोज में ि◌ो। उसका मुख उते्तजना और आनन्द से पुलहकत ि◌ो रिा था, हकनुतु उसकी माता को इससे क्या? वि तो ि◌ैरान थी; अतिः बाहलका को बलात्‌ अपने घर उठा ले गयी। उस राहत्र मृदुला अपने-आपे में न थी। वि अपनी माँ से अनेक प्रकार की बातें करती रिी जैसे हक वृद्ध व्यस्क्त अपने अतीत जीवन के हदनों ◌ंकी याद कर रिा िो।

मृदुला किती-"माँ! मेरा एक दूसरा घर ि◌ै। ि◌मारे छि ि◌ाथी और एक मोटर कार भी ि◌ै। विाँ मेरी छोटी बिनें, हपता तथा कई सिेहलयाँ भी ि◌ैं। क्या आप मुझे अपनी पिली माँ के पास ले चलने की कृपा करेंगी? मैंने वापस आने के हलए वायदा हकया था। मैं घर जाने के हलए हकतनी उतुसुक हाँ!" वि इसी प्रकार असंगत बातें बडबडाती रिती थी। असंगत इसहलए कि हक दूसरों ◌ंको उसकी बातें असंगत-सी ि◌ी लगती थीं।◌ं ि◌ाँ, उसके हलए वे हनिय ि◌ी असंगत निीं ◌ंथीं।◌ं उसकी माँ बहुत व्यग्र ि◌ो रिी थी और उसे आियज ि◌ो रिा था हक बाहलका का हदमाग ठीक तो ि◌ै।

हदन, सप्ताि और मिीने बीत गये। छि मास से अहधक व्यतीत ि◌ो चले, हकनुतु मृदुला अपनी पुरानी (अपने बडे मकान, कार और सिेहलयों ◌ंके सम्बन्ध की) बातें दोिराती रिी। बेचारी माँ ने बहुतेरा प्रयत्न हकया, हकनुतु वि बाहलका को ि◌ान्त न कर सकी। अन्त में करुणामय भगवान्‌ उनकी सिायता को आये। एक बडा यज्ञ िो रिा था, हजसमें समाज के बहुत से व्यस्क्त सस्म्महलत हुए। मृदुला की माँ भी अपनी बच्ची के साथ विाँ गयी । यज्ञ समाप्त ि◌ो चला था। दो बचे्च मृदुला से कुछ दूरी पर बैठे हुए थे। वि उन्‌ देख रिी थी। वि उनके पास दौडी हुई गयी और अपने गले में पिनी हुई पुष्पमाला को गले से हनकाल कर उनके गले में पिना हदया।

उन बच्चों ंकी माँ पास िी खडी थी। उसे यि देख कर बडा आियज हुआ। उसने मृदुला की इस भावना की मन-िी-मन बडी प्रिंसा की और उससे किा- "तुम बहुत भली लडकी मालूम पडती िो। क्या तुम इन बालकों ंको जानती िो?" मृदुला ने तुरन्त उत्तर हदया- "मैं इन बच्चों ंको तो निीं ंजानती, पर तुम्हें अच्छी तरि जानती हाँ।" हफर उसने भाव-हवह्वल िो कर पूछा- "क्या तुम मुझे पिचान निीं ंरिी िो ? मैं तुम्हारी बडी बिन मुन्नू हाँ। िमारे हपता जी और माता जी किाँ िैं ? ि मारे िाथी कैसे िैं ?" मृदुला ने इसी भाँहत उत्तेहजत िो कर उसे कई बातें ऐसी बतलायीं ंजो
उस पररवार का बहुत घहनष्ठ व्यस्क्त िी जान सकता था।
उन दोनों ंबच्चों ंकी माँ आियजचहकत रि गयी। उसने मृदुला को अपनी छाती से लगा हलया और पररवार के सम्बन्ध में कई प्रश्न हकये। वि मृदुला को उसकी माँ के पास ले गयी और उससे सारी बातें कि सुनायीं। ं उसने मृदुला को अपने घर ले जाने की अनुमहत माँगी। मृदुला की माँ ने उसकी बात को स्वीकार कर हलया और वे सभी उस नवयुवती की कार में सवार िो कर उसके घर गये।

कार एक घर के सामने पहुाँच कर रुक गयीं। ं मृदुला यि किती हुई बािर हनकल पडी हक यिी मेरा घर िै। ज्यों ंिी उसने एक वृद्ध व्यस्क्त को िार पर खडे हुए देखा, वि किने लगी-"आिो, वि मेरे हपता जी िैं। आिो, वि मेरे हपता जी िैं।" उसे अन्दर तेजी से जाते हुए और एक कमरे से दूसरे कमरे के पास जा कर यि बतलाते हुए देख कर हक कुछ वषज पूवज उसमें कौन रिता था, सभी िैरान रि गये। हफर वि अपने कमरे के पास गयी और किने लगी- "मैं यिाँ रिती थी।" उसने कुछ पुस्तकें खोज हनकालीं ंऔर बताया हक उसने वे एम. ए. पाठ्यिम में पढ़ी थीं। ं उसने आलमारी ढूाँढ़ हनकाली और बताया हक उसमें उसके कपडे रिते थे। उसने चारपाई भी बतलायी जिाँ वि बीमार पडी थी। उसने इस बात पर खेद प्रकट हकया हक वि एम. ए. की परीक्षा में बैठ न सकी।

मृदुला के घर की वृद्ध महिला से अपनी बाल-सिज उत्सुकता से पूछा- "माँ, क्या आपको मालूम िै हक अपना िरीर छोडते समय मुझे कैसा अनुभव हुआ था?" उसने अपने िाथ और पैर की ओर इिारा करते हुए बतलाया - "सभी नसों ंमें तनाव था और मुझे असह्य वेदना िो रिी थी। तब में एक पक्षी की तरि ऊपर उडी। मुझे पता निीं ंहक मैं हकधर गयी। मैं इधर-उधर हवचरण करती रिी और अपनी इस यात्रा में मैंने कई प्रकािपूणज और आनन्दमय पदाथज देखे। विाँ पर सभी प्रसन्न थे। तब मुझे एकाएक आपकी याद आयी। आप मेरे साथ निीं ंथीं ं। इससे मुझे बहुत दुःख हुआ। इसके बाद मुझे कुछ भी स्मरण निीं ंिै।" वृद्ध दम्पहत अपनी पिली पुत्री को जो छि या सात वषज पूवज मर चुकी थी, बहुत प्यार करते थे। वे अवाक् से रि गये। जब उन्ें पुरानी बातें पुनः याद आयीं, ं तो उनके नेत्रों ंसे अश्रु छलक पडे।

मृदुला के िब्द उनके हृदय में गिरी छाप छोड गये। उन्ें सभी कुछ स्वप्न-सा लग रिा था जो दुगाजह्य था; हकन्तु था हनतान्त सत्य। इस छोटी अपररहचत बाहलका ने उनके सामने जो बातें प्रकट कीं, ं वि पूणज सत्य थीं। ं मृदुला रुकी निीं, ं वि बराबर किती गयी-"मैं विी मेधा हाँ हजसका आपने प्यार का नाम मुन्नू रख रखा था। मेरी सिेहलयाँ कैसी िैं? िी. ए. वी. कालेज के िुक्ला जी कैसे िैं? इस घर में प्रायः सभी चीजें वैसी िी िैं जैसा हक मैंने पिले उन्ें छोडा था, हकन्तु आपने मेरे कमरे में क्यों ंपररवतजन कर हदया? यि पंखा पिले तो यिाँ निीं ंथा। यि बैठक में रिता था। माँ, मुझसे बातें कीहजए। जब मैं यिाँ से जा रिी थी, तो आपने मुझसे वचन हलया था हक मैं वापस आऊाँगी और अब मैं वापस आ गयी हाँ।" बेचारी महिला अब अपने को रोक न सकी। उसने बाहलका को गले से लगा हलया। उसके कपोलों ंपर अश्रु झर-झर बि रिे थे।

हजह्वा में कैंसर िो जाने से मेधा बीस वषज की आयु में सन् १९४५ में देिरादून में मरी थी। उस समय वि एम. ए. की परीक्षा की तैयारी कर रिी थी, हकन्तु अस्न्तम वषज की परीक्षा में बैठ न सकी थी। उसकी अपने पररवार में प्रगाढ़ आसस्क्त थी। अतः अपने कमों का भोग भोगने के हलए जब उसने नया जन्म हलया, तब वे संस्कार उसकी पूवज-सूमृहत में असाधारण रूप से अवहिष्ट रि गये। पिले वि देिरादून के धनाढ्य वैश्य पररवार में पैदा हुई थी।

बाद में उसने विाँ से िजारों ंमील दूर दहक्षण नाहसक में एक ब्राह्मण पररवार में ३१ जुलाई, सन् १९४९ को जन्म ग्रिण हकया। उसके जन्म के कुछ िी हदनों ंबाद उसका ब्राह्मण हपता स्वगजवासी हुआ। माँ विाँ से देिरादून चली आयी और एक सूकूल में अध्याहपका बन गयी। जैसा हक पिले बतलाया जा चुका िै, बाहलका जब सवा दो वषज की थी, तब हवगत जीवन की सूमृहत उसमें सिसा जाग पडी।

मृदुला अपने पूवज-जीवन में बीस वषज तक जीहवत रिी थी। इससे स्वभावतः िी वि अपनी वतजमान माँ की अपेक्षा अपने पिले के पररवार के लोगों ंको अहधक प्रेम करती िै। वि अपने घर में रिने की अपेक्षा अपने पूवज-जीवन के पररवार वालों ंके साथ रिने को अहधक उतुसुक थी। उस बेचारी महिला की भावनाओं ंका जरा अनुमान तो कीहजए, हजसने पहत के मर जाने पर अपनी इस बच्ची का इतनी सावधानी से पालन-पोषण हकया िो और उसे अपने प्राणों ंके समान प्यार करती िो । मृदुला के पिले हपता उसे अपने पास रखने में प्रसन्न िैं और उसे सभी आवश्यक सुहवधाएँ प्रदान कर रिे िैं।

गीता किती िै- "जैसे मनुष्य पुराने विों ंको त्याग कर दूसरे नये विों ंको ग्रिण करता िै, वैसे िी जीवात्मा अपने पुराने िरीरों ंको त्याग कर नये िरीरों ंको प्राप्त िोता िै (अध्याय २, श्लोक २२) । मृदुला के हवषय में यि बात पूणजतिः प्रमाहणत िो चुकी िै। यि पूवज-जीवन की सूमृहत प्राप्त करने का एक बहुत िी हवरल अपवाद िै। मनुष्य का यि सौभाग्य िी िै हक उसे पूवज-जीवन की सूमृहत निीं ंरिती, क्योंहक इससे वि रागजन्य अनेक कष्टों ंसे बच जाता िै।

मृदुला श्री स्वामी हिवानन्द जी के आश्रम ऋहषकेि में कई बार आ चुकी िै। पूवज-सूमृहत जाग्रत िोने के बाद िी जब वि प्रथम बार अपनी माँ के साथ आयी थी, तो उसकी आयु ५ वषज थी। उस समय उसे अपने हवगत जीवन की सूमृहत स्पष्ट थी । बाद में वि श्री स्वामी जी के आश्रम में अपनी दोनों ंमाताओं ंके साथ आयी। अब वि दि वषज की िो चुकी िै और अपने नवीन बचपन के संस्कारों ंके कारण अब उसकी वि पूवज-सूमृहत काफी जाती रिी िै। वि बुस्द्धमान्, स्वथथ और सवजथा सामान्य बाहलका िै।

श्री स्वामी जी इस बाहलका के अनुभवों ंको ध्यानपूवजक सुनते रिे िैं। बाद में उन्िोंने बतलाया हक इसमें कोई नवीनता निीं ंिै। भूतकाल में भी कई उदािरण पाये गये िैं, हकन्तु वे बहुत िी कम िैं और बहुत हदनों ंके बाद घहटत हुए िैं। िास्न्त देवी का िी उदािरण लीहजए। बीस वषज पूवज जब वि छोटी बच्ची िी थी, तभी उसने अपने पूवज-जीवन के सम्बस्न्धयों ंको पिचान हलया। ये बातें जीवात्मा की अमरता को प्रमाहणत करती िैं जो मानहसक िुभािुभ कमों के पररणाम-स्वरूप हवहभन्न रूप ग्रिण करती िैं। स्वामी जी ने कमज के बन्धन से अपने को मुक्त बनाने तथा अपना पूवज हदव्य स्वरूप पुनिः प्राप्त करने की आवश्यकता बतलायी। स्वामी जी िमें वि मागज बतलाते िैं हजस पर चल कर िम अपना हदव्य स्वरूप पुनिः प्राप्त कर सकते िैं। वि िमें हनष्काम तथा पूणज समपजण के भाव से कमज करने तथा 'मैं कौन हाँ' का अनुसन्धान करने का उपदेि देते िैं। स्वामी जी के सूत्र-रूप में उपदेि िैं- "भले बनो, भला करो। तोडो, जोडो (मन को भौहतक पदाथों से अलग करो और उसे भगवान् में संलि करो)।" आइए, िम सब उनसे प्राथजना करें हक वि िम पर अपनी कृपा बनाये रखें और िमें सम्बल दें हजससे हक िम ईश्वर की ओर अग्रसर िो सकें।

२३. मृतुयु के अनन्तर तुरन्त जी उठना

मृतुयु के दो-तीन घण्े के बाद मरे हुए व्यस्क्त के पुनिः जीहवत िो उठने की घटनाएँ समाचार-पत्रों ंमें प्रायिः प्रकाहित िोती रिती िैं। ये प्रायिः ऐसे व्यस्क्त िोते िैं हजनको पिचानने में यमदूत भूल कर जाते िैं। दो व्यस्क्त एक िी नाम के िों,ं एक िी सा उनका आकार िो और एक िी ग्राम में रिते िों,ं तो यमदूत भूल से एक व्यस्क्त के बदले

दूसरे व्यस्क्तको यमराज के पास उठा ले जाते िैं; हकनुतु बाद में भूल का पता चलने पर उसे तुरन्त वापस कर देते िैं और उसी समय दूसरे व्यस्क्त को यमराज की सभा में ले जाते िैं।

यिााँ आन्ध्र प्रदेि के श्री सी. रेड्डी का समाचार उनिीं ंके िब्दों ंमें हदया जा रिा िै। वि हलखते िैं-"िािों ं के आधार पर लोगों ंकी यि सामान्य मान्यता िै हक मनुष्य जब अपने इस मत्यज िरीर को त्याग देता िै, तब यमराज के दूत उस मृत व्यस्क्त के सूक्ष्म िरीर को उसके कमज, प्रारि अथवा पुरुषाथज के अनुसार हनधाजररत हकये हुए लोकों ंको ले जाने के हलए आते िैं। मैं अपना व्यस्क्तगत अनुभव जो प्रसुतुत करने जा रिा हाँ, उसको समझने अथवा उसकी सत्यता को मानने के हलए लोगों ंको हिन्दू िािों ंके इन उपदेिों ंपर हवश्वास करना िोगा। पाठक इन उपदेिों ंमें हवश्वास करें या न करें; हकनुतु िीघ्र अथवा कुछ समय के बाद जब उनकी प्राण-हिया बन्द िो जायेगी, तब उनिें भी ऐसा िी अनुभव िोगा।

"मैं दहक्षण भारत के एक राजघराने में पैदा हुआ था। भारत के स्वतन्त्र िोने और कााँग्रेस के िाथ में िासन-सूत्र आने पर मेरे समान राजे-मिाराजे इस देि के एक सामान्य नागररक मात्र रि गये। उनके सभी अहधकार और हविेषाहधकार हछन गये। उनिें थोडी-सी पेनिन हमलती िै। मेरा जीवन सदा िी धाहमजक रिा िै, अतः ७३ वषज की आयु में मैं एकान्तहप्रय बन गया हाँ और मैंने ऋहषकेि के श्री स्वामी हिवानन्द जी मिाराज के चरणों ं की िरण ले ली िै। मेरे अनुभव की सत्यता हनम्नांहकत िै :

"सन् १९४८ में मैं मलेररया से बहुत बीमार पड गया, हजसके पररणाम-स्वरूप मैं बहुत दुबजल िो गया। िाक्टर जो मेरी हचहकत्सा कर रिे थे, मेरे सम्बन्धी थे। उनिोंने मुझे डिहलन का कोई इंजेक्शन हदया, हजससे मैं बेिोि िो गया। तुरन्त िी मुझे पास के एक उपचार-गृि में पहुाँचाया गया। यिााँ मेरे िरीर में ताप लाने के हलए िाक्टर इंजेक्शन पर इंजेक्शन देते रिे, हकनुतु उनिोंने मन में यि हनिय कर हलया हक अब मैं मर चुका हाँ। यिी निीं,ं इस आिय का तार भी उनिोंने मेरी पुत्री को हभजवा हदया। यद्यहप िाक्टर को मेरे मरने की आिा न थी, हफर भी उसका हनणजय पूणजतः गलत न था। जब मेरी श्वास की गहत बन्द िो गयी, तो दो बडे आकार वाले यमदूत मेरे सूक्ष्म िरीर या जीव को पकड कर बडी तेजी से यमलोक को ले गये। उस समय हदन के ११ बजे िोंगे। िम बीस हमनट में िी अपने हनहदजष्ट थथान पर जा पहुाँचे। मैंने यमराज को स्वणज के एक हसंिासन पर बैठे हुए देखा। मैंने उनिें दण्डवत् प्रणाम हकया। मैं कुछ बोला निीं,ं क्योंहक मागज में यमदूतों ंने मुझे आदेि दे रखा था हक जब तक यमराज मुझसे कोई प्रश्न न करें, मैं हबलकुल मौन रहाँ। उनिोंने अपने सामने नीचे जमीन पर बैठे हुए व्यस्क्त को मेरे जीवन की लेखा-पुस्स्तका देखने के हलए धीमे स्वर में आदेि हदया और उसने उसके पृष्ठ उलट-पलट कर देखने आरम्भ कर हदये। उनकी बातचीत मैं समझ न सका। अन्त में धमजराज ने उनिीं ंयमदूतों ंको मुझे पुनः मत्यजलोक में ले जाने का आदेि हदया। इससे मैंने यि हनष्कषज हनकाला हक यमदूत भूल से मुझे विााँ हलवा ले गये थे, जब हक उसी समय मेरे नाम और हववरण से हमलते-जुलते हकसी अन्य व्यस्क्त की मृतुयु िोनी थी।"

२४. मृत पत्नी का बाहलका के रूप में पुनरागमन

हकतने िी व्यस्क्तयों ंको हकसी हविेष थथान के हवषय में ऐसा हवहचत्र अनुभव िोता िै हक इस बात का उनिें पूणज हवश्वास िोते हुए भी हक उनिोंने अमुक थथान को पिले कभी निीं ंदेखा िै, जब वे उस थथान पर जा पहुाँचते िैं तो उनके मन में ऐसा लगता िै हक 'मैं पिले भी यिााँ आया था।' हकतनी िी बार यि संस्कार इतना अहधक दृढ़ िोता िै हक वि मनुष्य हवश्वासपूवजक यि कि सकता िै हक अगले मोड पर स्खडहकयों ंवाली दुकान िोगी हजसमें सामान इस प्रकार सजाया गया िोगा हक वि स्पष्ट रीहत से हदख सके अथवा हक हविेष आकृहत का अमुक घर िोगा। अब जब वि व्यस्क्त उस मोड की दुकान की ओर जाता िै, तो अपने संस्कार की पुहष्ट िोते देख कर उसे कुछ आियज-सा िोता िै।

मियुद्ध के समय की एक घटना मुझे याद आती ि ै। ईश्वर में आथथा न रखने वाली एक सैहनक टुकडी ने मानसर्ि–ा पर भाषण देने के हलए एक प्राध्यापक को आमस्न्त्रत हकया था। उसने इस असामान्य घटना का हववेचन हकया। इस सम्बन्ध में इससे अच्छा उत्तर जो वि दे सका, वि था 'सम्बस्न्धत हवचारों ंका समन्वय।' उदािरण-स्वरूप आपने एक थथान पर अनजाने में एक हचत्र और उसके पास ि ी एक आभूषण देखा ि ो, दूसरे थथान में एक मेज पर एक पात्र रखा देखा ि ो और एक अन्य थथान में एक अ ाँगीठी के पास आलमारी में रखी हुई टराफी में हमले पीतल के चमकीले प्याले देखे ि ों। ं अब अकस्मात्, हबना हकसी कारण के इन सभी वसुतुओं ंको एक-साथ देख कर उनकी सूमृहत ि ो उठे, तो उससे ऐसा हवचार पैदा ि ोता ि ै हक मैं उनसे पिले से पररहचत था।

हनस्सने्ेदि इस घटना के सम्बन्ध में इस प्रकार का हववेचन बहुत ि ी सुन्दर ि ै, हकनुतु यि इतना अपूणज और असन्तोषजनक ि ै हक 'पूवज-जन्म' की सूमृहत के उदािरण पर मैं बल देना निीं ंचािता जो हक 'पुनजजन्म' की प्राचीन मान्यता पर हवश्वास करने वाले लोगों ंके दावे को पुष्ट करती ि ै।

यि एक हिन्दू बाहलका की हवहचत्र और करुण किानी ि ै। यि बाहलका जब आठ वषज की थी, तब उसके माता-हपता उसे मथुरा की तीथजयात्रा पर ले गये। मथुरा उसकी जन्मभूहम से कई मील दूर ि ै और वि सम्भवतः विााँ इससे पिले कभी निीं ंगयी।

वि बाहलका जब मथुरा आ पहुाँची, तो उच्च स्वर में किने लगी हक 'इस नगर को मैं पिचानती हाँ। अपने पूवज-जन्म में मैं अपने पहत के साथ यिााँ रिती थी। अब मुझे ि ीघ्र ि ी अपने पहत और पुत्र के पास वापस जाना ि ै।' इतना ि ी निीं, ं वि अपने माता-हपता को बडी ि ी तेजी और असस्न्दग्ध रूप से इस नगर की एक दूसरी गली में ले गयी। इससे उसके माता-हपता को बडा आियज हुआ। बाहलका ने एक घर में प्रवेि हकया जिााँ एक हवधुर अपने पुत्र के साथ रिता था। इस बाहलका का जन्म ि ोने से तीन वषज पूवज उसकी पत्नी का स्वगजवास ि ो चुका था।

उस हवधुर के घर तथा आस-पडोस की गली के वातावरण से बि बाहलका खूब पररहचत थी। उसने अपने पहत के साथ पत्नी-रूप में व्यतीत हकये हुए अपने हवगत जीवन का सारा हववरण हदया, हजससे उसके पहत और पुत्र को यि मानना पडा हक यि आठ वषज की बाहलका पूवज-जन्म में उसकी पत्नी और माता थी और उसने हफर से जन्म हलया ि ै।

उसकी यि मााँग थी हक 'मुझे अपने पहत और पुत्र के साथ रिने दो', परनुतु उसके माता-हपता ने इसे स्वीकार निीं ंहकया और उसे अपने घर वापस ले गये। विााँ वि बाहलका बहुत बीमार पड गयी और रुग्णावथथा की दिा में मथुरा में रिने वाले अपने दोनों ंस्ेनेहियों ंको-पहत और पुत्र को-बारम्बार याद करती रिी। यि एक आियजनक घटना ि ै; हकनुतु यूरोप के हकतने ि ी हवद्वानों ंने इसकी सत्यता प्रमाहणत की ि ै।

२५. वायलेट फूल का गुच्छा ले कर घूमने वाली मृत पुत्री

यि वाताज मैंने हमस मागेरी लारेंस से सुनी थी। हमस लारेंस बहुत सुन्दर और बुस्द्धमान् ि ैं। इस वाताज को उनके ि ी ि ब्दों ंमें प्रसुतुत करना उत्तम ि ोगा। इसके हलए मैं उनका आभार मानता हाँ।

हमस लारेंस ने बतलाया- "अपने बाल्काल में ि ी मैंने अपना जीवन एक हचत्रकार के रूप में प्रारम्भ हकया। उस समय मैंने अपना सूटूहियो लन्दन की एक प्रहसद्ध गली के एक हविाल मकान की दूसरी मंहजल पर

बना रखा था। इस मकान का माहलक एक वृद्ध पुरुष था और उसकी दुकान इसी मकान की हनचली मंहजल में थी।

"दूसरी मंहजल पर ठीक उसकी दुकान के ऊपर उसका कायाजलय था। ऊपरी मंहजल के दूसरे सब कमरे हकराये पर हदये हुए थे हजनमें मेरे अहतररक्त एक कारीगर, एक मोम के स्खलौने बनाने वाला तथा िथकरघे पर काम करने वाला एक व्यस्क्त अलग-अलग कमरों ंमें रिते थे।

"नवम्बर मिीने में एक हदन वषाज िो रिी थी। उस हदन सायंकाल के ६ बजने से ५ हमनट पूवज िी मैं अपना सूट्हियो छोड कर नीचे आयी, हकनुतु उसी समय एक आवश्यक वसुतु की याद आने पर मैं तुरन्त पीछे लौट पडी। जब मैं सडक पार करने के अवसर की प्रतीक्षा में सडक के एक ओर खडी थी, तब मैंने विााँ भूरे रंग की पोिाक पिने हुए एक कोमलांगी नवयुवती को देखा। उसकी पीठ पर उसके सुन्दर लम्बे केि हबखरे हुए थे। उसने मेरे पास से िी, भीड से बचते हुए बडी मुस्लि से सडक पार की। सामने जा कर वि िमारे मकान के दरवाजे में अदृश्य िो गयी।

"यि दृश्य देख कर मुझे बडा आियज हुआ। लन्दन में मस्तक पर 'बाल' हकये हुए लडहकयााँ िोती िैं, हकनुतु इस लडकी के अयाल के समान बाल पीठ पर छाये हुए थे। दूसरी बात यि थी हक दुकान के दरवाजे में प्रवेि करने पर वि मेरी ओर देख कर मुस्करायी और मैंने देखा हक उसने जो परमा वायलेट फूल का गुच्छा िाथ में ले रखा था, वि ताजा था। भला नवम्बर माि में उसे वि किााँ से हमला ?

"बडी कहठनाई से जब मैं सडक पार कर दुकान के पास पहुाँची, तब दुकान की नौकरानी दुकान बन्द कर रिी थी। मैंने उससे पूछा- 'वि सुन्दर लडकी कौन थी हजसके लम्बे-लम्बे केि थे और िाथ में वायलेट फूलों ं का गुच्छा था? वि लडकी इस ओर आयी और सीधे अमुक के आहफस में चली गयी।'

"उस लडकी का चेिरा फीका पड गया। उसने मेरी ओर देख कर धीमे स्वर में किा-'अरे वि लडकी! उसको आपने देखा? हकतनी िी बार िमें वायलेट की सुगन्ध आती िै, हकनुतु दुकान में कोई भी व्यस्क्त उस लडकी को देख निीं ंसका।

'वि तो अमुक मिािय की इकलौती पुत्री िै। कई वषज पूवज वि मर चुकी िै। मरने के समय उसकी आयु सोलि वषज थी। लोग किते िैं हक उस लडकी के लम्बे सुन्दर बाल उसकी कमर के नीचे तक पहुाँचते थे। दूसरे फूलों ंकी अपेक्षा वायलेट का फूल उसे अहधक हप्रय था।'

"कुछ समय के पिात् मुझे मालूम हुआ हक उसके हपता ने अपनी पुत्री के िव का दाि-संस्कार हकया था और उसकी राख को अपने ऑहफस में एक सुन्दर पात्र में रख रखा था। इससे मैंने अनुमान लगाया हक उस मनुष्य ने अपनी हप्रय पुत्री की आत्मा को आने का एक मौका दे रखा था।"

हमस लारेंस का किना िै हक 'मैंने उसे घर में आते हुए देखा था और यि बात भी हनहित िै हक इससे पिले मैंने उसके हपता के हवषय में कुछ भी निीं ंसुना था और इसी भााँहत उस लडकी से भी मैं पिले से न तो पररहचत थी और न उसके हवषय में कुछ सुना िी था, यि बात भी हनहित िै।'

२६. वे हवहचत्र पद-हचह्न

हिमालय के असाधारण हिम-मानव की दन्तकथा के हवषय में एक रोचक लेख हमला ि ै। कमाण्डर रूपटज गिो िारा प्रसुतुत यि प्रामाहणक हववरण अभी िाल िी में प्रकाहित हुआ था। उन्होंनें इस सम्बन्ध की जो अनेक घटनाएँ प्रसुतुत की िैं, उनसे इतना तो प्रमाहणत िो िी जाता ि ै हक 'मीगो' अथवा 'येहत' (हिम-मानव) में हकसी-न-हकसी का अस्स्तत्व अवश्य ि ै और यि येहत अपने जंगली हनवास-थथान के आस-पास दहक्षण इंग्लैण्ड में भटक रिा ि।ै

विानियर में एक बार यि सनसनीपूणज समाचार फैला हुआ था हक जैसे पिले कभी देखने में निीं ंआये वैसे िम-बद्ध पद-हचह्न देखने को हमले िैं। यि ितकाल की हिम ऋतु थी हजससे वे पद-हचह्न स्पष्ट रूप से हदखायी पडते थे। उन पद-हचह्नों ंका आकार अणे्डे की तरि गोल था या यों ंकहिए हक घोडे की नाल की तरि था, हकनुतु अगला भाग कुछ अहधक नुकीला था। ये पद-हचह्न एक सीधी रेखा में एक के बाद एक पडे हुए थे। प्रत्येेक पग में ८ इंच का अन्तर था। अपने पररहचत पिुओं ंमें कौन ऐसा ि ै जो अपना पद-हचह्न एक के बाद एक सीधी रेखा में छोडता जाये।

यि पद-हचह्न सभी असामान्य थथानों ंमें हदखायी हदये थे। वे केवल भूहम पर िी निीं ंपडे थे, वरन् छतों ंपर, पतली दीवालों ंके ऊपर, उद्यानों ंमें और घर के बािर सिन में सवजत्र पडे थे। ऐसा लगता ि ै हक पद-हचह्न छोडने वाले प्राणी के मागज में हकसी प्रकार की रुकावट बाधक न थी।

एक उदािरण तो ऐसा देखने में आया जिाँ वे पद घास की एक टाल को पार कर ठीक सीध में दूसरी ओर चले गये थे। उस टाल के हकनारे कोई भी पद-हचह्न निीं ंथा। इससे ऐसा अनुमान िोता ि ै हक उस हवहचत्र प्राणी ने उस टाल को सीधे पार हकया था। एक थथान पर ये पग सीधे घनी झाहडयों ंऔर वन-कुंजों ंके ऊपर िो कर गये थे, हकनुतु जैसा हक सामान्यतया िोना चाहिए, उसके सवजथा हवपरीत न तो किीं ंपर पौधों ंकी टिहनयााँ और न वृक्षों ंकी िाखाएँ िी टूटी थीं।ं

दहक्षण िेवोन प्रदेि के टोपिम, हलम्पस्टोन, एक्समाउथ, टेमाउथ तथा साहलि नगरों ंमें ये पद-हचह्न मिबद्ध रूप में हदखायी पडे थे। विाँ से वे एक हनहित मागज की ओर चले गये थे और हपघली हुई बफज में अदृश्य िो गये थे। उसके बाद हफर वे हदखायी निीं ंपडे; हकनुतु उन पद-हचह्नों ंका अभी तक कोई भी सन्तोषजनक उत्तर प्राप्त निीं ंिो सका।

पिुओं ंके पग पिचानने में हनष्णात व्यस्क्तयों ंको बुलाया गया, उन पगों ंकी भली-भााँहत छानबीन की गयी, हकनुतु उस प्रकार सीधा पग रखने वाला कोई भी ऐसा जीहवत प्राणी निीं ंहमला हजसके पग उससे हमलते-जुलते िों।ं

-जे. िी. एहवंग

२७. श्रद्धा का वणजन

ईश्वरीय प्रकृहत के सम्बन्ध में गोथे की जैसी मान्यता ि,ै मैं उसमें हवश्वास रखता हाँ; हकनुतु मुझे हकसी भी प्रचहलत मत अथवा सम्प्रदाय में हवश्वास निीं िंै। 'नास्स्तक' अथवा 'अहवश्वासी' भाव वाले ि ब्द से भी मैं अपररहचत-
सा हाँ। यहदी सम्प्रदाय में जो सवोच्च हसद्धान्त िैं, उनके कारण मैं उस सम्प्रदाय से सम्बस्न्धत हाँ; हकनुतु इस सम्प्रदाय की अपररियज कठोरताओं ंके कारण मैं इससे अलग िो गया हाँ। ईसाई धमज की दया के आदिज के हवचार

से मैं उससे सम्बस्न्धत हाँ; हकनुतु इसमें जो ईश्वर और मेरे बीच एक माध्यम की हिक्षा िै, उसके कारण मैं इससे दूर िट गया हाँ। जगत् को िाश्वत मानने में मैं भारत से सम्बद्ध हाँ; हकनुतु उसके हनवाजण के हसद्धान्त के कारण मैं उससे अलग िो गया हाँ। यि बात मैं निीं ंसमझ सका हक धमज या सम्प्रदाय को ले कर मनुष्य कैसे परस्पर लडते या मार-काट करते िैं; क्योंहंक सभी धमों का उद्देश्य आध्यास्त्मक िी िै।

सामान्य जनों ंके हलए प्रचार आवश्यक िै और राज्य तथा राष्टर के अथाजिा की दृहष्ट से ऐसी गौण संथथाएँ िीनी चाहिए। हजस प्रकार िम हकसी के पे्रम-सम्बन्ध में पडने के हलए हकसी व्यस्क्त पर दबाव िालने का प्रयत्न निीं ंकरते, उसी प्रकार धाहमजक मान्यता अथवा आत्म-सम्बन्धी हवषयों ंमें हकसी पर प्रभाव िालने से िमें दूर िी रिना चाहिए।

मैं भगवान् की प्रते्येक प्रहतमा के सामने उन सभी मनुष्यों ंको सम्मान देने के हलए प्रणाम करता हाँ जो उनके चरणों ंके आगे झुक कर प्रणाम करते िैं; हकनुतु ईश्वर की प्राथजना के हलए अमुक मस्न्दर िोना िी चाहिए, ऐसा मैं निीं ंजानता। सभी मस्न्दरों ंमें सबसे अहधक सुन्दर अथेि का पाथजनोन मस्न्दर िै, हकनुतु इसके ऊपर कोई छत निीं ंिै। इससे यि प्रकट िोता िै हक यिाँ पर पिले ईश्वर को कैद में रखा गया था, हकनुतु अब वि बन्धन-मुक्त िी चुका िै।

आचार एक अलग वसुतु िै। ईश्वर अथवा हकसी सम्प्रदाय से इसका कुछ भी सम्बन्ध निीं ंिै। सौन्दयज तथा आरोग्य-ये दोनों ंमिान् लौहकक भेंट िैं। मेरी समझ में ये दोनों ंहकसी अदृश्य िस्क्त के िी कायज िैं। जब कभी मैं अपनी कल्पना को मूतज रूप देना चािता हाँ, तो ग्रीक के ईश्वर का आकार और नाम सदा-सवजदा प्रहतभाहसत िोता िै।

हकसी भी साम्प्रदाहयक हवहध के अनुसार परमेश्वर से हमलने की अपेक्षा परमेश्वर के कायों में उसके प्रत्यक्ष दिजन करने में मैं हवश्वास रखता हाँ। गोथे ने बतलाया हक 'दृश्य पदाथों के पृष्ठभाग में हकसी वसुतु की खोज न कीहजए। वे स्वयं अपने में एक हसद्धान्त िैं।' मृतुयु के अनन्तर अस्स्तत्व िै अथवा निीं,ं इस प्रश्न का उत्तर मैं गोथे के िब्दों ंमें िी देना चािता हाँ हजन्ें गोथे ने वृद्धावथथा में हनहमजत अपने हवचारों ंको प्रकट करने के हलए दजजनों ंबार प्रयोग हकया-"इसके अनन्तर अपने जीवन के अस्स्तत्व की मान्यता का आधार मेरी कमजठता िै, क्योंहंक यहद मैं अपने जीवन के अस्न्तम क्षण तक अहवराम गहत से कायज करता रिा तो जब मेरा यि वतजमान िरीर मेरे मन को धारण करने में असमथज िो जायेगा तो मेरे अस्स्तत्व को बनाये रखने के हलए प्रकृहत मुझे दूसरा रूप देने के हलए बाध्य िोगी।"

न्याय के सुसंगत हसद्धान्त के अनुसार मैं हजस प्रकार स्फहटक महण में ईश्वर के दिजन कर सकता हाँ, उसी प्रकार िरी दूवाज में उसके दिजन कर सकता हाँ। मैं हजस प्रकार कुते्ते के पे्रहमल नेत्रों ंमें ईश्वर की झाँकी पाता हाँ, उसी प्रकार उसके दिजन एक नारी के सुन्दर हृदय में भी करता हाँ। मैं हततली के झीने-झीने परों ंमें ईश्वर का दिजन करता हाँ, तो उसी प्रकार ऊषाकालीन मृतमुखी तुहिन में भी उसके दिजन पाता हाँ। चम्पक कली के अवगुण्ठन में ईश्वर मुझे दिजन देता िै, उसी प्रकार उस कली के स्खलने से पूवज उसे चुन लेने वाले बालक के िाथों ंमें भी वि मुझे अपना दिजन देता िै। प्राचीन काल के अन्यायों ंको हमटाने के हलए आज जो िास्न्त जगी िै, उसमें मैं ईश्वर के दिजन करता हाँ। पे्रम-सम्बन्ध में स्पधाज करने वाले प्रहतपक्षी से अपने वैर का बदला चुकाने की प्रहतज्ञा करने वाले युवक के प्रज्वहलत नेत्रों ंमें मुझे ईश्वर के दिजन िोते िैं, उसके साथ िी युद्ध के बाद उसके नेत्रों ंसे गोली हनकालने वाले िाक्टर के अहवचहलत िाथ में भी मुझे उसके दिजन हमलते िैं। जब अपने हदव्य सजजन के िोठों ंपर अलौहकक िास् की रचना कर रिा िो और जब वि मनुष्य की आकृहत में िास्जनक हचत्र अंहकत कर रिा िो, उस समय हलयोनािज के कलाकार िाथों ंमें मुझे ईश्वर के दिजन िोते िैं। स्खलवाड करता हुआ हबल्ली का बच्चा जब अपने साथी को दपजण में खोज रिा िो, उसमें मुझे उस ईश्वर के दिजन िोते िैं और साथ िी जब वि अपने हिंसक नेत्रों ंसे

देखते हुए पीतरंगी पक्षी का पीछा कर रि ि ो, उसमें मुझे उसके दिजन हमलते ि ैं। स्वप्न में दी हुई उसकी पे्रेरणाओं ंमें मैं उसके दिजन करता हाँ और पे्रेरणाओं ंको पूरा करने में मुझे जो कठोर श्रम उठाना पडता ि ै, उसमें भी मैं उसके दिजन करता हाँ।

-इडमल लुिडवर्, प्रडसद्ध जमान कथाकार

२८. मृतुयु के सम्बन्ध में पिाात्य दाजहनकों ंके हवचार

मैं व्यस्क्तगत रूप से हवश्वास करता हाँ हक ि िरीर की मृतुयु के अनन्तर भी मनुष्य का अस्स्तत्व बना रिता ि ै। यद्यहप मैं अपने इस हवश्वास के औहचत्य को भली-भााँहत तथा पूणजतिः हसद्ध निीं ंकर सकता, हफर भी यि हवश्वास वैज्ञाहनक प्रयोग से हसद्ध हकया जा सकता ि ै अथाजत् यि हवश्वास तथ्य तथा अनुभव पर आधाररत ि ै। मैं बलपूवजक
यि किता हाँ हक मृतुयु के अनन्तर अस्स्तत्व के अनेक उदािरण पाये जाते ि ैं और उनमें से हकतने ि ी उदािरण सवजथा ठीक ि ैं। इस बात की उपेक्षा वैसे ि ी निीं ंकी जा सकती जैसे हक अन्य वैज्ञाहनक अनुभवों की। **-सर ओडलिवर लॉज**

मनोहवज्ञान के स्तर पर हवचार करने से भी मृतुयु के अनन्तर जीवन के सातत्य के हसद्धान्त की स्वीकृहत में ी आकषजण का कि ि ै न हक उसके हनषेध में। ि मारीमृतुयु ि ी ि मारे पारगामी जीवन का जन्म ि ै।

- ि बूल्यू टूिर जोन्स

जीवन का यि प्रतीयमान अन्त (मृतुयु) वास्तहवक अन्त निीं ंि ै, क्योंहंक यि तो व्यस्क्त के वास्तहवक स्वरूप को स्पिज भी निीं ंकर सकता। यि तो मनुष्य की छाया गेली मात्र को, उसके प्रहतरूप को ि ी नष्ट करता ि ै।

-रे्ली

आत्मा अजन्मा और अमर-दोनों ंि ी ि ोना चाहिए। इसे मानने से मानव का आत्मा पिु-योहन में प्रवेि करता ि ै और वि पिु-योहन से पुनिः मानव-योहन में वापस आता ि ै, क्योंहंक वि पिले मानव-योहन में रि चुका ि ै।

-अफलातून

मि अपने हवगत जीवन के बाद, हजसे हक ि म भूल चुके ि ैं, इस जीवन-रूपी भट्ठी में ि ाले गये ि ैं, जिााँ पर मिारा नव-हनमाजण तथा नवीनीकरण हकया जाना ि ै, ि म पर दिुःखों, ं हवरोधों, ं वासनाओं, ं ि ंकाओं, ं रोगों ंतथा मृतुयु का पानी चढ़ाया जाना ि ै। इन सब यातनाओं ंको ि म इसहलए सिन करते ि ैं हक हजससे ि मारा कल्ाण ि ो, ि मारी ि ुस्द्धि ि ो अथवा यों ंकहिए हक हजससे ि म पूणज बनें। युग-युग से, जाहत-जाहत से ि म एक धीमी प्रगहत कर रि े ैं। यि प्रगहत धीमी ि ोते हुए भी हनहित रूप से प्रगहत ि ै। यि एक ऐसी प्रगहत ि ै हजसके सम्बन्ध में भले ि ी नास्स्तक लोग इनकार करें, हफर भी इसके प्रमाण स्पष्ट ि ैं। ि म देखते ि ैं हक जिााँ एक ओर ि मारे जीवन की सभी अपूणजताएँ तथा ि मारी पररस्थथहत की हविेषताएँ ि में हनरुत्सािी तथा भयभीत बनाती ि ैं और दूसरी ओर ि में बहुत-सी उतकृष्ट क्षमताएँ भी प्रदान की गयी ि ैं हजनसे हक ि म अपनी पूणजता की खोज कर सकें, मोक्ष प्रास्प्त के योग्य बन सकें और भय तथा मृतुयु से मुक्त बन सकें। विााँ पर ि ी एक हदव्य सिज ज्ञान, जो प्रकाि और क्षमता में सदा हवकास कर रि ा ि ै, ि में यि समझने में सिायता देता ि ै हक इस समूपूणज हवश्व में कोई वसुतु ऐसी निीं ंि ै हजसका पूणजतिः नाि ि ोता ि ो। ि म अपने ि ाश्वत हवकास के अनुकूल नयी पररस्थथहतयों ंमें पुनिः जन्म लेने के हलए अपने पाहथजव जीवन के चारों ंओर फैले हुए पदाथों से कुछ काल के हलए हछप जाते ि ैं।

-जाजा सैण्ड

यहद िम जीवात्मा के पुनरागमन के हसद्धान्त पर हवश्व के राष्टरों ंमें इसके हवसूतृत प्रसार तथा ऐहतिाहसक युगों ंसे इसके प्रचलन की दृहष्ट से हवचार करें, तो उसे हनहित रूप से एक स्वाभाहवक अथवा मानव-मन का एक सिज हवश्वास मानना पडेगा।

-प्रोफेसर फ्ांडसस ब्राउन

यद्यहप पिाात्य मानव-मन के हलए पुनजजन्म का हसद्धान्त अपररहचत-सा लगता िै, हफर भी मानव जाहत का अहधकांिभाग इस हसद्धान्त को व्यापक रूप से स्वीकार कर चुका िै और वि भी इहतिास के आहद युग से िी। धर्मिजा में पुनजजन्म के हदये गये प्रमाणों ंकी अपेक्षा हनम्नांहकत सात युस्क्तयााँ अहधक सुसंगत और न्यायोहचत लगती िैं:

१. अमरता-सम्बन्धी हवश्वव्यापक हवचार पुनजजन्म की मााँग करता िै।

२. सादृश्यता इसे अहधक सम्भाव्य बनाती िै।

३. यि हसद्धान्त बहुत-सी बातों ंमें हवज्ञान से हमलता-जुलता िै।

४. आत्मा के स्वरूप को इसकी आवश्यकता िै।

५. 'मूलगत पाप' और 'भहवष्यकालीन दण्ड' सम्बन्धी नीहिति के प्रश्नों ंका यि समुहचत उत्तर देता िै।

६. अनेक अलौहकक अनुभवों ंऔर असामान्य सूमृहतयों ंके रिस् को यि हसद्धान्त स्पष्ट करता िै।

७. इस पाहथजव जीवन में जो अन्याय और कष्ट मित्त्पूणज भाग अदा करते िैं, उनका समाधान यिी हसद्धान्त करता िै।

ईसाई मत का यि उपदेि िै हक 'जैसा बोओगे, वैसा िी काटोगे।' यि उपदेि 'पुनजजन्म और कमज' की पौवाजत्य हिक्षा से पूणजतया हमलता िै।

मिान् सफलताओं ंके हलए कोई राज-मागज निीं ंिै, हफर भी संसार में अद्‌भुत प्रहतभािाली और अप्रहतम बुस्द्ध के बालक पाये जाते िैं। यि तथ्य पुनजजन्म के हसद्धान्त की सत्यता का साक्षी िै। प्रत्ेयेक मानव पिले अनेक जीवन जी चुका िै और उसे भूतकाल के अनुभव प्राप्त िैं हजसके कारण प्रत्ेयेक मनुष्य की प्रकृहत हभन्न-हभन्न िोती िै।

-आथार ई. मैसे

पररहिष्ट २

कुछ पराभौहतक अनुभव

मैं एक पादरी की पुत्री थी। दो वषज की आयु में मैं सण्ड्े सूकूल भेजी गयी। जब मैं पााँच साल की हुई तो सूकूल भेजी गयी। सात वषज की उम्र में हपताजी के पुस्तकालय से ले-ले कर मैंने बाइहबल और कुछ दािजहनक पुस्तकें पढ़ीं।ं उस समय तक मैंने यि हनिय कर हलया था हक मुझे आजीवन अहववाहित रिना ि‍ै और जन्म-मृतुयु के रिस्ों ंपर हचन्तन-मनन करना ि‍ै। बाइहबल में मैंने पाल के ये ि‍ब्द पढ़े- 'अनवरत रूप से प्राथजना करो।' मैंने

ऐसा ि◌ी हकया। मेरी प्राथजना के उत्तर में रात के समय देवदूत आये और मेरा कमरा प्रकाि से भर गया। मेरे हलए यि घटना एक ऐसे अदृश्य परन्तु अहधक वास्तहवक संसार का प्रमाण थी जिााँ ि◌में मृत्यु के बाद जाना ि◌ोता ि◌ै।

जब मैं बडी हुई, तब एक बार प्राथजना करते समय मुझे ऐसा अनुभव हुआ हक मेरा ि◌रीर ऊपर उठ रि ◌ा। ि◌वा में मेरा ि◌रीर कुछ क्षणों ◌ंतक हटका रि◌ा। मुझे लगा हक प्रचण्ड वेग वाली कोई ि◌स्क्त मेरे ि◌रीर से ि◌ो कर गुजर रिी ि◌ै। मेरा समूचा अस्स्तत्व वणजनातीत प्रिषज से भर उठा। मुझे भय लगने लगा हक उस ि◌स्क्त का वेग मुझे कुचल कर रख देगा। मैंने प्राथजना की हक मुझे और अहधक हदव्य ि◌स्क्त निीं ◌ंचाहिए। हफर वि आध्यास्त्मक झंझा थोडी कम हुई और मेरा ि◌रीर धरती पर आ गया। बाद में मुझे आध्यास्त्मक स्तर पर भी इसी प्रकार की अनुभूहत हुई। ध्यान की स्थथहत में मैंने अनुभव हकया हक मैं ऊपर उठ कर चकाचौंध कर देने वाले प्रकाि के सागर में आ गयी हाँ। उस थथान से न कुछ हदखायी पडता ि◌ै, न कुछ सुनायी पडता ि◌ै। ऐसा लग रिा था मानो मैं ि◌रीरिीन ि◌ो कर ि◌ुद्ध हनहवजकार सत्ता बन गयी हाँ अथवा ईश्वर की असीम ि◌स्क्त, ऐश्वयज, प्रेम और परमानन्द के साथ एक ि◌ो गयी हाँ। इसी प्रकार के अन्य अनुभव भी मुझे प्राप्त ि◌ोते रि◌े। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ हक मेरे स्वभाव में ि◌ुभ पररवतजन आ रिा ि◌ै; वि ि◌ुद्ध ि◌ोता जा रिा ि◌ै। इसे मैंने इस प्रकार समझा मानो मुझे दीक्षा दी गयी ि◌ो। मुझे ऐसा भी लगने लगा हक पहवत्रता की सुगन्ध के साथ मैं घुल-हमल गयी हाँ और मेरा दैहनक जीवन उसकी सुवास से मिक उठा ि◌ै।

कुछ समय के बाद एक हदन मुझे यि प्राथजना करने की ि◌स्क्त प्राप्त हुई हक मुझे विी अनुभव प्राप्त ि◌ों ◌ंजो पॉल को आकाि-मण्डल में ऊपर उठाये जाते समय हुए थे।

एक रात एक देवदूत (द्युहतमान आत्मा) मेरे पास आया और मुझे मेरे ि◌रीर से हनकाल कर ि◌ून्य (space) में ले गया। पिले तो मैंने सोचा हक मैंने ि◌रीर त्याग कर हदया ि◌ै; परन्तु देवदूत ने मुझे बतलाया हक मेरी प्राथजना के फल-स्वरूप ि◌ी ऐसा हुआ ि◌ै और आकाि-मण्डल का भ्रमण कर लेने के बाद मुझे अपने ि◌रीर में हफर पहुाँचा हदया जायेगा। और हुआ भी ऐसा ि◌ी। मैंने देखा हक मेरा ि◌रीर हबस्तर पर पडा ि◌ै। सचमुच उस भारी खोल जैसी वस्तु में प्रवेि करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता निीं ◌ंहुई। मेरा देवदूत हमत्र अक्सर मेरे पास आता था और मुझे सूक्ष्म तथा उच्चतर लोकों ◌ंमें ले जाया करता था। एक हदन मुझे यि पता चला हक मैं स्वयं अपने सूक्ष्म ि◌रीर को अपने थथूल ि◌रीर से अलग कर सकती हाँ और इन लोकों ◌ंकी यात्रा कर सकती हाँ। हफर मैं हनत्य राहत्र में ऐसा ि◌ी करने लगी।

जब मैं प्रथम बार सूक्ष्म लोक में पहुाँची थी, तब मुझे वि कुछ-कुछ भौहतक संसार के समान ि◌ी प्रतीत हुआ था, यद्यहप वि लोक अपेक्षाकृत अहधक संवेदनिील था। 'मेरे हपता के घर में अनेक ि◌वेहलयााँ ि◌ैं' - ईश्वर के इन वचनों ◌ंका साकार रूप मुझे विााँ हदखायी पडा। विााँ पर कई ि◌वेहलयााँ थीं।◌ं प्रत्येक देि-मुक्त आत्मा के हलए एक अलग ि◌वेली थी। कुछ ि◌वेहलयााँ साधारण कोहट की थीं।◌ं कुछ सुन्दर तथा कुछ भव्य थीं।◌ं आत्माओं ◌ंके आध्यास्त्मक स्तर के अनुरूप ि◌ी उनके आवास थे। विााँ के कुछ आवास तो इतने भव्य ि◌ैं हक उनके सामने धरती के भव्यतम आवास भी फीके पड जाते ि◌ैं।

सूक्ष्म संसार में हनम्नतर और उच्चतर - दो प्रकार के लोक ि◌ोते ि◌ैं; परन्तु आत्माएाँ सवजत्र सुखी जीवन व्यतीत करती ि◌ैं। विााँ न जजजरता ि◌ै, न रोग ि◌ै, न वाधजक्य ि◌ै। विााँ ि◌ाश्वत यौवन और सौन्दयज का राज्य ि◌ै। मुझे ऐसा बताया गया हक विााँ हकसी भी आत्मा को कायज करने के हलए हववि निीं ◌ंहकया जाता, परन्तु वे अपनी इच्छा से कुछ-न-कुछ काम करके आनस्न्दत ि◌ोती ि◌ैं। कभी-कभी तो वे विी कायज करती ि◌ैं जो उन्िोंने धरती के जीवन में हकया था। धरती पर व्यतीत हकये गये जीवन के समान ि◌ी हचत्रकारों,◌ं मूहतजकारों,◌ं संगीतज्ञों,◌ं कहवयों,◌ं लेखकों,◌ं वैज्ञाहनकों ◌ंकी आत्माएाँ अपना-अपना कायज करती ि◌ैं और इस प्रकार अपना हवकास कर रिी ि◌ैं। अपनी-अपनी रुहचयों ◌ंके अनुसार वे कई प्रकार की संथथाओं ◌ंकी सदस् भी ि◌ैं। विााँ हवज्ञान, कला तथा संगीत के हवद्यालय भी ि◌ैं

हजनमें कई आत्माएँ अध्यापन का कायज करती िैं। मैं विााँ के कुछ हवश्वहवद्यालयों ंमें भी गयी हाँ और विााँ अत्यन्त रुहचकर भाषणों ंको भी सुना िै। विााँ अनेक धमों को मानने वाली आत्माएँ िैं। हगरजे तथा िर धमज के िाखा-भवन आहद भी िैं। विााँ िमारे ईश्वर की उसी प्रकार पूजा की जाती िै जैसे धरती पर की जाती िै। वि विााँ के हवहभन्न प्रकार के समुदायों ंको सम्बोहधत करते िैं। इस कारण मात्र उनकी सत्ता पर अहवश्वास करने का प्रश्न िी निीं ंउठता। मात्र उनकी उपस्थथहत िी सबके हलए परमानन्द का स्रोत िै। इसहलए उनके ये िब्द- 'जिााँ मैं हाँ, विााँ तुम
भी िो' -आियजकर सत्य िैं।

सामान्य आत्माएँ अपनी-अपनी भाषाएँ बोलती िैं। एक ऐसी भाषा भी प्रयोग में लायी जाती िै हजससे सभी हिहक्षत आत्माएँ समझती िैं तथा हजससे सीखने पर हकसी प्रकार का प्रहतबन्ध निीं ंिै।

मुझे यि बात अवश्य किनी चाहिए हक प्रत्येक देिमुक्त आत्मा जब सूक्ष्म संसार में प्रवेि करती िै, तो उसे एक हनहित अवहध तक आत्म-हवश्लेषण तथा धरती पर व्यतीत हकये गये अपने कमों का हसंाविलोकन करना पडता िै। यि बात पापमोचन-थथान (Purgatory) की िमारी हवचारधारा के अनुरूप िै; क्योंहंक उसके अच्छे-बुरे कमों का उन पयजवेक्षकों ंद्वारा अहभलेखन कर हलया जाता िै जो अदृश्य रूप से धरती के जीवन में प्रत्येक क्षण उसके साथ रिते िैं। इसहलए ईश्वर का यि वचन सत्य हसद्ध हुआ िै हक 'मनुष्यों ंको अपने प्रत्येक व्यथज िब्द का हिसाब देना पडेगा। उनके िब्द उनकी हनन्दा या प्रिंसा के कारण बनेंगे।' ईश्वर का यि वचन भी हनतान्त सत्य िै हक 'हछपायी हुई कोई बात हछपती निीं;ं न बतायी कोई बात निीं ंरिती। अतिः जो-कुछ तुमने एकान्त अंाँधेरे में बोला िै, वि प्रकाि में सुनायी पड जायेगा और जो-कुछ तुमने एकान्त थथलों ंमें कान में फुसफुसा कर किा िै, उसका उद्घोष घर की छतों ंपर िोगा।' कुछ आत्माओं ंको अपने बुरे वचनों ंऔर कमााँ के अहभलेखों ंको दोबारा पढ़ने और उनका सामना करने का दुिःख उठाना िोता िै, जब हक कुछ को अपने अच्छे कमों का मधुर फल प्राप्त करते हुए प्रसन्नता िोती िै।

उच्चतर लोकों ंमें मैं कई अत्यहधक उन्नत आत्माओं ंसे हमली। उनमें से कुछ आत्माओं ंने बताया हक 'मिान् अवतरण' की अवहध में जब ईश्वर ने धरती पर हवचरण हकया था, तब मैं और वे साथ-साथ रिे थे। मैं अपने उस जन्म की घटनाओं ंका स्मरण निीं ंकर सकी। िााँ, अन्य जन्मों ंके दृश्य मैंने देखे िैं। उनमें से कुछ दृश्य असाधारण िैं, परन्तु कुछ साधारण िी िैं। मुझे बडा आियज हुआ था जब मैंने िरीर को एक पुरुष के िरीर में पाया था। तब मैं जान पायी हक मैं अपने में िैणता के गुणों ंकी अपेक्षा पौरुषत्व के गुणों ंकी उपस्थथहत का अनुभव क्यों ंअहधक करती हाँ।

अपने गत जन्मों ंके दृश्यों ंका अवलोकन करने के पिात् मुझे यि बात स्पष्ट िो गयी हक िमारा वतजमान अस्स्तत्व िमारे वास्तहवक अस्स्तत्व का एक खण्ड मात्र िै। िमारी चेतना िमारी समग्र चेतना का एक अंि िै। समग्र चेतना का उदय तब तक निीं ंिोता, जब तक िम अपने समस्त जन्मों ंके चि को पूरा निीं ंकर लेते। अपने प्रत्येक जन्म में िमें कुछ गुणों ंका हवकास करना िोता िै तथा कुछ हविेष पररस्थथहतयों ंमें कमज करने िोते िैं। इसीहलए गत जन्मों ंकी सूमृहतयों ंका लोप िोना आवश्यक िो जाता िै। यहद ऐसा निीं ंिोगा, तो वे सूमृहतयााँ िमारे हलए भार बन जायेंगी। प्रत्येक जन्म में िमें इस बात का भी अवसर हमलता िै हक जीवन की ओर ले जाने वाले कहठन मागज तथा नरक में पहुाँचाने वाले चौडे मागज में से िम हकसी एक को चुन लें।

अपनी अन्तदृजहष्ट से मैं उन घटनाओं ंको भी देख सकी हाँ, जो बाद में सचमुच घहटत हुईं। मैं एक िी उदािरण दूाँगी। कोपेनिेगेन हवश्वहवद्यालय से बी. ए. की हिग्री प्राप्त करने से पूवज िी एक बार ध्यान की अवथथा में मैंने देखा हक मैं हवश्वहवद्यालय के भाषण-कक्ष में बैठी हुई हाँ तथा श्रोताओं ंके एक बडे समूि के समक्ष भाषण दे रिी हाँ। जब यि दृश्य लुप्त िो गया, तब मैंने सोचा हक इसका तात्पयज यि िो सकता िै हक हकसी-न-हकसी हदन मैं उस भाषण कक्ष में प्राध्यापक की िैहसयत से बैठूाँगी । यद्यहप मेरा यि हनष्कषज असत्य हसद्ध हुआ, तथाहप यि दृश्य

एक दूसरे रूप में सिी हनकला। कुछ समय बीत जाने के बाद मेरे प्राध्यापक ने मुझे मध्ययुगीय रिस्वाद पर धारावाहिक रूप से भाषण देने के हलए आमस्न्त्रत हकया। वे भाषण मैंने उसी कक्ष में हदये हजसे मैंने अपनी ध्यानावथथा में देखा था।

एक बार मैंने सोचा हक मैं अपनी इच्छा–स्क्त का प्रयोग करके हदक्काल की सीमाओं ंको तोडते हुए, अपनी चेतना को अपने भूतकाल तथा भहवष्य में प्रक्षेहपत करूाँ तथा हवगत और भावी घटनाओं ंका अवलोकन करूाँ। मेरे प्रयोग सफल रि तथा िर प्रयोग में मुझे घटनाओं ंकी सत्यता के प्रमाण भी हमल गये।

मैंने सूक्ष्म िरीर की हविेषताओं ंतथा भौहतक िरीर के साथ इसके सम्बन्धों ंका हनरीक्षण हकया। मैं इस हनष्कषज पर पहुाँची हाँ हक हकसी भी स्थथहत में िमारी चेतना भौहतक मस्स्तष्क पर हनभजर निीं ंिै। दूसरी ओर यि बात भी सत्य िै हक िमारा भौहतक िरीर लगातार सूक्ष्म िरीर पर हनभजर रिता िै। यहद सूक्ष्म िरीर भौहतक िरीर का साथ छोड दे, तो भौहतक िरीर अपनी एक पिी भी निीं ंहिला सकता ।

मैं अपने सूक्ष्म िरीर में कोपेनिेगेन की सडकों ंपर घूमती रिी हाँ तथा लोगों ंको कुछ पराभौहतक अनुभव प्रभाहवत करने की असफल चेष्टा करती रिी हाँ। मैं उन जगिों ंपर भी गयी हाँ जिााँ मैं पिले कभी निीं ंगयी थी। अपने भौहतक िरीर में मैं दोबारा उन थथानों ंपर जा कर विााँ अपनी उपस्थथहत के बारे में लोगों ंकी प्रहतहिया का पता लगाना चािती थी। मैं उन थथानों ंपर गयी और मुझे विााँ अपनी उपस्थथहत के प्रमाण हमले। दो थथानों ंपर लोगों ं ने मुझसे मेरे अद्‌भुत प्रकटन के बारे में बताया। ये वे लोग थे हजनें् मैंने उन थथानों ंपर अपने सूक्ष्म िरीर से देखा था। जब मैंने उनें् बताया हक अपने सूक्ष्म िरीर से मैंने उनें् अमुक-अमुक कायज करते देखा था, तब उनें् हवश्वास करना पडा हक मैं सचमुच उनके पास गयी थी।

एक बार मैं अपने देवदूत हमत्र के साथ एक अन्तभूजहमक (subterranean) ििर को गयी। धरती के नीचे जा कर एक सुन्दर चमकीले ििर के बीच अपने को पाना मेरे हलए हनराला अनुभव था। मेरा हमत्र मुझे संगमरमर के स्तम्भों ंवाले ग्रीस की िैली में बने एक मस्न्दर में ले गया। विााँ मुझे उस नगर का नेता हमला और उसने मुझे विााँ िोने वाले कायों के बारे में बहुत कुछ बताया।

एक हदन मुझे पता चला हक गिन एकाग्रता की सिायता से मैं भूत िव्यों ंको अभौहतक बना कर उनें् पुनिः भौहतक बना सकती हाँ। यि सचमुच बहुत रोचक तथा आियजनक था। मैंने इस हदिा में अन्य प्रयोग निीं ंहकये; क्योंहक मेरी रुहच आन्तररक संसार के उन रिस्यात्मक लोकों ंमें अहधक िै हजनकी भव्य और मनोिर सुन्दरता तथा आलंकाररकता का वणजन करना कहठन िै। मानव-भाषा असाधारण अनुभवों ंको व्यक्त करने में सदैव असमथज रिती िै।

कई लोग मुझसे मेरी साधना के बारे में पूछते िैं। मेरी समझ में हकसी भी प्रकार के आध्यास्त्मक अभ्यास से अहधक मित्त्वपूणज साधना की यि उत्कट अहभलाषा िोती िै हक वि ब्रह्म से एकाकार िो जाये। यिी अहभलाषा ऊपरी लोकों ंसे दैवी अनुग्रि के अन्तरागम (influx) के हलए मागज प्रिस्त करती िै।

िाश्वत तत्त्व को प्राप्त करने िेतु पूणज समपजण-भाव से मन-आत्मा के िार खोल कर रखना िी सवाजहधक मित्त्वपूणज बात िै। मैंने सुना िै हक साधक यि निीं ंसमझ पाते की दीघज काल तक साधना करते रिने पर भी वे क्यों ंअसफल रिते िैं। मेरे मतानुसार उनमें ब्रह्म के साथ एकत्व थथाहपत करने की तीव्र उत्कण्ठा की कमी रिती िै। मैं इस बात को बहुत मित्त्व देती हाँ हक सोने से पूवज प्राथजना तथा ध्यान अवश्य करने चाहिए ताहक हनिावथथा में अवचेतन स्थथहत में प्रवेि करने से पिले िी मन सांसाररक हवचारों ंसे मुक्त िो सके। िमेिा सोने से पिले मैं अपनी चेतना को गिन बनाने तथा हवकहसत करने का प्रयत्न करती हाँ ताहक मैं उस मित्-तत्त्व के सम्पकज में आ सकूाँ जो सदैव उच्चतर लोकों ंसे सम्बन्ध रखता िै। सोने से पूवज चेतना को गिन बनाना एक अत्यन्त मित्त्वपूणज साधना िै। मैं

प्राति:काल भी ध्यान करती हाँ ताहक अपने दैहनक कायों के हलए आवश्यक िस्क्त अहजजत कर सकूाँ। जब मैं हदन में हवश्राम कर रिी िोती हाँ, तब मैं अपने 'स्व' को भूल कर अपनी चेतना को हदव्य तत्त् के सम्पकज में ले आती हाँ।
हजस समय मन की गिराइयों ंमें उच्चतर ऊजाज का प्रवाि रिस्मय ढंग से िो रिा िोता िै, उस समय िमें भयभीत निीं ंिोना चाहिए और तब हदव्य आत्मा िमें अहभहषक्त करेगी।

-के. एम., कोपेनिेगेन (**िेनमाका)**